CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1979

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1979

Contents

31 January 1979 Vol. 7: No. 6
31 March 1979 Vol. 8: No. 1
31 May 1979 Vol. 8: No. 2
31 July 1979 Vol. 8: No. 3
30 September 1979 Vol. 8: No. 4
30 November 1979 Vol. 8: No. 5

★ क्रै प ल र ★

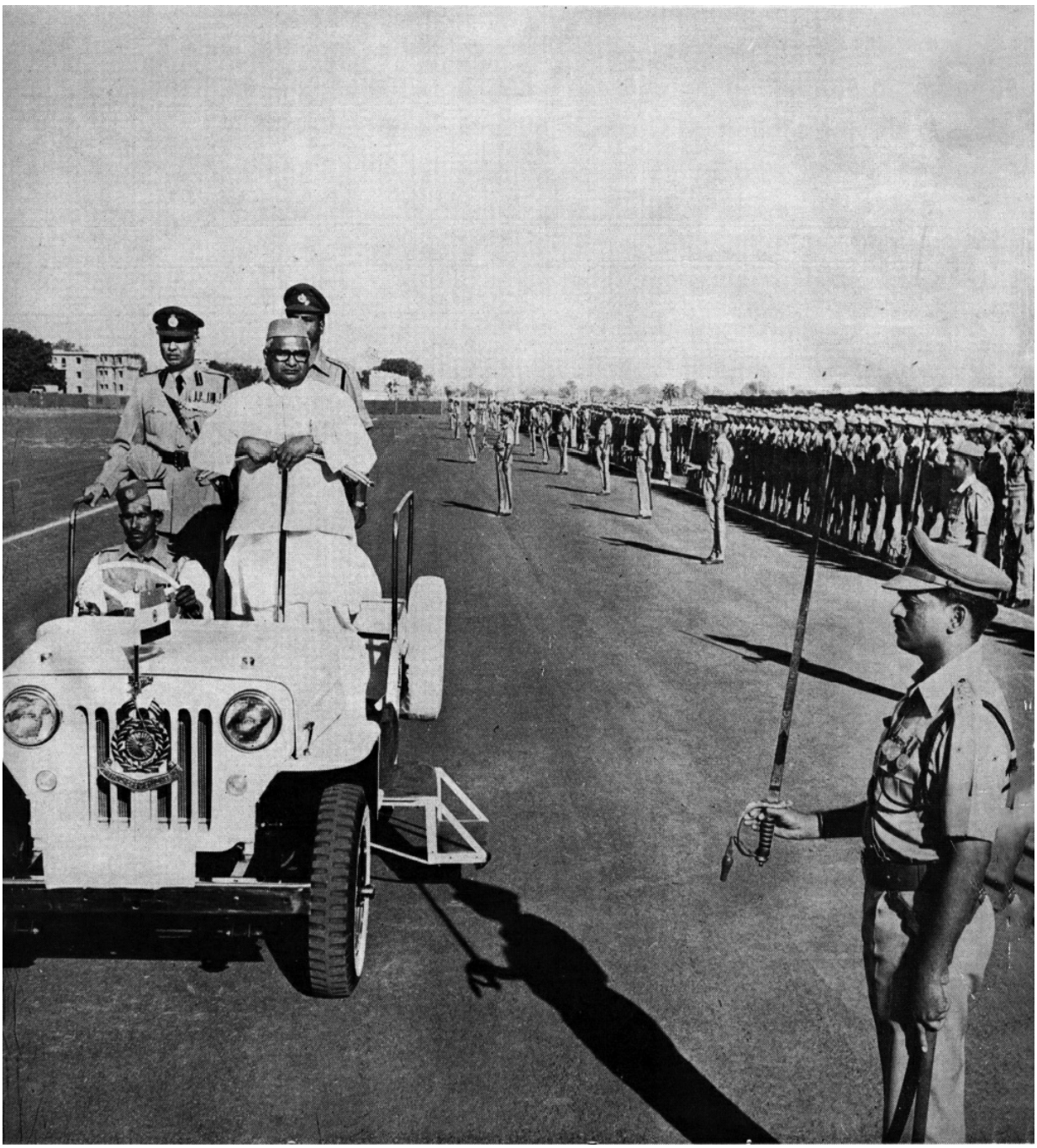
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 जनवरी, 1979] खण्ड VII अंक 6 [11 माघ, 1900



अरुणाचल प्रदेश में 2 बटालियन (के० रि० पु० बल) के सम्मान गारद का निरीक्षण करते हुये प्रधान मन्त्री श्री मुरार जी देसाई



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 39वें वार्षिकोत्सव परेड में सम्मान गारद का निरीक्षण करते हुये गृहराज्य मन्त्री श्री धनिकलाल मंडल



★कैपलर ★

[हिन्दी संस्करण द्वैमासिक]



खण्ड VII

अंक 6

[11 माघ 1900 31 जनवरी1979]

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी**
हिन्दी सम्पादक : **जे० एस० शर्मा**

I. नव वर्ष की शुभ कामनायें
II. रिपोर्ताज : (i) पच्छिमी बंगाल में बाढ़
(ii) कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता
(iii) गृहमंत्रालय की दीर्घा में बल का सम्मान
(iv) नई प्रतिभाओं की खोज
III. लेख : 1. अरुणाचल प्रदेश के बारे में जानकारी, ले०—श्री एस० के० महेन्द्र, कमांडेंट, 31 बटालियन
2. आजकल पुलिस कार्यवाई की नैतिकता, ले०—श्री आर० डी० शर्मा
3. पुलिस का जनता और क़ानून के प्रति उत्तरदायित्व ले०—श्री के० एम० माथुर
4. चिकमगलूर में के० रि० पु० का आगमन, ले०—श्री बी० के० कर्करा
IV. गौरवगाथा :
V. कविता : (क) नव वर्ष तम्हें शत अभिनन्दन रचि०—श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक
(ख) सिपाही की विदाई, रचि०—कां० राजदेव तिवारी 24 ब.
VI. एकाङ्की : परिवार कल्याण केन्द्र, ले०—श्री ज्ञान सिंह रावत, उच्च लिपिक, ग्रुपकेन्द्र रामपुर
VII. क्रीड़ा-क्षेत्र :
12वीं अन्तर्रेन्ज दौड़कद् प्रतियोगिता में अजमेर फिर सिरमौर, ले०—श्री एच. एस. सेठी जन-सम्पर्क अधिकारी
VIII. स्वास्थ्य-सन्देश : प्राकृतिक चिकित्सा, ले०—श्री सुरेश चन्द्र सक्सेना, अवर लिपिक, के० हथियार भंडार रामपुर
IX. विज्ञान के चढ़ते चरण :
x. विविध
(i) सूक्तिसुधा
(ii) पहेलियाँ, प्र०—दफ्तरी गणेश प्रसाद वन तालाव, जम्मू ग्रुप केन्द्र
(iii) यह भी खूब रही।

शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक के० रि० पु० बल

महानिदेशक की ओर से—

सब को नव वर्ष की शुभकामनायें

दिनांक 1 जनवरी 1979 पूर्वाह्न में (रामकृष्णपुरम) में स्थित महानिदेशालय, महानिरीक्षक से० III तथा उपमहानिरीक्षक (दिल्ली) के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी, पुलिस-शिविर में उपस्थित हुये, जहाँ श्री आर० सी० गोपाल महानिदेशक ने सब को नव वर्ष की बधाइयाँ दी और आश्वासन दिया कि वह अधीनस्थों की सब समस्यायें सुनने तथा सुलझाने के लिए सचेष्ट हैं। उन्होंने बताया कि बल के सदस्यों की सन्तानों के लिए वह शिक्षा-कोष (एजूकेशन-फंड) खोलने जा रहे हैं।

हिन्दी सम्पादक की ओर से—

"नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन"

पी अरुण-पयोधर प्राची के, है सद्यजात रवि पुलकित मन ।
द्विज मंगल-गान करें उड़ यह,—'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन ॥'
बुझ गईं चितायें तारों की, मिट गयी रात्रि की अँधियारी ।
ऊषा ने ली अब अँगड़ाई, दिनकर पर जीवन बलिहारी।
कर सहस्र करों से आलिंगन, अनुरक्ति' भरे रवि जन-जन में,
चल पड़ी सवारी सम्वत् की, भुव-कर्म-साक्ष्य लेने भारी ।
तज रोग-शोक-भय-दैन्य-दौख्य, सुख-सुविधा पायें अब-सब जन ।
द्विज मंगल-गान करें उड़ यह—'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन ॥'
अब भूत भूत हो जाने दे, आगे की सुधि लेने वाले।
निज निहित हितों का भूत भगा, तज दे चालाकी की चालें।
नित काल-लेखनी है लिखती, इतिहास नवल इस धरणी पर,
तु कार्य-पटल पर चित्र ललित, कर खचित चितेरे मतवाले ।

आते देर कभी है होती नाहें, कर रहा प्रतीक्षण तुव प्रांतेक्षण।
द्विज मंगल-गान करें उड़ यह—'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन।'
बढ़ने दे आगे ही आगे, अपना पावन यह जीवन-रथ।
तू जाय जहाँ कर श्रम-कण से, सिंचित जगती का नित युग-पथ।
संघर्ष नाम है जीवन का, विघ्नों के सम्मुख कभी न झुक,
है पुण्य-सत्य की सदा विजय, रख दूर सर्वदा पाप-वितथ।
'कर्माहि' कहे जग नर को जब, तू बना स्वर्ग दे आज भुवन।
द्विज मंगल-गान करें उड़ यह-'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन॥'
नन्हें मुन्नों पर है निर्भर, नित निखिल राष्ट्र का भावी कल।
अन्मोल मातृभू की ये निधियें, झाँकी भविष्य की ये उज्ज्वल।
पर आज कुपोषित-शोषित हैं, रोगों-शोकों के मारे शिश,
निज प्रथम जन्म-दिन देख सकें, ऐसा कितनों का भाग्य प्रबल ?
अब बाल-वर्ष सुख-ज्योति जगा, दे श्रेष्ठ उन्हें शिक्षण-पोषण।
द्विज मंगल गान करें उड़ यह,—'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन॥'
निर्माण आज नव राष्ट्र करें, तज हम सब वाद-विवादों को।
जन-जन को न्याय-सुरक्षा हो, सब सदा निभायें वादों को।
कर पूर्ण दिखावें गांधी के, हम राम राज्य के मृदु सपने,
सुख-शान्ति-प्रगति-वैभव लायें, द्रुत मिटा व्याधि-अवसादों को।
हो ध्येय तभी पूरित, जब नित, सानन्द कटे सब का जीवन।
द्विज मंगल-गान करें उड़ यहा—'नव वर्ष तुम्हें शत अभिनन्दन॥'

<u>गौरव गाथा</u>

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का रक्तदान

प्रत्येक वर्ष की भाँति, 1978 के अवसान पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लगभग 200 सदस्यों ने दिल्ली स्थित निज बेस अस्पताल में रेड क्रास सोसाइटी को रोगियों के उपचारार्थ रक्तदान किया।

जवान द्वारा डाकू बन्दी

जब 31 अक्टूबर 78 को 49 बटालियन का कां० खुमान सिंह अपने मुख्यालय रवीन्द्रशाला दिल्ली को पा रहा था, तब मदद के लिये किसी स्त्री की चीख उसने सुनी। उसने एक आदमी को जंगल की ओर भागते देखा । खुमान ने तुरन्त उसका पीछा किया और बड़ी दौड़धूप के बाद उसे बन्दी बना लिया। उसका नाम हुसैन खाँ था और उस महिला के गले से 2½ तोले की जंज़ीर खींच कर बच भागने की चेष्टा कर रहा था।

बन्दी हुसैन खाँ को स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया तथा एक लूटने का मामला दर्ज़ किया गया; किन्तु हुसैन खाँ ने भागते हुये ज़ंजीर कहीं फेंक दी और वह उससे नहीं प्राप्त हो सकी।

जवानों द्वारा आगरे के डाकू बन्दी

हरि पर्वत आगरा के पुलिस थाने में निरत 58 बटालियन की एक टुकड़ी ने कुख्यात डाकुओं के एक गिरोह को पकड़ने में स्थानीय पुलिस का सहयोग दिया। इस गिरोह ने आगरे में तथा उसके चारों ओर, कितनी ही हत्यायें और डाके डाले थे और कितने ही अपराधों के मामलों में उसके सदस्यों की खोज पुलिस को थी। पूर्व सूचना के आधार पर, एक जाल बिछाया गया और डाकू उसमें फँसाये गये । डाक अपने साथियों से मिलने, वज़ीर पुरा आने वाले थे। 10 बजे पूर्वाह्न, डाकू एक चुराई हुई मोटर कार में वज़ीरपुरा आये। स्थानीय पुलिस के स० इ० चौहान ने अपनी तशदीक बताने के लिये डाकुओं को ललकारा । जैसे ही उन्होंने बचभागने का यत्न किया, स० इ० बी. एन. तवारी के अधीन के० रि० पु० बल के जवान उन पर झपट पड़े। उनमें से दो—अशोक कुमार और महिन्दर नाथ—घटनास्थल पर पकड़ लिये गये। उनसे दो पिस्तौलें और कुछ गोलाबारूद बरामद हुआ।

अलीगढ़ के नईम ख़ाँ ने (जो इनका सरगना बताया जाता था) गायब होने की चेष्टा की, वह एक गृह में घुस गया तथा अन्दर से चटखनी लगा ली। दरवाजा तोड़ कर नईम ख़ां को पकड़ा गया। हमारी टुकड़ी के अधिकारियों और जवानों को विशेष पुलिसाध्यक्ष ने 100 रु० का नक़द इनाम दिया।

जवान को घूस अस्वीकार

दिनांक 4 अक्टूबर 1978 को नामचिक जाँच चौकी पर 42 बटालियन के० रि० पु० बल के गार्डों द्वारा अरुणाचल परिवहन बस की जाँच पड़ताल हुई। गाँधीग्राम (विजयनगर) के नागली लिसू नामक एक आदिवासी को 6 कि० ग्रा० अगर की लकड़ी ले जाते पाया गया, जिसका अरुणाचल से बाहर ले जाना वर्जित है। सन्तरी बी. शशिधरन को 1000 रु० की घूस देने का यत्न किया गया है; परन्तु उसने साफ मनाह कर दिया। उसने दूसरे जवान तुरन्त बुला लिये, जिन्होंने उस चुँगीचोर को पकड़ लिया।

<u>पश्चिमी बंगाल में बाढ़ :</u>

संकट में के० रि० पु० बल की सहायता

पश्चिमी बंगाल में 27 से 30 सितम्बर 78 तक भारी वर्षा के कारण, कलकत्ता और राज्य के अन्य क्षेत्रों में अभूतपूर्व बाढ़ें आईं, जिनसे वहां की जनता को अकथनीय कष्ट भोगने पड़े। ये सन् 1971 वाली बाढ़ों से अधिक भीषण थीं, जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने असहायों की भगीरथ सेवा की थी। इस बार भी के० रि० पु० बल फिर पीछे नहीं रहा और वहाँ के लोगों की सामयिक सहायता की।

श्री स्वेन, महानिरीक्षक से० II, ने पश्चिमी बंगाल के अधिकारियों से स्वयं सम्पर्क स्थापित किया और इस दारुण स्थिति से निपटने के लिए, के० रि० पु० बल की सेवायें प्रस्तुत की। फलस्वरूप, ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर तथा 4 बटालियनों के जवानों को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में निरत किया गया। 4, 34 तथा 58 बटालियनों के जवानों से नवद्वीप क्षेत्र में पहुँचने को कहा गया। वे मार्ग में 1 अक्तूबर 78 को कलना (वर्धमान ज़िले) में पहुँचे। क्योंकि सभी उधर जाने वाले मार्ग बाढ़ ग्रस्त थे, और बहुतों में तो दरारें पड़ गई थीं, अतः जवानों और परिवहनों को कलना पहुँचने में कोई चार कि० मी० की दूरी घुटनों-घुटनों पानी में पार करनी पड़ी। नवद्वीप तक 25 कि० मी० की दूरी में जवानों को खेने के लिए कोई लाँच (विहार) या द्रुतगामी नौका नहीं थी। तब भी, जैसे ही जल-स्तर कम हुआ, 3 अक्तूबर 78 को तड़के ही जवानों ने पैदल नवद्वीप के लिए कूँच किया। वे अपने साथ बाढ़पीड़ितों के लिए औषधें, राशन तथा पुराने कम्बल ले गये, जिन्हें उन्होंने नवद्वीप पहुँचते ही बांटा। **यही सबसे पहली सहायता थी, जो नवद्वीप के निवासियों को बाहर से मिली थी।** उसी बीच, कलना की स्थिति बड़ी विकट हो गई, जिसके कारण जवानों को कलना में ही सहायता-कार्य करने पड़े। एक रसोईघर खोला गया और पका भोजन बाढ़ पीड़ितों को वितरित किया गया। व्यय सहन करने के लिए, उन जवानों ने अपनी जेबों से रुपये निकाल कर इकट्ठे किये। नदिया में 24 सितम्बर 78 से जल-निमग्न कल्याणी, के क्षेत्रों में 13 बटालियन के जवान निरत किए गये। वहाँ तो जल का अपार सागर लहरा रहा था। चार हजारी, धरमदुवती गंगा मनोहरपुर, चार सेराती, गोकलपुर कटगंगी, गायेस्टपुर आदि ग्रामीणों की बातें हुगली की धार से जा मिली थीं। कल्याणी के चारों ओर 200 वर्ग मील के क्षेत्र में जवान और वाहन निरत किए गए और उन्होंने कम से कम 3000 ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया । बाढ़ों ने जल व्यवस्था से भयानक खिलवाड़ किया था। दिनरात जवान बाढ़पीड़ितों को के० रि० पु० बल की गाड़ियों में पानी पहुँचाते रहे। इधर हमारे डाक्टरगण चिकित्सा करने में तल्लीन रहे।

दुर्गापुर के बैराज और तामला पुल के यातायात नियंत्रित करने में नागरिक

प्रशासन की सहायता के लिये ग्रुपकेन्द्र दुर्गापुर और 34 बटालियन के जवान नियत किए गये। साथ ही, इनकी चिकित्सक यूनिटों ने लगभग 4,000 व्यक्तियों को मियादी बुखार और हैजे के टीके लगाये, छोटे-मोटे रोगों से ग्रस्त, 1,250 लोगों, की चिकित्सा की तथा 186 कूओं को रोगाणुनाशित किया।

तिलपाड़ा बैराज के उत्प्लावित जल से संत्रस्त सूरी क्षेत्र (बर्धवान ज़िला) में, 9 बटालियन के जवानों ने बड़ी सहायता की। निकटवर्ती जलनिमग्न ग्रामों में अनेकों मनुष्यों तथा पशु सुरक्षित उन्होंने निकाले ।

वर्धवान, हावड़ा तथा मिदनापुर के जिलों में 58 बटालियन के जवान सहायता तथा राहत कार्यों में लगाये गये। इस बटालियन की एक कम्पनी 1 अक्टूबर 78 को कलना पहुँची और 4 तथा 34 बटालियनों के जवानों से मिलकर नवद्वीप तथा कलना के क्षेत्रों में सहायता कार्य किया। हवाई अड्डे से, 58 बटालियन की एक कम्पनी 3 अक्टूबर 78 की रात को हावड़ा ज़िला भेजी गई। उसे वहाँ विभिन्न स्थानों पर रखे राहत भण्डारों की देख-रेख का काम सौंपा गया। इसी काम के लिए, इस बटालियन के अन्य जवान 5 अक्टूबर, 78 से किलाघाट और पंशकुडा (मिदनापुर) में निरत किये गये। इन्हीं क्षेत्रों में, सरकारी भण्डारों तथा भारतीय खाद्यनिगम के गोदामों की रक्षा भी हमारे इन जवानों ने की। इस रक्षाभार को हमारे जवानों द्वारा ग्रहण कर लेने पर, लूटपाट, आगजनी तथा छुरे घोपने की कोई घटना नहीं हई। **हमारे जवानों को देखकर, मनुष्यों में सुरक्षा की भावना उत्पन्न हो गयी।**

इन सब दिनों में, विभिन्न स्थानों के बाढ़पीड़ितों को भरसक सहायता पहुँचाने का काम के० रि० पु० बल के जवान करते रहे । नवद्वीप रेल स्टेशन, ज्यूधारा चावल मिल, अम्बिका हाई स्कूल (कलना), काली-तारा चावल मिल, राज हाई स्कूल (कलना) आदि के कितने ही सहायता शिविरों पर इन्होंने खाद्यान्न तथा पके भोजन वितरित किये। औषधे देने के साथ-साथ, बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के अनेकों रोगियों की चिकित्सा भी हमारे डॉक्टरों ने की।

इन कार्यों से, इस दल को राज्य में अनेकों नये मित्र प्राप्त हुये।



बाढ़ पीड़ितों को भोजन परोसते हुये के० रि० पु० बल के जवान

अरुणाचल प्रदेश के विषय में जानकारी

ले०-श्री एस० के० महेन्द्र

अरुणाचल प्रदेश में 31 बटालियन को कार्यभार सम्भाले कुछ माह हो गये हैं। इस प्रान्त के मौजूदा नाम से तो भारत के सहस्रों नर-नारी अनभिज्ञ हैं, परन्तु इसके पुराने नाम 'उत्तर पूर्व सीमान्त' से राष्ट्र का बच्चा-बच्चा पहचानता है। विशेषतया 1962 के भारत-चीन-युद्ध के उपरान्त, इस प्रान्त के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, हालाँकि यह बटालियन पहले भी यहाँ रह चुकी है (इसलिए यह जगह कोई नई नहीं है); परन्तु इसी बीच इस प्रान्त में इतनी फेर-बदल हुयी है कि उस समय के उत्तर पूर्व सीमान्त के नाम व आकार दोनों में परिवर्तन आ गया है। इसलिए, यहाँ की वर्तमान स्थिति से अवगत कराना आवश्यक हो जाता है। अपने कार्य भार को कुशलता से पालन करने के लिए यह आवश्यक है कि हम वहाँ की प्राकृतिक, राजनैतिक तथा स्थानीय प्रथाओं के बारे में पूरी-पूरी जानकारी रखें। तो आइये, इस बारे में मोटी-मोटी बातों को जान लें।

राजनैतिक ढाँचा- यह प्रान्त सहस्रों सालों से, उत्तर पूर्व सीमान्त के नाम से जाना

जाता था तथा प्रशासन के लिये

आसाम प्रान्त का एक ज़िला यह गिना जाता था, परन्तु इस जिले में और आसाम के दूसरे ज़िलों में एक यह विशेष अन्तर था कि यहाँ ज़िला अधिकारी के स्थान पर राजनीतिक अधिकारी (पोलीटिकल आफी सर) होता था। शनैः-शनैः ज्यों-ज्यों प्रशासन की कड़ी बढ़ती गयी, त्यों त्यों प्रशासकों का भी स्तर ऊँचा होता गया, अर्थात् 1943 में, राजनैतिक अधिकारी की जगह गवर्नर आसाम के सलाहकार ने यह कार्यभार सम्भाल लिया और फिर आगे चलकर, 1953 में इसके सीमान्त भागों को पाँच ज़िलों में बाँटकर, उनके प्रशासन के लिए एक-एक ज़िला अधिकारी नियुक्त किया गया तथा उसके ऊपर एक चीफ़ कमिश्नर पद के अधिकारी की नियुक्ति की गई, जो आसाम सरकार के अधीन केन्द्रीय सरकार को उत्तरदायी था। यहाँ के नागरिकों में अधिक चेतना जब बाद में आई, तो सरकार का भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और इस प्रकार 20 जनवरी 1972 को, इस प्रान्त को संघ शासित क्षेत्र घोषित करके, चीफ़ कमिश्नर के पद का स्तर बढ़ा कर, उस समय के नियुक्त श्री के० ए० ए० राजा को उपराज्यपाल के पद पर आसीन कर दिया गया तथा उनकी सहायता के लिए 32 सदस्यों की एक विधान सभा का गठन चुनाव द्वारा किया गया तथा इनमें से एक मंत्री परिषद मुख्य मन्त्री के अधीन बनाई गयी।

भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु : यहाँ की भौगोलिक स्थिति अपने में विचित्र है। अरुणाचल प्रदेश आसाम-हिमालय के मध्य जंगलों व पहाड़ियों से परिपूर्ण हज़ार वर्ग मील के क्षेत्र में फैला हुआ है तथा तीन ओर चीन, तिब्बत, भूटान व बर्मा की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से, तथा एक ओर, ब्रह्मपुत्र घाटी से घिरा है। इन सीमान्त क्षेत्रों में, पहाड़ों की ऊँचाई 500 से 2000 फुट तक है। इस कारण, इन पहाड़ों में स्थित विभिन्न स्थानों की जलवायु में भी जगहों की ऊँचाई-निचाई के अनुसार अन्तर रहता है।

अरुणाचल की उत्तरी सीमा विशेष महत्व इसलिए रखती है कि इस ओर 1030 कि० मी० का क्षेत्र भारत-चीन की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है, जो मैक मोहन लाइन के नाम से विश्वविख्यात है। यह रेखा, 1914 की शिमला-कान्फ्रेंस में तय हुई थी तथा सदैव इसकी मान्यता रही; परन्तु 1959 में पहली बार चीन ने इसकी मान्यता को ललकारा तथा उसके बाद 1962 में इसका उल्लंघन किया।

इसका उत्तरी भाग ऊँचे बर्फीले पर्वतों से घिरा होने के कारण, करीब-करीब पूरे साल ठंडा रहता है, जब कि नीचे वाले भागों में (जो ब्रह्मपुत्र घाटी व आसाम के मैदानी इलाक़ों से मिले हैं) गर्मी में अधिक गर्म और बरसात में नम रहते हैं। मुख्यरूप से, अरुणाचल प्रदेश, भारत के अधिक वर्षा वाले भाग में गिना जाता है। अरुणाचल में सब से अधिक बरसात, दिहांग, दिमांग और लोहित घाटी में होती है। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 200 इंच तक है। यहाँ अप्रेल से सितम्बर तक का समय वर्षा ऋतु कहा जाता है, जिसमें जून और जुलाई में तो पूर्णतया वर्षा ही होती रहती है। यहाँ की ऊँचाई वाले भागों में नवम्बर से मार्च तक बर्फ जमी रहती है।

भारत की पूर्वोत्तर सीमाओं से, छै मुख्य नदियों का निकास होता है। उनमें से पाँच, इस प्रान्त से होकर उत्तर से दक्षिण को बहती हैं। ये पाँचों नदियाँ, इस क्षेत्र को पाँच सीमान्त क्षेत्रों में बाँट देती हैं। इसी बटवारे के आधार पर, पाँच प्रशासनिक इकाइयों के रूप में, ज़िला का स्तर दे दिया गया है। इनके नाम इस प्रकार हैं-1. कामेंगर-मुख्यालय बोमडिला 2. सुवाँसरी-मुख्यालय ज़ीरो 3. स्याँग मुख्यालय एलाँग 4. लोहित-मुख्यालय तेजू तथा 5. तीरया-मुख्यालय खोन्सा।

प्रान्त और उसके लोग : इसकी ज़न संख्या 4 लाख 70 हज़ार के करीब है। यह रमणीक प्रान्त विभिन्न कबाइलियों की भूमि है, जिसमें करीब 55 विभिन्न कबीले आवास करते हैं, जिनमें 5 मुख्य कबीले ये जाने जाते हैं :-1. कामेंग ज़िला-मीनया शेर, दुकपन, दफला 2. सुवान्सरी ज़िला आपातानी, दफला, मीरी 3. स्याँग ज़िला -आदी 4. लोहित ज़िला-मिसमी और 5. तोरप ज़िला-बांचू, नोकते, तंगसा और सिंहपी।

कबाइली होने के नाते, यहाँ के लोग बड़े स्वस्थ, परिश्रमी और स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। इसी कारण, इनका जीवन परिश्रमी एवम् स्वस्थ संतुष्टात्मक वातावरण में फलता-फूलता है।

धर्म व रिवाज : हालाँकि एक क़बीले से दूसरे कबीले के रीति-रिवाजों में काफ़ी फर्क़ होता है, तौभी सामाजिक ढाँचा पूरे आदि समाज का मिलता-जुलता है। इसी कारण भेदभाव जातीयता पर नहीं होकर, समाज के आधार पर है।

यहाँ के मुख्यतः लोग डोनी-पीले (सूर्य-चन्द्र) की पूजा करते हैं। राष्ट्र के दूसरे राज्यों की भाँति, बहुत अधिक त्यौहार नहीं करते। मुख्यत: एक ही त्यौहार मनाते हैं, जिसे मौपिन के नाम से पुकारा जाता है। यह अप्रेल के पहले सप्ताह भर बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। इसके अन्तिम दिन, सामूहिक नृत्य, व भोजन होता है, जिसमें सुअर तथा मिथुन की बलि दी जाती है।

ये लोग किसी भी धर्म में विश्वास नहीं करते। मूर्तिपूजा में इनका विश्वास नहीं है। परन्तु विभिन्न दैत्य-आत्माओं में अवश्य विश्वास रखते हैं और उन्हें खुश करने के लिए, पशुओं की बलि चढ़ाते हैं। पुजारियों का बड़ा प्रभाव होता है, यहाँ तक कि बहुत से रोगों से मुक्ति पाने के लिए इन्हीं पुजारियों द्वारा पूजा आदि का आयोजन किया जाता है। सामाजिक स्थिति, सभ्यता तथा परम्परायें ही बस इनका धर्म हैं, इसे आदि धर्म के नाम से जाना जाता है।

विवाह शादी के मामले में, ये लोग स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं। परन्तु फिर भी, अधिकतर विवाह आदि, मातापिता के प्रबन्ध से ही आयोजित किए जाते हैं और उसके लिए, वर के माता-पिता की ओर से काफ़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है। यह क़ीमत पैसे के रूप में नहीं होकर, पशुओं के रूप में मुख्यत: मिथुनों के द्वारा होती है।

प्रकृति से आदी ये लोग स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं तथा मस्त जीवन में विश्वास रखते हैं। इन्हें यह पसन्द नहीं है कि कोई ग़ैर आदि जन, यहाँ तक कि प्रशासन में भी,

इनको स्वतंतत्रा में दखल दे। शतप्रातेशत लोग, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, मॉस-मादेरा का सेवन करते हैं। मदिरा ये लोग अपने घरों में ही चावल से बनाते हैं, जिसे अपाँग के नाम से पुकारा जाता है। माँस ही इनका एक मात्र भोजन होने के कारण, जिसका इन्हें बड़ा शौक भी है, ये लोग माहिर शिकारी होते हैं। ये तीर चलाने में बड़े दक्ष होते हैं तथा भालों और बन्दूकों का भी ये प्रयोग करते हैं।

प्राकृतिक जीवन में विश्वास रखने के कारण, इनकी जीवन की आवश्यकतायें अधिकतर प्रकृति से ही पूरी हो जाती हैं। बाँस व फूँस से अपने हाथों द्वारा बनाये घरों में ये रहते हैं। शरीर व घर के श्रृंगार के लिए भी, ये अधिकतर बाँस, लकड़ी तथा हड्डियों की खुद बनायी हुयी चीज़ों का प्रयोग करते हैं। कपड़ा भी-90% नर-नारी अपने हाथों का बना हुआ पहनते हैं, किन्तु भीतरी भूभागों में तो लोग कपड़ों के बहुत कम प्रयोग करते हैं। अभी भी जंगलों के पत्ते आदि से शरीर ढकने की वहाँ परम्परा है।

चूँकि बचपन से बुढ़ापे तक, इन्हें प्रकृति में जीवन गुजारना होता है, अतः दाव तथा सिर पर बेंत की बनी टोपी इनके बदन का एक अंग बन गई है।

ईमानदारी और सादगी के लिए, ये लोग अपने आप में विख्यात हैं। अतिथि सत्कार की इतनी भावना इनमें है कि इनके बीच जब कोई अधिकारी (जिसे ये 'निगम' के नाम से पुकारते हैं) पधारते हैं, तब से सैकड़ों की संख्या में इकत्रित होकर उनके स्वागत में सामूहिक नत्य, भोजन तथा मीटिंग का आयोजन करते हैं। अपने अधिकारियों की पूरी जानकारी इन्हें होती हैं। यदि इन्हें इनके अधिकारों से वंचित या इनकी मर्यादा का हनन किया जाए, तो, ये लोग बहुत नाराज़ होते हैं

भाषा व शिक्षा - बोलने की भाषा यहाँ हरा कबीले की अलग-अलग्न है, जिसकी संख्या लगभग 50 है। परन्तु स्कूलों में पूरे प्रान्त की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी है। शिक्षा के क्षेत्र में ये लोग भारत के अन्य राज्यों से पीछे नहीं हैं। हर गांव में अंग्रेजी का प्राइमरी स्कल अवश्य है। शिक्षा के प्रति अधिक उत्सुकता एवं जागृति है और इसके लिए शासन का पूर्ण सहयोग भी इन्हें प्राप्त है।

व्यवसाय - भौगोलिक स्थिति तथा लोगों के प्राकृतिक स्वभाव के कारण यहाँ का मुख्य व्यवसाय खिती बाड़ी हैं। जिसे ये झूम के नाम से पुकारते हैं। ये खेती उतनी ही करते हैं, जो इनके निर्वाह के लिए पर्याप्त हो। खेतो कबीले के नाम से बोई जाती है, जिसे पूरे का पूरा कबीला या गाँव सामूहिक रूप से करता है और जिसके लिए ज़मीन का चुनाव पहले से किया जाता है कि उन्हें कौन सी भूमि में "झूम" करती हैं।

मुठभेड़ में मणिपुर के 3 उग्रपंथियों की मृत्यु

मणिपुर के लामडिंग ग्राम के निकट 12 नवम्बर 78 को नागरिक पुलिस तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जवानों के साथ हुयी मुठभेड़ में, 3 मेती उग्रपंथी मारे गये,

एक गम्भीर रूप से घायल हुआ और दो पकड़े गये। गोलाबारूद भी हाथ लगा।

पुलिस की ओर से, कार्रवाई के नेता 24 बटालियन (के० रि० पु० बल) के कमांडैंट नरेन्द्र पाल, एक नागरिक पुलिस का सब इन्स्पेक्टर और के० रि० पु० बल के 4 जवान जख्मी हुये।

जुलाई 78 में, एक नागरिक पुलिस जन की हत्या में तथा बैंक के सहित कई डाकों में, उन उग्रवादियों का हाथ बताया जाता था।

<u>कविता:</u>

सिपाही को विदाई

[रचयिता-कां० राज देव तिवारी, 24 बटा०]

नहीं चाहता था, तुम्हें छोड़ करके, कहीं दूर जा कर अलख मैं जगाऊँ।
बिता संग तुम मास दो ही सदन में, सकल साल अपनी-अकेले बिताऊँ।
मुझे याद हैं, जब न फूले समाये, तुम्हें निज हृदय में कमी था बिठाया।
कभी सोच पाया न था स्वप्न में भी, सकूँगा कभी देख तेरी न छाया।
हज़ारों हसीना नज़र से गुजारीं, मगर तुम सभी से कहीं खूबसूरत।
जिग़र को जलाऊँ, भला आज क्या कह? मिली चित्त मन्दिर से मंजुमूरत।
बँधा जिन्दगी से मृदुल प्रीति बन्धन, मगर क्या कहूँ कुछ कहा है न जाता।
लिखा जो मुकद्दर उसे कौन जाग में, कभी, कौन, कैसे भला मेट पाता।
मुहब्बत भरे दिन, हमारे तुम्हारे, तडपते हुये अब जुदा हो रहे हैं।
विरह-वेदना को विलखते निरख कर, कहीं पास बैठे खुदा रो रहे हैं।
न छोटा करो दिल, कभी ख्वाब में भी, करूँ वायद जल्द आ मैं मिलूंगा।
महज़ छोड़कर जा रहा जिस्म से हूँ,मगर गुल के मनिंद रूह में खिलूंगा।
सती उर्मिला तो यहाँ ही हुई हैं, जिन्होंने विरह-दीप वर्षों जलाये।
उन्हीं की कहाती हो, संतान तुम भी,धरो धैये तुम-वक्त बिगड़ी बनाये।
चलें;-अब बहुत दूर, अवकाश ले कुछ, जहाँ से मिलन हेतु हम पास पाये।

हमें दो विदाई, गले लग खुशी से, पता क्या किसे, रंग पल कौन लाये।



<u>कमांडेन्ट सम्मेलन</u>

कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 39वें वार्षिकोत्सव पर 23 से 25 अक्टूबर 1978 तक ग्रुप केन्द्र नीमच में कमांडैंटों का सम्मेलन हुआ। इसका उद्घाटन श्री आर. सी. गोपाल, महानिदेशक ने किया।

अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए, उन्होंने कहा-'अधिकारियों, जवानों और उनके परिवारों का कल्याण, मेरी प्राथमिक ताओं की सूची में बड़े ऊँचे क्रमांक पर है। मैं मृत्यु-सम्बन्ध लाभ बढ़ाना चाहूँगा; प्रशिक्षण सुविधायें सुधारना चाहूँगा; ग्रुप केन्द्रों में अधिकारियों और जवानों के बच्चों के लिए छात्रावास खोलना चाहूँगा और चाहूँगा अन्य कल्याणकारी उपाय करना, जिनके विषय में मुख्यालय विचार कर रहा है। मैं यह चाहता हूँ कि सभी अधिकारी अपने जवानों की देखभाल करें। यह उनकी सर्वोपरि चिन्ता होनी चाहिए।"

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अधिकारियों को अपने जवानों से अलग-थलग नहीं रहना चाहिये।

सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों तथा पूर्व इमरज़ेंसी कमीशन पाये

अधिकारियों के बीच वरीयता के प्रश्न के सन्दर्भ में, उन्होंने बताया कि महानिरीक्षक से० III के अधीन एक समिति का गठन हो चुका है। नियमानुसार उसके द्वारा निर्धारित वरीयता के निर्णय को सभी स्वीकार करेंगे-ऐसी उनकी आशा थी।

उन्होंने यह जानकारी भी दी कि हरेक प्लाटून के सेक्शन के इस प्रकार पुनर्गठन के प्रस्ताव को सरकार की स्वीकृति-हेतु भेजा है, जिससे निम्नस्तर पर पदोन्नति के बारे में सुधार हो। उन्होंने यह भी आश्वासन दिलाया कि **'जो दो बटालियन इन्हीं दिनों विघटित हुई हैं, उन्हें फिर से खड़ी करने के लिये मैं चेष्टा करूँगा और सरकार के समक्ष उनकी सार्थकता सिद्ध करूँगा।"**

के० रि० पु० बल के अधिकारियों के अलग सम्वर्ग बनाने की सिफारिश भी सरकार से की जायेगी।

महानिदेशक का विचार था कि प्रशिक्षण संस्थानों में निरत अधिकारी, पारिवारिक जीवन निर्विघ्नतापूर्वक बिताते हैं; अतः प्रशिक्षण संस्थानों में नियुक्ति काल की अवधि पूरी करने के बाद, उन्हें अपनी इच्छानुसार नियुक्ति देने की आवश्यकता नहीं है।

प्रशिक्षण के कोसों के हेतु और मुख्यकर देश में ही, अधिकारियों को भेजने के यत्न करने का उन्होंने वचन दिया।

यह तय हुआ कि अधिवर्ष सेवानिवृति के लिये 58 वर्ष की आयु करने के सुझाव पर महानिदेशालय द्वारा विचार होगा।

यह निर्णय हुआ कि सब से ज्येष्ठ सहायक कमांडैण्ट, सेकंड-इन-कमांड (कमान में द्वितीय) कहलाया करेगा। उसे 'ए' (प्रशासन) और 'क्यू' (संभरण) कार्यभारों में क्या दिया जाये, यह निर्णय कमांडैंन्ट को रहेगा। इस विषय में ग्रुपकेन्द्र और बटालियन की नियमावलि को उपयुक्त संशोधित करने के लिए प्रशासन-अनुभाग गृह मंत्रालय से अनुरोध करेगा।

यह तय हुआ कि सेक्टर महारीक्षक विभिन्न राज्य सरकारों से, के०रि०पु० बल के सदस्यों के बालकों के लिए, चिकित्सा तथा इन्जीनियरिंग कालेजों में स्थान पाने के लिये आग्रह करेंगे।

यह निर्णय लिया गया कि हरेक ग्रुप केन्द्र में अफसरों के लिए एक मेस, एक शुष्क, कैंटीन, और एक सहकारी दुकान स्थापित की जायेगी।

कार्यकुशलता पर बिना आँच आये, लेखन कार्य में काम करने के हेतु तथा विवरणों और प्रतिवेदनों (रिपोर्ट एण्ड रिटर्न) को सुधारने के लिये, उपमहानिरीक्षक अजमेर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ।

यह भी तय हुआ कि प्रशिक्षण संस्थान, मौलिक प्रशिक्षण तथा सेवारत प्रशिक्षण के विषय में पाठ्यक्रम सुधारें; मुख्यकर गहन प्रशिक्षण को बटालियनों के स्तर पर देना चाहिये। विशेषोपयुक्त कोर्स भी यथावश्यक चलाने चाहिये।

एकांकी

परिवार कल्याण केन्द्र

ले०-श्री ज्ञानसिंह रावत

[लगभग पाँच साल सामावर्ती राज्यों में, तैनाती के बाद, ग्रुपकेन्द्र रामपुर में अपनी बदली पाते ही एक फैमीली क्वार्टर अपने नाम आवंटित करा कर, के०रि०पु० बल का एक जवान अपनी पत्नी को रिक्शा में बिठाये पूर्वीय द्वार से लाते हुये वार्तालाप करता जाता है]

पति– (चारों ओर तर्जनी घुमाता हुआ) देखा, तुमने हमारा ग्रुप केन्द्र ! कितने लम्बे-चौड़े क्षेत्र में बसा हुआ है।

पत्नी– (एक नामपट्ट पढ़ते हुये) ऐं ! यह क्या ? परिवार कल्याण केन्द्र ?

पति– हाँ, प्रिये ! यह हमारे ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण केन्द्र की इमारत है।

पत्नी– ठीक है पर इतनी बड़ी इमारत ! भला इसमें इतने सारे कौन-कौन से कल्याण के काम होते हैं ?

पति– अवश्य बताऊँगा, प्रिये ! किन्तु यह देखो, हमारा क्वार्टर आ गया। लो पहले अपने हाथों से इसका उद्घाटन करो। रोको, भाई रिक्शा वाले । (रिक्शा रुकती है) यह लो अपना भाड़ा, ठीक है ना (मुस्काता है)

रिक्शावाला (पैसे गिन कर सैलूट मारता हुआ) बिल्कुल ठीक ! (प्रस्थान)

पति (पत्नी को क्वार्टर के भीतर प्रवेश कराते हये) देखो प्रिये, यह कमरा बैठने का, दूसरा यह सोने का और तीसरा यह सामान रखने का तथा यह रहा किचन, उधर स्नानागार और शौचालय।

पत्नी- वाह, स्वर्ग है। दो आदमी और इतने सारे कमरे।

पति- यह हमारी सरकार और महानिदेशालय की कृपा है। उन्होंने ही हमारे परिवार कल्याण केन्द्र की योजना बनाई है।

पत्नी- फिर बताइये तो सही। उस समय भी आप कल्याण केन्द्र का परिचय देते देते रह गये।

पति- (पत्नी की ठोढ़ी प्रेमपूर्वक हिलाते हुये) प्रिये-परिवार कल्याण केन्द्र सचमुच में हमारे कल्याण की कामधेनु है; भलाई की कल्पलता है। उसमें हम जवानों की तुम जैसी पतिव्रता गृहणियों को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई वगैरह की शिक्षा दी जाती है ताकि

तुम सब काम सीख कर, अपने परिवार का काम खुद कर सको। उससे हमारी आर्थिक स्थिति भी मज़बूत हो।

पत्नी- परिवार का काम खुद करना, फिर आर्थिक स्थिति मज़बूत-(साश्चर्य) यह सब गोरखधंधा मेरी समझ में नहीं आया (हाथ हिलाती है)।

पति- तुम्हारी समझ में आने की बात भी नहीं है। क्योंकि ऐसी सुविधा तुमने कब सुनी है ? कहाँ देखी है ? (हँस कर) प्रिये, सिलाई सीख जाने पर परिवार के लिये ही नहीं, यहाँ महिलायें अन्य जवानों के लिये भी कमीज़, पैन्ट, टोपी, निकर वग़ैरह तरह तरह के कपड़ों की सिलाई करती हैं।

पत्नी- (सिहर कर) हे भगवान ! यह भी एक ही रही। पुरुषों के साथ-साथ, हम पत्नियों से भी बेग़ार ली जाती है यहाँ।

पति- डरो मत भाग्यवान ! इसका उचित पारिश्रमिक दिया जाता है। एक-एक महिला 100 से 200 रु० तक प्रति माह प्राप्त कर लेती है।

पत्नी- (मुस्करा कर) क्या सच ? तब तो पौ बारह हैं।

पति- निश्चय। तभी मैं कह रहा था कि परिवार की माली हालत सुधर जाती है। इतना ही नहीं-

पत्नी- क्यों, चुप क्यों हो गये ? सब लाभ गिना डालिये।

पति- तुम गांव में कहती थीं ना, कि खाली समय यहाँ कैसे कटेगा?

पत्नी सो तो है ही। कहा है-खाली से बेग़ार भली।

पति- (हँस कर) सो तुम खाली भी नहीं रहोगी और बेग़ार की जगह जेब भी भरोगी।

पत्नी- जेब तो मर्दों की भरती है, हमारी तो पर्स (पर्स घूमाती चंचल नेत्र चला कर) और इसके लिये मैं कल ही से जाऊँगी। आख़िर मेरी मायके की सीखी सिलाई कब काम आयेगी?

पति- बेशक़ ! साथ में आनन्द अलग। जब अलग अलग प्रदेशों की सौ डेढ़ सौ महिलायें अपनी अपनी भाषा में बात करती हुई सिलाई मशीनों को गति देती हैं; तब देखते ही बनता है।

पत्नी- आप क्यों मुख में पानी भरे जा रहे हैं ?

पति- अब तुम ग़लत ! कहो मेरे हाथ सीने को खुजला रहे हैं ? (हँसता हुआ) मुख में पानी भरने की बात तो यह है कि यहां पर भी डिटैचमैंट भत्ता मुझे मिलेगा।

पत्नी- तब आप बड़े वह हैं जी । वैसे ही झूठा घबड़ा दिया था घर पर ।

पति- ऐसा इल्ज़ाम मत लगाओ ! सचमुच वह भत्ता तो यहाँ नहीं मिलेगा; लेकिन उसकी पूर्ति तुम्हारे पारिश्रमिक से तो हो जायेगी। मेरी आय में तो कोई कमी नहीं

आयेगी (मुस्कराता) बाप मरा और बेटा भया, उसका टोटा इसमें गया।

पत्नी- वाह क्या ही अच्छी योजना है ? आम के आम गुठलियों के दाम (हँसती है)।

पति- बिल्कुल (हँस कर) अच्छा, तब बोलो मेरे साथ-'पारिवार कल्याण केन्द्र की जय ।"

(पत्नी जय घोष करती है)

॥ पहेलियाँ ॥

[प्रस्तोता- **दफ्तरी गणेशप्रसाद ग्रुप केन्द्र जम्मू**]

बाली उम्र में छत पर पटका,
तरुणि जलाई ज्वाला ।
गर्भवती हो जब मैं निकली,
सब का बनी निवाला ॥ 1 ॥
कमर पकड़ कर साथ चले,
वह दो पैरों को प्यारी है।
टांग उठा कर सब ने डाली,
मत समझे कोई गाली है ॥ 2 ॥
सभी मनुज के चार सन्तरी,
रोके खड़े अकाश ।
संगीनें दो-दो लिये,
रात सुलावें पास ॥ 3 ॥

उत्तर - 1. रोटी 2. पेन्ट 3. चारपाई

* सूक्ति सुधा *

1. जो मेहनत नहीं करता, उसके साथ देवता मित्रता नहीं करते ।--- **ऋग्वेद**
2. मनुष्य अपने दोषों से डरता है -**शूद्रक**
3. कष्ट भोगने के बाद ही सुख की शोभा जानी जाती है। -**भास**

स्वास्थ्य संदेश

प्राकतिक चिकित्सा

लेखक : श्री सुरेश चन्द्र सक्सेना

शरीर में जब कभी किसी व्यक्ति के विजातीय द्रव्य प्रवेश कर जाता है, तब रोग उत्पन्न होते हैं । विजातीय द्रव्य से प्रयोजन है ऐसा पदार्थ, जिसको शरीर पचान सके तथा पाचन क्रिया के समय जिसका रस न बन सके।

साधारणतया जन्म के समय प्राणी नीरोग होता है। यद्यपि कभी-कभी कोई जन्म के समय से ही माता या पिता अथवा दोनों के विकारों के मिले-जुले परिणामों को भोगता है । ऐसे अपवादों को छोड़कर, हमें यह देखना है कि जन्म के पश्चात् किन-किन कारणों से रोगों की उत्पत्ति होती है।

संसार के अगणित प्राणियों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो प्रकृति के नियमों का पालन भले प्रकार से नहीं करता है । अन्य प्राणियों की अपेक्षा, वह ही सब से अधिक बुद्धिमान्, एवं सूझबूझ रखने वाला है; परन्तु वही प्रकृति के विरुद्ध भी सब से अधिक चुनौती देता रहता है। पशु-पक्षी किसी कारणवश यदि अस्वस्थ हो भी जाते हैं, तब स्वतः भोजन छोड़ देते हैं; परन्तु मनुष्य अस्वस्थ होने पर भी कुछ न कुछ अवश्य खाना चाहता है। प्रकृति का नियम है कि शरीर जब अस्वस्थ हो, तब भोजन और औषध नहीं चाहिये; उसे केवल आराम चाहिये।

अस्वस्थ होने के दो कारण हैं। एक आध्यात्मिक तथा दूसरा भौतिक । इनको क्रमशः सूक्ष्म एवं स्थूल भी कहा जा सकता है। आध्यात्मिक दृष्टि से यदि हम देखें, तब हमें ज्ञात होगा कि जिस प्रकार से विषयों के बीच हमारा जीवन व्यतीत हो रहा है, उसी के अनुरूप हमारे शरीर पर भी प्रभाव पड़ रहा है। गन्दे विचारों के संस्कार हमारे मन, बुद्धि एवं अन्तःकरण पर निरन्तर पड़ते रहने पर उनमें विकार उत्पन्न करते हैं । दूषित मन, बुद्धि या अन्त: करण का प्रभाव शरीर पर पड़ता है और शरीर अस्वस्थ हो जाता है । अतः मन, बुद्धि तथा अन्तःकरण का शोधन परम आवश्यक है। हमारे ऋषि-मुनि ध्यान-स्मरण, योगासन आदि से इनमें विकार उत्पन्न होने ही नहीं देते थे और इसी कारण, नीरोग रहते थे और दीर्घ जीवी होते थे।

एक कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन होता है; परन्तु इसका उल्टा भी उतना ही सत्य है। यदि मन मरा हुआ है और विकारयुक्त है; तब शरीर भी साथ नहीं देता है, वह सुस्त, निष्क्रिय तथा निस्तेज रहता है । मन, बुद्धि तथा अन्तःकरण में विकारों से बचाने के लिए, भगवत्-कृपा के साथ-साथ, भजन-पूजन तथा सत्संग भी रामबाण औषध है।

भौतिक कारणों के देखने से हमें यह ज्ञात होता है कि असन्तुलित, अखाद्य एवं

अनियमित भोजन करने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है। जैसा हमारा भोजन होगा, उसी के अनुरूप हमारी मांस-पेशियाँ बनेंगी और हमारे शरीर का निर्माण होगा। शरीर की पुष्टि के लिये, सन्तुलित भोजन की नितान्त आवश्यकता है। शरीर को जिन तत्वों की आवश्यकता है, भोजन द्वारा वे तत्व शरीर में पहुँचाना परमावश्यक है। जीभ के स्वाद के स्थान पर शरीर के पोषण के लिए, भोजन की आवश्यकता होती है।

खाने-पीने की वस्तुओं के अलावा, हमें 6 से 8 गिलास तक पानी रोज़ पीना चाहिये। गर्मियों में या ज्यादा परिश्रम करने से पसीना ज्यादा निकलने के कारण, अधिक पानी पीने की आवश्यकता है। सुबह उठते ही निहार मुंह ठण्डा पानी पीने से, पाखाना खुल कर हो जाता है। खाना खाने के एक-आध घंटे पहले, एक गिलास गर्म पानी पीने से, खाने के पचाने में सहायक होता है। थोड़ा पानी खाने के साथ भी पिया जा सकता, है परन्तु खाते समय बर्फ का पानी नहीं लेना चाहिये।

इस विषय में कहावत है :

नींबू पानी जो पिये, घूमे सुबह व शाम।

आयु उसकी नित बढ़े, नहीं वैद्य का काम॥

पेट के हर प्रकार की बीमारियों से बचने के लिये सभी पोषक तत्वों को निर्धारित मात्रा में भोजन लिया जाये। हरी सब्जी, फल, दालें आदि के खाने से, पेट साफ़ रखा जा सकता है। काफ़ी मात्रा में पानी पीना लाभदायक होता है। इस प्रकार मनुष्य स्वस्थ रह सकता है और उसे बेकार. ही दवाइयाँ खाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

आधा खाइये, दुगना सोइये।

तिगुना पीजिये, चौगुना हँसिये।

रोग शोक के पास न बसिये।

एक बार गरुड़ के पूछने पर कि कौन रोग रहित है, धन्वन्तरि ने उत्तर दिया कि नीरोग वह रह सकता है 1. जो भोजन में कुपथ्य नहीं खाता है, 2. जो परिमित मात्रा में भोजन करता है, 3. जो शाक सब्जी व फ़ल खाता है, 4. जो रात्रिभोज के बाद सौ पग चलता है, 5. जो मध्याह्न भोजन के बाद थोड़ी देर बायीं करवट लेटता है तथा 7. जो मत्र तथा पुरीष (मल) के वेग को नहीं रोकता है।

हिन्दी सम्पादक

* अग्निशमन *

जब 16 नवम्बर 1978 को, कुछ प्रारक्षण विरोधियों ने गया में राज्य परिवहन की

एक बस को जलाने की चेष्टा की, तब के०रि०पु० बल के जवानों ने आग को बुझा दिया।

जब 7 नवम्बर 1978 को तथा-कथित कुछ छात्रों ने थाऊबल कालेज़ की इमारत में आग लगानी चाही, तब के० रि० पु० बल के जवानों की सहायता से वह बुझा दी गई।

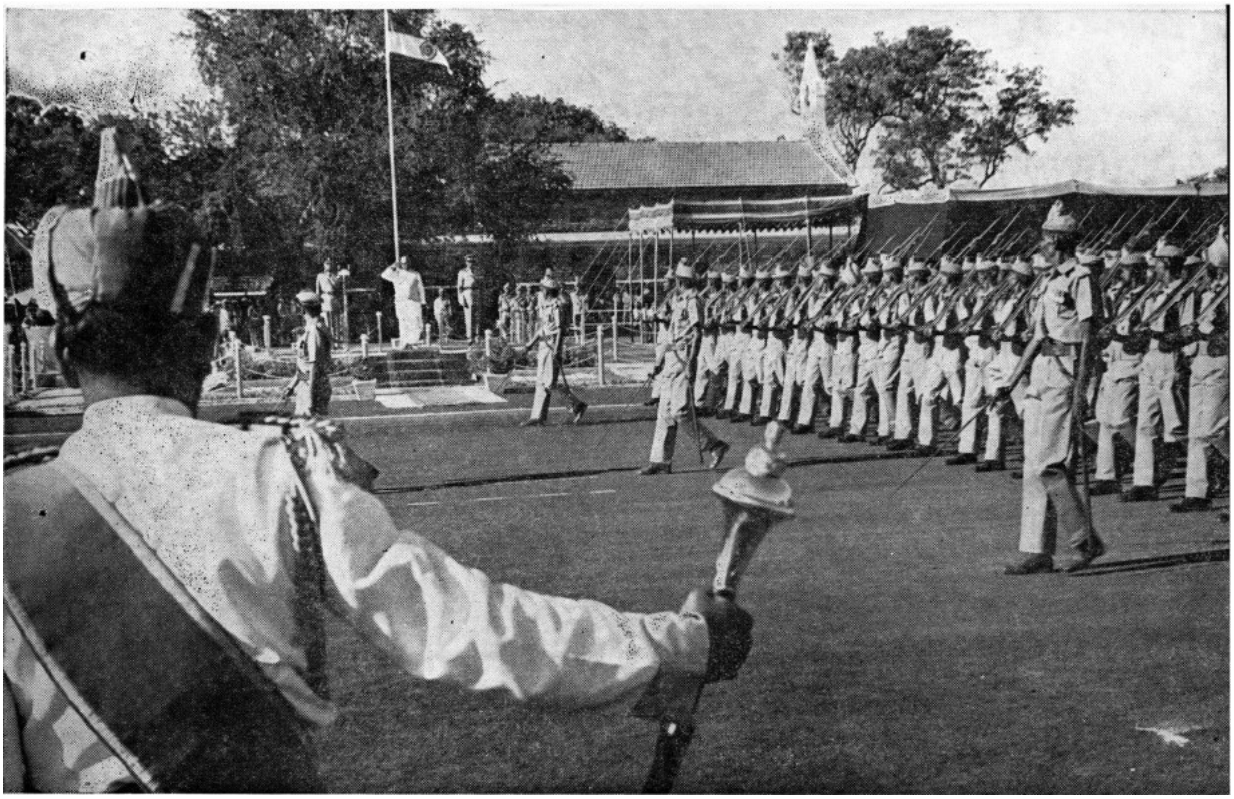
विज्ञान के चढ़ते चरण

• फ्रांस में सभी प्रकार की **रोटियाँ बनाने की मशीन** का निर्माण हुआ है, जिसमें आटा गूँथने का यंत्र, तोलने का यंत्र, रोटी को गोल करने की व्यवस्था, ढलाई का यत्र, नियंत्रिक राइजिंग कक्ष और एक भट्टी लगी है ।

• राष्ट्रीय एलर्जी सेन्टर में किये गये अध्ययन से पता चला है कि दमा के 50% रोगी **जंगली पिकावन या अन्तमूल** की थोड़ी सी खूराक से बड़ा लाभ पाते हैं।

• सौर ऊर्जा से चलने वाली तीन पहियों की साइकल का निर्माण पच्छिमी जर्मनी में हुआ है, जो 20 कि० मी० प्रति घंटे की गति से चलती है।

• भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स कम्पनी ने दिल्ली के मौर्य होटल में पानी गर्म करने के लिये एक सौर हीटर लगाया है।



गृह मंत्रालय की दीर्घा में के० रि० पु० बल का सम्मान

दिनांक 22 अक्टूबर 1978 को नीमच (म० प्र०) में आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 39वें वार्षिकोत्सव के सामारोहिक परेड के अवसर पर अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए, **श्री धनिक लाल मण्डल,** गृह राज्य मंत्री ने कहा **'गृह मंत्रालय की दीर्घा में आपका बड़ा सम्मान है। आपके बिना मंत्रालय चल ही नहीं सकता।'**

इस बल की आवश्यकता बढ़ी ही है, जिसके कारण सरदार पटेल ने इस को बनाये रखने में दूरदर्शिता दिखाई थी। **गृहराज्यमंत्री ने इस बल के और विघटन की आशंका को दूर किया।** सक्षम कार्रवाई के लिये, इस के पुनर्गठन को अलवत्तः सोचा जा रहा है।

आन्तरिक सुरक्षा के लिये सम्वैधानिक प्रावधान के फलस्वरूप, केन्द्र की भारी ज़िम्मेदारी है। देश में संधान (फेडरल) प्रणाली के स्थान पर संघ पद्धति है। अतः एकता बनाये रखना केन्द्र का दायित्व हो जाता है। इन सब ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिये, केन्द्र को के० रि० पु० बल की बड़ी आवश्यकता रहती है।

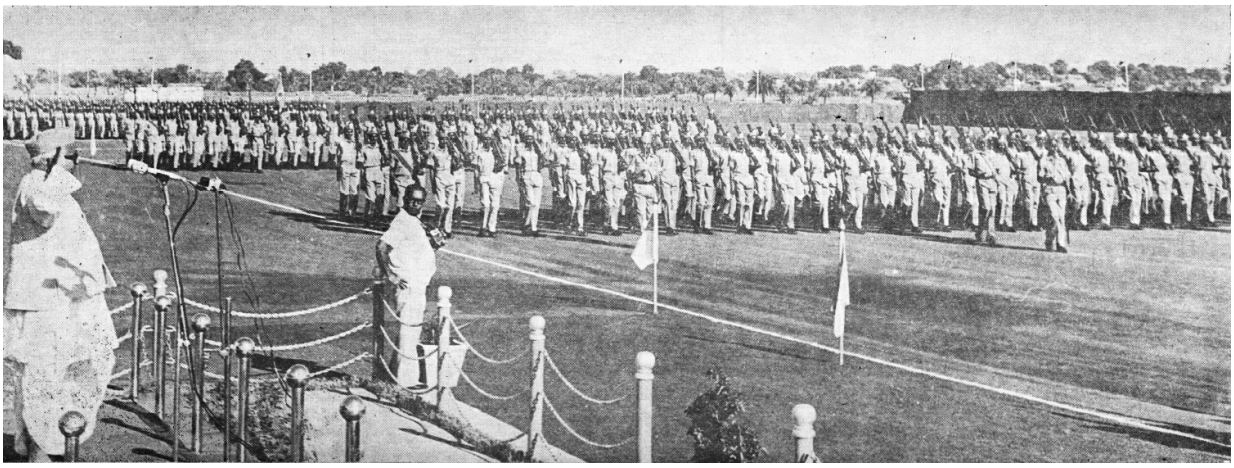
पूर्वोत्तरीय राज्यों में, के० रि० पु० बल को राजद्रोह से निपटने के लिये लगाया गया था और भविष्य में जहाँ कहीं देश की अखण्डता पर आँच आयेगी, वहीं इस बल को लगाया जायेगा।

गृह राज्य मंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया कि ये राज्य ही हैं, जो के०रि०पु० बल को मांगते रहते हैं। केन्द्र ने कभी इस बल को किसी राज्य पर खुद नहीं थोपा । राज्यमंत्री ने इस बात की बड़ी प्रशंसा की कि जिस किसी राज्य में यह बल भेजा गया, वहाँ इसने नाम ही कमाया। उन्होंने आन्ध्र प्रदेश का उदाहरण दिया, जहाँ कांग्रेसी शासन होते हुए भी, साम्प्रदायिक दंगों में शान्ति स्थापित कराने में इस बल के योगदान की वहाँ की सरकार ने प्रशंसा की है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के कानपुर, अलीगढ़, आगरा तथा पन्तनगर में, किसी ने भी इस बल के लौटाने की मांग नहीं की। इस से इस बल की साख का पता लगता है । आवश्यकता के समय, यह बल कभी पीछे नहीं रहा है और जहाँ भी गया, वहाँ कम से कम समय में बुरे तत्वों पर धाक बिठा कर, इसने अपनी कार्य कुशलता का परिचय दिया है।

श्री मंडल के मतानुसार, जब कि उपद्रवियों के लिए पुलिस को कठोर होना चाहिए, उसे न्यायनिष्ठ लोगों के प्रति नम्र होना चाहिए। उसे जनता का मित्र बनना होगा; किन्तु आजकल दुर्भाग्य से ऐसी स्थिति नहीं है; परन्तु उन्होंने तुरन्त यह जोड़ दिया कि इस टिप्पणी से के० रि० पु० दल का कोई सन्बन्ध नहीं है।

बाहरी आक्रमणों से निपटने वाली इस बल की भूमिका की उन्होंने उन्मुक्तकण्ठ से सराहना की। इस संदर्भ में, उन्होंने चीनी आक्रमणकारियों से हाट-स्प्रिंग पर इस बल के लोहा लेने की चर्चा की, जहाँ इसके 10 जवानों ने प्रारण बलिदान किये थे।

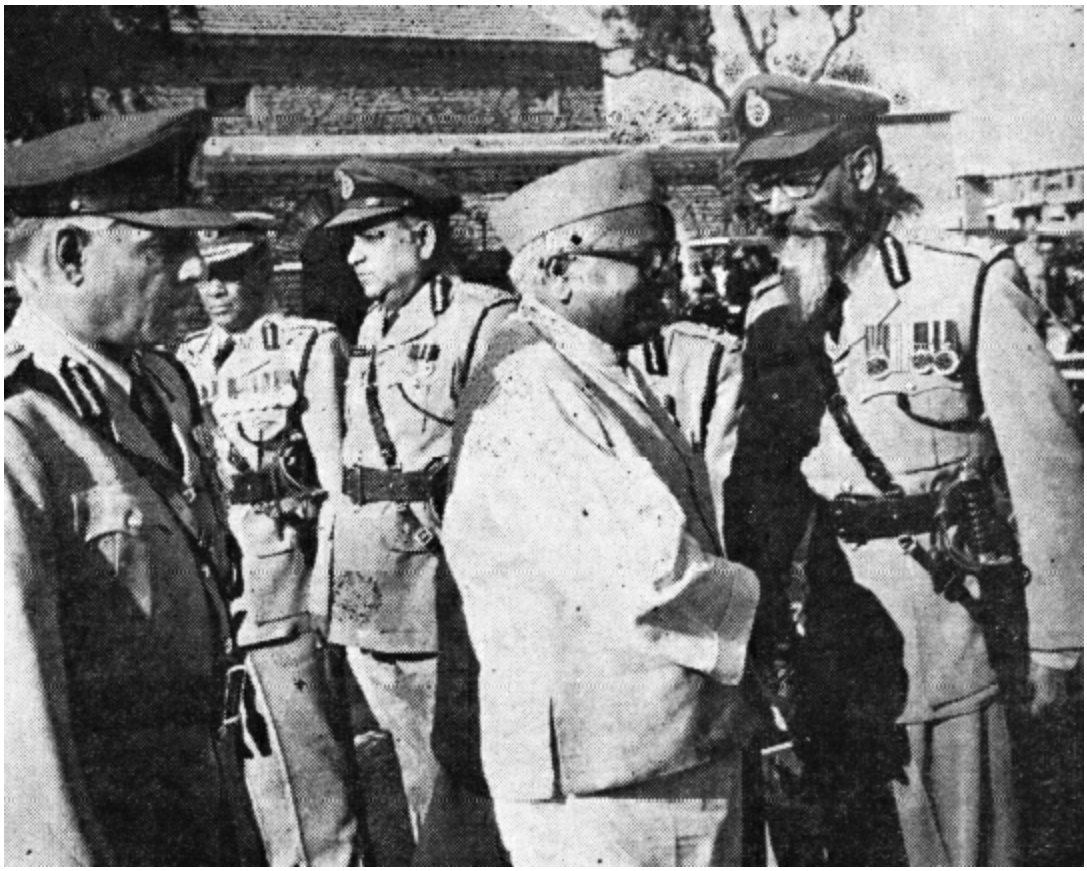
के० रि० पु० बल के 39वें वार्षिकोत्सव की कुछ झलकियाँ



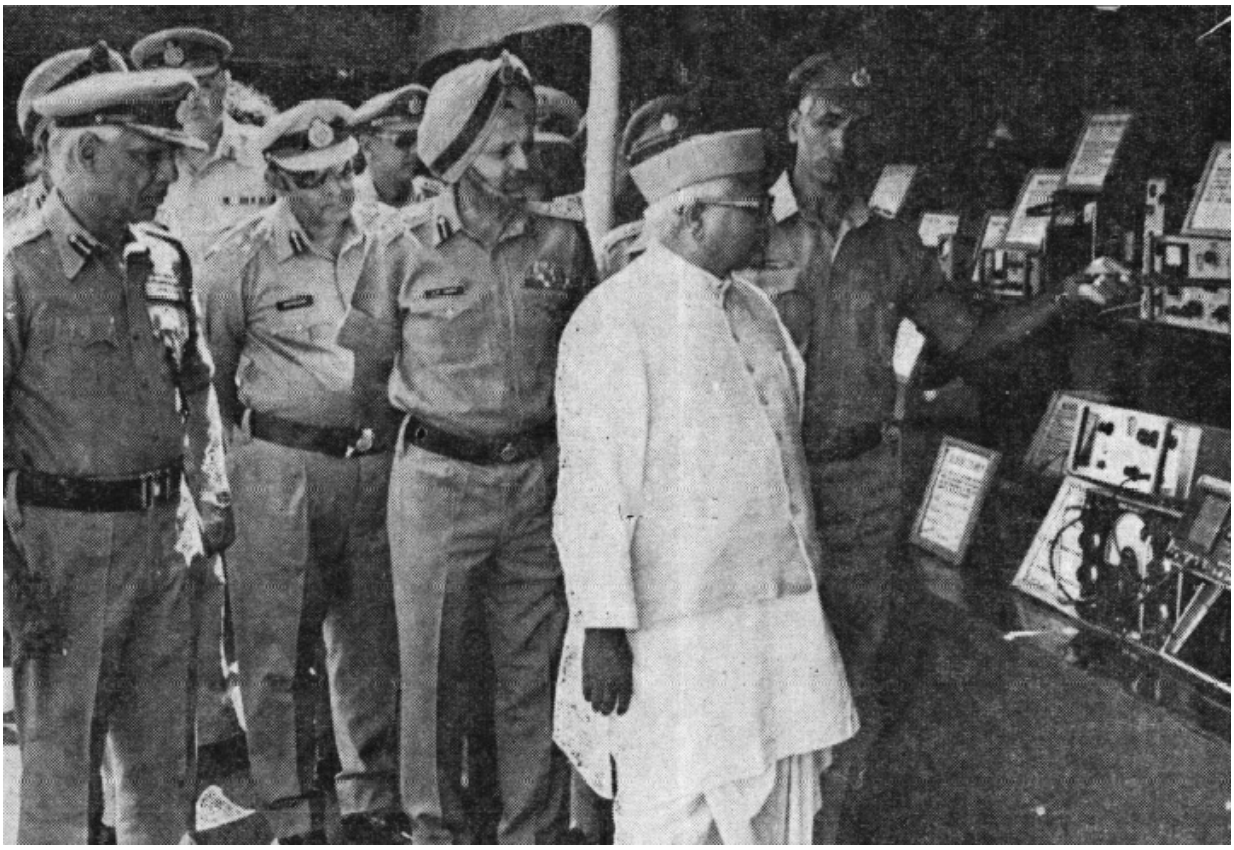
परेड की सलामी लेते हुये गृह राज्यमंत्री श्री धनिक लाल मण्डल



वीरता पदक विजेता ठाकुर लालबहादुर और सुधीरचन्द के पदक लगाते हुये गृह राज्य मन्त्री



गृह राज्यमंत्री से वरिष्ठ अधिकारियों का परिचय कराते हुए श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक



सिगनल प्रदर्शनी का निरीक्षण करते हुए गृह राज्य मन्त्री



कल्याण प्रदर्शनी देखते हुए श्री आर० सी० गोपाल महानिदेशक

1965 के भारत पाक युद्ध में भी, इस बल ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इन सब दृष्टान्तों से, इस बल के प्रशिक्षण तथा नेतृत्व के उच्च स्तर का पता चलता है।

उन्होंने लोगों से अनुशासन तथा सम्मिलित काम करने की भावना ग्रहण करने का अनुरोध किया, जो के० रि० पु० बल में प्रचुर मात्रा में हैं। उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि इस बल की समस्याओं से सरकार भली भाँति परिचित है और इसके कल्याण के लिये वह कोई कोर कसर उठा नहीं रखेगी। उन्होंने पदक विजेताओं को बधाई दी तथा बताया कि ये पदक उन लोगों ने कर्त्तव्यपालन, वीरता तथा बुद्धिमत्ता से प्राप्त किये हैं।

श्री मंडल ने शानदार परेड की सराहना की और देश के सर्वोत्तम दलों में से के० रि० पु० बल एक बताया।

इससे पूर्व, श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक के० रि० पु० बल ने मंत्री महोदय का स्वागत किया। तदुपरान्त, सरदार पटेल को सब ने पुष्पांजलि चढ़ाई। मंत्री महोदय ने सिगनल प्रदर्शनी का भी निरीक्षण किया।

आजकल पुलिस कार्यवाई की नैतिकता

[ले०—श्री आर० डी० शर्मा]

किसी भी सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति या साधारण मनुष्य के लिए, 'पुलिस' शब्द के अर्थ उस असैनिक दल से हैं, जो लोक व्यवस्था बनाये रखता है। सारे देश, और समाज के बड़े वर्गों या किसी विशेष स्थान तक को ध्यान में रखते हुए, लोकव्यवस्था जनजीवन की सन्तुलित गति है।

इस उद्देश्य को पाने के लिये, हरेक पुलिसजन को व्यवस्था बनाये रखना अपना धर्ममान लेना चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र में किसी भी प्रकार के अपराध या उपद्रवों को उसके द्वारा दमन होना चाहिये। इस सन्दर्भ में, गुरू नानक का निम्नलिखत उपदेश याद आ जाता है—"अपना मन और आत्मा सेवा में लगाओ। परमात्मा में विश्वास करो और अपना कर्त्तव्य निभाओ। दुर्भावना पर काबू रख कर, ऐसा काम करो कि सब तुम्हारी प्रशंसा करें । प्रभु की तुम पर तब कृपा होगी और महिमा की कई गुना बृद्धि होगी।"

हरेक पुलिसजन को अपनी भूमिका ज़िम्मेदारी के साथ निवाहना है; अपने कर्त्तव्य धर्मपूर्वक पालन करने हैं; अपने अधिकारों को सावधानी से काम में लाना है; समय रहते अपराधों की रोकथाम करनी है और अपनी सेवा प्राणपण से करते हुए लोक व्यवस्था बनाये रखना है। समाज के विविध क्षेत्रों में उसे भाई, पिता तथा उपदेशक के रूप में काम करना है और समय-समय पर उदारता व दृढ़ता की उपयुक्तता की उम्मीद उस से की जाती है।

अनेकों कर्त्तव्यों तथा ज़िम्मेदारियों और सेवा की कठोरता के कारण, पुलिसजन बड़े तनाव-खिंचाव में रहता है। इसलिये पुलिसजन के कल्याण की ज़िम्मेदारी समाज पर आ पड़ती है कि वह देखे कि क्या पुलिसजन अपने कर्त्तव्य भलीभाँति निभा रहा है।

जहाँ तक लोक कार्य-व्यवहारों को नियमित करने और शान्ति हेतु विहित मौलिक अधिकारों और पाबन्दियों का सम्बन्ध है, देश का क़ानून मनुष्य-मनुष्य में कोई भेदभाव नहीं बरतता है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—'हमें सर्व देशीय उदारता में केवल विश्वास ही नहीं, बल्कि सब धर्मों में सच्चाई की आस्था रखना है।'

नेक नीयत से किये गये कामों के लिए चालान या बन्दी होने से पुलिसजनों को देश का क़ानून बचाता है और पूर्व इसके कि कोई दण्ड देने की कार्रवाई शुरू हो, उनको "सुने जाने का उपयुक्त अवसर" प्रदान करता है । इसलिए क़ानून बनाने वालों ने एक आदर्श सन्तुलन रखा है। अतएव, पुलिसजन को अपने जीवन और कार्यव्यवहारों में उच्चकोटि की ईमानदारी, विनम्रता, साहस तथा सदाचार दिखाना चाहिए।

क्रोधावेश में उच्छृंखल जनसमुदाय या उग्र भीड़ से निपटते समय, पुलिसकर्मी से अनुरोध, परामर्श, चेतावनी तथा बलप्रयोग के प्रदर्शन की नीतियों को अपनाने की आशा की जाती है। जब ये सब विफल मनोरथ रहें, तब कम से कम न्यायसंगत बल का प्रयोग किया भी जा सकता है।

डॉ०एस० राधाकृष्णन रचित "पूर्वीयधर्म तथा पश्चिम विचारधारा" नामक पुस्तक से उद्धरण देना यहाँ उपयुक्त रहेगा : 'एक आर्दश समाज में, जहाँ हरेक स्वाभाविक रूप से निःस्वार्थ तथा स्नेही हो, वहाँ किसी सरकार या बल की आवश्यकता नहीं होगी; किन्तु ऐसी आदर्श स्थिति मनुष्य मात्र के लिये प्रस्तुत कहाँ है ? सचमुच में, अपूर्ण स्थितियों में, शासन को हठधर्मी लोगों पर बल का प्रयोग करना ही होगा। वैसे, बलप्रयोग अपूर्णता का एक चिह्न है। सिद्धान्त से, जिस किसी में भी ज़ोर-ज़बरदस्ती की झलक हो, उसमें महाभारत की भाँति उस हद तक पूर्णता की कमी है। हमारी ऐसी धारणा हो सकती है कि अपराधी को दमन करने के लिए बल प्रयोग न्याय-सगंत है। ज़रूरी ज़ोर ज़बरदस्ती से दो नुकसान हैं । यह प्रयोगकर्त्ता में अपने ग़लत प्रयोग करने की प्रेरणा देता है और जिनके विरुद्ध यह काम में लाया जाता है, उनमें नाराज़गी पैदा करता है। बल-प्रयोग कुछ अवसरों तक ही सीमित रखना होता है, जहाँ अन्य चारा नहीं होता है, और जहाँ नैतिक मूल्य के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना होता है, ना कि ऐसी कार्यवाई के लिए उसे प्रयुक्त करना चाहिए, जो कठिनता से सामाजिक गड़बड़ फैलाने में विफल हो । जहाँ बल का प्रयोग ज़रूरी ही हो जाए, वहाँ उसे नैतिक भावना से प्रयोग में लाना चाहिए। बल के प्रयोग के लिए केवल इस लिए अनुमति नहीं दी जा सकती कि उसका कोई नैतिक ध्येय है; परन्तु उसे नैतिक ढंग से प्रयुक्त भी करना चाहिए।"

क़ानून ने पुलिसजनों को कुछ अधिकार दे रखे हैं। उनको प्रयुक्त करते समय, क्रियाविधि को ताक़ पर नहीं रखना होगा; वर्ना क़ानून के सच्चे प्रयोग का ध्येय ही ख़त्म हो जायेगा। जैसी आम कहावत है, अधिकार मनुष्य को भ्रष्ट बना देता है।

पुलिस के सम्मुख अनेक चुनौतियों में से एक बाल अपराधियों की समस्या है। निर्धन गृहस्थियाँ, टूटे परिवार, प्रतिकूल नौकरी तथा अवांछनीय साथी बाल अपराधों की जड़ हैं। इसलिए, इन अपराधों को पनपने नहीं देना चाहिये, जिससे बाल अपराधी पक्के गुनहग़ार नहीं बन जायें। इस क्षेत्र में पुलिसजन तथा समस्त समाज बहुत कुछ कर सकता है।

जयप्रकाश के शब्दों में—"भारतीय पुलिस पिछले उपनिवेशीय सरकार की क्रिया-विधियों तथा मानदण्डों से अपंग बनी हुयी है। प्रशासन के इस महत्वपूर्ण अंग के दृष्टिकोणों तथा कार्रवाई के विवरणों में, पुनर्गठन करना होगा।"

पुलिस का जनता और क़ानून के प्रति उत्तरदायित्व

लेखक—श्री के० एम० माथुर

आधुनिक राज्य में उत्तरदायित्व की समस्या ज्यों-ज्यों और जटिल होती जा रही है, त्यों-त्यों सरकारी गतिविधियों का क्षेत्र गहन और विस्तृत होता जा रहा है"

श्री एन० वी० गाडगिल

बाहरी ज़िम्मेदारी की कितनी भी अधिक मात्रा, अपने कार्यों के प्रति आन्तरिक उत्तर दायित्व का विकल्प नहीं हो सकती। एक लोकतांत्रिक सरकार की मंत्रीमंडल-पद्धति में इन बातों को माना जाता है—(क) सब सरकारी निर्णयों तथा नीतियों को निष्ठापूर्वक अनुपालन करने का प्रत्येक सरकारी नौकर का कर्त्तव्य; (ख) राजनीतिक निर्दलीयता, निष्पक्षता तथा अनामकता को सरकारी नौकरों द्वारा पालन तथा (ग) न्याय तथा जनता के प्रति सरकारी नौकरों द्वारा ज़िम्मेदारी । लोकतंत्रात्मक संगठन में संपूर्ण सत्ताधारी के रूप में संसद को जांचने, देखरेख करने, निदेश देने तथा नियंत्रण रखने का अधिकार है। संस्थात्मक शब्दावलि में, अधिशासक की ज़िम्मेदारी ही आधुनिक राजनीति का सार है।

जवाबदेही—ज़िम्मेदारी साधारणतया क़ानूनी या अंशता क़ानूनी और अंशता प्रशासनात्मक धारणा मानी जाती है—यह उपयुक्त अधिकारी को अपने आचरण तथा कार्रवाई के प्रति जवाबदेही रही है। प्रत्येक संगठन अपने उन ठोस कार्यों के लिए सरकार के प्रति ज़िम्मेदार होता है, जिन्हें वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्टों या अन्य नियतकालिक रिपोर्टों में प्रकाशित किया जाता है। उत्तरदायित्व की भावना में उन पुलिस- अधिकारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई भी आती है, जिनके आचरण के विरुद्ध शिकायतें मिलती हैं। 'स्वयं संगठन के प्रति पूर्णरूपेण देखरेख के लिए ही अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म प्रकार का उत्तरदायित्व है। इस कार्य में कुछ तो निरंतर जनशक्ति का विकास तथा नवीकरण होता है, कुछ परम्पराओं और आदर्शों के प्रति प्रीति रहती है तथा कुछ बदलती हुयी आवश्यकताओं के अनुरूप संरचना को ढालना होता है।' (लियोनॉर्ड डी० ह्वाइट–लोक प्रशासन के अध्ययन के लिए—एक भूमिका)।

इस प्रकार की ज़िम्मेदारी को अनुपालित करने के लिए, कोई औपचारिक संस्थानात्मक ढंग नहीं है। अपने कार्यों को उजागर करना, समझना तथा उचित ठहराना ही साधारण शब्दावलि में जवाबदेही है। यह उस ढंग को संकेत करती है, जिसमें वित्तीय या अन्य प्रकार की उन ज़िम्मेदारियों को निवाहना पड़ता है, जिनकी जड़ में चाहे राजनीति हो, या संविधान हो अथवा सर्वोच्च परम्परा हो। (डी० सी० हेग तथा वी० एल० आर० स्मिथ)।

जन सम्पर्क—सरकारी विभागों, प्रतिष्ठानों तथा स्वयं सरकार तक की प्रतिष्ठा, लोक-सेवियों तथा सरकारी नौकरों के साथ नागरिकों के असंख्य अनुभवों का मिश्रण है। किसी संगठन में पूर्ण व्याप्त जवाब देही का सब से महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वह स्वस्थ जन-सम्पर्क बनाये रखे, जनता उसे माने और उसके कार्यक्रम स्वीकार करे । सभी लोक सेवी तथा सरकारी कर्मचारी अच्छे जन सम्पर्कों द्वारा लोक समर्थन बनाये

रखने के लिए ज़िम्मेदार हैं तथा अपनी सफलता और असफलता के लिये, वे जनता के उत्तरदायी हैं। हमारी जैसी लोकतंत्रात्मक प्रणाली में, नागरिकों को शिकायतें करने तथा अपने अधिकारों के बचाने के लिए कुछ भीतरी उपाय हैं।

इनमें हैं—सरकार और जनता के प्रति सरकारी नौकरों की जवाबदेही, समाचार पत्रों की स्वाधीनता, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका की स्वतन्त्रता। अन्त में, उत्तरदायित्व उस लेखे-जोखे को कहते हैं, जिसमें कुछ न कुछ नियंत्रण अन्तर्निहित है, जब तक कि उसे खाली औपचारिकता ही नहीं माना जाये।

पुलिस की क़ानूनी स्थिति—पुलिस पर आयोजित शाही (रायल) कमीशन 1962 ने पुलिस की क़ानूनी स्थिति के विषय में लिखा है—"एक सिपाही की स्थिति न्यायालयों द्वारा यह परिभाषित की गई है कि वह एक ऐसा अधिकारी है, जिसका अधिकार मौलिक है व जो किसी और से नहीं सौंपा गया है; उसे वह अपने विवेक से पद के कारण काम में लाता है; वह न तो सम्राट का नौकर है और नाही वह किसी पुलिस अधिकारी का दास है।"

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इंगलैंड में पुलिस जन "क़ानून के अधिकारी हैं, नाकि सरकारी एजेण्ट हैं।" पुलिस को काम करने की आज़ादी की धारणा का समर्थन, भारत के सर्वोच्च तथा अन्य उच्च न्यायालय की विविध निर्णयघोषणायें एवं अपराध प्रक्रिया संहिता के प्रावधान करते हैं। अभिनानन्द झा बनाम सरकार अभियोग में यह माना गया है कि जिन मामलों में पुलिस का क्षेत्र है तथा जिनमें क़ानून ने उसे जांचपड़ताल का काम सौंपा है, उनमें न्यायपालिका को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

न्यायमूर्ति एच०एन० भगवती के अधीन केरल जांच समिति ने यह अभ्युक्ति की है —'पुलिस इस प्रकार सरकार की नौकर नहीं है कि क़ानून से सौंपे गये पुलिस के विविध कामों के ढंग और प्रकार के लिये सरकार आदेश दे सकती है और जब क़ानून के विशेष प्रावधानों में लिखी वांछित स्थितियाँ मौजूद हों, तब विधान मंडल के आदेश के अनुसार काम करना पुलिस का वैधानिक कर्त्तव्य है। क़ानून के अनुसार किसी अपराध पर ध्यान देना, पकड़ना तथा अभियोग चलाना ऐसा क्षेत्र है, जिसमें किसी मंत्री का हस्तक्षेप वांछनीय नहीं है।

पश्चिमी बंगाल राज्य बनाम एस. एन. वासक के अभियोग का संदर्भ देते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना है कि किसी भी अधिकारी से दिये गये वारन्ट के ही बिना हस्तक्षेप्य अपराधों की छानबीन करना पुलिस का वैधानिक कर्त्तव्य है और यह पुलिस का अधिकार है कि वह आरोप-पत्र या अन्तिम रिपोर्ट (अभियोग के प्राप्त साक्ष्य के आधार पर) प्रस्तुत करे।

पुलिस का कार्य बहुत ही जटिल है और उसको कारग़र बनाने के लिए व्यावसायिक तथा तकनीकी कुशलता चाहिए। लोकतन्त्र में पुलिस अपने अधिकार देश के क़ानूनों से पाती है और ये क़ानून, पुलिस के कर्त्तव्य तथा अधिकार ही केवल नहीं, बल्कि उन अधिकारों की सीमायें भी निर्धारित करते हैं। पुलिस को दिये जाने

वाली सभी हिदायतें व निदेशन, क़ानून तथा सांवेधान के ढाँचे के अन्दर होना चाहिए। क़ानून तथा न्यायपालिका के आगे ही केवल पुलिस को सिर झुकाना चाहिए और उनको कानूनी कार्रवाइयों में किसी अधिकारी का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये।

किसके प्रति जवाबदेही ?—एक प्रसिद्ध अभियोग में, कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सिंहा ने कहा है—'क़ानूनों में जोड़ने या हटाने का अधिकार, प्राधिकार या क्षेत्र, किसी कार्यकारी सरकार को नहीं है। किसी अपराध के विरुद्ध आरोपित शिकायत पर तुरन्त ही केवल कार्रवाई करना ही नहीं, बल्कि अपराधों की रोकथाम करना भी पुलिस का कर्त्तव्य है । जहाँ कहीं पुलिसजन ऐसा करने में असफल रहेंगे, उन्हें न्यायालयों को जवाव देना होगा और क़ानून के अन्तर्गत दण्ड पायेंगे। एक लोकतन्त्रात्मक समाज में पुलिस दल की सर्वोच्च धारणा 'क़ानून तथा जनता के प्रति उत्तरदायित्व' की होनी चाहिए और यदि पुलिस ने यह गौरव पा लिया है और इस नये कर्त्तव्य को वह निवाह लेती है, तब पुलिसजनों के दृष्टिकोण तथा पहुँच में एक आमूल चूल परिवर्तन आयेगा। "अपने अधिकार तथा कर्त्तव्यों का ज्ञान, पुलिस द्वारा जनता को बताना होगा और यह भी समझाना होगा कि नित्यप्रति के कार्यों में उसे जनता कैसे सहयोग दे सकती है। क़ानून तथा जनता के प्रति जवाबदेह होने के लिए, पुलिसजन को यह जानना जरूरी है कि लोकतन्त्र के अर्थ क्या हैं ? उसे जानना होगा कि मानव अधिकार मौलिक रूप में कितने पवित्र हैं, उसे मानव-जन की प्रतिष्ठा को आदर देना सीखना होगा तथा उसे सीखना होगा लोकतन्त्रात्मक संविधान तथा सहज न्याय के सिद्धान्तों को । भारत में संविधान के अनुसार तथा क़ानून की समुचित प्रक्रिया द्वारा निर्वाचित सरकारें अब पुलिस को नियंत्रित तथा निदेशित करती हैं और लोकमत के साधनों तथा विभिन्न वैधानिक प्रतिष्ठानों के द्वारा, पुलिस जनता के प्रति उत्तरदायी है।" (के० वी० वी० सुब्रह्मण्यम—दी पुलिस एण्ड पोलिटिकल डिवलपमेंट (पुलिस और राजनीतिकविकास)।

नियंत्रण—ब्रिटेन की तुलना में भारतमें, पुलिस पर विधान मण्डल का आर्थिक नियंत्रण बहुत सीधा है और इसी लिये अधिक प्रभावी है। भारत में, पुलिस बजट पारित कराने में केन्द्रीय या किसी राज्य सरकार की असफलता के मायने सारे पुलिस तंत्र के ठप्प पड़ने के होंगे।

पुलिस राज्य-विषय है और विविध पुलिस दलों पर व्यय, सम्बद्ध राज्य उठाते हैं। पुलिस पर कार्यकारी तथा वैधानिक नियन्त्रण, पुलिस प्रशासन में उत्तरदायित्व का तत्व लोकतंत्रों को देता है। किन्तु बर्ट्रेंड् रसेल की यह धारणा थी कि एक विषय में कितने ही लोकतन्त्र विफलमनोरथ रहे हैं और वह है विषय—पुलिस के नियंत्रण का।

ज़िला मजिस्ट्रेट : इंगलैंड तथा अन्य देशों में पुलिस को बड़ी स्वतन्त्रता प्राप्त है। इंगलैंड में सरकारी नियन्त्रण से पुलिस की अपनी अमित स्वतन्त्रता इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि पुलिसजन कार्यपालिका का दास नहीं मानकर स्वयं को क़ानून के अधिकारी समझते हैं, जिसकी निजी ज़िम्मेदारी क़ानून से उन्हें सीधी प्राप्त हुई है।

लार्ड चेशम ने हाउस ऑफ लार्ड्स से 1958 में कहा था "किसी भी पुलिस अधिकारी या किसी अन्य को, पूलिस द्वारा क़ानून प्रवर्तन के विषय में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।

इंगलैंड में पुलिस का प्रमुख अधिकारी किसी अन्य अधिकारी के प्रति जबाबदेह नहीं होकर, केवल क़ानून के प्रति उत्तरदायी होता है।"

पुलिस तथा राजनीति : जैसे जनता को अपने लायक़ सरकार मिलती है, वैसे ही उसे अपने योग्य पुलिस प्राप्त होती है; पुलिस तथा सरकार ही समाज के प्रत्यक्ष दर्पण हैं। डी० एच० बेले के अनुसार, एक पुलिस दल (क) अपनी गतिविधि की प्रकृति से (ख) अपनी कार्रवाइयों के ढंग से (ग) अपने संगठन की प्रकृति से तथा (घ) अपने सदस्यों के समाजी करण से, राजनीतिक जीवन पर प्रभाव डाल सकता है।

अनेकों ही प्रकार से, पुलिस राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहती है। पुलिस जन, उच्च नीति-निर्णय में भाग लेते हैं, वे राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्माण में योगदान करते हैं, वे सरकार के नीति-निर्णयों को क्रियान्वित करते हैं तथा करते हैं वे प्रभावित प्रशासन द्वारा राजनीतिक जीवन को। वे अपने कार्यों तथा जनसम्बन्धों से समाज के राजनीतिक जीवन को प्रभावित करते हैं। सरकार के निष्क्रिय रूप की अपनी भूमिका को तिलाञ्जलि देकर, क़ानून के अन्तर्गत राजनीति में निष्पक्षता के आधार पर उत्तरदायित्व की विरासत का शंखनाद करते हुये, पुलिस सक्रिय भाग ले सकती है। भारतीय पुलिस के लिये विहित कर्त्तव्यों के रूप तथा उनको निवाहने के ढंग, विश्व के अन्य लोकतन्त्रों की पद्धतियों से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं। क़ानूनी अधिनियमों के अनुसार, जीवन तथा सम्पदा की रक्षा करते हुए पुलिस जनता की सेवा करती है और अपराधिक क़ानून पालन कराती है।

जब तक क़ानून के विरुद्ध, देश में राजनीतिक प्रतिद्विन्द्वता चलती रहेगी, पुलिस को उस दलदल में फँसना ही पड़ेगा। राजनीतिक प्रारब्ध में, पुलिस दो प्रकार से फँसती है—या तो तब, जब एक वर्ग को दूसरे के आपराधिक आक्रमणों से वह बचा नहीं पाती है या शक्तिशाली राजनीतिक दल के शह पाये हुये कानूनभंजकों के विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई करने में वह हिचकिचाती है। डी० एच० बेले के शब्दों में, "राजनीतिक व्यवहार की अतिशय ताकझाँक दमनकारी होगी, जबकि अतिशय कम देखरेख बेईमान राजनीतिज्ञ को खुली छूट देगी।" क़ानून के नियम को मानना तथा लोक उत्तरदायित्व को निबाहना आजकल का पुलिस दर्शन है। लोकतन्त्रात्मक जीवन की यह मांग है कि क़ानून के प्रति उत्तरदायित्व और क़ानून के नियम के अनुपालन में तालमेल बिठाया जाए। विधान मंडल तथा गृहमन्त्री द्वारा ही केवल, पुलिस जनता के प्रति उत्तरदायित्व दर्शा सकती है।

भारत में पुलिस संगठन इन दो भिन्न स्तरों पर उत्तरदायी है—**जिला स्तर** पर, भारतीय प्रशासन सेवा के नागरिक प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति, जहां पुलिस-सुपरिन्टेडैंट (अधीक्षक) जिला मजिस्ट्रेट को जवाबदेह होता है तथा **राज्य स्तर** पर,

जहाँ पुलिस महानिरीक्षक गृह सचिव के प्रति उत्तरदायी होता है और गृह सचिव को गृहमन्त्री के समक्ष जवाब देना पड़ता है।

पुलिस तथा सरकार : पुलिस जैसे प्रशासनात्मक विभाग तथा राजनीतिज्ञ के बीच के सम्बन्ध, इस आवश्यकता के अनुकूल बनाने होते हैं कि एक ओर तो जनता के प्रति उत्तरदायित्व तथा ज़िम्मेदारी निबाह ली जाए और दूसरी ओर निष्पक्षता तथा कुशलता क़ायम रहे। ज़िम्मेदारी के बिना, कुशल प्रशासन लोकतन्त्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध है और कार्यकुशलता के बिना, उत्तरदायित्व से लोकतन्त्रात्मक सरकार का सारा उद्देश्य ही खटाई में पड़ जाता है। डी०एच० बेले ने सच्च ही कहा है—'सरकारी विनियमों की नुकीली धार पुलिस है। जो कुछ वह करती है, वह सरकारी कार्रवाई का अभिन्न अंग है। पुलिस और सरकार को चाकू और उसकी धार की भाँति अलग नहीं किया जा सकता।)"

कोई कोई सरकार कभी कभी निरंकुश, सनकी तथा नृशंस हो सकती है, जबकि पुलिस नियत क़ानून के अन्तर्गत दयानतदारी से काम कर सकती है। दूसरी ओर, सरकार कल्याणकारी राज्य तथा लोकतन्त्र के सिद्धान्तों की अनुगामिनी हो सकती है, जबकि पुलिस जुर्म के विरुद्ध ज़िहाद छेड़ते समय, व्यक्तिगत अधिकारों का दमन क्रूरतापूर्वक कर सकती है तथा सन्दिग्ध व्यक्तियों को दिक़ करने के लिये तीसरे दर्जे के उपाय प्रयोग में ला सकती है। अपनी कार्रवाइयों के अधिकार के मामले में, पुलिस और सरकार बहुधा एक दूसरे से अलग विकसित होती हैं।

पुलिस व जनता : पुलिस के साथ जनसम्बन्ध, नागरिक तथा सरकार के बीच अन्तः क्रिया का व्यापक तथा विविध क्षेत्र उपस्थित करते हैं। पुलिस को क़ानूनपालक नागरिकों के मित्र, अभिभावक तथा सेवक के रूप में अपने कर्त्तव्य निबाहने चाहिए। नियत सीमाओं का उल्लंघन रोकने के लिये, लोकतन्त्र में पुलिस को दिये अधिकार घोररूप से सीमित होते हैं तथा अनेक प्रकार के नियंत्रण, सन्तुलन तथा अभिरक्षणों से वे घिरे रहते हैं। लोकतन्त्र सरकार का आधार ही लोकसमर्थन है। एक क़ानून

प्रवर्तक के रूप में, पुलिस को क़ानून बिना भय या अनुग्रह या दुर्भावना या प्रतिरोध के तथा बग़ैर किसी पारित अधिनियम की आवश्यकता या उपयुक्तता की नुक़्ताचीनी किये, क़ानून को दृढ़ता तथा निष्पक्षता से लागू कराना चाहिए। क़ानून प्रवर्तन से—विमोचक तथा दाण्डिक, दोनों प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं; क्योंकि संविधान तथा क़ानूनों से दिये गये अधिकारों को, क़ानून पालन कराने से बल मिलता है और क़ानून भंजकों के कितने ही कामों पर, वह रोक लगा देता है।

पुलिस जन को यह याद रखना होगा कि वे भी जनता के ही सदस्य हैं; अन्तर इतना है कि समाज के हित में और उसकी ओर से, अपने कर्त्तव्यों पर सब समय ध्यान देने के लिये उन्हें नौकर रखा गया है। अनेकों जगह पुलिस पर राजनीतिक नियंत्रण से घोर ग़लतियाँ हो जाती हैं और पुलिस स्वार्थपरायण धन्ना-सेठों की कठपतली बन जाती है। राजनीति और प्रशासन में पूर्ण विच्छेद असम्भव है और

लोकतन्त्र को बचाये रखने के लिये यह निश्चय ही अवांछनीय भी है।

पुलिस जिस क़ानून का पालन कराती है, वह स्वतः सक्रिय नहीं है; उसे मानव स्थितियों पर लागू करना होता है, जो अनियतरूप हैं । लोकतन्त्रात्मक जीवन में, उत्तरदायित्व तथा दक्षता को सन्तुलित रखना होता है।

पुलिस का काम ही इसी प्रकार का है कि उसको जनता से लोकप्रियता, निरन्तर श्रद्धा तथा आवेशी निष्पक्षता की उम्मीद नहीं करनी चाहिये। किसी अमूर्त सिद्धान्त की आवश्यकता तो लोगों की समझ में आ सकती है। किन्तु उसके ठोस क्रियान्वयन का आनन्द उन्हें नहीं मिल सकता है।

किसी नागरिक को यह समझने के लिए कितनी राजनीतिक प्रौढ़ता तथा कूटतर्कता की ज़रूरत पड़ती है कि इस जनसेवक को भी तो कभी कभी अपना ही स्वामी बनना पड़ता है? दूसरी ओर, पुलिस जन को यह जानने के लिए कितनी बुद्धिमत्ता, सतर्कता तथा सौम्यता की ज़रूरत होती है कि यद्यपि वह समाज के अधिकारी के स्वर में बोलता है, तो भी वह उस समाज के प्रति ही जवाबदेह तथा जिम्मेदार भी है।

पुलिस तथा समाचारपत्र : समाचारपत्र को सही ही "सन्सद का विस्तार" पुकारा जाता है। ये समाचारपत्र ही हैं, जो प्रशासनिक ग़लतियों, कारणों तथा कमियों को उजागर करते हैं, जनता की कठिनाइयों तथा शिकायतों को अभिव्यक्ति देते हैं तथा यह बताते हैं कि नीतियों को कैसे अनुपालित किया जा रहा है। अतएव, प्रशासनात्मक ज़िम्मेदारी की योजना में, समाचार पत्र की बड़ी भूमिका होती है। वे प्रशासनिक ज़्यादतियों, घोटालों तथा शिथिलताओं पर रोकथाम लगाते हैं और अन्ततः सन्सदीय उद्घाटन के परिप्रेक्ष्य में बुरे प्रशासनिक कामों के बताने की अपेक्षा, यही रोकथाम का प्रभाव, अत्यन्त प्रभावशाली होता है।

समाचार पत्रों के द्वारा ही, पुलिस को जनता के ज़वाब सर्वदा देने होते हैं। जनता के प्रति पुलिस प्रशासन के उत्तरदायित्व की अन्तिम स्वीकृति, किसी देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं तथा पद्धतियों में ही निहित होती है। पुलिस, जनता तथा समाचारपत्रों के सम्बन्ध, किसी लोकतन्त्र सरकार के उन अमूर्त तथ्यों में हैं, जिन्हें किसी परिनियमों में या औपचारिक समझौतों में तो हम नहीं पा सकते हैं; किन्तु फिर भी वे उस सरकार के अनिवार्य अंग हैं।

अन्तिम ज़िम्मेदारी : यदि कोई पुलिसजन अपनी हिरासत में आये किसी व्यक्ति को पीड़ित करता है या तीसरे दर्ज़े के ऐसे ढंग प्रयुक्त करता है ज़ो क़ानून से स्वीकृत नहीं हैं, तब समान्य क़ानून की रुह से उस पर मुक़दमा चलाया जा सकता है। न्यायालय इसे नहीं मानेंगे कि उसने ग़ैर-क़ानूनी काम अपने वरिष्ठ अधिकारी की आज्ञा से किये हैं।

पुलिस अधिनियम की 23वीं धारा स्पष्ट बताती है कि—"यह हरेक पुलिस अधिकारी का कर्त्तव्य होगा कि वह किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधि-संगत चाल

किये गये सभी आदेशों तथा वारंटों का तुरन्त पालन और क्रियान्वयन करे।" और वरिष्ठ अधिकारी की आज्ञा का उल्लंघन करने पर, उसे विभागीय डण्ड भी मिल सकता है।

द्विविधा या विरोध तो उसके आगे उस समय खड़ा होता है, जब वरिष्ठ अधिकारी अवैध आदेश देता है। प्रत्येक धन्धे में कुछ न कुछ ख़तरे होते हैं और पुलिसजन को अपने व्यवसाय के ख़तरे मोल लेने के लिये तैयार रहना चाहिये।

पश्चिमी लोकतंत्रों में दोषी पुलिसजनों को बारम्बार दंड देने से अपनी हिरासत में पाये मनुष्यों को पीड़न या आग्नेयास्त्र के प्रयोग के विरुद्ध सतर्क कर दिया गया है। वहाँ पुलिसजन ऐसी अन्धेरगर्दी नहीं मचाते हैं, जैसी भारत में। आचार्य जे० बी० कृपालानी के अनुसार, पिछले 30 वर्षों में हमने अपने पुलिसजनों को यह सिखाने की शरूआत भी नहीं की कि कैसे एक स्वतंत्र लोकतंत्रात्मक देश में उन्हें क़ानून पालन कराना चाहिये। (इण्डियन एक्सप्रैस—आवर पुलिस डयूरिंग दी इमरजेंसी—आपातकाल में हमारी पुलिस)।

अवैध आदेश—सभी पुलिसजनों को यह याद रखना होगा कि किसी भी स्थिति में क़ानून द्वारा विहित प्रक्रिया को तिलांजलि देना स्वीकार्य नहीं है। क़ानून-समर्थक होने के नाते, किसी भी पुलिसजन की अनुशासनात्मक भावना का पलड़ा उसकी कर्त्तव्यभावना से तब भारी नहीं होना चाहिये, जब कोई आदेश उसे अवैध मिले और उसके पालन करने से अवैध तथा अनैतिक काम होने की आशंका हो। यदि वह अवैध कामों को करे जाता है, तब उसे उनके परिणाम भोगने होंगे; तथा वह अपनी ज़िम्मेदारी अनदेखी नहीं कर सकता। क़ानून बिलकुल स्पष्ट है कि पुलिस कार्यवाही में, हरेक पुलिसजन अपने काम का उत्तरदायी होगा, चाहे उस काम को उसने स्वंय ही या किसी वरिष्ठ अधिकारी के आदेश पर ही क्यों नहीं किया हो—बी० एन० मलिक —ए फिलासफी फॉर दी पुलिस (पुलिस के लिये एक दर्शन)।

क़ानून के नियम की निष्ठा पर ही, लोकतंत्र का भविष्य निर्भर करता है तथा किसी अवैध काम तक को रोकने के लिए (पुलिसजन समेत) किसी भी व्यक्ति को क़ानून अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं है। क्योंकि भारत में विभिन्न निर्वाचित प्रतिष्ठानों और लोकमत के अंगों द्वारा पुलिस अन्ततः क़ानून तथा जनता के प्रति उत्तरदायी है, इस लिए उसे क़ानून के प्रावधानों के अनुसार ही अपनी कार्यवाई करनी चाहिये।



चिकमगलूर में के० रि० पु० बल का आगमन

ले०—श्री वी० के० कर्करा

पश्चिमी घाट के प्राकृतिक सौन्दर्य में घोंसला बनाये जैसा नन्हा सा सुप्त उपनगर चिकमगलूर बसा हुआ है। कहवे और इलायची के विस्तृत बाग़ तथा वहाँ के मार्गों में मुस्काती और चहचहाती नन्हीं नन्हीं बालिकायें सौम्यता एवं समृद्धि का पुट उसको प्रदान करती हैं। इस प्रसुप्त रमणीयता को बिना हिलाये-डुलाये शताब्दियाँ चुपचाप पास से निकल गयीं। तब सहसा एक प्रातः को वह उपनगर जगा और तब उसने स्वयं को प्रख्यात पाया। यह वह दिन था, जब श्रीमती गांधी ने चिकमगलूर चुनाव क्षेत्र से लोकसभा की सदस्यता के लिये अपने को प्रत्याशी घोषित किया था।

उजिरे में, 1 नवम्बर 1978 को स्थानीय पुलिस की कार्रवाई में एक निर्दोष छात्रा गायत्री की हत्या के कारण, के० रि० पु० बल को निरत करने का पर्याप्त दबाव पड़ा। चुनाव आयुक्त ने भी राज्य सरकार को सुव्यवस्थित ढँग से निर्वाचन कराने के लिये, के०रि०पु० बल को सेवा में लगाने के लिये परामर्श दियो । इन स्थितियों में, 5 तथा 51 बटालियनों को उस निर्वाचन क्षेत्र मैं शीघ्र भेजा गया।

2 नवम्बर 1978 के उत्तराह्न में, मेरी यूनिट, 51 बटालियन को वहाँ जाने का आदेश मिला। हैदराबाद से चिकमगलूर की 800 कि० मी० से अधिक दूरी को अविराम पूरा करने के लिये, यूनिट कॉनवाय (रक्षक बेड़ा) चल पड़ा । श्रान्त-परिक्लान्त ड्राइवर वाहनों को दनादन चलाये चले जा रहे थे । यदि कभी रुकते थे तब वे केवल अपनी निद्रालु आँखों पर छीटें मारने के लिये या चाय के प्याले पर प्याले गले

में उतारने के वास्ते।

दूसरे दिन शाम को, एक छोटी अग्रिम टुकड़ी के साथ, मैंने चिकमगलूर में प्रवेश किया। उपनगर हमारे आगमन के लिये मानों आँखें बिछाये हुये था के०रि० पु० बल की कुछ गाड़ियों की उपस्थिति ने ही हृदयों में गुदगुदी उत्पन्न कर दी।

मैं सीधा पुलिसाध्यक्ष पर गया और कुछ वरिष्ठ राज्याधिकारियों से मिला तथा सभी संभाव्य शंकाओं को मिटाते हुये यह स्पष्ट कर दिया कि यह दल केवल उनके काम में हाथ बँटाने आया है।

इस समय, सूचना साधनों ने के०रि०पु० बल की वहाँ की तैनाती में असाधारण रुचि दिखाई। कितने ही दिनों तक, क्या स्थानीय तथा क्या राष्ट्रीय, सभी समाचारपत्रों में हमारी ही प्रमुख चर्चा होती रही। चिकमगलूर तक के०रि०पु० दल के गमनागमन पर बड़ा ध्यान दिया गया। अनेकों राजनीतिक नेताओं ने इस चुनाव क्षेत्र में के० रि० पु० बल के प्रविस्तारण के पक्ष तथा विपक्ष में वक्तव्य दिये।

बाद में, रात को श्री एस. बी. नारायण राव, कमांडैंट ग्रुप केन्द्र आवडी (जिन्हें अस्थायी रूप से 5 बटालियन का कमान दिया गया था,) मुझ से आ मिले। समाचार जगत में फैले वाद-विवाद को बिल्कुल स्पष्ट कर देने के उपायों के विषय में, हम दोनों ने विचार-विनिमय किया। अपने को अलग रखने से और मुख्यकर समाचार पत्रों से दूर रहने से, यह संभव हो सकेगा। चारों ओर ख्याति-ज्योति मिलने से, यह कार्य वस्तुतः बड़ा कठिन था।

4 नवम्बर 1978 तक, दोनों बटालियनों की सब टुकड़ियाँ अपने-अपने निरत स्थलों पर तैनात हो गयीं। कुछेकों तो 200 कि० मी० की दूरी इस हेतु तय करनी पड़ी थी।

5 नवम्बर 1978 को, रुक रुक, कर वर्षा होते हुये भी, चुनाव तेजी से प्रारंभ हुआ। मध्याह्न के समय, मुझे मुख्य बाज़ार के मतदान केन्द्र पर द्रुत जाने की आज्ञा हुई क्योंकि वहाँ कुछ गड़बड़ हो गई थी। के०रि०पु० बल की उपस्थिति मात्र ने ही वहाँ स्थिति नियंत्रण में ला दी।

घटनास्थल पर इकट्ठे हुए मतदाता और राजनैतिक स्वयं सेवक गले फाड़ फाड़ कर इस प्रकार नारे लगा रहे थे—'हमें सी. आर. पी. चाहिए'—"सी. आर. पी. ज़िन्दाबाद'। यह एक बिरला मौक़ा था, जब के. रि. पु. बल के किसी अधिकारी के केवल हाथ हिलाने और मुस्काने से उन्मत्त भीड़ तितर बितर की जा सकी।

भीड़ केवल इतना आश्वासन चाहती थी कि जब तक चुनाव पूरा नहीं हो जाये, के० रि० पु० बल वहाँ उपस्थित रहे। 6 नवम्बर 1978 के 'इन्डियन एक्सप्रेस' ने सत्य ही लिखा—'रात भर में ही चिकमगलूर के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में निरत के० रि० पुलिस के जवान लोकप्रिय हो गये। जहाँ कहीं वे सेवाभार उठाने जाते हैं, जनता गृह लौटते हुये विजयी वीरों की भाँति उनका स्वागत करती है।"

जनता पार्टी के समर्थकों ने ही केवल के० रि० पु० बल की तैनाती का स्वागत नहीं किया, प्रत्युत् कांग्रेस (इ०) के तत्व भी उतने ही प्रसन्न नज़र आते थे। चिकमगलूर की शान्तिप्रिय जनता केवल शान्त थी और इस समय 'शान्ति' का दूसरा नाम 'के० रि० पु० बल' हो रहा था।

स्थानीय अधिकारियों ने भी तुरन्त यह जान लिया कि के० रि० पु० बल एक बहुत ही कारग़र और निष्पक्ष दल है। वे उत्तरोत्तर हम पर विश्वास करते चले गये। बाद को, जनता की ज़बरदस्त मांग पर, स्थानीय अधिकारियों ने मतदान पेटियों की रखवाली के० रि० पु० बल को ही एक सौंपी।

5 नवम्बर 1978 के प्रातः तक, मतगणना पूरी हो गई। निर्वाचन क्षेत्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को अपना प्रतिनिधि चुना।

के० रि० पु० बल अब भी समाचार पत्रों में गूंज रहा है। इस समय विवाद इस बात पर है कि क्या के० रि० पु० बल को इस से पहले नहीं बुलाया जाना चाहिये था ? कर्नाटक के विपक्षी नेता श्री सुब्बइयाह का यह कथन 11 नवम्बर 1978 के 'इन्डियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित हुआ है—'यदि के० रि० पुलिस पहले आ गयी होती, तब गायत्री बच सकती थी। यह के० रि० पुलिस ही थी, जिसने और भी गर्दनें कटने से तथा अपेक्षाकृत अधिक भयानक खूनी होली खेलने से बचा लिया।

नई प्रतिभाओं की खोज

दिनांक 21 अक्टूबर 78 को नीमच में, रेंज खेलकूद अधिकारियों का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए, श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक ने बताया कि वह खेलकूदों को के० रि० पु० बल के जवानों के लिए एक कल्याणकारी क़दम समझते हैं। अतएव उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि इस दिशा में प्लाटून के, कम्पनी के तथा बटालियन के स्तरों पर अधिकारियों को सुधार करना चाहिये। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जो लोग खेल कूद से संन्यास लेने वाले हैं, उनके स्थान पर नयी प्रतिभायें खोजनी चाहिये। इस सम्मेलन में निम्नलिखित निर्णय लिये गये—

किसी खिलाड़ी को केन्द्र टीम में रखने का आधार टीम में उसके रहने के वर्ष के स्थान पर, उसकी दक्षता होगी।

यह तय हुआ कि या तो रेंज एथ्लीटों को केन्द्रीय टीम शिक्षकों द्वारा नीमच में प्रशिक्षित किया जाये अथवा प्रशिक्षण संस्थानों से अपने कम अर्हता वाले शिक्षकों (कोचों) को शिक्षित कराने के लिये अनुरोध किया जाये।

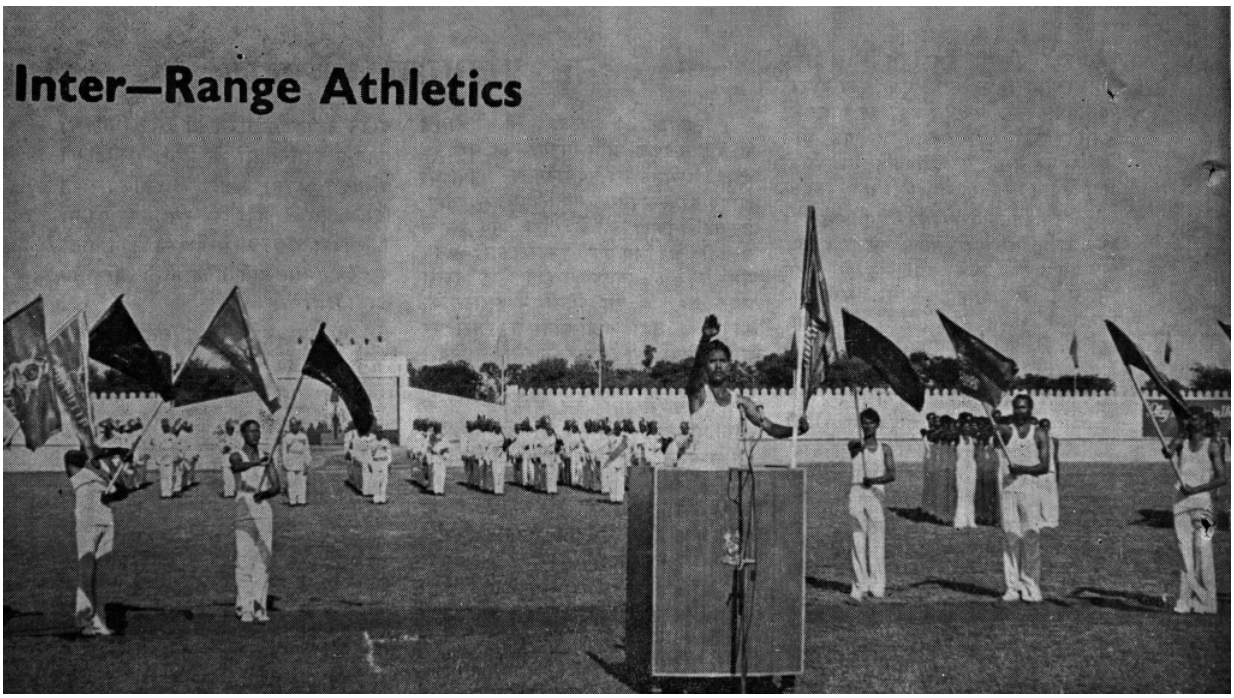
रेंज खेलकूद टीमों के ही नहीं, बल्कि केन्द्रीय टीम के भी एथ्लीटों और खिलाड़ियों को दैनिक भत्ते के प्रश्न पर फिर से विचार किया जाये और इस विषय में सहायक वित्त सलाहकार एक रिपोर्ट तैयार करे।

महानिदेशालय के प्रशिक्षण अनुभाग को चार-पॉच ऐसे ग्रुप केन्द्र चुनने चाहिये, जहाँ पर जिम्नास्टिकों के प्रशिक्षण की सुविधायें प्रदान की जायें। इन सुविधाओं का उपभोग समय-समय पर प्रशिक्षिण के लिये, केन्द्रीय जिम्नास्टिक टीम के सदस्य भी कर सकेंगे।

एथ्लीटों तथा खिलाड़ियों के किटों (थैलों) का नियतकालिक निरीक्षणों तथा रेंज क्लासीफिकेशनों (वर्गीकरणों) की ज़िम्मेदारी, विविध टीमों के कप्तानों/मैनेजरों पर रहेगी। इस के लिये, जिन यूनिटों से ये टीमें सम्बद्ध होंगी, वहाँ पर उपलब्ध सुविधाओं का उपभोग ये करेंगी। जो भी सहायता ये टीम कप्तान/मनेजर मांगेंगे, उनका तथा गोला-बारूद उपलब्ध कराने का दायित्व, सम्बद्ध यूनिट का होगा।

केन्द्रीय टीमों के ऐसे कोचों (शिक्षकों) के लिये, जिन्हें नीमच में वर्ष के अधिकांश भाग में रहना पड़ता है, उपमहानिरीक्षक नीमच कुछ क्वार्टर उपलब्ध करेंगे। क्योंकि अखिल भारतीय पुलिस नियन्त्रण (कन्ट्रोल बोर्ड) ने यह सिफारिश की है कि (वार्किंग) गमन-प्रतियोगिताओं के लिए एथ्लीटों को प्रशिक्षित करना चाहिए, इसलिये यह निर्णय लिया गया कि इस विषय को भी 1 जनवरी 1979 से प्रारम्भ होने वाली अन्तर्रेंज एथ्लीट प्रतियोगिताओं में सम्मिलित करना चाहिये।

30 नवम्बर 78 तक केन्द्रीय खेलकूद निधि के लिये 1000 रु० की एक अतिरिक्त धन राशि प्रत्येक बटालियन तथा ग्रुप केन्द्र द्वारा अंशदान हेतु देनी चाहिये ।



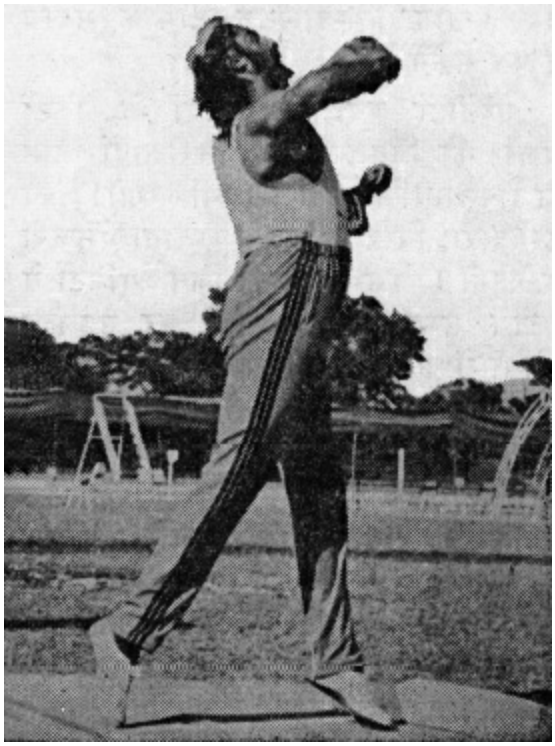
12वीं अन्तर्रेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में अजमेर फिर सिरमौर

लेखक—श्री एच० एस० सेठी

नीमच में 22 से 25 अक्टूबर 78 तक खेली गई दौड़कूद (एथ्लीट) प्रतियोगिता में छै नये कीर्तिमान स्थापित हुये और एक रिकार्ड पहले वाले के बराबर रहा।

ओलिम्पिक खिलाड़ी हरीचन्द (अजमेर रेंज) ने दुगनी प्रतिष्ठा पाई, जब उसने 1974 वाले अपने रिकार्ड को 29 मि० 59 से० में **10,000 मीटर दौड़** कर सुधारा। एवम्, शशिधरन (हैदराबाद) और रासदेव (नीमच) ने क्रमशः 30 मि० 47 से० और 31 मि० 6 से० में दौड़ कर द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाया। हरीचन्द ने **5,000 मी० दौड़** को 14 मि० 39.1 से० में पूरा कर पहले ही दिन जीता। चन्द्र प्रकाश (हैदराबाद) ने 1,500 मी० दौड़ में हरीचन्द का पिछले वर्ष वाला 3:56.9 से० का रिकार्ड 3:54.9 से० द्वारा तोड़ा। एम० एम० पाटिल (श्री नगर) और डी० मुजावर (अजमेर) ने 3:55.7 से० और 3:57.3 से० में क्रमश पूराकर द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाया। हरीचन्द नहीं दौड़ा। एम० एम० पाटिल (श्रीनगर) ने **800 मी० दौड़** को 1 मि० 53.7 से० में पूरा कर नया रिकार्ड बनाया। पिछला रिकार्ड एम० गोपाल कृष्णन का (1969 में) 1 मि० 56.5 से० वाला था। चन्द्रप्रकाश (है०) 1 मि० 54.3 से० में, और कुंजू मोहन 1 मि० 55 से० पूरा कर, द्वितीय तथा तीसरे रहे। **400 मी० दौड़** में, बचू सिंह (गौहाटी) ने 49.5 से० वाला पिछला रिकार्ड बराबर रखा। मदन नायक (हैदराबाद) द्वितीय तथा पीटर ईंड (पटना) तृतीय रहा।

अन्तिम दिन, तीन नये कीर्तिमान स्थापित हुये—



स०इ० एच० एस० भुल्लर (दिल्ली)

बी सुशीलम (हैदराबाद) ने अपना ही 65.30 मी० वाला रिकार्ड भंग किया, जब नेजे को 65.82 मी० दूर फेंका। नटराजन (मद्रास) और रमाशंकर (अजमेर) क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय रहे।

3,000 मी० **स्टीपल चेज़** में, प्रदीप कुमार (श्री नगर) ने 9 मि० 9 से० का नया कीर्तिमान बनाया। डी० मुजावर (अजमेर) ने 9.15.3 और चन्द्रभानु (हैदराबाद) ने 9.22.2 में दौड़ पूरी की। (पिछलारिकार्ड 9.20.6 वाला डी. मुजावर का था)।

पोलवाल्ट में, प्रेम चन्द्रन (मद्रास) ने 3.75 मी० वाला पिछला रिकार्ड 3.85 मी० से भंग किया। मंगल सिंह (कोहिमा) द्वितीय (3.80 मी०) तथा राम गोपाल (है०) ओर बाल गोपाल (मद्रास) संयुक्त रूप से तृतीय (3.70 मी०) रहे।

'सर्वोत्तम एथलीट' का, सिरमौर जनक चन्द (हैदराबाद) के सिर बँधा। उसने डिकेथलॅन तथा 100 मी० बाधा दौड जीती थी। अन्य दो एथ्लीटों ने दुगनी जीतें पाई थीं। एच० एस० भुल्लर चक्काफेंक तथा घन फेंक में और सुधाकरन त्रिकूद तथा लम्बी कूद में प्रथम रहे थे।

अजमेर रेंज (173 अंक) ने तीसरे वर्ष निरन्तर ट्राफी जीती। दिल्ली रेंज (151 अंक) और हैदराबाद रेंज (142 अंक)



कैंचीकूद में विजेता छगन सिंह (दिल्ली)

क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहीं। इस वर्ष इन तीनों चोटी की टीमों में पहले की तुलना में अधिक सन्तुलन था। फलस्वरूप, सभी प्रतियोगिताओं में बड़ा संघर्ष रहा।

दस रेंजों ने इसमें भाग लिया और वे थीं—1. अजमेर 2. दिल्ली 3. हैदराबाद 4. मद्रास 5. नीमच 6. श्रीनगर 7. पटना 8. गौहाटी 9. कलकत्ता और 10. कोहिमा।

श्री आर० सी० गोपाल ने पुरस्कार वितरित किये।

अन्य अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे—

5,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (अजमेर) I; प्रदीप कुमार (श्रीनगर) II तथा एन० शशिधरन (हैदराबाद) III.

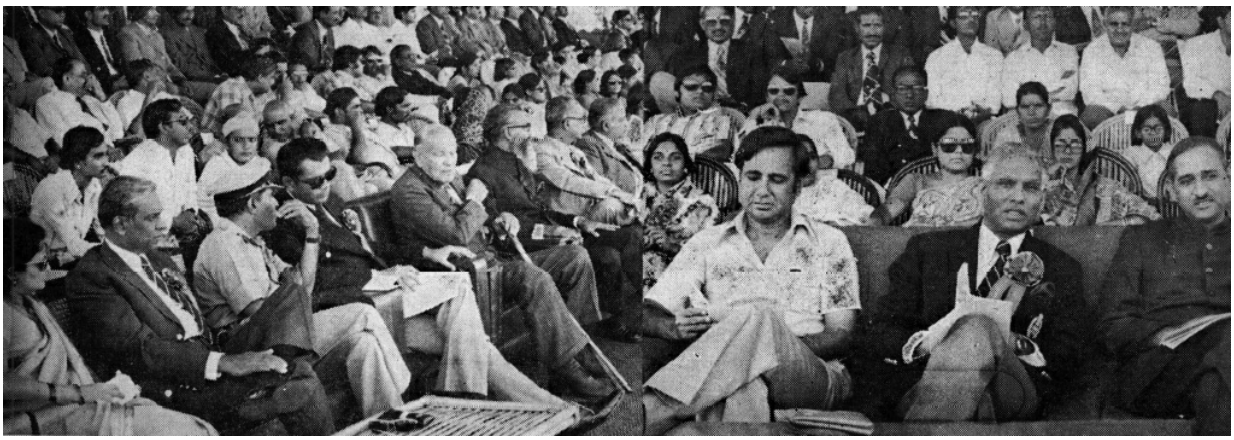
110 मी० बाधा दौड़ : जनक चन्द (हैदराबाद) I; नजर सिंह (अजमेर) II तथा भंवर सिंह (हैदराबाद) III.

चौड़ी कूद : के० सुधाकरन (दिल्ली) I; राधाकृष्णन (नीमच) II तथा मक्खन लाल (हैदराबाद) III.

चक्काफेंक : एच० एस० भुल्लर (दिल्ली) I; आदर्शपाल सिंह (नीमच) II तथा रमाशंकर राई (अजमेर) III.

घनफेंक : रमाशंकर राई (अजमेर) I; जे० एस० भुल्लर (दिल्ली) II तथा जोगिन्दर सिंह (नीमच) III.

ऊँचीकूद : छगन सिंह (दिल्ली) I; सत्यवीर सिंह (अजमेर) II तथा नसीब सिंह (पटना) प्रभाती लाल (श्रीनगर) और मणिक नन्दन (मद्रास) (संयुक्त) III.



विशिष्ट दर्शकों के मध्य प्रतियोगिता उद्घघाटक श्री वी०के० सखलेचा मुख्यमंत्री (म० प्र०) व श्री आर० सी० गोपाल

शाटपुट : एच० एस० भुल्लर (दिल्ली) I; एस० एस० बाल (मद्रास) II तथा आदर्शपाल सिंह (नीमच) III.

त्रिकूद :—के० सुधाकरन (दिल्ली) I; इक़बाल सिंह (पटना) II तथा उन्नीकृष्णन (मद्रास) III.

मराथान : रासदेव सिंह (नीमच) I; ए० एच० उन्नम (श्रीनगर) II तथा राम भगत (गौहाटी) III.

200 मी० दौड़ : पी० कंजम्बू (अजमेर) I; मिठाई लाल (दिल्ली) तथा एच० एस० सिधू (दिल्ली) III.

डिकेथलन : जनक चन्द (हैदराबाद) I; राधाकृष्णन (नीमच) II तथा आर० के० बुधानिया (अजमेर) III.

4×100 मी० रिले : दिल्ली I; अजमेर II तथा हैदराबाद III

4×400 मी० रिले : अजमेर I; हैदराबाद II तथा दिल्ली III.

400 मी० बाधा : नजर सिंह (अजमेर) I; दीदार सिंह (पटना) II तथा गुरदयाल सिंह (अजमेर) III.

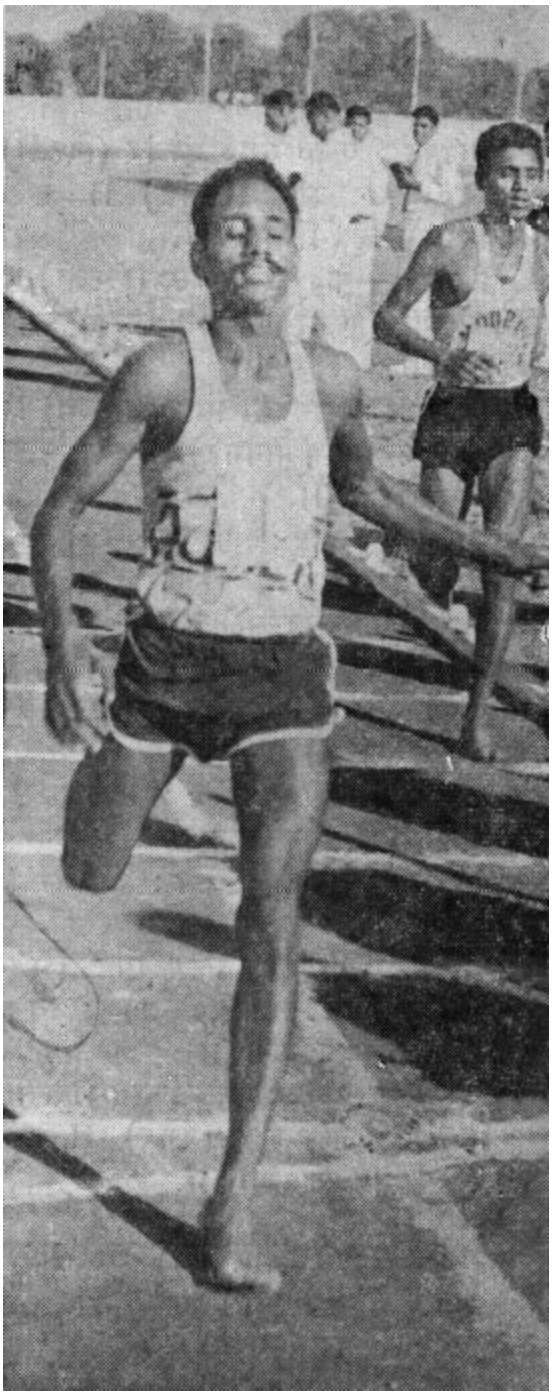
100 मी० दौड़ : मिठाईलाल (दिल्ली) I; पी० के० कंजम्बू (अजमेर) II तथा गोविन्द मुँड (हैदराबाद) III.

अ.भा. सिंधिया हाकी टूर्नामेंट

ग्वालियर में, 31 दिसम्बर 1979 को खेले गये अखिल भारतीय सिंधिया स्वर्ण कप हाकी टूर्नामेंट के फाइनल में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (नीमच), पश्चिम रेलवे (बम्बई) से अवरोधक भंजन में केवल 4-5 से हार कर उपविजेता रहा।

अ. भा. कपूर हाकी प्रतियोगिता

बरेली में, 17 दिसम्बर 1978 को के०रि०पु० बल (नीमच) ने सिगनल कोर जलंधर को 2-0 से हराकर अ० भा० प्राणनाथ कपूर हाकी प्रतियोगिता जीती। *



एशियाई खेलों में हरीचन्द को 2 स्वर्ण पदक

बैंकाक में 9 दिसम्बर 1978 से आयोजित 8वें एशियाई खेलों में भाग लेने वाली 26 भारतीय खिलाड़ियों की टुकड़ी में, के०रि०पु० बल के ये तीन खिलाड़ी चुने गये : 1. हरीचन्द (5,000 मी० और 10,000 मी० दौड़); 2. प्रदीप कुमार डोगरा (3,000 मी० स्टीपल चेज़) और 3. रघुबीर सिंह (घन फेंक)।

14 सिम्बर 78 को, 10,000 मी० दौड़ में, हरीचन्द ने प्रथम स्थान पाकर भारत को

पहला स्वर्ण पदक दिलाया। उसने यह स्वर्णिम सफलता 30 मि0 7.7 से० में दौड़ कर प्राप्त की, जब कि, बर्मा के रावर्ट (30 : 16.9) और कोको (30 : 18.4) उससे 50 मी० पीछे रह गये। पुरस्कार-वितरण-समारोह में ज्यों ही हरीचन्द पुरस्कार लेने आगे बढ़ा, त्यों ही हज़ारों दर्शकों ने करतलध्वनि से उसका स्वागत किया और राष्ट्रीय गान 'जनगणमन' से स्टेडियम गूँज उठा।

19 दिसम्बर 78 को, हरीचन्द ने 5,000 मी० दौड़ को 14 मि० 22 से० में पूरा कर, भारत को एक और स्वर्ण पदक दिलाया। उसने मनीला में स्थापित 1975 का 14 मि० 24 से० वाला अपना पिछला रिकार्ड सुधारा।

राष्ट्रीय तैराकी में हमारी धूम

भोपाल में, 12 से 16 अक्टूबर 1978 तक 35 वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता खेली गई, जिसमें दिल्ली राज्य तथा केन्द्रीय सचिवालय टीमों की ओर से के० रि० पु० बल के इन तैराकों ने भाग लिया और उनमें से 9 तैराकों ने 3 स्वर्ण, 5 रजत और 4 कांस्य पदक जीते :—

I. दिल्ली राज्य :

पी. वी. पिल्लाई, सोम शेखरन, दलीप सिंह, कपूर सिंह, आर. एस. नायर, ऐलोसियस, एस. लोचनन और पी० पद्मनाभन।

II केन्द्रीय सचिवालय :

हर दयाल सिंह, पीतम्बर दास व रूप सिंह

दिल्ली की 4×100 मेडले रिले वाली टीम ने 4 मि० 32.6 से० वाला पिछला रिकार्ड तोड़ कर नया राष्ट्रीय कीर्तिमान 4 मि० 31.2 से० में तैर कर स्थापित किया। इस टीम में, हमारे तैराक सै० इ० पिल्लई और हे० का० सोम शेखरन ने भाग लिया था।

अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता

त्रिवेन्द्रम में अक्टूबर 1978 के अन्तिम सप्ताह में हुई अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में भारत, श्री लंका और बंगला देश ने भाग लिया। उसमें भारत की ओर से हमारे इन छै तैराकों ने भाग लिया 1 स० इ० पी. वी. पिल्लई 2. हे० का० दलीप सिंह 3. हे० का० आर. एस. नायर 4. हे० का० के. सोम शेखरन 5. का० पद्मनाभन और 6. हे० का० कपूर सिंह।

नेहरू हाकी टूर्नामेंट

विगत नवम्बर तथा दिसम्बर में दिल्ली में खेले गये जवाहर लाल नेहरू हाकी टूर्नामेण्ट के अर्द्धफाइनल में० सी० सु० दल से के० रि० पु० बल पराजित हो गया। इससे पहले, हमारी टीम ने यागोसलेविया को हराया था, तथा सिगनल कोर के भी

दाँत खट्टे किये थे।

यह भी खूब रही

राम—यह वर्ष बाल वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

श्याम—तभी तुम सिर पर बाल बढ़ाये जा रहे हो।

पत्नी—(कमेंट्री सुनते हुए)--लो डियर, तुम्हारे 4 रन बनाने वाले **महिन्दर अमर नाथ** से तो वेस्ट इंडीज के मरे अच्छे, जो मरते-मरते 60-64 रन बना लेते हैं।

बालक—पिता जी, सरकार अपनी पार्टी की धर्मता तो संभाल नहीं पाती, पर हमारे इस बेचारे **रेडियो** की धर्मता के पीछे हाथ धोकर पड़ी है।

पत्नी—सुनो डार्लिंग, मैंने कैसा ऐसा अच्छा पेशा सोचा है ?

पत्नी—मुझे तुम्हारे अच्छे पेशे से मतलब नहीं होकर, तुम्हारे अच्छे पैसे से है। (हँस कर) पेशा वही अच्छा, जो अच्छा पैसा दे।

गाइड—जब बम्बई तक आप आये हैं, तब अजन्ता की गुफा भी देखिये ।

सरकारी नौकर—क्यों जनता के राज्य में अजन्ता दिखाकर मेरी नौकरी की मिट्टी पलीद करने में लगे हो?

पत्नी—अब तो आप मुझे फूहड़ नहीं कह सकते, जब मैंने आपकी यह पैंट बिलकुल साफ़ कर दी है।

पति—(पैंट की जेब में हाथ डालते हुये) दाद देते हैं बेगम। पैंट के साथ-साथ इसकी जेब के पैसे भी तुमने सब साफ़ कर दिये हैं।

बिहार बस-अग्नि काण्ड

जब 11 नवम्बर 78 को ए० एन० कालेज, जहानाबाद के कुछ विद्यार्थियों ने बिहार राज्य परिवहन की बस में आग लगा दी, तब के०रि०पु० बल के जवानों ने उसे भस्मीभूत होने से बचा लिया। क्या जनता और क्या अधिकारी, सभी ने हमारी सामयिक सहायता की बड़ी सराहना की।

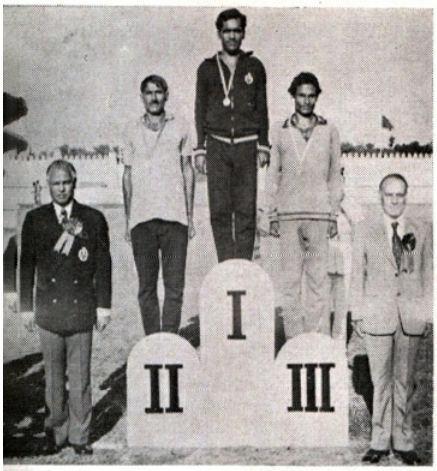
नये पुलिस महानिरीक्षक

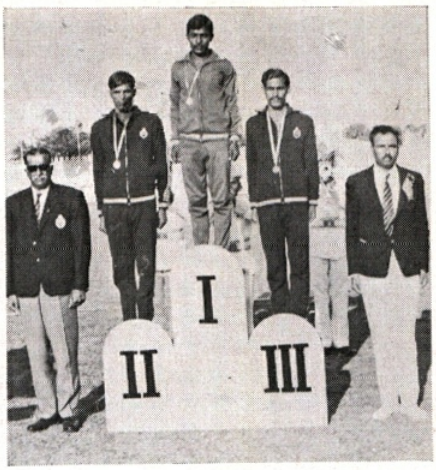
पुलिस महानिरीक्षक (असम) के पद पर अपनी नियुक्ति पर, श्री पी. वी. दास, महानिरीक्षक से० IV 1 नवम्बर 1978 को पदभार छोड़ कर लौट गये। उनके स्थान पर, 7 नवम्बर 78 को, श्री एस. दत्त. चौधरी (भारतीय पुलिस सेवा) ने कार्यभार संभाला।

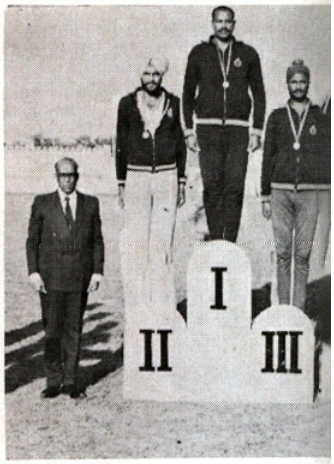
गर्वीले क्षण

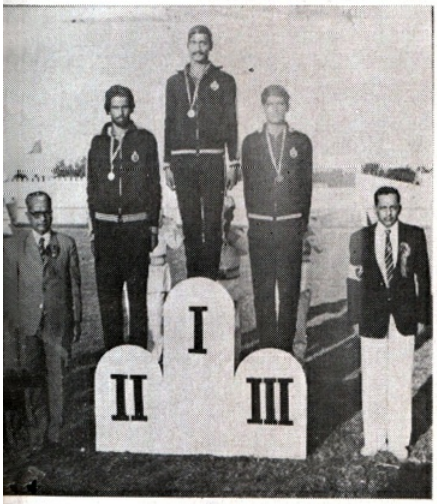
12वीं अन्तरेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में विजय-सोपानों पर बायीं से दायीं ओर (ऊपर से)—

800 मीटर दौड़, पोल वाल्ट, घन फेंक, त्रिकूद, 10,000 मीटर दौड़, चौड़ी छलांग, मैराथॉन व डिकेथलॅन के एथ्लोट-प्रतिद्वन्द्वी

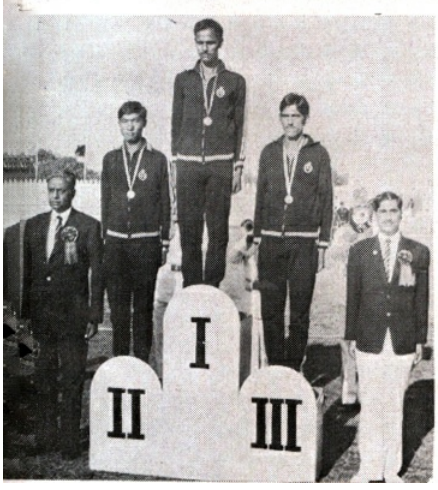

I
II
III


I
II
III


I
II
III


I
II
III


I
II
III


I
II
III


I
II
III


I
II
III

Public Relations Officer
C. R. P. F.



मद्रास रेंज के जवानों द्वारा प्रस्तुत कड़गम नृत्य



उ० के. सुधाकरन (दिल्ली रेंज)

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

स० इ० प्रदीप कुमार (श्रीनगर रेंज)



★ क्रै प ल र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 मार्च, 1979] खण्ड VIII अंक 1 [10 चैत्र, 1901





22वीं अ० भा० पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल की विजयी बेतार-टीम के साथ श्री आर. सी. गोपाल, महानिदेशक, के० रि० पु० बल



के० रि० पु० बल के सदस्यों को नव वर्ष की बधाई देते हुये महानिदेशक श्री आर. सी. गोपाल

कैपलर

द्वैमासिक

हिन्दी संस्करण



खण्ड VIII

अंक 1

[10 चैत्र, 1901 31 मार्च, 1979]

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी]**
[छाया चित्रकार : **एस. के. खन्ना**
हिन्दी सम्पादक : जे० एस० शर्मा

I. गौरवगाथा : पदक, प्रशंसायें और जनसेवायें
II. रिपोर्ताज :
(i) गणतंत्र दिवस समारोह में के. रि. पु. बल की टुकड़ी
(ii) देश सेवा में के. रि. पु. बल
(iii) परिवार नियोजन के लिये प्रधान मंत्री का संदेश 17
(iv) प्रधान मंत्री की श्रद्धाञ्जलि
III. लेख :
(क) पुलिस और साम्प्रदायिक दंगे, ले०—श्री वेणु गोपालराव
(ख) समस्तीपुर की चुनौती, ले०—श्री वी. डी. सहगल कमांडैंट 47 बटा०
(ग) गुंडों की कार्यवाही, साम्प्रदायिक दंगे, ले०—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना, भू० पू० महानिदेशक
IV. कहानी :
बुरी बला, ले०—श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक
V. कविता :
नव जागरण, रचयिता—सि० राम सिंहासन पाण्डेय, 53 बटा०
VI. क्रीड़ा-क्षेत्र :
एशियाई खेलों में सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट ले०—श्री एच.एस. सेठी जन-सम्पर्क अधिकारी
VII. विज्ञान के चढ़ते चरण :
VIII. स्वास्थ्य-सन्देश :
मूत्र-चिकित्सा, ले०—श्री जे०एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक
IX. विविध :
(i) पहेलियाँ
(ii) यह भी खूब रही
(iii) सूक्तिसुधा
(iv) अधिकारियों को ऋण सुविधा

नव वर्ष को अनुपम भेंट—रक्तदान



नव वर्ष की पूर्व-सन्ध्या पर, रक्तदान देते हुए के० रि० पु० बल के सदस्य । इस वर्ष दिल्ली स्थित यूनिटों के 458

सदस्यों ने रेड क्रास सोसाइटी को रोगियों के लिए रक्त दान किया। इस दल में ऐसे रक्तदान करने की परंपरा 1973 से चली आ रही है।

मुख्य पृष्ठ पर : राजपथ (दिल्ली) पर के० रि० पु० बल की गणतंत्र दिवस-टुकड़ी।

गौरव गाथा :

पदक, प्रशंसायें तथा जन-सेवायें

14 सराहनीय पुलिस सेवा पदक

1979 के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर, के० रि० पु० बल के इन 14 सदस्यों को **सराहनीय पुलिस सेवा पदक** प्रदान किये गये :—

1. ब्रिगेडियर (रि०) एस० बी० रज़ा, उपमहानिरीक्षक, कोहिमा 2. श्री एम० ए० बेलिअप्पा, सहायक कमाँडेंट, 28 बटा० 3. स० इ० दीन दयाल, 14 बटा० 4. स० इ० गुरनामसिंह, 41 बटा० 5. स० इ० हरीचन्द्र शर्मा, I सि० बटा० 6. स० इ० पारस राम, 51 बटा० 7. स० इ० जगमलसिंह, आ० सु० अकादमी 8. स० इ० मूलचंद पतियल, 16 बटा० 9. हे० का० जसवन्त सिंह, 49 बटा० 10. हे० का० आर० के० नायर, 3 सि० बटा० 11. हे० का० उदय सिंह, 4 बटा० 12. हे० का० लक्ष्मणसिंह ग्रुप केन्द्र II (अजमेर) 13. हे० का० देवीभगत, 13 बटा० और 14. ना० फतहसिंह, 41 बटा०।

चार जवानों को जीवन रक्षा पदक

डूबते हुए लोगों को बचाने में साहस दिखाने के उपलक्ष्य में, के० रि० पु० बल के इन चार जवानों को प्रधानमन्त्री के जीवन रक्षा पदक प्रदान किये गये, जिनमें दो मरणोपरान्त थे :—

• जब का० अतर सिंह (1 बटालियन) जल निमग्न ग्राम पिंडूवाला (दिल्ली) के निवासियों को नौका में भोजन वितरित करने ले जा रहा था, तब वह नौका उलट गई। उसने डूबती हुई एक लड़की के प्राण बचाने चाहे, किन्तु उस यत्न में वह अपने प्राण गवाँ बैठा।

• जब अरुणाचल प्रदेश में चीन सीमा के निकट माजा पर सूरीच्यू नदी में एक सिपाही नहाता हुआ बह चला, तब का० लिल्लूराम (33 बटा०) ने उसे बचाने के असफल प्रयास में प्राण गवाँ दिये। उसे मरणोपरान्त पदक मिला।

• अरुणाचल प्रदेश में सियाग नदी में में नहाते हुए जब एक 18 वर्षीय बालक बह चला, तब सू० जय नारायण (57 बटा०) ने उसे डूबने से बचा लिया।

• मणिपुर राज्य की वथोइ नदी में अचानक गिर कर डूबते हुए एक बालक के प्राण बचाने के उपलक्ष्य में, का० मोती सिंह (53 बटा०) को जीवन रक्षा पदक मिला है।

डाकू बन्दी

बिहार के पूर्वोत्तर भाग पूर्णिया ज़िले में यातायात के साधनों के अभाव में, दिन दहाड़े डकैतियाँ तथा राहज़नी सामान्य बात रहती हैं । अपराध करने के बाद, अपराधी पश्चिमी बंगाल में बच भागते हैं और कभी-कभार तो नेपाल में धूस जाते हैं।

ऐसी स्थिति में, 1977 के आरम्भ में 11 बटालियन के दो सेक्शनों की जनशक्ति की एक चौकी मोहनपुर ग्राम में बनाई गई। 28 अक्टूबर 1978 को, खोलबागा ग्राम में डाका डाल कर, मोहनपुर चौकी से 3 कि० मी० दूर जारलोही नोक देहरी ग्राम में, कुछ डाकुओं ने शरण ली। सूचना पाते ही, मोहनपुर पुलिस चौकी के अध्यक्ष तथा के० रि० पु० बल के स० इ० हंस राज ने उन डाकुओं पर छापा मारने की संयुक्त योजना बनाई।

सब मार्गों की नाकाबन्दी कर के, 30 अक्टूबर 1978 को तड़के ही धावा बोला गया और सभी संन्दिग्ध स्थानों की तलाशी ली गई। अंधेरे की ओट में, एक

व्यक्ति ने बच भागने की चेष्टा की; किन्तु हमारे जवानों ने उसे पकड़ लिया। अनेकों डाके, राहज़ानी तथा अन्य अपराधों में ग्रस्त वह बाद में चरित्रमण्डल नाम का लुटेरा पाया गया। उसका पिता दामोदर मण्डल भी एक कुख्यात डाकू था।

सर्वोत्तम बटालियन

पिछले वर्ष की सर्व प्रकारेण कार्रवाई के आधार पर, 37 बटालियन को **सर्वोत्तम बटालियन** घोषित किया गया है। उसे नीमच में 'परिचालन ट्राफी' दी गयी। श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक ने उस बटालियन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी।

प्रशंसायें

श्री पी० एल० कौशिक, पर्यटन मंत्री ने सिक्किम का दौरा किया तथा मणिपुर और मिज़ोरम के मुख्य मन्त्रियों ने क्रमशः करांग और बुआलपुई की यात्रा की। इन क्षेत्रों में निरत के० रि० पु० बल के जवानों की उन सब ने प्रशंसा की।

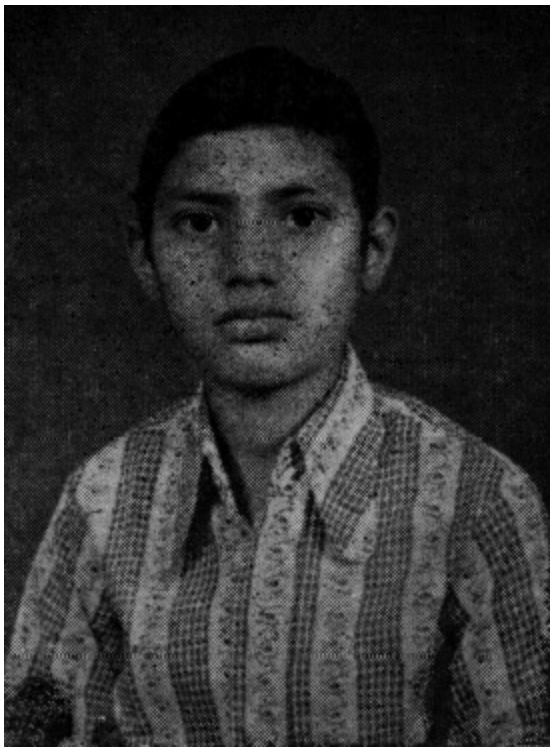
जवान को नेत्र हानि

जब 22 अगस्त 1978 को एक नायक फिटर गाड़ो सँभाल रहा था, तब उसके हाथ से एक पुर्जा छूट कर एक सिपाही ड्राइवर की आँख में लगा। पूरा-पूरा उपचार करने पर भी, उसे वह आँख निकलवानी पड़ी। महानिदेशक महोदय ने कमांडैंटों से यह

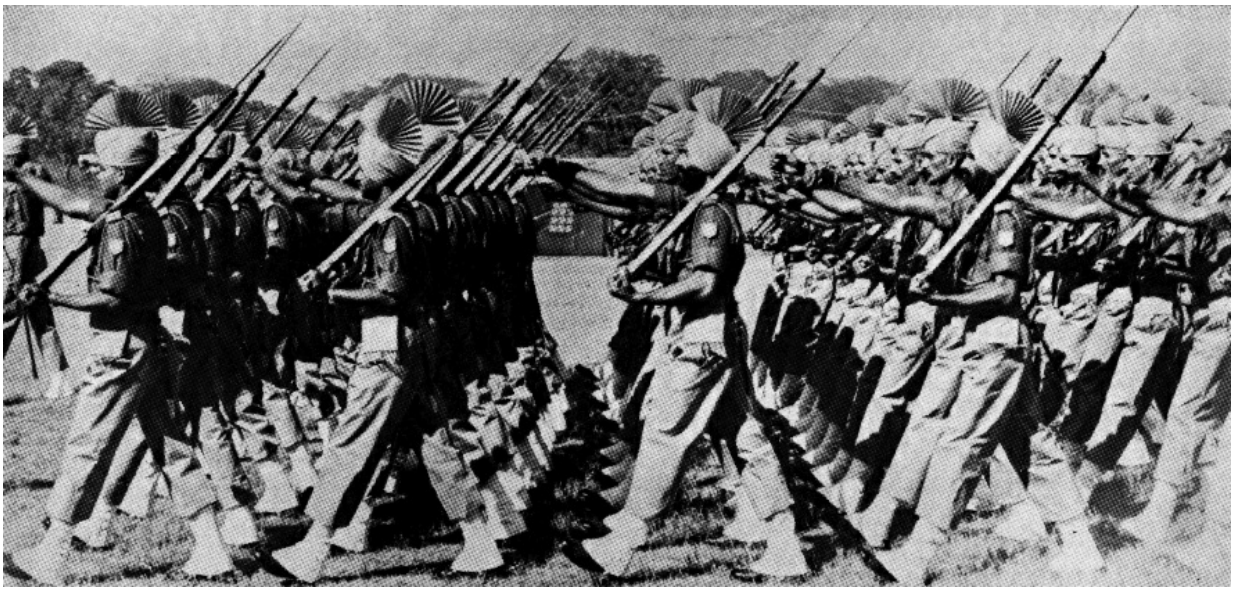
आग्रह किया है कि उस ड्राइवर को कहीं न कहीं काम देने की भरसक कोशिश करें।

नायक के पुत्र को नया जीवन

12 वर्षीय मोहिन्दर सिह सुपुत्र नायक डबल सिंह (ग्रुप केन्द्र रामपुर) को वहाँ के अस्पताल ने हृदय रोग बताया। उसे मुख्य चिकित्सा अधिकारी, बेस अस्पताल दिल्ली को दिखाया गया, जहाँ से अखिल भारतीय आयुर्वैदिक संस्थान भेजा गया। उसने दिल के वाल्व बदलने का परामर्श दिया; किन्तु, उसका खर्चा, 8000 रु० बालक के माँ-बाप सहन नहीं कर सकते थे, क्योंकि इतने ही रुपये और इलाज को चाहिये थे। उपमहानिरीक्षक पटना से वह धनराशि कल्याण निधि से दिलाने की प्रार्थना की गई। उन्होंने वेलोर के अस्पताल ले जाने की राय दी। बालक उस अस्पताल में भर्ती किया गया। अब प्रश्न 16,000 रु० के व्यय का आया। के० रि० पु० बल ने इस व्यय को सहन करना स्वीकार कर लिया । 19 सितम्बर 1978 को बालक का सफलतापूर्वक आपरेशन हुया । इस प्रकार बल की उदार कल्याणकारी नीति के कारण हो बालक को फिर से जीवन मिला ।



मोहिन्दर सिंह



ताल कटोरा पार्क (दिल्ली) में गणतंत्र दिवस समारोह के लिए पूर्वाभ्यास करते हुये के. रि. पु. बल के जवान

गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल का योगदान

सामारोहिक वर्दी में, कई तबदीलियाँ लाने के कारण, इस वर्ष गणतंत्र-दिवस में भाग लेने वाली के० रि० पु० बल की टुकड़ी पहले की तुलना में अधिक रंगीन रही। 75 अधिकारी और कर्मचारी तथा 85 बाजे वालों की इस टुकड़ी का नेतृत्व सहायक कमांडेंट भूपेन्द्र सिंह, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली ने किया, जिन्हें पहले भी 6 बार यही श्रेय प्राप्त हुआ है। बचत को ध्यान में रखते हुए, इस टुकड़ी में केवल दिल्ली में स्थित बटालियनों से ही जवान लिए गए।

पाइप (वाद्यनाल) और ब्रास (पित्तल वाद्य) बाजे वालों का नेतृत्व इ० गुरदयाल सिंह ने किया, जिसने क्या भारत और क्या विदेशों में, कितनी ही बार यही श्रेय पाया है। ब्रास बैंड वाले, नई दिल्ली और अजमेर ग्रुप केन्द्रों से लिए गए; जब कि पाइपबैंड वाले, दुर्गापुर, गाँधीनगर और नई दिल्ली ग्रुप केन्द्रों के थे।

राष्ट्रपति को सलामी देते समय, वाद्यकगण 'शेर जवान' की ध्वनि बजा रहे थे।

श्री एस. दत्त चौधरी

आप नेशनल डिफेंस कॉलेज दिल्ली के स्नातक हैं। सन् 1948 में आप भारतीय पुलिस सेवा में भर्ती हुये । 1965 में पुलिस उपमहानिरीक्षक होने से पूर्व, आपने अहमदाबाद, सूरत, पूना, बम्बई, बड़ौदा, जूनागढ़ आदि स्थानों पर मुख्य कर सेवा की। सिक्किम में, पुलिस आयुक्त के पद को आपने सुशोभित किया। के० रि० पु० बल में आने से पहले, आप त्रिपुरा राज्य के पुलिस महानिरिक्षक थे। जहाँ भी निरत रहे, वहाँ आपने सराहनीय सेवा की है।



गणतंत्र दिवस परेड के बाद समारोह में जवानों के मध्य श्री आर. सी. गोपाल महानिदेशक

पुलिस और साम्प्रदायिक हिंसा

ले०—श्री एस. वेणुगोपाल राव

अलीगढ़ में साम्प्रदायिक हिंसा का नग्न-नृत्य, जिसका सूत्रपात एक छोटे अखाड़े-कलह से हुआ था; किन्तु जिसने लगभग 30 जाने ले लीं, हमारे सकल खण्डित समाज की जानी-मानी तथा स्वतः स्थायी रहने वाली खींचातानियों में से एक है। यह सच है कि उसमें बहुत कुछ निर्दोषता का दम भरा गया। श्री बहुगुणा ने सुझाव दिया कि साम्प्रदायिक दंगे के कारण, मुख्य मन्त्री को बर्खास्त करना चाहिये। शायद एक क्षण को यह भूलते हुये कि हमारी संघटित समाज में साम्प्रदायिक तथा जातीय जहर बुरी तरह से घर किये हुये हैं, प्रधान मन्त्री ने राजनीति को उसमें घुसेड़ने पर दुःख प्रकट किया है। अल्पसंख्यक आयोग ने यह मांग की गई बताते हैं कि राज्य सशस्त्र पुलिस को, अल्पसंख्यकों से युक्त शान्तिरक्षक दल से बदल देना चाहिये; और अन्त में, राष्ट्रीय एकता परिषद के होते हुए भी एक उच्च स्तरीय पंच या आयोग का गठन हमें करना पड़ा।

अलीगढ़ अपने में कोई बिरला नहीं है। देश के विभिन्न भागों में नीरस क्रम से साम्प्रदायिक आग भड़कती रहती है। साथ में उसके रोक थाम के समाधान चलते रहे हैं। हमारे धर्मनिर्पेक्ष लोकतन्त्र की सब से बड़ी चिन्ता का विषय, साम्प्रदायिक और जातीय उपद्रवों की गहरी पकड़-जकड़ को कम करने की क्षमता रही है। इसके विपरीत इस अनुमान से बचना कठिन लगता है कि हमारे समाज के विविध अंगों के रुख तथा मूल्य कठोर होते जा रहे हैं। परिमित घेरों में शक्ति-संघर्ष उन्हें चूस डाल रहा है और आर्थिक विषमतायें, जातीय और साम्प्रदायिक हौउओं से गलबहियों लेती दीखती हैं। यह बात सब से अधिक शोषित तथा असु-विधापूर्ण वर्गों तक पर लागू होती

है।

यह कहा गया है—'जब कोई सामाजिक प्रणाली, किसी विशेष सामाजिक स्तर के लोगों को ठीक-ठाक करने में गम्भीर समस्यायें उत्पन्न करती है, तब ऐसा संभव है कि आचरण के स्थापित नियमों की वैधता के लिये सामूहिक चुनौती उभर कर आए ..."यह वहाँ विशेषरूप से संभव है, जहाँ अवसरों की समानता तथा सफलता के लिये व्यापक महत्ताकांक्षों का समर्थन करने वाली गणतन्त्रात्मक विचारधारा होती है।" लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से बढ़ती हुयी जागरूकता के साथ-साथ उनकी स्थिति में अटलता तथा अपरिवर्तनशीलता का एक नया अनुभव होता है और फलस्वरूप, मनोविकार, संघर्ष और हिंसा उभरती है। उनमें से अन्तिम चीज़ (हिंसा) एक विकासशील समाज में दो विशेष परस्परविरोधी रूपों में प्रकट होती है—एक तो मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के रूप में तथा दूसरी, सुरक्षित तंत्र को अपने हितों और मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिये प्रतिरोध के रूप में। हरिजनों पर अत्याचार, सामाजिक गड़बड़ी के ठेठ प्रतीक हैं।

दूसरी ओर, साम्प्रदायिक दंगा संस्कृति संघर्ष का खास मामला है। विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों तथा रंगतों वाली जातियाँ तथा समुदायों के प्रेमपूर्वक साथ रहने का तथ्य इस विचारधारा को नष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि 'जनसंख्या की संरचना तथा गठन में स्थानीय परिवर्तन के बगैर भी, विभिन्न संस्कृतियों में कलह हो सकते हैं, और दूसरी ओर, बिना सांस्कृतिक कलहों के भी, ऐसी तबदीलियाँ आ सकती हैं।"

राजनीतिक मौलिक ध्येय के रूप में, सभी समुदायों और जातियों की भावात्मक एकता की प्रक्रिया, बेतुकी धीमी रहती है। आपराधिक क़ानून और उनको लागू कराने से मुख्य मूल्यों का निरूपण होता है और उप सांस्कृतिक वर्गों में तनाव तथा विरोधी हितों की कमी होती है। इसमें दो बातें हो सकती हैं। उपवर्गों की मूल्य प्रणाली प्रतिक्रिया द्वारा कमज़ोर पड़ सकती है और संस्कृति की उत्तरोत्तर वृद्धि से, वे परस्पर शान्ति से रहना सीख जायें। दूसरी ओर, प्रतिक्रिया से अपने विश्वासों तथा मूल्यों को सुदृढ़ रखने के रुख तथा निर्णय में कठोरता आ सकती है, क्यों कि अपनी आर्थिक अतिजीविता के लिये हरेक अपनी अलग पहचान रखना जरूरी समझता है। यह भारतीय समाज का वह तथ्य है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

पिछले दस वर्षों में हुये साम्प्रदायिक दंगों का विश्लेषण यह बताता है कि निरन्तर साम्प्रदायिक उपद्रवों के होने वाले नाज़ुक, क्षेत्रों तक में, लगातार उभरने वाले तनावों के प्रति प्रतीक्षा तथा मूल्यांकन की दुःखदायी कमी रही है। यह तर्क दिया जा सकता है कि अनेकों बुरी स्थितियें, सामयिक कार्रवाइयों से रोकी जा सकती हैं; किन्तु यह नहीं भूलना चाहिये कि पुलिस के काम उनकी विफलताओं से आंके जाते हैं, ना कि उनकी सफलताओं से। यह वह पहलू है, जो पुलिस की भूमिका को विरासत में मिला है और जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। कितनी ही बार, प्रशासनिक सुस्ती, और बिगड़ती हुयी स्थिति के मूल्यांकन की कमी को, आपराधिक कर्त्तव्यविमुखता माना जाता है।

तनाव भरे वातावरण में हिंसा भड़काने वाली घटना तो प्रायः छोटी होती है; किन्तु यहां भी, उस धारणा के महत्व और उससे संभाव्य प्रतिक्रियाओं का झूठा अन्दाज़ा लगाया जाता है, जिसके परिणाम भीषण होते हैं। कितनी बार ऐसी छोटी, परन्तु घोर हिंसा भड़काने वाली, घटना के प्रति पुलिस का रवैया अक्खड़ तथा देर वाला रहा है। यह सब को पुलिस क्षेत्रों में मालूम है कि ऐसे सभी अवसरों पर सेवा निरत जवान काफ़ी नहीं होते हैं और कोई निर्णय लेना कठिन हो जाता है। अपर्याप्त तथा देर से कार्रवाई, हमारे पुलिस संगठन की सब से बड़ी खामी रही है, क्योंकि संकटों से ठीक-ठीक निपटने के लिये, इस संगठन में मुख्यकर निम्न सोपानों पर कोई पुनर्गठन नहीं हुआ है।

फिर, अफवाहों द्वारा होने वाले बड़े नुक़्सान की समस्या है। चाहे भय से या असामाजिक तत्वों द्वारा जान बूझकर फैलाई गई अफवाह, लोगों में घबड़ाहट पैदा करके बुरी स्थिति को और भी भीषण बना देती है और सर्व प्रकार से सुयोजित कार्रवाई को खटाई में डाल देती है। इस से, अखिल जनता को सही-सही जानकारी देने वाले तंत्र के विकास की महत्ता आंकी जा सकती है। यद्यपि ऐसे किसी उपाय की प्रभावोत्पादकता, बहुत कुछ क़ानून पालन कराने वाले संगठन की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है, तो भी यह अन्तर्वर्गीय सम्बन्धों का वह महत्वपूर्ण स्थान है, जिस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। एक सुझाव यह भी है कि सभी नाज़ुक क्षेत्रों में परिचालन संचार तंत्रों के स्थापित करने की बात सोचनी चाहिये। ऐसे तंत्रों को, गैर ज़िम्मेदार और शरारतभरी अफवाहों के निराकरण के लिये भी प्रयुक्त किया जा सकता हैं। क्योंकि अफवाहें दावाग्नि की भाँति फैलती हैं, कारगर प्रतिरोध के लिये तात्कालिता बहुत ज़रूरी है।

अलीगढ़ में हुयी साम्प्रदायिक हिंसा की सब से गंभीर बात, प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस पर पक्षपात का आरोप है। क्योंकि अल्पसंख्यक आयोग जैसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान द्वारा यह आरोप लगाया गया है, इसमें बहुत कुछ सच्चाई दीखती है। यह बताया गया है कि हमने सशस्त्र पुलिस के लगातार विस्तार की धुन में, नागरिक पुलिस के विकास की ओर क़तई ध्यान नहीं दिया है। इस नीति के ये दुष्परिणाम हुये हैं—न्याय-व्यवस्था से सुलझने के लिये सशस्त्र पुलिस का अधिकाधिक सहारा लेना; नागरिक पुलिस पर विश्वसनीयता का उठना तथा उसका ज़िम्मेदारी से चतुरतापूर्वक हाथ झाड़कर खड़ा हो जाना।

यह हुआ क्योंकर है ? जिस पुलिस दल पर समाज के सभी वर्गों का विश्वास एक समान नहीं है, सच पूछो तो, वह विफल मनोरथ है। इससे निश्चयात्मक रूप में हमारी यह असफलता प्रकट होती है कि सही ढंग के लोग हम कम भर्ती कर पाये हैं और क़ानून पालन कराने वाले उच्च उद्देश्य तथा दर्शन उनमें नहीं भर पाये हैं, क्योंकि सशस्त्र पुलिस पर निर्भर रहने का विकल्प अपेक्षाकृत सरल है और अल्पकालीन दृष्टिकोण से, कारग़र भी है। कानून और व्यवस्था के नाम पर सशस्त्र पुलिस की एक बटालियन क्षणभर में खड़ी हो सकती है; किन्तु क्या केन्द्र और क्या राज्य—दोनों ही

सरकारों पर नागरिक पुलिस के गुणात्मक स्तर उठाने के लिए धन की कमी रहती है।

अल्पसंख्यक आयोग की इस सिफ़ारिश में दो मत नहीं हो सकते कि पुलिस दल समाज के साधारण ढाँचे का दर्पण होना चाहिए, किन्तु उसका दूसरा सुझाव अव्यावहारिक और अविश्वसनीय है। क्योंकि अन्तर्वर्गीय तनाव रहते हैं और अनेक मत-मतान्तर वाले समाज में ये अवश्यम्भावी भी हैं; हम ऐसे पुलिस दल की कल्पना नहीं कर सकते, जिसमें केवल अल्पसंख्यकों के ही सदस्य हों। इस सुझाव के खतरनाक परिणाम होंगे। अपने व्यावसायिक कर्त्तव्य में कोई पुलिसजन हिन्दू या मुसलमान या ईसाई मात्र नहीं बन सकता। यदि उसके काम करने के ढंग से हम भेदभाव नहीं निकाल सके, तब दोष है भर्ती और प्रशिक्षण की हमारी नीतियों में। ऐसा नहीं है कि हमें समस्या का पता नहीं है या राष्ट्रीय पुलिस आयोग की सामूहिक बुद्धिमत्ता की प्राप्ति तक हमें इन्तज़ार करना है। हम पर मौलिक समस्याओं से निपटने के लिए केवल मनोबल की कमी है या संगठनात्मक और राजनीतिक अक्षमता है, प्राथमिकताओं को समझने की कमी है तथा उन आमूल परिवर्तनों के लाने में कमज़ोरी है, जिनके अर्थ दरअसल उन संस्थानों में श्रद्धा, उमंग तथा निष्ठा के होंगे; जिन्हें हम अपने समाज के लिये गठित करना चाहिये।

॥ पहेलियाँ ॥

जटाजूट मुनि की धरू,
दिल ज्यों दही सफेद।
दुश्मन फाड़े जब मुझे,
दूँ अमरित बिन भेद ॥ 1 ॥

गर्मी से नित बचन को,
खम्भ किया तैयार।
ता ऊपर बिजना झले,
गोल--गोल करतार ॥ 2 ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
मध्ये कटे तब कम परिणाम।
आदि छँटे तो श्वास बनाय,
अन्त कटे तो माप दिखाय ॥ 3 ॥

उत्तर—1.नारियल 2.ताड़ 3.कदम।

यह भी खूब रही है

राम—सुना है श्याम, अगली वर्ष 16 फरवरी को ऐसा सूर्य ग्रहण पड़ेगा कि दिन में हमें तारे नज़र आयेंगे।

श्याम—उससे हमें क्या? हमें तो सूर्य ग्रणह की जगह जब से पाणि-ग्रहण करना पड़ा है, तब से दिन में रोज़ तारे नज़र आते हैं।

परदेशी पति की भेजी हुई 'पहुँची' गहने को छोटा पाकर, पत्नी ने पत्र लिख भेजा —'जो पहुँची, आपने भेजी थी, वह पहुँची तो मेरे पास तक ज़रूर; किन्तु चढ़ाने पर वह पहुँचे तक भी नहीं पहुँची। अतः जब मैं गुसलखाने पहुँची, तब ताक़ में रख कर भूल गयी वह पहुँची। याद आने पर दौड़ी-दौड़ी जब मैं फिर वहाँ पहुँची, तब तक कौन चुड़ैल वहाँ पहले ही जा पहुँची, जो ले उड़ी वह पहुँची। फिर क्या था ? मैं उस पहुँची को खोजने इधर पहुँची, उधर पहुँची, लेकिन राम जाने, वह पहुँची, कहाँ पहुँची?'

अध्यापक—'राम'! **काना** तो तुमने देखा होगा; इस शब्द को वाक्य में प्रयोग करो।

राम ने वाक्य लिखा—'आपका प्रश्न ही बड़ा **बचकाना** है।'

मैंनेजर से टेलीफोन गर्ल—'बास, आप मेरी खूबी जानना ही चाहते हैं, तब सुनिये आप हर बात की कुछ न कुछ बात जानते हैं; जबकि मैं आपकी हर बात जानती हूं।'

रोते पुत्र को देख कर बेलन उठाते हुए माता-बता तुझे किसने मारा है ? मैं उसकी हड्डी पसली एक कर दूँगी।

पुत्र—पिता जी ने।

सूक्ति-सुधा

वाणी की कठोरता अग्निदाह से भी अधिक पीड़ा देती है।

—चाणक्य।

अधिक ना तो खुद बोलना चाहिये और ना ही दूसरे से बुलवाना चाहिये।

—विदुर।

जो जन मेहनत नहीं करता, उसके देवता भी मित्र नहीं बनते।

—ऋग्वेद।

उत्साह ही कल्याण की जड़ है, उत्साह ही परम सुख है।

—वाल्मीकि।

अक्रोध को क्रोध से, असाधु को सदव्यवहार से, कृपण को दान से और झूठ को सत्य से जीतें।

—महाभारत।

समस्तीपुर की चुनौती

ले०—श्री वी. डी. सहगल

सर्व प्रथम, समस्तीपुर जनवरी 1975 में, समाचार पत्रों में मुख्य पृष्ठ का विषय बना, जब तत्कालीन रेलमंत्री, श्री ललित नारायण मिश्र, एक बमविस्फोट में मारे गये। नवम्बर 1978 में इसने तब फिर ख्याति पाई, जब लोक सभा के लिये एक उप-चुनाव यहाँ हुआ। 1977 में बिहार के वर्तमान मुख्य मंत्री द्वारा स्थान छोड़ने पर वह चुनाव हुआ था।

जब 10, 11, 17, 30 और 47 बटालियनों से गठित 18 कम्पनियाँ समस्तीपुर भेजी गयीं और मुझे इन कम्पनियों का परिचालन-कमान सौंपा गया, तब मुझे यह दल बहुत अधिक लगा; किन्तु 20 नवम्बर 1978 को समस्तीपुर पहुँचने पर, मुझे मालूम हुआ कि बिहार सनिक पुलिस, होमगार्ड और जिला पुलिस को भारी संख्या में बुलाया गया है। धीरे-धीरे, वास्तविकता समझ में आयी और मैंने ज़िम्मेदारी की भीषणता का अनुभव किया।

चुनाव क्षेत्र के किनारे बेगुसराय और मुजफ्फरपुर के जिले लगे हुये हैं, जो असामाजिक उपद्रवों के लिये बदनाम हैं। वजितपुर का हत्याकांड जनता को याद था। चिकमंगलूर के ठीक पीछे होने वाले समस्तीपुर के उप-चुनाव ने अत्यन्त राजनीतिक महत्व धारण कर लिया था। गुप्त सूचनायें दुःखप्रद थीं और अधिकारियों को कुछ भी अनर्थ होने की आशंका थी। पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण के विरुद्ध आन्दोलन ने वातावरण को विस्फोटक बना रखा था और झगड़े-फ़िसाद हो रहे थे। तनाव ज़ोरों पर थे और शान्तिपूर्ण चुनाव केवल कपोल कल्पना लग रही थी।

प्रो० अजित कुमार मेहता (जनता पार्टी) और श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा (कांग्रेस इ०) के अतिरिक्त, 21 अन्य उम्मीदवार थे।

पुलिस अधीक्षक से बात कर, मैंने 21 नवम्बर 78 को के० रि० पु० बल की सभी कम्पनियों और टुकड़ियों के कमांडरों को स्थिति से अवगत कराया। समस्तीपुर में एक रैली हुयी; उसे ज़िला मजिस्ट्रेट और पुलिसाधीक्षक ने सम्बोधित किया। मुझे भी सम्बोधन करने को कहा गया; मैंने स्पष्ट कर दिया कि शान्तिपूर्वक चुनाव-प्रचार, स्वतंत्र तथा सही निर्वाचन और कमज़ोर वर्गों के रक्षण के लिये ही हम समस्तीपुर

आये हैं, जिससे निभय होकर हर कोइ मतदान कर सके। असामाजिक तत्वों को भी मैंने सावधान किया कि के० रि० प० बल सब को ठीक करना जानता है।



मतगणना-केन्द्र पर के० रि० पु० बल के सतर्क जवान

रैली के ठीक पश्चात, 200 वर्ग मीटर वाले चुनाव क्षेत्र में के० रि० पु० बल के जवान और अधिकारी ध्वज मार्च करते निकले। ऐसा ही, 22 नवम्बर को दुहराया गया। इससे वाँछित प्रभाव पड़ा।

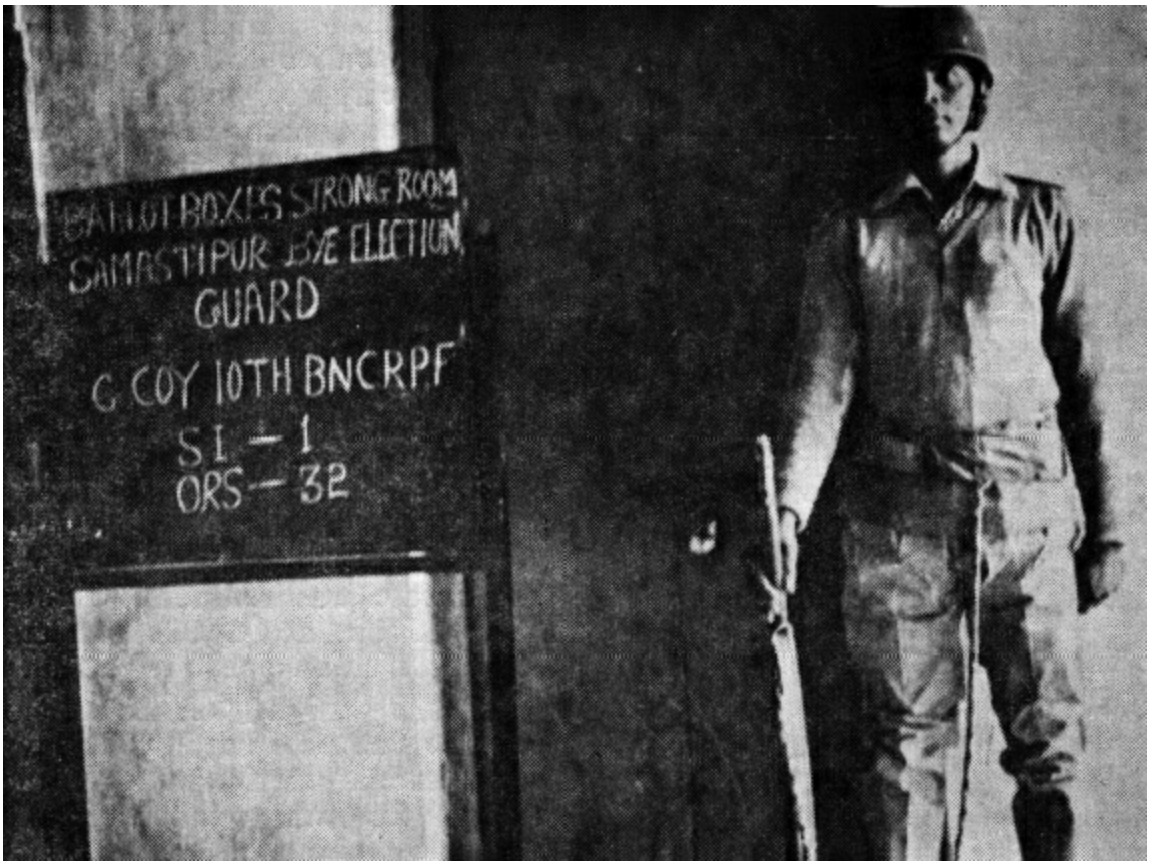
विभूतिपुर, दलसिंह सराय, ताजपुर, मदुआबाद, डूमरी विद्यापति नगर, मुहीउद्दीन नगर, पतालिया, मुसरीगरन, सराय रंजन, वैनी इत्यादि जैसे क्षेत्रों में के० रि० पु० बल को निरत किया गया, जो महा उत्पाती क्षेत्र माने जाते हैं।

साथ ही, समस्तीपुर में आते ही, के० रि० पु० बल को आम जलसों में भी तैनात किया गया, जहाँ उपद्रव होने की आशंका थी; अतः उपद्रवी लोगों को अपने मज़े लेने से महरूम रहना पड़ा। कोई भी दुर्घटना नहीं हुई; यद्यपि के० रि० पु० बल के आने से पूर्व, विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा सम्बोधित सभाओं में हिंसा धधक पड़ती थी।

24 नवम्बर 78 को श्री बी० के० झा, उपमहानिरीक्षक के० रि० पु० बल पटना, कार्रवाई का निरीक्षण करने स्वयं समस्तीपुर आये। दूसरे दिन, वह ज़िला मजिस्ट्रेट, पुलिसाध्यक्ष तथा श्री फज़ल अहमद, अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक से मिले, जो चुनाव-बन्दोबस्त के लिये समस्तीपुर में शिविर लगाये बैठे थे। अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक ने उन्हें यह सूचित किया कि गृह राज्य मंत्री, राज्य मुख्यमंत्री तथा स्थानीय प्रशासन के० रि० पुलिस बल पर निर्भर है और इस बल की परिचालन क्षमता में अक्षुण्ण विश्वास है।

26 नवम्बर 78 को, तनाव भरे वातावरण में शान्तिपूर्वक मतदान प्रारंभ हुआ। कितने ही स्थानों से, उपद्रवों की सूचनायें आने लगीं। मुझे पता लगा कि भीड़ ने बिहार के समाज कल्याण मंत्री श्री कमलेश्वर पासवान का घेराव किया और हाथा-पाई की, तब 10 बटालियन के० रि० पु० बल के एक हैड कान्स्टेबल ने अपनी जान जोखिम में डाल कर, उन्हें बचाया। यह श्री पासवान ने भी स्वीकार किया। श्री सी० सी० पुनाचा, सहायक कमांडेंट, 10 बटालियन के० रि० पु० ने सूझ-बूझ से काम लिया और मंत्री महोदय को समस्तीपुर में एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया।

इसी प्रकार, जब मैं ताजपुर से पूसा जा रहा था, तब लाठियों से लैस लगभग 300 गुंडों की भीड़ गंगानगर क्षेत्र में मतदान केन्द्र को हथियाने आ रही थी। सौभाग्य से, 47 बटालियन की 'ए' और 'एफ' कम्पनियाँ वहाँ आ पहुँचीं। पूर्व इसके कि वह भीड़ कोई क्षति पहुँचाये, हमने पीछा करके उसको भगा दिया।



मतपेटियों वाले कक्ष पर निरत हमारा सजग प्रहरी

यद्यपि कई स्थानों पर छुरेबाज़ी और पिस्तौल-चालन की घटनायें हुयीं, किन्तु जहाँ के० रि० पु० बल निरत था, वहाँ एक भी कोई दुर्घटना नहीं हुयी।

किन्तु हमारा काम अभी समाप्त नहीं हो गया। मतदान के बाद, तनाव और बढ़ गया और के० रि० पु० बल को तैनात करना पड़ा।

मतगणना के दिन, गणना केन्द्र के बन्दोबस्त और मतपेटियों की रक्षा के लिए, स्थानीय अधिकारियों ने के० रि० पु० बल को निरत करने का निर्णय लिया। जब तक मतगणना पूरी नहीं हो गयी और परिणाम नहीं सुना दिया गया, तब तक हमारी चार कम्पनियाँ वहाँ रात-दिन तैनात रहीं।

गणना केन्द्र तम्बुओं में था और उसमें सरलतापूर्वक आग लगाई जा सकती थी। उसके चारों ओर घेरा बन्दी कर दी गयी और ईंट पत्थरों से उसे साफ़ कर दिया गया। वहाँ इतना कारगर प्रबन्ध था कि स्थानीय पुलिसाध्यक्ष यह कहे बिना नहीं रह सके कि "मक्खी तक प्रवेश नहीं कर सकती थी।"

अन्त में, 29 नवम्बर 78 को चिरप्रतीक्षित परिणाम घोषित हुआ। प्रो० अर्जित कुमार मेहता विजयी ऐलान किए गये।

समस्तीपुर के जिला मजिस्ट्रेट ने (जो निर्वाचन अधिकारी थे) के० रि० पु० बल की

सेवाओं के प्रांते आंते आभार प्रकट किया।

बालकों के लिये छात्रावास

महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, 11 से 16 वर्ष की बीच की आयु वाले 50 बालकों के लिये एक छात्रावास बनाने की योजना बना रहे हैं। उसमें वे ही बालक लिये जायेंगे, जो केन्द्रीय स्कूल की पाँचवीं कक्षा से ऊपर वाली कक्षाओं में प्रवेश पाने के लायक हैं।

बालकों के अभिभावकों या माता पिताओं को नाम मात्र छात्रावास शुल्क (फीस) देनी पड़ेगी।

कहानी

बुरी बला

ले० श्री जे० एस० शर्म्मा

"तब आप ही हैं सेठ रतन लाल, जिन्होंने गावदेवी पुलिस स्टेशन को फोन किया था ?" कहते हुये खड़म् खड़म् करते हुये सबइंस्पेक्टर कामत ने ब्रीच कैंडी की दरियासारंग नामक कोठी में प्रवेश किया। ब्रीच कैंडी बम्बई के धनिकों की बस्ती है। एक ओर बहुमंजली अट्टालिकायें आकाश से अठखेलियों करती दृग्गत होती हैं; दूसरी ओर सागर की उत्ताल तरंगें अपने गर्जन तर्जन से उन अट्टालिकायें को चुनौती देती दीखती हैं।

सेठ रतन लाल पहले ही से अपनी मंज़िल की बालकनी में पुलिस की बाट जोह रहा था। आखिर उसने ही तो फोन करके बुलाया था। बालकनी में ले जाते हुये सबइंस्पेक्टर कामत को कुछ नीचे पड़ा दिखाकर, सेठ ने कहा "जी हाँ, वह देखिये । क्या माज़रा है ? कोई गरीब मरा पड़ा है। किसी मोटर ट्रक आदि की चपेट में आ गया दीखता है।"

"दीखता तो मुझे भी है। ओफ़ ! बम्बई शहर क्या हुआ? आफ़त की जड़ हो गयी है । जो देश में कहीं से भागा, ऊँट की सी गर्दन उठाये यहाँ चला आया" कहता हुआ सब-इंस्पेक्टर कामत शव के पास नीचे गया ; सेठ भी साथ-साथ नीचे उतरा। दोनों की मति में सड़क दुर्घटना का मामला लगा "कैसे कैसे ज़ाहिल लोग हैं। ट्रैफिक के नियमों को तो वलायेताक़ रखने में शान समझते हैं।"

"और उसी का यह नतीजा उठाते हैं" क्षीण हास्य से संब-इंस्पेक्टर कामत बोला— "छिः कोई गरीब बेचारा है । मैली सी सफेद पैंट व बुशशर्ट, सब उसकी गुरबत की गाथा सुना रही हैं—मगर-मगर इसकी कमर से अब भी खून बह रहा है—इसके मायने यह हाल का मरा दीखता है । आपने कब देखा?"

"बस थोड़ी देर हुयी। अपनी तो चार बजे तड़के उठने की आदत है । आज भी जैसे ही बालकनी में योगासन करने आया, तो मेरी दृष्टि सड़क पर पड़ी। किसी को दुर्घटनाग्रस्त पाया। तभी थाने को फोन किया।"

'धन्यवाद' कह कर सब-इंस्पेक्टर कामत ने उस मृत पुरुष को ध्यान से देखा। वह अधेड़ उम्र का व्यक्ति था ; चाँद कुछ गंजी हो चली थी ; उसकी बाईं आँख के नीचे एक तिल था। उसका एक दाँत चाँदी का था। जब तलाशी ली गयी, तो उसकी जेब से बयालीस रुपये, कुछ रेज़गारी, चारमीनार की सिगरेट की डिब्बी निकली।

"इस रक़म से भी यही पुष्टि होती है कि दुर्घटना में बेचारा जान गवाँ बैठा है।"

सेठ ने अनुमोदन में ग्रीवा हिलाई । किन्तु उसने नाक पर रुमाल रखकर कहा "मगर देखिये। रहते तो फटे हाल हैं। मगर पीते डट के हैं। फिर जहाँ लड़खड़ाती टांगे ले जाती हैं, वहाँ जा गिरते हैं और लोग ड्राइवरों को दोष देते हैं।"

अब सब-इंस्पेक्टर की बारी थी "इसी का नाम दुनिया है"

सेठ ने तब कलाई की घड़ी देखी और चलने की "इज़ाज़त" मांगी। सब-इंस्पेक्टर ने पंचनामे की बात चलाई "अरे हमें क्यों झगड़े में डालते हैं ? मामला सीधा सादा सड़क दुर्घटना का है। मैं पास के एक दो गोरखों को भेज देता हूँ।"

सब-इंस्पेक्टर ने कोई आपत्ति नहीं की। शीघ्र दो चौकीदारों ने आकर पंचनामा भर दिया। शव को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया गया।

फिर भी, सब-इंस्पेक्टर के दिमाग़ में यह विचार उठा कि जब यह दुर्घटना हुयी होगी, तब गाड़ी को रोकने की चेष्टा ड्राइवर ने अवश्य की होगी। सहसा रुकने से कुछ आवाज़ भी हुयी होगी। माना एकान्त है; रात्रि है, पर रात्रि में तो ऐसी आवाज़ और भी दूर-दूर तक गूँजती है। यही सोच कर सब-इंस्पेक्टर कामत ने पूछताछ की। पहले तो बड़ी निराशा हुई। हर किसी ने अज्ञानता प्रकट की। तभी दूर पर फुटपाथ पर सोया पड़ा एक मद्रासी दिखाई दिया; सब-इंस्पेक्टर ने उसे झकझोरा। वह नेत्र मलते अपनी भाषा में अपशब्द निकालता हुआ उठा, जिसका सारांश था 'अभी तो उस नमक हराम ने नींद हराम की थी। ज़रा झपकी लगी तो अब कौन नामाक़ूल दिक़ करने आ गया"

मगर जैसे ही आँख पूरी खोली, तब थर थर काँपने लगा "हुज़ूर माफ़ करना । बड़ी ग़लती हुई"

"कोई बात नहीं। तुम अभी किसी नमकहराम की बात कर रहे थे ; वह क्या है ?" "कुछ नहीं सरकार । गरीबों की ज़िन्दगी ही ऐसी है। कुछ नारियल बेचकर पेटभर

लेता हूँ और यहीं रात को सो रहता हूँ। पर पों पों की चिल्लपों कहाँ सोने देती है। आज भी ऐसा ही हुआ ? कोई तीन बजे एक टैक्सी यहाँ चक्कर मार कर धड़धड़ाती निकल गयी गोवादिया टैंक की ओर"

"तुम उठ कर आये नहीं ?"

"क्या करता उठ कर हुजूर । यहाँ रोज़ का यही किस्सा है। किसी भलेमानुष का टायर बर्ट हो जाता है; कोई नशे में धुत्त ड्राइवर ब्रेकें मारता चलता है । मगर यह नहीं मालूम था कि कम्बख्त आज किसी को कुचल कर भागा जा रहा है"

इस बेवाक् कथन में सच्चाई कूट कूट कर भरी थी। सब-इन्स्पेक्टर कामत इसकी सच्चाई से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सका। और अधिक जानकारी नहीं मिलने की निराशा से वह थाने लौट आया । तब तक सूर्य बम्बई की रंगीन नगरी पर नित्य की भाँति, खिल खिला रहा था; मानों उसके लिये किसी गरीब की मौत का कोई महत्व ही नहीं था। जब प्रकृति की यह दशा थी, तब यन्त्रों का क्या कहना? हर ओर ट्रैफिक दिखाई दे रहा था। मोटर, टैक्सी, ट्रक की "पों पों" इस प्रकार गूंज रही थी मानों यहाँ किसी की खूनी समाधि ही कभी नहीं बनी हो।

ज्यों ही सब-इन्स्पेक्टर थाने में पहुँचा, उसकी दृष्टि रिपोर्ट लिखाती एक दुःखार्त्त अवला और उसके साथी पर पड़ी। कुतूहलवश, जब वह निकट पहुँचा, तब अवला अत्यन्त व्याकुल थी। वह नेत्रों से आँसू पोंछते हुये कहे जा रही थी "ऐसा तो कभी ज़िन्दगी में नहीं हुआ कि वह घर सुबह को नहीं आये हों। यह भइया जयराम जैसे ही शाम को हमारी टैक्सी ला कर खड़े करते थे, वैसे ही उसे झाड़ पोंछ कर वह यह कहते रात को ले जाते थे—चल महरानी, चड्डी दे । और सुबह होते होते छै-सात बजे तक ज़रूर आ जाते थे। सो हुजूर, अब नौ बज रहे हैं। यह भइया बेचारे भी आठ बजे से उनका इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"फिर टैक्सी कहाँ है?" कामत ने पूछा।

"वही तो रोना है। वह सड़क पर पास में भली चंगी खड़ी है और एक वह हैं जिनका अब है न तब ।" फिर अबला ने निश्वास ली "यह बेचारे अच्छे को आगये, जिन्होंने दौड़धूप में अपने पैर चलनी कर दिये हैं और हार कर हुजूर की ढ्योढ़ी ले आये हैं।"

"दौड़ धूप से मतलब" कामत ने जयराम की ओर दृक्पात किया।

"यही जहाँ जहाँ नारायण खड़ा होता था, वहाँ वहाँ पूछताछ की, सरकार।"

"कहाँ खड़ा होता था ?"

"आते ही वह तिवारी पान वालों से सिगरेट का पैकेट खरीदता और कुछ गपशप हाँकता था। सो आज उस तक ने उसे आते नहीं देखा"

कामत का माथा ठनका। वह मृत शरीर कुछ ड्राइवर जैसे का लगता था; फिर

उसी क्षेत्र की तो बात ही थी "तब क्या तुम्हारा पांते कुछ गंजा है ?"

"जी सरकार, पर आपको कैसे मालूम ?"

"उसके एक दाँत में चाँदी लगी है; उसकी बायीं आँख के नीचे तिल है"

"अरे आपने कहाँ देखा?"

सब-इन्स्पेक्टर को पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि हो न हो, वह नारायण का ही शव था। फिर क्या था? उसने उसकी मटमैली सफेद पैंट व बुशशर्ट उसकी हवाई चप्पल आदि सब के विषय में अलग अलग पूछा। और अन्त में कहा—'हम सब जानते हैं। वह चार मीनार की सिगरेट पीता है"

निज पति के रूप-रंग, वेश-भूषा, व्यसन आदि का सच्चा खाक़ा सुनकर अबला सकते में आ गई। वह उसके पैरों पर गिड़गिड़ाती गिर पड़ी।

"क्या वह आपकी हिरासत में हैं ? बताइये सरकार, उनसे क्या ख़ता हो गई ?"

सब इस्पेटर कामत इसका उत्तर नहीं देते हुए झुंझला कर बोले 'पहले तो अनाप शनाप पी जाते हैं; फिर धुत्त हो कर टैक्सी चलाते हैं; ऐक्सीडेंट कर बैठते हैं, दूसरों को मारते हैं और खुद..."

सब इंस्पेक्टर आगे का वाक्य नहीं बोल सका, उसका कंठ अवरुद्ध हो गया; वह जानता था कि वह बेचारी अबला अनभ्र वज्रपात को सहन नहीं कर पायेगी। अतः उसने जय राम के कान में कुछ कहा। जय राम की भी विकलता उसकी पत्नी से कम नहीं हुई। वह कटी शाख की भाँति गिर पड़ा "हाय दोस्त। बहन सावित्री, यह क्या हुआ?" कहते हुए उसके नेत्रों में अविरल अश्रुधारा बहने लगी। उसकी पत्नी चाहे पढ़ी-लिखी नहीं थी, किन्तु वह सब वृत्तान्त तुरन्त समझ गयी । और छाती पीट-पीट कर वह जल बिन मछली की भाँति तड़पने लगी।

"अरे ! यह तो कुछ और ही मामला निकला" कहते हुए सब-इंस्पेक्टर कामत ने माथा टंकारा । वह फिर बुदबुदाया "जब शराब के साथ टिक टुवेन्टी नारायण के पेट से निकलती है, तब यह दुघर्टना का मामला नहीं हो सकता । अधिक से अधिक आत्म-हत्या वर्ना सौ बिस्से हत्या.." कहते हुए सब-इंस्पेक्टर टहलने लगा। "मगर कुछ समझ में नहीं आता । पैसे पास निकले—रंजिश थी नहीं किसी से। और हाँ वह नारियल वाला कहता था कि रात के साढ़े तीन बजे उसने वहाँ टैक्सी देखी थी ; किन्तु यहाँ डाक्टर उसकी मृत्यु दो बजे करार देते हैं" काग़ज़ात को पटकते हुए सब-इंस्पेक्टर अत्यन्त परेशान दृष्टिगत होता था.. "बड़ी उलझन है। आत्महत्या या हत्या, तो लाश कैसे ब्रीच कैंडी पर..." सोचते हुए सब-इंस्पेक्टर कामत सहसा उठा और शीघ्र नाना चौक की मेहता बाडी जा पहुँचा, जहाँ नारायण रहता था। उसकी अकाल मृत्यु की सूचना वहाँ रुई सी धुन गई थी। घर में कोहराम मचा हुआ था, सावित्री की दयनीय दशा देखी नहीं जा रही थी। जयराम अपने मित्र की मृत्यु पर करुण क्रन्दन कर रहा था; सब उसको साहस बंधा रहे थे—"भई, तुम तो मर्द बच्चे हो; अब तो सब्र करने—"

"छेः सब कैसे करूँ। तुम्हें क्या मालूम उसके मुझ पर क्या-क्या एहसान हैं, जिन्हें मैं सौ जन्म में नहीं उतार सकता"

दूसरी ओर बैठे कुछ अत्यन्त शोक प्रकट कर रहे थे "बेचारा होली दिवाली पी लेता हो तो मालूम नहीं, वर्ना वैसे तो कभी पीते देखा नहीं—'

तभी दुःखार्त्त जयराम ने पनवाड़ी से पूछा "तिवारी तुझे तो मालूम होगा..." तिवारी की त्यौंरी चढ़ गई "मुझे क्यों ख्वाहम ख्वाह घसीटते हो? तुम तो मुझ से ज़्यादा जानते हो"

"यार तुम तो बुरा मान गये" जयराम ने क्षमायाचना की मुद्रा में कहा। अन्य सब ने भी मामला रफ़ा दफ़ा किया। किन्तु सब-इंस्पेक्टर कामत को शान्ति नहीं हई। उसने तिवारी को अलग ले जाकर पूछा तो तिवारी ने बताया "हुजूर। वह अपने आप कभी नहीं पीता था"

"पर मुफ़्त की शराब तो काज़ी को भी रवा हो जाती है" कह कर सब-इंस्पेक्टर हँसा।

"नहीं हुजूर, वह तो एक पौवा भी नहीं झेल पाता था"

"अच्छा, छोड़ो भी उस बात को। तुमने टैक्सी कब खड़ी देखी?"

"हुजूर, मैं सुबह पाँच बजे दुकान खोलता हूँ। तब मेरी नज़र टैक्सी पर गयी। सोचा नारायण बीमार हो गया होगा"

"हूँ, तब इसके मायने यह हुए कि रात के दो बजे और पाँच बजे के बीच टैक्सी आयी"

"रात के नौ बजे से कहिए"

"नहीं, नहीं, यह कुछ और बात है। तुम नहीं समझ सकते" कहता हुआ कामत ने क्षीणहास्य किया। फिर वह थाने लौट आया। वहाँ भी उधेड़ बुन में टहलता रहा। तभी उसकी दृष्टि पुलिस नोटिस बोर्ड पर गयी और कुछ देर को ठिठक कर रह गया। फिर वह बुदबुदाया—क्या जयराम ? अरे कहीं वही तो जयराम नहीं, जो नारायण का दोस्त है। पर वह तो जीता जागता वहाँ बैठा है। फिर लापता कैसे ? आज कैसा अभागा दिन है। एक उलझन के बाद दूसरी उलझन उठ खड़ी हो जाती है"

तभी उसने माईबाड़ा थाने को फोन किया, क्यों कि यह रिपोर्ट उसी थाने की थी। यह क्या ? उसका सन्देह सच निकला। जयराम वही था; पर वह दुर्घटना की रात को घर नहीं पहुँचा था। उसकी पत्नी राम प्यारी ने बड़ी बेचैनी से रात काटी थी और सुबह होते ही पड़ोसी के अनुरोध पर पुलिस थाने में रिपोर्ट करायी थी। आख़िर बम्बई ठहरी, जयराम ड्राइवर ठहरा। इन दोनों का दुघर्टनाओं से चोली दामन का साथ है।

कामत का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा "जयराम टैक्सी की चाबी नारायण को देता है; फिर घर क्यों नहीं पहुँचता है ?" इसका समाधान खोजने के लिए वह चुपचाप

सादी वर्दी में कुछ सिपाहियों को भी सादे वेष में लेकर जेर भाई वाडिया रोड पहुँचा। वहीं जयराम रहता था। उस समय उसकी पत्नी चावल बीन रही थी। कई लोगों की टोली देख कर वह घबरा गई; पर कामत ने बताया कि उसकी रिपोर्ट पर ही कार्रवाई करने वे आये हैं।

"पर वह तो कल ही सुबह आ गये। सरकार, मैं औरत जात हूँ। बेकार को घबड़ा गई। आते ही उन्होंने डाट पिलाई कि ज़रा इन्तज़ार नहीं हो सका। कोई मैं मर तो नहीं गया था। ज़रा जोगेश्वरी के राम प्रसाद के घर चला गया था।

"यह राम प्रसाद कौन ?"

"हुजूर, मसाजवादी में हमारे रिश्तेदार हैं। सब वहाँ 'दुबे जी' कर के जानते हैं"

"ठीक ! ठीक !"

"पर वे कहते थे कि थाने में रिपोर्ट रद्द करा आऊँगा"

"ऐसा होता तो हम क्यों आते ? कोई बात नहीं, तुम्हारा लौटा सुहाग मिल गया"

"बस भगवान की महर की नज़र है" कहते हुए राम प्यारी ने भगवद् ध्यान में नेत्र मूँद लिए।

इधर कामत ने सीधा रास्ता जोगेश्वरी का पकड़ा। राम प्रसाद पूरी टोली देखकर हक्का-बक्का रह गया; किन्तु कामत ने ढाढस बँधाते हुए कहा 'घबड़ाने की कोई बात नहीं है। तुम्हारे रिश्तेदार जयराम की पत्नी ने थाने में रिपोर्ट लिखाई है कि उसका पति लापता है। हमें ऐसा पता लगा है कि वह कल तुम्हारे घर रहा था।"

"हुजूर, यह सरासर झूठ है। महीनों से यहाँ उसके दर्शन नहीं हुए हैं ?" गिड़गिड़ाता हुआ राम प्रसाद हाथ जोड़ कहने लगा "सरकार, इसमें हमें फँसाने की किसी की चाल है।"

"कोई बात नहीं। दूध का दूध, पानी का पानी हो जायेगा। तुम साथ चलो"

राम प्रसाद 'ना' नहीं कर सका। पुलिस टुकड़ी राम प्रसाद को साथ लेकर सीधी नारायण की खोली पहुँची। उन सब को देखकर, उसकी पत्नी फूट-फूट कर रोती दिल के फफोले फोड़ने लगी "हाय भगवान, मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था, जो ज़हर देकर मेरा सुहाग छीन लिया। परमात्मा उसकी पत्नी को भी यह दिन दिखाये। उसके दो मासूम बच्चों की करुण चीत्कार हृदय विदीर्ण किए देती थी "हाय बापू। हम अनाथों को छोड़ कर कहाँ चले गये ?"

सब-इंस्पेक्टर कामत ने निज हृदय पर बज्र रख कर, उन्हें धीरज बँधाया "सब्र करो सब्र। उस ज़ालिम हत्यारे का पता शीघ्र लग जायेगा"

"क्या सच्च ?'" पैरों पर पड़ती सावित्री बोली।

"बिल्कुल। मगर टैक्सी का लाइलैंस और दूसरे काग़ज़ात कहाँ हैं ?"

“वह मुझ पर कहाँ ? उन्हें तो वह हमेशा प्लास्टिक की थैली में साथ रखते थे”

“अच्छा हम गाड़ी देखते हैं” कहकर पुलिस टोली ने गाड़ी की ख़ाना तलाशी ली। उसमें प्लास्टिक की थैली अवश्य मिली; परन्तु ज़रूरी काग़ज़ात सब गायब थे”

“कुछ समझे कामत; यही सब हत्या की जड़ है” मन में कहता हुआ कामत चल पड़ा। थाने में पहुँच कर उसने राम प्रसाद को थाने के पूछताछ के कक्ष में चुपचाप बिठा दिया। उसी समय एक जवान ने कामत के कान में कुछ कहा, जिसे सुनकर कामत के मुख पर मुस्कान दौड़ गई “क्या सच्च ?”

“जी हाँ, मरघट पर खुद चने वाला कह रहा था कि उसने चने लेकर टूँगे । तभी नारायण टैक्सी लेकर निकला। टैक्सी को देखते ही उसने कहा “रोक भी यार । हम भी साथ चलते हैं । फिर दोनों टैक्सी में सवार हो कर चले गये।”

“हूँ। तब जाओ और उसे सीधा यहाँ ले पाओ । यदि न नुकच करे तो कहना कि थानेदार साहब को कुछ बयान लेना है।”

थोड़ी देर में पुलिस टुकड़ी एक आदमी को थाने ले आयी। सब इस्पेक्टर ने आते ही उसको घूर कर देखा; “क्यों तुम्ही जयराम हो जो नारायण की टैक्सी चलाते हो”

“जी सरकार”

“फिर तीन की रात को नारायण को टैक्सी सौंपने के बाद कहाँ गये थे ?”

“कहीं नहीं माई बाप ! सीधा घर।”

“फिर तुम्हारी पत्नी ने यह रिपोर्ट कैसी कराई कि तुम लापता हो। फिर उसने हमें यह क्यों कर बताया कि तुम जोगेश्वरी के राम प्रसाद के घर चले गये थे। और राम प्रसाद कहता है कि तुम महीनों से वहाँ नहीं गये हो ।”

“यह झूठ है।

“तब सच्च क्या है ?” सब-इंस्पेक्टर कामत ने तभी रामप्रसाद को बुलाया।

“बोल यह सच्च है कि तू ?”

रामप्रसाद ईश्वर सौगन्ध खाने लगा। “भइया, मैंने तेरा क्या अपराध किया है जो मुझे फंसाना चाहता है ?”

जयराम के पग तले की भूमि निकल गई। तभी कामत ने जयराम का कालर पकड़कर झकझोरा “बहुत चालाक बनता था ज़ालिम । बता तीन की रात कहाँ बिताई ? घर पर होता, तो तेरी पत्नी क्यों रिपोर्ट कराती । सच सच बता, तू चने मुरमुरे की दुकान के पास टैक्सी रुकवा कर नारायण को कहाँ ले गया था ?”

जयराम कोई पक्का अपराधी नहीं था; फिर उसे लगा कि पुलिस ने शिंकजे में पूरा कस लिया है। उसे पुख़्ते सबूत मिल चुके हैं। तभी वह खेल गया। वह बिलख-बिलख कर कहने लगा “हुजूर यह क़त्ल मैंने नहीं बल्देव सींग ने किया है”

"किया है कि कराया"

"कुछ भी समझ लीजिये। मगर सारी कारस्तानी उसकी है"

"यह सींग है कौन बला?"

"अभी बताता हूँ। ज़रा कालर छोड़ दीजिये"

कामत ने कालर छोड़ दिया, तब जयराम गिड़गिड़ाने लगा "सच कहता हूँ सरकार ! बल्देव सींग पंजाबी पांच टैक्सियों का मालिक है। उसे छठी टैक्सी की ज़रूरत थी। उसके पाने के लिये वह मुझे रोज़ दिक़ करता था। उसके लिये पन्द्रह बीस हज़ार देने की बात उसने एक दिन कही । पन्द्रह बीस हजार मुझ जैसे गरीब को बहुत थे । मेरे मुँह में पानी भर आया। मैंने नारायण की टैक्सी का सौदा उससे तय किया; किन्तु अड़चन यह थी नारायण किसे बनाया जाये । उससे ज़रूरी काग़ज़ात कैसे पाये जायें । अतएव नारायण को ख़त्म करने की मैंने योजना बनाई। इसमें एक मित्र गोविन्द को अपने साथ मिला लिया। वह आजकल बेरोज़गार है । उसने स्वयं को नारायण बनने के लिये चार सौ रुपये माँगे । दो सौ में सौदा पटा।"

'क्या खूब ? फिर टिक टुवेन्टी कहाँ से खरीदी और नारायण को कैसे पिलाई ?'

"हुजूर । टिक टुवेन्टी दुकान दुकान पर बिकती है। मैंने एक बनिये से टिक की बोतल खरीदी; उसे पैंट में छिपाली और टैक्सी देने नारायण के पास गया। उस समय नारायण तिवारी की दुकान से सिगरेट लेकर जलती डोरी से सुलगा रहा था। टैक्सी सौंप और हिसाब चुकता कर, मैं सूरजप्रसाद चने मुरमुरे वाले की दुकान पर आया। यहाँ चने खरीद कर टूँगने लगा। दरअसल, मैं नारायण की बाट जोहने लगा। तुरन्त ही आशा फली। नारायण शीघ्र ही टैक्सी लेकर पास से निकला। मैं आवाज़ देकर उसमें बैठ गया। फिर मैंने रोमानी मूड बना कर गला तर करने का प्रस्ताव रखा। वह बराबर मना करता रहा—"भई, मैं गरीब आदमी हूँ। मुझे माफ़ कर"

"छिः कभी कभार पीने में कोई ईमान नहीं जाता" कहकर मैने उसे फाँस लिया। फिर दो अड्डों पर उसे डट कर पिलाई। नारायण धुत्त हो गया। वह बारम्बार अपने घर छोड़ने को कहने लगा। पर मेरी लोलुपता का भूत कहाँ शान्त हुआ था ? अभी तो नाटक का ड्राप सीन बाक़ी था। उसके लिये मैं एक सूनसान गली में उसे ले गया और वहाँ चुपके से टिक निकाल कर गिलास में भरकर उसे पिलाई। पीते ही वह मछली की भाँति तड़फने लगा "ज़ालिम, मैंने कौन सा गुनाह किया था जो तूने यह बदला—

वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि क़ै पर क़ै वह करने लगा और देखते ही देखते उस के प्राण सदा को—"

जयराम के नैनों से अश्रुधार बहने लगी । तभी कामत चिल्लाया "बन्द कर ये मगरमच्छी आसूँ और यह बता कि तूने हमारे कान काटने की कैसी कोशिश की। वह तो सड़क दुर्घटना का मामला बन कर बन्द होने जा रहा था। भला हो उस पोस्ट मार्टम का"

जयराम मृत्यु के समान मौन था। मगर कामत ने तुरन्त हंटर उठाया और मुख में घुसेड़ने का संकेत किया "अबे, बोलता है कि बुलाया जाये"

जयराम घबड़ा गया "बताता हूँ ; बताता हूँ, हुजूर । मुर्दे नारायण को लिये कई जगहों पर उसे ठिकाने लगाने की सोची । अन्त में, दरिया सारंग इमारत के सामने एकान्त पाकर लाश को बीच सड़क पर चुपके से उतारा; उसकी प्लास्टिक थैली से काग़ज़ात निकाले और फिर टैक्सी में बैठकर लाश को कुचलते हुये वहाँ से नौ दो ग्यारह हुआ। टैक्सी नारायण के घर के पास खड़ी कर लोकल गाड़ी से गोविन्द के पास पहुँचा । उसे सारा वृतान्त सुनाया और उसे काग़ज़ात देकर घर लौटा । तब तक बावली रामप्यारी रिपोर्ट लिखा पाई थी। अपने सुहाग को लौटा देखकर कर वह फूली नहीं समाई—

"थोड़ी देर के बाद, मैं सावत्री के पास सम्वेदना का स्वांग करने पहुँचा, जिस से कोई सन्देह नहीं कर सके । पर पुलिस पुलिस होती है। आखिर आपने पकड़ ही लिया।"

वस्तुतः इस में पुलिस ने बड़ी सूझ बूझ, साहस तथा सतर्कता से काम किया था और इसी कारण सेशन जज के पास जयराम को प्राण दंड देने के अतिरिक्त कोई अन्य चारा ही नहीं रह गया था। अन्ततः सावत्री का आभिशाप व्यर्थ नहीं गया। जब उसे सब क़ैफ़ियत मालूम पड़ी, तो वह आहत नागिन की भाँति फुत्कार उठी "ओ आस्तीन के साँप ! तूने खूब भाई का हक़ निभाया।"

उस समय काटो तो जयराम के रक्त नहीं था। वह स्वंय को संभाल नहीं सका। और आपाद मस्तक गिरने लगा, मानों उसकी आत्मा यह कह कर धिक्कार रही थी "क्या बड़े-बूढ़े नहीं सच कहते हैं कि लालच बुरी बला है ?"

अधिकारियों को ऋण-सुविधा

दिनांक 1 जनवरी 1979 से महानिदेशालय के० रि० पु० बल में, राजपत्रित अधिकारियों के लिये बल-स्तर पर, ऋण निधि स्थापित हुआ है। हर यूनिट 'कल्याण व सुविधा निधि' से शुरू में 200 रु० लेकर इस ऋण निधि को देगी, तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष, यूनिट से कुल इकत्रित राशि का 1% इस विधि को देना होगा। इस ऋण का लाभ (अस्पताल और मंत्रि वर्ग के अधिकारी समेत) सभी राजपत्रित, अफसर उठा सकेंगे, 'जो कल्याण और सुविधा निधि' में अभिदान देते हैं। निम्नलिखित उद्देश्यों के लिये यह ऋण मिल सकेगा—(I) विवाह (अपना या अपने बच्चों का) तथा धार्मिक समारोह (II) अपनी या अपने परिवार के सदस्य की बीमारी (III) अपने बच्चों की शिक्षा तथा (IV) अपने घर की मरम्मत। इसके अतिरिक्त, सक्षम अधिकारी की अनुमति से, किसी अन्य वैध कार्यों के लिये भी ऋण मिल सकता है। प्रति वर्ष जनवरी, अप्रैल, जुलाई, और अक्टूबर की 15 तारीख को इसकी याचना उपनिदेशक (प्रशासन) महानिदेशालय पर पहुँचनी चाहिये । अधिक से अधिक एक मास के मौलिक वैतन के

बराबर ऋण मिलेगा; विशेष स्थिति में अवश्य तीन मास के वेतन के बराबर ऋण दिया जा सकेगा । इस ऋण को 10 किश्तों में लौटाना होगा और साधारण ब्याज 6% की दर से उगाहा जायेगा।

देश - सेवा में के० रि० पु० बल



नई दिल्ली को किसान रैली में भीड़ नियंत्रित करते हुये हमारे जवान

इस लेख में, रक्तदान, जलनिमग्नों के बचाव, चिकमगलूर और समस्तीपुर में निष्पक्ष मतदान, मणिपुर में उग्रवादियों से निपटान आदि उन जन सेवाओं का उल्लेख है, जिन्हें के० रि० पु० बल ने उठाया है। अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर 78 के महीनों में विभिन्न स्थितियों से निपटने में स्थानीय प्रशासन को दिये इस बल के सहयोगों का भी वर्णन है।

असम—अगस्त 78 में खेली गयी बार-छोली ट्राफी फुटबाल फाइनल मैच के ठीक उपरान्त असमियों और बंगालियों के बीच झगड़ों के कारण, साम्प्रदायिक तनाव व्याप्त हो गया। यद्यपि स्थानीय पुलिस ने स्थिति से चतुरतापूर्वक सुलझा, किन्तु असम के लगभग सभी भागों में तनाव फैल गया। के० रि० पु० दल में न्याय-व्यवस्था बनाये रखने के लिए कुछ अतिरिक्त कम्पनियाँ स्थानीय प्रशासन के सहयोग को भेजी गयीं।

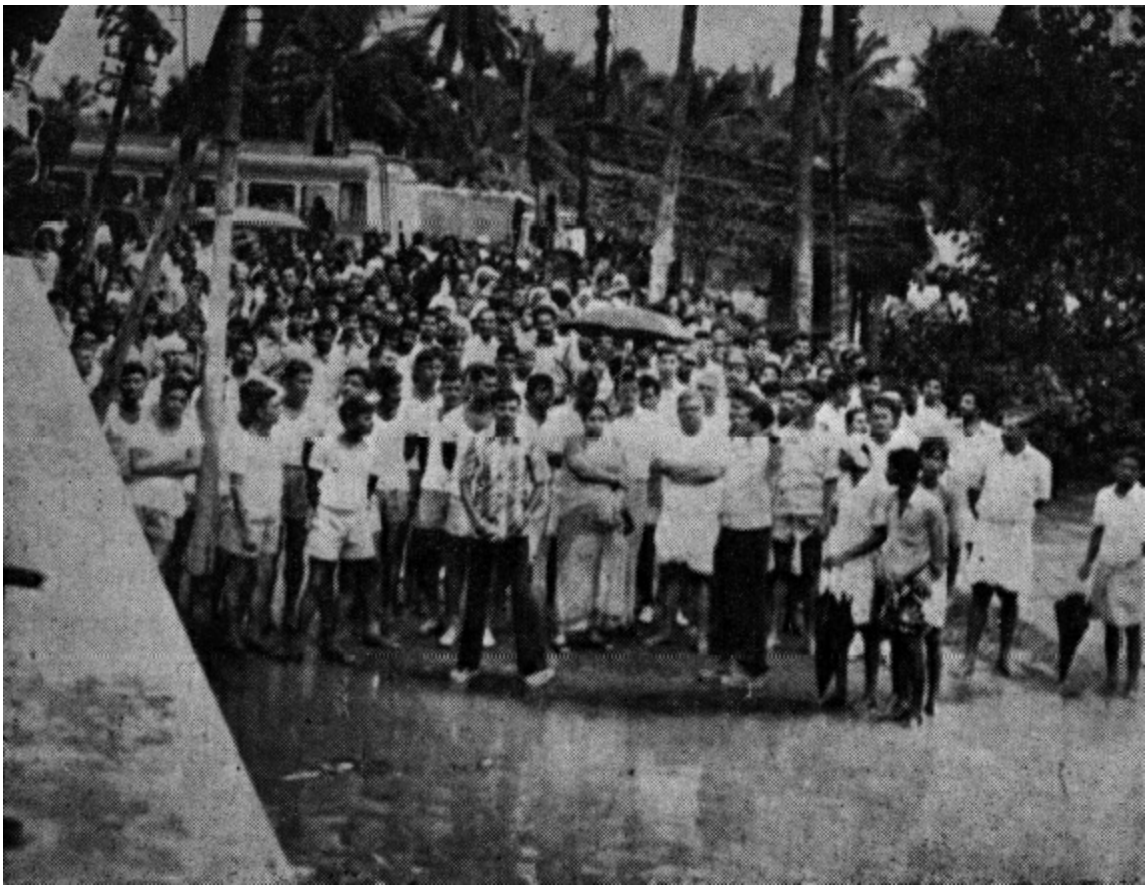
बिहार—इस आलोच्य काल में, बिहार में सरकार की आरक्षण नीति के विरुद्ध आन्दोलन छिड़ा हुआ था। छात्रों ने सरकारी नीति का विरोध किया तथा आरक्षण विरोधियों ने रेल तथा अन्य सरकारी सम्पत्ति पर धावे जारी रखे । शिक्षा संस्थान गुन्डा गर्दी के अड्डे रहे। भीषण स्थिति से निपटने के लिए, के० रि० पु० बल की दो अतिरिक्त बटालियनें वहाँ निरत करनी पड़ी।

दिल्ली-4 नवम्बर 78 से दिल्ली के इण्डिया गेट के पास निरंकारियों का त्रिदिव सीय संगम आयोजित हुआ। 5 नवम्बर 78 को उसके विरुद्ध अकालियों ने प्रदर्शन किया। उस दिन बंगला साहिब के पास उपद्रव शुरू हुआ । जलूस वालों ने गोल डाकखाना को क्षति पहुँचाई और दिल्ली परिवहन निगम तथा पुलिस की गाड़ियां जला दीं। के० रि० पु० बल की दो गाड़ियों पर भी पथराव हुआ। लाठी चलाने के साथ-साथ, दिल्ली पुलिस ने विभिन्न स्थानों पर हिंसा पर उतारू भीड़ को तितर-बितर करने के लिए अश्रुगैस छोड़ी। स्थानीय अधिकारियों के आदेशों पर, के० रि० पु० बल को गोली चलानी पड़ी। के० रि० पु० बल के 28 जवान पथराव से घायल हुए। दिल्ली पुलिस का एक सिपाही और दो नागरिक मारे गये। के० रि० पु० बल के अनेक जवान निरत किये गये; उन्होंने अत्यन्त संयम तथा कारग़र रूप से स्थिति से सुलझा।

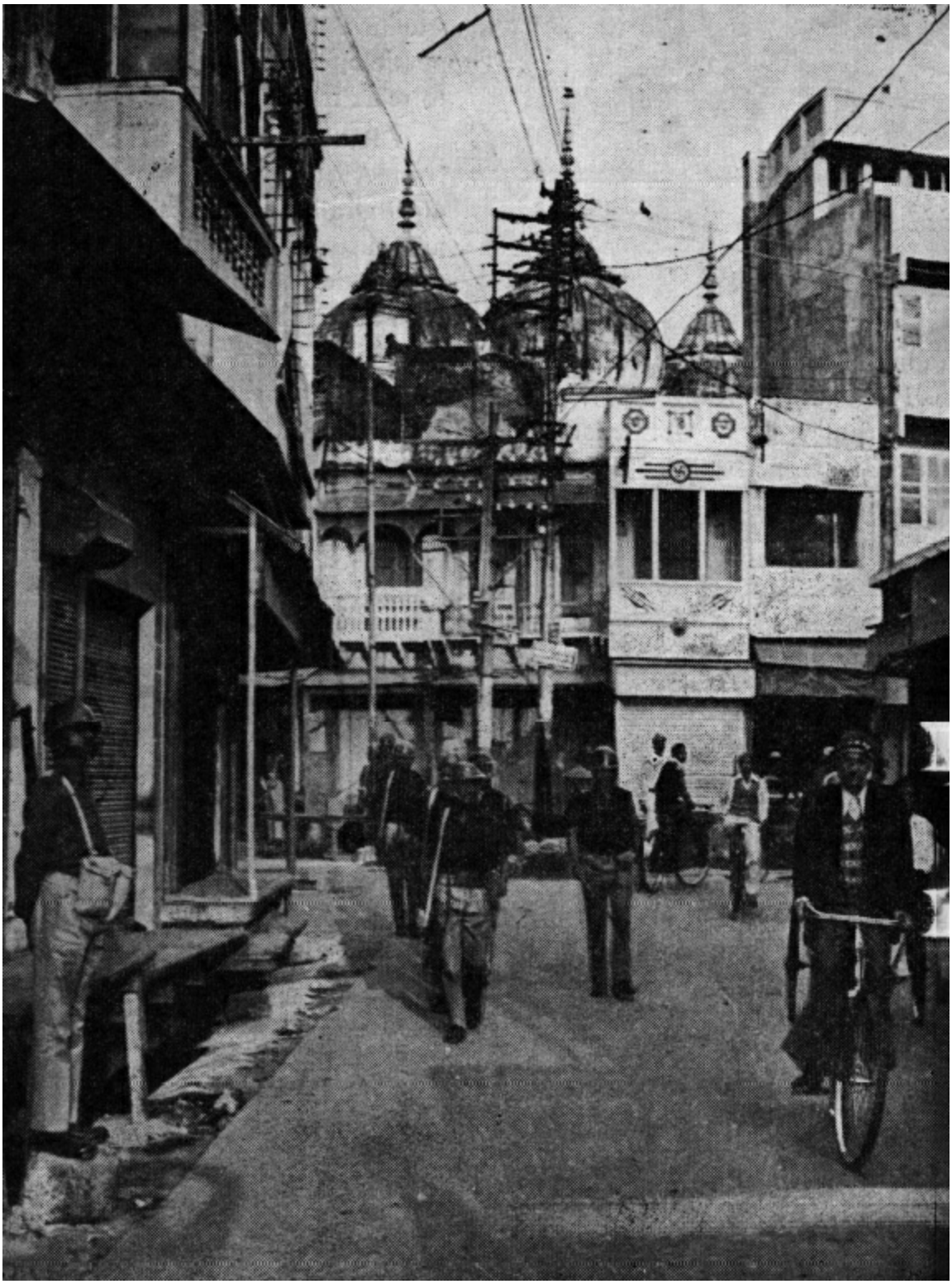
19 दिसम्बर 78 को, श्रीमती इन्दिरा गांधी, भू० पू० प्रधान मन्त्री को बन्दी बनाने का ऐतिहासिक निर्णय लोक सभा ने लिया। राजधानी में शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने के लिए, के० रि० पु. बल को दिल्ली प्रशासन की सहायता के लिए व्यापक रूप से निरत किया गया।

23 दिसम्बर 78 को, किसान रैली के अवसर पर, के० रि० पु० बल की दो अधिक बटालियने बुलाई गईं । पहले ही छै वटालियनें इस हेतु निरत थीं। एक अतिरिक्त बटालियन, रिजर्व में भी रखी गयी।

केरल-4 नवम्बर 78 को, त्रिवेन्द्रम नगर और इसके आस पास की भूमि निर न्तर वर्षा के कारण बाढ़ में डूब गयी। साधारणजन-जीवन और संचार व्यवस्था ठप्प हो गयी । के० रि० पु० बल के 56 जवानों ने सैकड़ों बाढ़ पीड़ितों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया और स्थानीय प्रशासन को भरसक सहयोग दिया। श्री वी० एस० - शास्त्री, डी० आई० जी, त्रिवेन्द्रम ने के० रि० पु० बल की सेवाओं की श्लाघा इन शब्दों में की–'लोग के० रि० पु० बल को बल मानते रहे हैं; किन्तु अब उन्होंने उसकी सेवा भी देखी है।'



हमारे जवानों द्वारा बचाये हुये बाढ़ पीड़ितों की बाट जोहती हुई केरल लोक निर्माण मंत्री (सफेद धोती में) समेत असहाय भीड़



उपद्रवग्रस्त अलीगढ़ में पहरा देते हुये हमारे वीर जवान

उत्तर प्रदेश-क़ानून तथा व्यवस्था की स्थिति उत्तर प्रदेश में बिगड़ी हुई थी। मेरठ में छात्र उत्पात, कानपुर और लखनऊ में निरंकारी-अकाली संघर्ष और अलीगढ़ में

उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में शान्ति स्थापन के सम्बन्ध में के० रि० पु० बल को जाना पड़ा। अलीगढ़ में, छापे मारने, पहरा लगाने और स्थिति पर नियंत्रण रखने के लिये, के० रि० पु० बल के जवानों ने स्थानीय पुलिस की सहायता की। फलस्वरूप, स्थानीय प्रशासन ने कर्फ्यू में ढील दी। पर समाज विरोधियों को पकड़ने तथा 5 घातक अस्त्र तथा अन्य हथियारों तक प्राप्त करने में, के० रि० पु० बल ने अलीगढ़ की पुलिस की सहायता की।

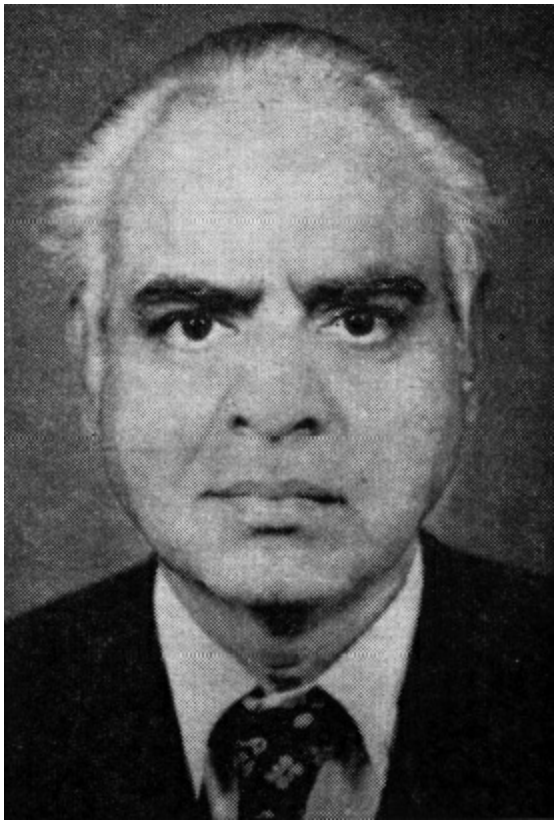
फतहपुर में हुए उपचुनाव के समय, न्याय-व्यवस्था बनाये रखने के लिए, 46 बटालियन (के० रि० पु० बल) की दो कम्पनियाँ निरत की गयीं।

सेवा निवृत्ति

श्री आई० के० सहगल, उपनिदेशक (लेखा) 16 जनवरी 1979 को अधिवर्ष सेवा-निवृत्त हो गये। श्री प्रार० सी० गोपाल महानिदेशक ने स्मारक स्वरूप एक मेज लैम्प श्री सहगल को भेंट किया।



श्री प्रार. सी. गोपाल, महानिदेशक से भेंट स्वीकार करते हुये श्री आई. के. सहगल –



स्व० श्री के. एच. कर्मचन्दानी

निधन !!!

राम मनोहर लोहिया अस्पताल में 4 दिसम्बर 1978 को हृदयगति रुक जाने से श्री के० एच० कर्मचन्दानी, सहायक निदेशक (विधि) का निधन हो गया और 18 दिसम्बर 78 को श्री बी० एम० सिंह, कमांडेंट 46 बटालियन का देहान्त चण्डीगढ़ में छुट्टी मनाते हो गया। 3 फरवरी 1979 को, दिमागी नस फटने से ले० कर्नल राजिन्दर सिंह, संयुक्त सहायक निदेशक, (क्रिप्टो-गुप्त सन्देश) महानिदेशालय का स्वर्गवास हो गया। तीनों परिश्रमी तथा अनुभवी अधिकारी थे। श्री आर० सी० गोपाल, महा निदेशक, के० रि० पु० बल ने संतप्त परिवारों को अपनी सम्वेदना के सन्देश भेजे हैं और दिवंगत आत्माओं के लिये शांति की प्रार्थना की है।

<u>स्वास्थ्य संदेश</u>

मूत्र-चिकित्सा

ले०-श्री जे० एस० शर्मा

जब आप गौमूत्र पान कर सकते हैं, तब स्वमूत्र पान क्यों नहीं कर सकते ?--मुरारजी देसाई

जब से जनता पार्टी सत्ता में आई है, स्वमूत्र-चिकित्सा की महत्ता सहसा बढ़ी है। इसका प्रधान कारण यह है कि हमारे प्रधान मन्त्री श्री मुरारजी देसाई स्वयं इस चिकित्सा के क़ायल हैं, जो कुछ दिन पहले तक स्वास्थ्य मन्त्री का पदभार भी संभाले हुए थे। इससे पूर्व भी राज नारायण, जो स्वास्थ्य मन्त्री थे, स्वमूत्र चिकित्सा के महा समर्थक थे। वह ही क्यों, वित्त मन्त्री श्री चरणसिंह भी, इसी चिकित्सा के प्रशंसक हैं और वह अपने निकटस्थों को इसी चिकित्सा का परामर्श देते हैं। इसी प्रकार, प्रधान मन्त्री ने इन्हीं दिनों यह दावा किया है कि मूत्र-चिकित्सा से उनका कब्ज सदा को दूर हो गया।

इस भांति जनता पार्टी के कई प्रमुख नेता स्वमूत्र-चिकित्सा के उपासक हैं और इसी कारण, कुछ प्रकाशकों ने स्थिति का लाभ उठा कर इस विषय पर कुछ ग्रंथ भी प्रकाशित कर नाम और दाम अच्छे कमाने का प्रयत्न किया है।

I आधार-फिर भी, यह चिकित्सा पद्धति अतीव विवादग्रस्त रही है। कुछ पालोचकों ने मूत्र को 'शिवाम्बु', 'जीवनजल' या 'परम अमृत' की संज्ञा देकर बड़ी खिल्ली सी उड़ाई है; किन्तु कट्टर आर्य समाजी विद्या नंद विदेह ने 'स्वमूत्र-चिकित्सा' का बीज वेदों में तक खोज निकाला है। कतिपय पुराणों में भी इसका उल्लेख है; प्रत्युत् पौराणिक काल में लिखी पुस्तक "शिवाम्बु-कल्प" में तो स्वमूत्र चिकित्सा पर अच्छा प्रकाश डाला है और मूत्र को 'परमामृत' कह कर पुकारा है। जैन साहित्य में भी इसका जहां तहां वर्णन है।

अन्य ज्ञान की भांति, यह चिकित्सा भी काल की कुहेलिका में विलीन हो गई । अब इसके पुनरुत्थान का सारा श्रेय श्री जान **डबल्यू आर्मस्ट्रांग** को जाता है, जिसने **'दि वाटर आफ लाइफ'** नामक पुस्तक लिख कर इस पद्धति को फिर से एक व्यावहारिक शास्त्र का रूप दिया है। इस पुस्तक का हिन्दी में भी अनुवाद उपलब्ध है। श्री आर्म स्ट्रांग ने भारतीय ग्रन्थों से प्रेरणा लेने के स्थान पर, इस चिकित्सा का आधार बाइबिल में पाया है।

II भारत में प्रचार–डेढ़-दो वर्षों से स्वमूत्र-चिकित्सा का बड़ा प्रचार भारत में हुमा है तथा पत्र-पत्रिकाओं में इसके पक्ष विपक्ष में लिखे गये लेखों से इस प्रणाली की अच्छी जानकारी मिली है। अतः इसके विरुद्ध घृणा तथा वितृष्णा की भावना अब कम होती जा रही है। परन्तु यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सर्व प्रथम स्वर्गीय रावजी भाई पटेल ने इस चिकित्सा पद्धति को शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक रूप से भारत में फैलाने की चेष्टा की। वास्तव में, वह खुद हृदय-रोग से ग्रस्त थे और सर्व प्रकार की औषधे खा-खा कर तंग आ गये थे; तब उन्हें श्री आर्मस्ट्रांग की उपरिलिखित पुस्तक हाथ लगी। इसके

अनुसार, उन्होंने अपनी चिकित्सा को और अप्रत्याशित लाभ पाया। फिर क्या था? उन्होंने इस चिकित्सा के प्रसार का बीड़ा उठाया। सन् 1958 में उन्होंने स्वयं एक पुस्तक इस विषय पर लिखी, जिसके गुजराती संस्करण के अतिरिक्त, अंग्रेजी और हिन्दी में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

आजकल, गुजरात भारत सेवक समाज के अध्यक्ष, श्री पन्ना लाल झवेरी 'शिवाम्बु स्वमूत्र सलाह केन्द्र' चला रहे हैं। रायपुर में, स्वमूत्र-चिकित्सा-अनुसन्धान केन्द्र के निदेशक, श्री के० जी० पण्डित अपना अच्छा चिकित्सालय खोले हुए हैं। उनकी स्थिति भी कुछ रावजी पटेल जैसी थी। 15 वर्ष पूर्व, वह कुशल विद्युयत इन्जीनियर थे; किन्तु उन्हें कोष्ठ-बद्धता तथा स्नायु-दौर्बल्य ने बुरी भाँति ग्रस्त कर लिया। जब बड़े-बड़े विशेषज्ञ डाक्टरों से कुछ लाभ नहीं हुआ, तब उन्होंने आर्मस्ट्रांग और रावजी पटेल से प्रेरणा ली तथा उन लोगों के बताये नियमों-निदेशों के अनुसार, स्वमूत्र लेना प्रारंभ किया। पन्द्रह ही दिनों में, उन्हें लाभ दीखा और एक वर्ष में तो, उन्हें रोग से पूर्ण छुटकारा मिल गया । तब से, उन्होंने स्वमूत्र-चिकित्सा के प्रचार-प्रसार में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया है।

III लाभ-सब से बड़ा लाभ तो इस चिकित्सा का यह है कि आकाश से छूती महँगाई के दिनों में, इस पर फूटी कौड़ी खर्च नहीं करनी पड़ती; जबकि ऐलोपैथी, यूनानी, आयुर्वेदिक, होमियोपथी के डाक्टर-हकीम रोगी को लूट खाते हैं। इसके लिये, कहीं भटकना भी नहीं पड़ता है। यह प्राकृतिक देन है । यह सब पर हर जगह और हर वक्त मौजूद है। साथ ही, इस चिकित्सा को अन्य पद्धतियों के संग अपनाने से कोई हानि नहीं होती है। फिर, परीक्षण तथा अध्ययन की तुला पर स्वमूत्र चिकित्सा बड़ी खरी उतरी है। सहस्रों रुपये चिकित्सकों तथा दवाइयों पर लूटा कर भी जिन्हें घोर निराशा ही प्राप्त हुई थी, उनमें स्वमूत्र-चिकित्सा ने पुनः जीवन-ज्योति जगा दी है। अब वे पूर्णरूपेण स्वस्थ हो गये हैं।

पश्चिम देशों में, असाध्य रोगों के लिये, इस चिकित्सा की देखा देखी, मूत्र के इंजेक्शन लगाये जाते हैं; किन्तु उनमें एक प्रकार की कृत्रिमता आ जाती है और इसी कारण, उनसे अधिक लाभ नहीं मिल पाता। इसके विपरीत, मूत्र में रोगनाशक तत्व प्राकृतिक रूप में विद्यमान रहते हैं और रोगी की काया कल्प कर देते हैं।

एक बार, एक लड़की गुप्त रोग से गम्भीर रूप में ग्रस्त, आर्मस्ट्रांग के पास आई, जब उसे सब डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। आर्मस्ट्रांग ने मूत्र-चिकित्सा की मंत्रणा दी; परन्तु वह लड़की अपना मूत्र पीने को तैयार नहीं थी। मूत्रपान से घृणा दूर करने के लिये, आर्मस्ट्रांग ने उस लड़की का मूत्र स्वयं पान किया। लड़की अब इस चिकित्सा को करने लगी और कुछ ही दिनों में वह भली चंगी हो गयी।

आज सर्व श्री पन्नालाल झवेरी और के० जी० पंडित, 75-76 वर्ष के होते हुये भी, पूर्ण रूपेण स्वस्थ हैं। उसी भाँति, 83 वर्षीय प्रधानमन्त्री श्री देसाई भी सर्वथा नीरोग एवं चुस्त हैं। इसका कारण, अन्य कुछ नहीं हो कर, नियमित रूप से स्वमूत्र पान है।

कुछ विद्वानों का मत है कि मूत्र तो विष होता है। इसके उत्तर में, श्री के० जी० पंडित का कहना है कि विष ही तो विष का औषध होता है और तभी तो, मूत्र शरीर के विषैले तत्वों का नाश कर रोगी को रोगमुक्त करता है।

IV उपचार-श्री झवेरी के अनुसार, हृदय रोग, पेट दर्द, अपच, श्वेत कुष्ट, कैंसर, नेत्र व कान के अतिरिक्त, जोड़ों की पीड़ा, चर्म रोग, लकवा, कटिशूल आदि का पूरा पूरा उपचार स्वमूत्र-चिकित्सा से किया जा सकता है।

श्री पंडित ने गुप्त रोग, कैंसर, हृदय रोग, दाद-चम्बल, ज्वर आदि के डेढ़-दो सौ रोगी ठीक किये हैं।

V स्वमूत्र चिकित्सा-हिन्दी में कहावत है—'कटे पर मूतना' अर्थात् आढ़े वक्त काम आना। किन्तु इसके शाब्दिक अर्थो में भी बड़ा बल है । किसी अंग के कटने पर **स्व मूत्र लगाने से** रुधिर बहना तुरन्त बन्द हो जाता है। इसी प्रकार, खाज, दाद, चम्बल, फ़ोड़े फुन्सी आदि पर स्व मूंत्र का लेप करने से लाभ होता है। साथ ही, रोगी को स्वमूत्र मलने से स्फूति तथा स्वस्थता प्राप्त होती है। स्वमूत्र पान तो प्रत्येक रोग में अत्यन्त ज़रूरी है । इसके साथ उपवास भी बहुत जरूरी है। उपवास के समय, स्वमूत्र और औटा हुआ पानी ही लेना चाहिये । इस प्रकार बीस दिन के उपवास और उपचार से बड़ा लाभ मिलता है। योगाभ्यास तो इस चिकित्सा में सोने पर सुहागे का काम करता है।

VI विधि-मूत्र का हर अंश आवश्यक है। जब कि पहला और पिछला तिहाई भाग मलने और लेप करने के काम आता है, बीच का तिहाई भाग पीने के लिये ज़रूरी है। यदि कोई रोगी उपवास कर रहा हो, तब जब भी वह मूत्र करे, उसके बीच वाला तिहाई भाग हर बार पान करे; परन्तु यदि वह उपवास नहीं कर रहा हो, तब उसे दिन में चार बार स्वमूत्र का पान करना चाहिए।

श्री के० जी० पंडित के मतानुसार, इसके अर्थ ये नहीं हैं कि ताजे मूत्र का ही पान किया जाये । बल्कि यह उत्तम रहेगा कि सात बोतलों में हर दिन मूत्र एकत्र किया जाये और सात दिन पुराना होने पर एक के बाद एक बोतल नित्य पीनी चाहिये, और उसे फिर भरनी चाहिए; परन्तु झवेरी जैसे व्यक्ति ताजे मूत्र के पान पर बड़ा महत्व देते हैं।

स्वमूत्र को रात्रि और प्रातः काल सारे शरीर में मलना चाहिये । रात्रि में, सोने से पूर्व, उसे हल्के हल्के पूरी देह में मल कर, एक अलग कमरे में सोना चाहिए और बदबू से बचने के लिये, कुछ धूप-अगरबत्तियाँ जलानी चाहिये । परन्तु रात्रि को नहाना मना है। सुबह को, एक बार फिर स्वमूत्र से सारे शरीर की मालिश करनी चाहिये और उसके एक घंटे बाद नहाना चाहिये।

खानपान में, हितकर पथ्य का सेवन परमित मात्रा में करना होगा तथा अन्य संयमों को भी बर्तना होगा।

जैसा कि सर्वश्री झवेरी और पांडेत का दावा है, यदि स्वमूत्र-चिकित्सा असाध्य से असाध्य रोगों में सफल सिद्ध हो रही है। तब वह दिन दूर नहीं, जब लोग बिना आनाकानी के घृणा और वितृष्णा से ऊपर उठकर, इस पद्धति को अपनायेंगे और बिना कानी कौड़ी खर्च किये हुये, वे स्वास्थ्य-लाभ पायेंगे।

विज्ञान के चढ़ते चरण

रूस में **चुम्बकीय रेलगाड़ियों** का विकास हुना है, जो सौ कि० मी० प्रति घन्टे की गति से चलती हैं। यदि इन रेलों को ऐसी पाइप लाइनों के भीतर चला जाए (जिनमें से वायु निकाल दी गई हो), तब इनको गति 1000 कि० मी० प्रति घन्टे तक पहुँच सकती है।

एक अमीरीकी विज्ञान पत्रिका के अनुसार, शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि बालों से विभिन्न रोगों का पता ही नहीं लगता, वरन् इसके प्रदूषकों का असर भी जाना जा सकता है। बालों में रोगनिदान के तत्व, रक्त व मूत्र आदि की तुलना में 10 गुना अधिक होते हैं।

खुम्बी के सेवन से कैंसर से छुटकारा सम्भव है। रोग के निदान के लिये जापानी वैज्ञानिक खुम्बी से एंजाइम निकालने के लिये प्रयत्नशील हैं। इस में वसा की कमी है और यह एक उत्तम पोषण आहार है।

रूस ने, अब बालाइट, और बिल्लौर जैसे **पत्थरों से कागज** बनाना शुरू किया है। पत्थर को गला कर उसके रेशों से बना काग़ज तापरोधी होता है और जंग से सुरक्षित है। यह तकनीकी कार्यों के लिये बहुत प्रयोग में आता है

परिवार नियोजन के लिये प्रधान मन्त्री का सन्देश

नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या पर, आकाश वाणी और दूरदर्शन के माध्यम से, **श्री मुरार जी देसाई, प्रधान मन्त्री** ने देश के घर-घर में परिवार-नियोजन का सन्देश पहुँचाने में जनता से सहयोग का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि हरेक शिक्षित जन इस कार्यक्रम को अपने लिये ही नहीं अपनाये; किन्तु दूसरों को भी इसका महत्व समझाने में लोगों की मदद करे। सभी चिकित्सकों को, चाहे वे एलोपैथ हों, आयुर्वेदी हों, होम्योपैथ हों या प्राकृतिक वैद्य हों, उन्होंने यह प्रेरणा दी कि उन्हें निर्भय होकर परिवार नियोजन में जनता की सहायता करनी चाहिये । अब परिवार नियोजन में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं रही है; अतएव अब और भी यह जरूरी हो गया है कि इसकी महत्ता जनता को समझायी जाए और उसका सहयोग प्राप्त किया जाए।

यह संयोग की बात है कि यह वर्ष बालवर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और बच्चों के भविष्य के लिये, यह परमावश्यक कार्यक्रम है।

धनी परिवारों की अपेक्षा, निर्धन परिवारों में सदैव बच्चे ज्यादा होते हैं। यह प्रकृति का नियम है। इसलिये बच्चों की संख्या बढ़ने पर निर्धन परिवार को ही महाकष्ट

भोगना पड़ता है। इनकी आय कम ही नहीं होती, बल्कि परिवार बढ़ने पर वह तुरन्त बढ़ती भी नहीं है। इसलिये घर में जितने ही बच्चे अधिक होंगे, उतना ही अधिक दुःख झेलना पड़ेगा। बच्चों की देखभाल नहीं होगी, वे जीवन की आवश्य कतायें नहीं पा सकते तथा माता-पिता को भोजन तक की साधारण आवश्यकता से खुद को वंचित रखना पड़ता है। यही सब कुछ होता है और परिवार की वृद्धि से यह दुष्चक्र चलता है, जिसका एक मात्र हल परिवार-नियोजन है।

अच्छा रोगी

रोगी-डॉक्टर साहब, मेरी बीमारी में तो कुछ भी फर्क नहीं पड़ा है।

डाक्टर : क्या तुमने बोतल पर लिखे निदेशनों का पालन किया ?

रोगी-बिल्कुल, उस पर लिखा था कि बोतल को कस कर बन्द सदा रखना।

गुडों की कार्यवाही-साम्प्रदायिक दंगे

ले—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना

इन्हीं वर्षों के साम्प्रदायिक दंगे, 1946 से 1950 तक के पूर्व विभाजन और विभाजन के ठीक उपरान्त के वर्षों में हुये उपद्रवों से तत्तात्मक रूप में भिन्न हैं। विभाजनोपरान्त युग में, दो बड़ी घटनायें हुई हैं। प्रथम तो, सभी सामाजिक असन्तुष्ट लोग वास्तव में किसी न किसी पार्टी में शामिल हो गये हैं और वे बराबर से बँट गए हैं। दूसरे साम्प्रदायिक दंगे अब दो सम्प्रदायों के बीच संघर्ष की बात नहीं रह गयी है । अब तो वे दंगे उन संरक्षकों की अनुमति से गुंडों की कार्रवाइयाँ हो गये हैं, जिन्होंने इन तमाम वर्षों में लाइसेंस द्वारा या बग़ैर लाइसेंस के अग्नेयास्त्रों के जख़ीरे इकट्ठे कर रखे हैं।

साम्प्रदायिक दंगों से सुलझाने के लिए कोई सच्ची रणनीति तब तक नहीं निर्धारित की जा सकती, जबतक कि दसवीं शताब्दि से लेकर 15 अगस्त 1947 तक होने वाले अपरिवर्तनशील तत्वों के विरुद्ध शिकायतों की समाप्ति नहीं होगी या पाकिस्तान और बंगलादेश द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भारत में उपद्रव की आग सुलगाने वाली संभाव्य अथवा सच्ची भूमिका का विनाश नहीं होगा।

रिपोर्ताज—देश में पिछले दस-बारह वर्षों में हुए सभी बड़े-बड़े साम्प्रदायिक दंगों पर जाँच आयोग द्वारा मोटी-मोटी रिपोर्टें तैयार की गई हैं, जिनके अध्यक्ष उच्च या उच्चतम न्यायालय के प्रख्यात न्यायमूर्ति रहे हैं। उन रिपोर्ताज के अध्ययन से ऐसा कोई आधार नहीं बनता, जिससे साम्प्रदायिक दंगों के होने की ज़िम्मेदारी प्रशासन से

हटा कर जनता-जनार्दन पर थोपी जा सके। गंभीर प्रशासनिक असफलताओं के ज़्यादातर कारण ये थे—मौलिक कमियों के प्रति उदासीनता, प्रशासन का सामान्य दुर्बल स्वास्थ्य, ज़िम्मेदारी निभाने की अनिच्छा, मतिभ्रष्टता तथा ख्याली पुलाव बनाना। चाहे 1967 वाले राँची हतिया के दंगों पर रघुबर दयाल आयोग हो या 1969 वाले अहमदाबाद के दंगों पर रेड्डी आयोग हो, उनमें यही सन्देश उभर कर आता है।

'सहसा विस्फोट' के सिद्धान्त से हमें डेढ़ हाथ का नमस्कार करना होगा। तनाव के सदा अनेकों लक्षण होते हैं, जिन्हें कोई भी सतर्क गुप्तचर संस्था भाँप सकती है। ईंट, पत्थर, तेजाब भरे बल्ब, चाकू तथा घातक हथियारों को इकट्ठे करने की तैयारियाँ प्रायः खूब होती हैं। टुच-पुच घटनाओं से ज़रूरी मुहतोड़ उत्तर नहीं पैदा होते ।

कई मामलों में पुलिसजनों और उपकरणों में कमियाँ दूर की गई हैं; किन्तु सब कमियों की कमी—मनोबल की क्षीणता तथा प्ररुचि का अभाव—विद्यमान है। जब भी संकट की घड़ी आती है, थानाध्यक्ष, पुलिस उपाधीक्षक, अतिरिक्त पुलिसाधीक्षक, अतिरिक्त तथा सहायक ज़िले मजिस्ट्रेट के स्तरों के अधिकारी पास के टेलीफोन को खटखटाने लगते हैं। ज़िला मजिस्ट्रेट प्रायः राज्य की राजधानी से तुरन्त सम्पर्क स्थापित करते हैं; राजधानी में स्वयं कितनी ही आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं। जब यह सब कुछ हो रहा होता है, उपद्रवी अपने काम में मशगूल होते हैं।

साम्प्रदायिक दंगे शुरू होने के एक दो घण्टे में ही, असामाजिक तत्व बड़े पैमाने पर घुसपैंठ करते हैं और दुकानों की लूटपाट प्रारम्भ कर देते हैं। कभी-कभी, जले मकानों और लुटी दुकानों को पहले से ही स्पष्ट लक्ष्य बना लिया जाता है। प्रायः पहले से ही चुने मुहल्ले को भस्मीभूत किया जाता है। 11 दिसम्बर 1973 वाले मेरठ के साम्प्रदायिक दंगे निश्चय रूप में इसे सिद्ध करते हैं। दंगे होने के 15 मिनट के अन्दर तेजाब भरे बल्बोंकी बौछार और पथराव खुलकर हुआ। चुनींदा दुकानों पर पेट्रोल डाला गया। यह सब केवल तैयारी ही नहीं, बल्कि पूरी योजना बनाने की ओर संकेत करता है । उत्तरी भारत में इन्हीं दिनों हुए दंगों में मरे लोगों की शव परीक्षाओं का अध्ययन यह साबित करता है कि छुरा घोपना व्यावसायिक रूप से किया गया। जख़्मों की प्रकृति बताती थी कि चाकू चलाने की शिक्षा दी गई थी। यह कोई आवेश में आये उपद्रव का फल नहीं है, प्रत्युत् गुण्डों के सुयोजित सर्वनाश का मामला है।

खुले या छिपे संकेतों या नियमों से गुण्डों को नहीं बाँधा जा सकता। उनको दलों (कहिये) तीन में नहीं बाँटा जा सकता तथा एक दल से अहस्तक्षेप दूसरे से तुरत हस्तक्षेप और तीसरे से आँशिक हस्तक्षेप की नीति नहीं बनायी जा सकती। ये विभाजन स्थायी नहीं रह सकते और प्रशासन के साथ बदलते रहते हैं। गुण्डों से यह "सज्जन-समझौता' भी करना संभव नहीं है कि सम्प्रदायिक दंगों और हरिजनों पर अत्याचार करने के अतिरिक्त, उन्हें हरेक काम करने की खुली छूट दे दें। इससे भी बढ़कर, जो पुलिसजन कल तक चूहे बने हुये थे, दंगे शुरू होते ही शेर की भाँति कैसे दहाड़ सकते हैं। अलीगढ़, (सदर बाज़ार) दिल्ली, हैदराबाद, मेरठ, राँची तथा अन्य स्थानों पर कुछ-कुछ वर्षों के पश्चात् के बारम्बार साम्प्रदायिक दंगे यही सिद्ध करते हैं

के हिंसा के विस्फोट को, उपलब्ध विधिवत् ढंगों से दमन नहीं किया गया था।

उल्लेखनीय—1966 से 1969 तक साम्प्रदायिक दंगे बढ़ते ही चले गये, जब एक ही वर्ष में 603 लोग मारे गये। 1969 से 1970 तक, मारे गये लोगों का औसत 321 प्रति वर्ष रहा। 1971 में यह संख्या 103 पर आ गिरी और 1972 से 1977 तक छह वर्षों में औसत 60 प्रति वर्ष से कम हुआ। भारत जैसे उपमहाद्वीप में यह उल्लेखनीय सफलता हुयी, जिस पर गर्व किया जा सकता है । इस सफलता के कारण क्या थे ?

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में आठ बटालियनें बढ़ाई गईं और क्योंकि के० रि० पु० बल की यूनिटें लगभग सभी राज्यों में तैनात थीं, कोई भी मुख्यमन्त्री कुछ बटालियनों को चौबीस घण्टों में पा सकता था। साथ ही, छठे वित्त आयोग की सिफारिशों के फलस्वरूप, ऐसी सहायता मुफ़्त मिलने लगी, जिससे राज्यों को आर्थिक हिचकचाहट नहीं हो।

आठ वर्षों में, पुलिस का बेतार विभाग छह गुने से भी अधिक बढ़ा। राज्य से संकट सन्देश किसी यूनिट को पहुँचने में केवल कुछ मिनटों की बात थी। 48 घण्टे के अन्दर, घटनाग्रस्त क्षेत्र में 5 बटालियनें (लगभग 5000 जवान) इकट्ठी की जा सकती थीं। इस कारण, राउरकेला, उड़ीसा (1964), राँची-हतिया, बिहार (1967) और अहमदाबाद (1969) वाले व्यापक और दीर्घकालीन दंगे अब दरअसल असम्भव हो गए।

यह भी पता लगा कि छात्र या श्रमिक भीड़ों से भिन्न, लूटपाट, मारधाड़ और आगज़नी में व्यस्त धर्मान्ध भीड़ों पर गोली चलाने में अब आनाकानी नहीं रही।

अन्त में, राष्ट्रीय अखण्डता परिषद की सिफारिशों के परिणाम-स्वरूप, राज्य-सरकारों ने साम्प्रदायिक दंगों वाले मुकदमे वापस लेना छोड़ दिये। 1970 में केवल 10 मुकदमे वापस लिये; 1971 में सिर्फ़ 5 और 1972 में कोई भी नहीं। इससे अपराधियों के कान खड़े हो गये।

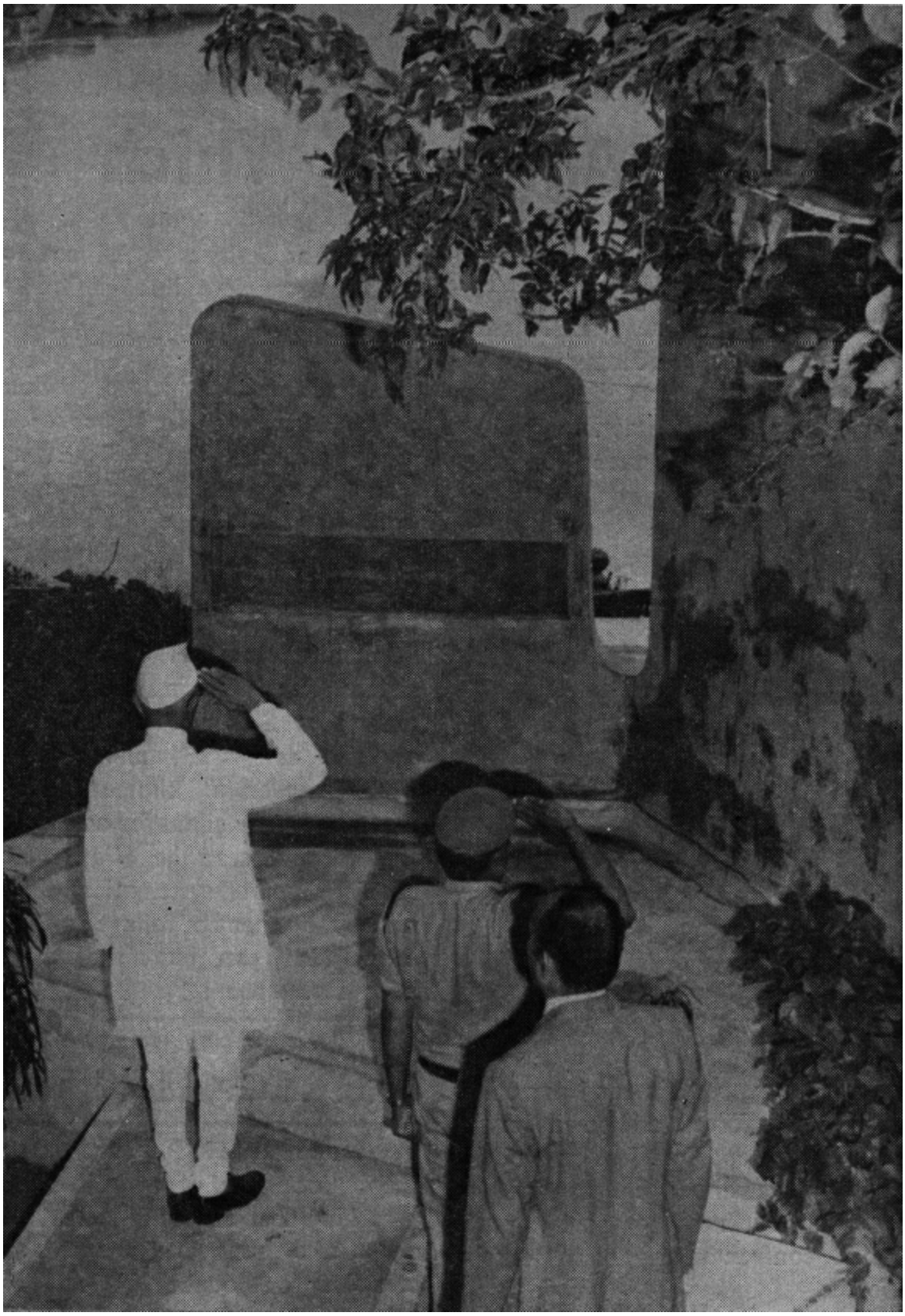
साधन—1972 से 1977 तक में प्राप्त सफलता बताती है कि साम्प्रदायिक दंगों को कम करने में बहुत कम क़ीमत चुकानी पड़ी—जनता पर दोष मढ़ने की अपेक्षा प्रशासन की त्रुटियाँ बताना, पर्याप्त सैन्य-तुल्य दलों द्वारा सब उपाय असफल रहने पर, घातकों, लुटेरों और आग लगाने वालों को गोली से भूनने में कोई नहीं न नकुच करना और सबसे बढ़कर, गुण्डों को 365 दिनों के आधार पर नियन्त्रण में रखने से ही काम बन गया। भय से आपराधिक व्यवहार चलता है । जबतक साम्प्रदायिक गुण्डों को अपने अपराधों की भारी क़ीमत चुकानी नहीं पड़ती, उन पर कोई अपील कारग़र सिद्ध नहीं होती।

दस वर्षों में, अधिकारियों के पास अब इतने साधन हो गये हैं कि साम्प्रदायिक दंगों में ज़बरदस्त कमी सहल हो गई है। यह उत्तर प्रदेश में निश्चयात्मक रूप से साबित हो गया है, जहाँ इस शताब्दि में साम्प्रदायिक दंगों की बड़ी संख्या रही है। 1970 में तत्कालीन मुख्यमंत्री की नीति का अभूतपूर्व परिणाम हुआ, नामतः, साम्प्रदायिक दंगों में किसी के खरौंच तक नहीं आई और वे शून्य पर आ गये (टाइम्स

आफ इण्डेया, 21 जनवरी, 1971)।

यदि यह स्वीकार कर लिया जाये कि साम्प्रदायिक दंगों की जड़ उन गुण्डों के प्रति उदारता की सामान्य भावना है, जो विभिन्न पार्टियों के अधिकांशतः सदस्य हैं, तब अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा 1973 में अल्प संख्यक वर्गों के लिए गठित पंचों से बताया गया यह उपचार युक्तिसंगत रहेगा—

'यदि कोई दंगा 12 घण्टों से अधिक रहता है, तब तुरन्त स्थानीय अधिकारियों से ज़वाब तलब करना चाहिए, यदि 24 घण्टों में वह दमन नहीं होता है, तब गृह-सचिव, मुख्य सचिव और पुलिस महानिरीक्षक को ज़िम्मेदार ठहराना चाहिए और यदि हिंसात्मक कार्रवाई 48 घंटों से भी अधिक चलती है, तब राज्य सरकार पर पूरी-पूरी ज़िम्मेदारी थोपनी होगी।" यदि इस काल अवधि को चौगुना कर दिया जाये, तब कोई भी इसे कठोर नहीं पुकारेगा।



* प्रधान मंत्री को श्रद्धांजलि *

दिनांक 3 नवम्बर 1978 को, श्री मुरारजी देसाई ने तेजपुर की यात्रा की और उन अज्ञात सिपाहियों के स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने सन् 1962 के भारत-चीन-युद्ध में मातृभूमि की रक्षा करते हुये नेफा में प्राण न्यौछावर किये थे। 2 बटालियन के सामारोहिक गारद ने उस समारोह में उल्टे शस्त्र किये । उपस्थित गण्यमानों ने इसकी प्रशंसा की। इस बटालियन के जवान सर्किट हाउस पर निरत किये गये, जहाँ प्रधान मंत्री तथा अन्य विशिष्ट जन ठहरे हुये थे। वे भोमारागुरी पर भी नियुक्त किये गये, जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी पर प्रधान मंत्री ने सेतुनिर्माण की आधारशिला रखीं।

<u>क्रीड़ा क्षेत्रे :</u>

खेलों में वीरता पदक

"मध्यम दौड़ का बाँका धाबक श्री राम सिंह (जिसने पिछले मास बैंकाक के एशियायी खेलों में 800 मी० का स्वर्ण पदक जीतने के लिये स्वास्थ्य समस्यायें ताक़ पर रख दी थीं) खेलों में वीरता के लिये राष्ट्रीय पदक पाने वाला पहला व्यक्ति है।" (प्रेस ट्रस्ट इंडिया) हिन्दुस्तान टाइम्स के खेल सम्पादक, श्री बी० सी० सक्सेना की स्मृति में, दिल्ली खेल पत्रकार संस्थान द्वारा यह ट्राफ़ी स्थापित की गयी है।

बैंकाक के एशियाई खेलों में दो स्वर्ण पदक पाने वाले हरीचन्द को, 1978 के सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में उसी संस्थान ने जे० डी० टाइटलर स्मारक ट्रॉफी प्रदान की है।

रामचन्द्र मीमा वालीवाल टूर्नामेंट

इन्दौर में दिसम्बर 78 में खेले गये श्री रामचन्दर मीमा स्मृति अखिल भारतीय वालीबाल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल ने इन्दौर के ब्रादर्स क्लब को हरा कर ट्राफी जीती।

राष्ट्रीय दंगल

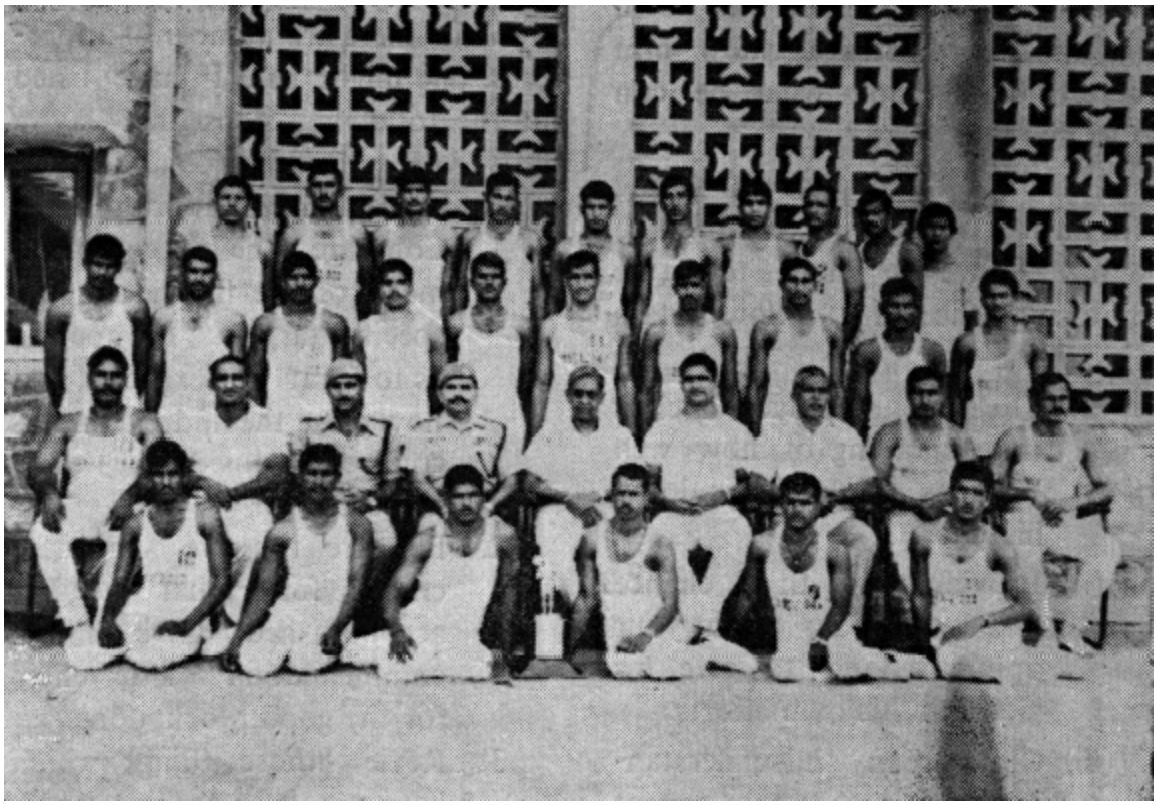
रुस्तम-ए-हिन्द इन्स्पेक्टर ईश्वरसिंह

दिनांक 22 से 26 दिसम्बर 78 तक रोहतक में रुस्तम-ए-हिन्द तथा राष्ट्रीय दंगल चैम्पियनशिप (भारतीय परिपाटी से) आयोजित हुयी। इ० ईश्वर सिंह ने रुस्तम-ए-हिन्द का पद जीता। कुल मिलाकर, हमने 2 स्वर्ण, 3 रजत और 1 कांस्य पदक पाये। हमारी टीम उपविजेता रही। परिणाम इस प्रकार रहे—स० इ० रघुबीर सिंह (लाइट हेवी भार)

I; का० रतीराम (बन्टमभार) I; ना० रामराज (मिडलभार) II; का० श्रीराम (पेनभार) II; ना० यशपाल सिंह (लाइट हेवीभार) II तथा ना० गोरखनाथ (हेवीभार) III.

यू० एन० वालीबाल प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल० सिरमौर

दिनांक 26 अक्टूबर 1978 को नई दिल्ली नगर निगम के स्टेडियम में खेले गये फाइनल में, के० रि० पु० बल ने भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस को 91 मिनट के पाँच खेलों में जीत कर यू० एन० वालीबाल चैम्पियनशिप जीती। इस जीत का मुख्य श्रेय सतविन्दर सिंह, लक्ष्मन, ए०. जार्ज और रोहतास को है।



12वीं अन्तर्रेंज कुश्ती प्रतियोगिता की विजयी टीम—दिल्ली रेंज की दंगली टुकड़ी



ईश्वरसिंह

केरल राज्य में के० रि० पु० बल को चिकित्सा सुविधायें।

कमांडैंट 18 बटालियन के अनुरोध पर, केरल राज्य के अस्पतालों में सरकारी कर्मचारियों तथा फौजियों के लिये नियत 5% बिस्तरों के विषय में, सरकार ने के० रि० पु० बल के सदस्यों को फौज़ी माना है मौर इस नियत राशि में से हमें बिस्तर मिलेंगे।

क्रीड़ा क्षेत्रे :

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल दौड़कूद का चैम्पियन

[एक विहग-दृष्टि]

लखनऊ में मार्च 1979 के प्रथम सप्ताह में आयोजित 28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, के० रि० पु० बल ने गत वर्ष विजेता सी० सु० दल (256 अंक) को द्वितीय स्थान पर धकेलते हुये **273** अंक पाकर **दौड़कूद में टीम चैम्पियनशिप** जीती। हमारे **हरीचन्द** को सी० सु० दल के शशिधरन नायर के साथ, संयुक्त रूप से **सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट** घोषित किया गया। हमारे ही **नटराजन** ने 60.80 मी० की दूरी तक भाला फेंक कर प्रतियोगिता का नया रिकार्ड बनाने के साथ, स्वर्णपदक जीता। इसी भाँति, **आर० एस० बल** ने 58.54 मी० तक तार गोला फेक कर स्वर्णिम सफलता पाई; हमारे ही **जे० एस० भुल्लर** द्वितीय स्थान पर रहे। परन्तु सर्वोत्तम सफलतायें तो हरीचन्द को मिलीं, जिसने 10,000 मी०, 5,000 मी० तथा 1,500 मी० दौड़ों में प्रथम आकर 3 स्वर्ण पदक पाये । हमारे ही, **टी० कुँजूमन** ने 800 मी० दौड़ में स्वर्ण पदक जीता। **त्रिकूद में के० के० सुधाकरन** ने 14.89 मी० कूद कर स्वर्ण पदक जीता। **बास्केट बाल प्रतियोगिता** में, सी० सु० दल से 64-54 अंकों के अन्तर से हार कर, के० रि० पु० दल उपविजेता रहा।

कुश्ती में भी, के० रि० पु० बल 24-27 अन्तर से सी० सु० बल से पीछे रह कर द्वितीय स्थान पर रहा।

जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश पुलिस प्रथम तथा सी० सु० दल द्वितीय रहा और के० रि० पु० बल ने तृतीय स्थान पाया। (विस्तृत विवरण आगामी अंक में)।

अखिल भारतीय इन्वीटेशन (निमंत्रण) दौड़ कूद प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल सिरमौर

दिल्ली खेल परिषद के तत्वावधान में, 21 से 24 दिसम्बर 78 तक, माडल टाउन स्टेडियम (दिल्ली) में अखिल भारतीय निमंत्रण एथ्लीट प्रतियोगिता आयोजित हुई। के. रि. पु. बल, वायुसेना, रेलवे, दिल्ली पुलिस तथा स्थानीय स्कूल-कालिजों, और क्लबों के एथ्लीटों ने भाग लिया; परन्तु मुख्य प्रतिस्पर्धा के० रि० पु० बल और वायु सेना में रही। के० रि० पु० बल ने 91 अंकों से सिरमौर जीता, जबकि वायु सेना (66 अंक पर) उप विजेता रही। के० रि० पु० बल के इन एथ्लीटों ने प्रथम तीन स्थान पाये :—

400 मी० दौड़—मदन नायक II

800 मी० दौड़—टी० कुजूंमन I तथा गुरुमुख सिंह II.

5,000 मी० दौड़—प्रेमचन्द II.

10,000 मी० दौड़—प्रेमचन्द I. रासदेव सिंह II तथा ए० योहनान III.

110 मी० (बाधा)—भंवर सिंह II.

400 मी० (बाधा)—गुरदयाल सिंह II तथा दीदार सिंह III.

4X100 मी० (रिले)—के० रि० पु० बल II.

4X400 मी० (रिले)—के० रि० पु० बल II.

चौड़ी कूद—के० सुधाकरन I.

ऊँची कूद—सत्यबीर सिंह I (के० रि० पू० बल का पिछला रिकार्ड भंग किया) व प्रभाती लाल III;

त्रिकूद—के० सुधाकरन I, इकबाल सिंह II व वी० दत्त III.

पोलवाल्ट—प्रेम चन्दन I व जनकचन्द III.

शाटपुट—ए०पी० एस० मान II.

घनफेंक—जे० एस० भुल्लर I

नेजा फेंक-वी० सुशीलम् I, नटराजन II व रामशंकर III.

चक्का फेंक—ए० पी० एस० मान I व एच० एस० भुल्लर II.

पुलिस ड्यूटी प्रतियोगता में के०रि०पु० बल को बेतार टीम सिरमौर

करनाल के मधुवन में, 2 से 10 दिसम्बर 1970 तक अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता आयोजित हुयी।

के० रि० पु० बल की बेतार टीम प्रथम रही। ना० रामफल सिंह ने व्यक्तिगत चतुराई में द्वितीय स्थान पाया। हमारे निशाने बाज़ों ने रायफल चालन में तृतीय स्थान और पिस्तौल-चालन में चतुर्थ स्थान पाया। इन दोनों में पिछले वर्ष पाँचवा स्थान पाया

था। मोटर वाहन प्रतियोगिता में हमारे चालक तृतीय स्थान पर रहे। प्राथमिक चिकित्सा में हमारी टीम ने पाँचवा स्थान पाया। ना० ईश्वर चन्द साक्षात्कार में द्वितीय स्थान पर रहा।

हमारे एथ्लीटों को धूम

दिनांक 12 से 14 जनवरी 1979 को 44 राजस्थान राज्य एथ्लीट चैम्पियनशिप तथा II श्री राम सिंह अखिल भारतीय एथ्लीट प्रतियोगिता क्रमशः टोंक और जयपुर में खेली गयी दोनों प्रतियोगिताओं में के० रि० पु० बल चैम्पियन रहा।

ला० ना० सत्यबीर सिंह ने ऊँचीकूद में 1.98 मी० की ऊँचाई पार की, जो पिछले वर्ष के बलतेज सिंह (सी० सु० दल) के कीर्तिमान के बराबर है।

स० इ० एम. एस. पाटिल ने सेना के रतन सिंह को 1500 मी० दौड़ में हराया। हमारे एथ्लीटों ने 12 नये रिकार्ड बनाये।

भूल-सुधार

पिछले संस्करण के मुखस पृष्ठ पर छायाचित्र 2 बटालियन के स्थान पर 12 बटालियन से सम्बद्ध था। उसके जवानों ने अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर में प्रधान मंत्री को सम्मान गारद दिया था।

<u>कविता</u>

नव जागरण

(रचयिता-सिपाही राम सिंहासन पाण्डेय, 53 बटालियन)

आज युग के वक्ष से है, उठ रहा निशि आवरण सब।
फिर उठे-फिर से जर्गे हम; 7 गय7 नव जागरण अब !
यह समय निर्माण का है,
राष्ट्र-सेवा नित करें हम।
घार व्रत, सन्मार्ग पर चल,
दूर जगती का कर तम।

विश्व का कल्याण हो तब, हम करें धर्माचरण जब ।

फिर उठे;—फिर से जगे हम; आ गया नव जागरण अब ।

स्वार्थ-ईर्ष्या-क्रोध-मय तज—

कर्म-पथ पर सब चलें नर ।

प्रेम, आदर-शौर्य-धीरज,

से उतारें स्वर्ग जग पर।

मातृभू के हेतु अपने, प्राण दें बलि आमरण सब।

फिर उठे;—फिर से जगे हम, आगया नव जागरण अब ।

छोड़ सारे छल—कपट, अब,

शान्त मुद्रा में रहे जन ।

शील—शिक्षा की तरंगों:—

में सदा सब का बहे मन ।

पाप भ्रष्टाचार को हम, दे नहीं सकते शरण तब ।

फिर उठे—फिर से जगे हम,आ गया नव जागरण अब।

एशियाई खेलों का सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट हरीचन्द

ले०—श्री एच० एस० सेठी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का इन्स्पेक्टर हरीचन्द ही एकमात्र एथ्लीट है, जिसने इन्हीं दिनों बैंकाक में हो एशियायी खेलों में दो स्वर्ण पदक जीते।

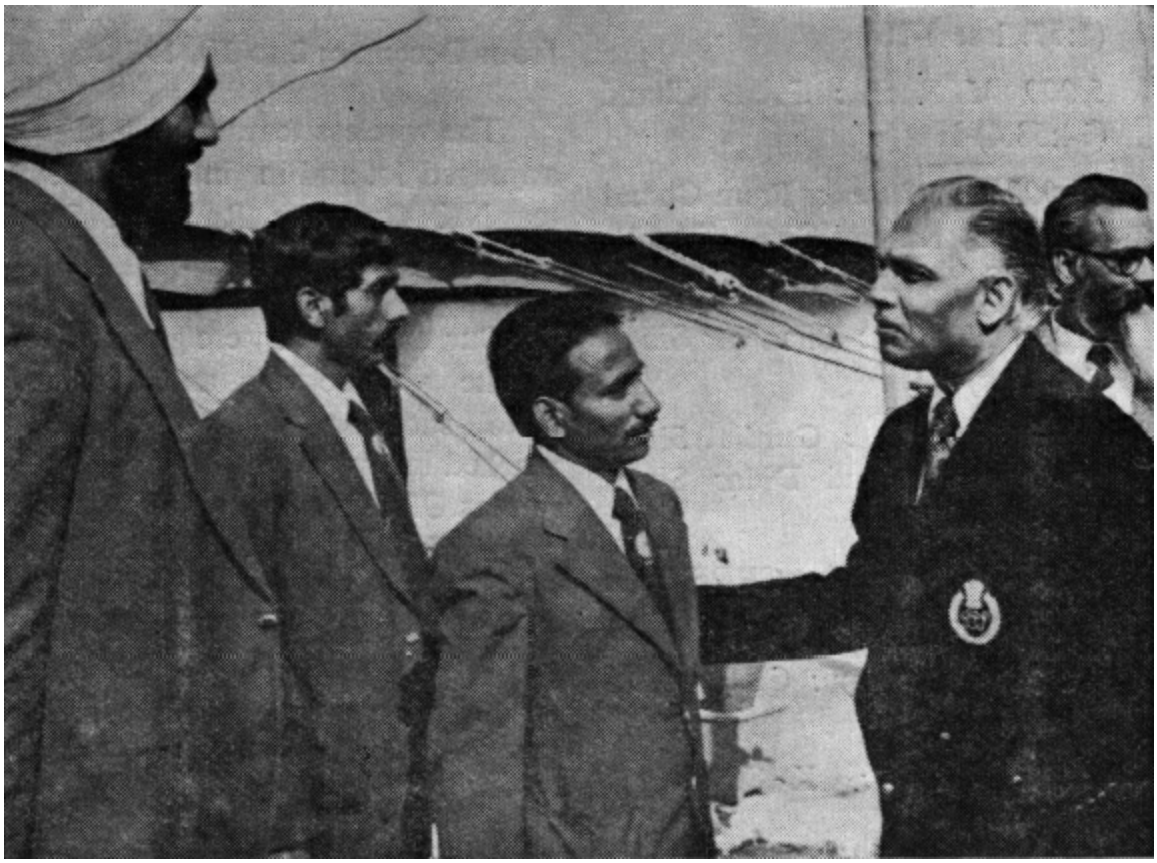
इसने 10,000 मीटर 30 मि० 7.75 से० दौड़कर देश को सर्वप्रथम स्वर्ण पद दिला कर सभी भारतवासियों के दिलों में गुदगुदी पैदा कर दी। द्वितीय स्थान पाने वाले बर्मा के राबर्ट से यह 50 गज़ आगे था। इसी दीर्घधावक ने 5,000 मीटर 14 मि० 22 से० में दौड़ कर दूसरा स्वर्ण पदक जीता।

इस सफलता का अभिवादन समाचार जगत में इस प्रकार हुआ—'जेटोपेकियन करामात' (इन्डियन एक्सप्रेस) 'लाल दिवस पटरी को वास्तव में चमकाने वाला' (टाइम्स आफ इण्डिया); 'भारत का भारी शक्तिशाली डाइनेमो' (इण्डियान एक्सप्रेस); 'एशियाई खेलों का सर्वश्रेष्ठ फनकार' (हिन्दू) और 'लम्बी दौड़ों का सर्वोत्तम धावक' (यू० एन० आई०)।

'इन्डियन एक्सप्रेस' के पार्थसारथी के शब्दों में, अन्तिम 300 मीटर, इतनी मोहक

गांते से इसने पार किये कि इसका कोइ भी प्रांतेद्वन्द्वी इस विकराल विस्फोट में 10000 मी० दौड़ को 30 मि० 7.75 से० में पूरा करने के योग्य नहीं रहा। नाटे क़द का हृष्टपुष्ट हरीचन्द 29 मि० 55.6 से० वाला एशियाई खेलों का रिकार्ड नहीं भंग कर सका; फिर भी इसने तेहरान में जापानी हमादा द्वारा 1974 में स्थापित 30 मि० 50 से० वाला रिकार्ड अच्छा सुधारा। इससे भी अधिक प्रसन्नता तो इस बात की हुई कि एशियाई खेलों में सर्वप्रथम पाने को जब हरीचन्द आगे बढ़ा, तब हमारा राष्ट्रीय ध्वज लहराया और राष्ट्रीय गान गुनगुनाया। 5000 मी० दौड़ में तो हरीचन्द शुरू से ही फर्राटे भरता रहा। नंगे पाँव दौड़ने वाले हरीचन्द ने इस बार 'स्पाइक' (मेखें) पहनी थीं; क्योंकि भारतीय एथ्लीट-नीति के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में आधुनिक कृत्रिम पगडंडियों के अनुरूप भारतीयों की ढालना है। इस 25 वर्षीय पुलिस जवान को मान्ट्रियल ओलिम्पिक खेलों में एशिया के सबसे तेज धावक का खिताब पाने का श्रेय है। तब इसने 10,000 मी० दौड़ को 28. मि० 48.72 से० में पूरा किया था और इस भाँति, 29 मि० से भी कम में 10,000 मीटर पार करने वाला यह सर्वप्रथम एशियाई है.....।

इसी मार्च मास में लखनऊ में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में तीन स्वर्ण पदक जीतने पर इस एशियाई चैम्पियन को दौड़ कूद प्रतियोगिता में सी० सु० दल के फर्राटिये शशिधरन के साथ संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित किया गया। इसने 10,000 मी०, 5000 मी० तथा 1,500 मी० दौड़ों में प्रथम स्थान पाया था। सच पूछिये तो, पिछले वर्ष के विजेता सी० सू० दल को द्वितीय स्थान पर ढकेलने में, इसके करतबों का बड़ा हाथ है। —हिन्दी सम्पादक



श्री आर० सी० गोपाल महानिदेशक से शाबाशी पाता हरीचन्द

2 THE INDIAN EXPRESS, FRIDAY, DECEMBER

(8) NATIONAL HERALD FRIDAY,

Hari Chand sets
lhe trend:
aatmen follow it

A. V A. T. P. SARATHY
Express News Service

A. BANGKOK, Dec 14.

at prest India won a gold medal:
silver silver-gilt, because there
golds golds offered. It was won
time the stout-hearted Pun-
llcegolleman 23-year-old
who [illegible]

a win
a e gold
aals

ANGASBANGKOK, Dec 14.
on on three gold medals
r on var on the sixth day
Asiath Asian Games here

nd qaand gave India their
n h hen he won the 10,000
aajav a time of 30:07.75.
turn of the wrestlers
tajitavtajinder Singh rallied
aavavavajav of Mongolia in

was the case with the men
hers but Krishna Das did
tremely well to score 271
out of 360 to place eigh
hind the winner, who sco
in the 70-metre event ar
despite the lack of sopl
equipment and a pair of
ars to take note of the
the target so that an
ment in the bow neces
be made.

India picked up tw
ver-gilt medals when
ling finals were held
evening. Karatar ("
Rajinder Singh (9
through unbeaten,
on whom so muc
built, settled for
not enter the fi
team compensated
getting through
with a 3-0 dec
ened Bangladesh

Placings of ot
48-kg: Ashok
Rajinder Singh
(6th)

Hari Chand who gave India their first gold

bag

(UNI)—India
ims to
dal win-
Asian

000 me-
st gold
rilliant
ec.

for
lived
two
ia's

Sat Pal
ver medal.
Hari Cha
barefoot an
1976 Olympi
wore spikes
athletic polic

Anusuya withdrawn

Continued from page 1

the Burmese. At once he was de
mined not to lose the lead
any cost and his tactics "thanke
Almighty" clicked.

The day, indeed, had begun
a note of promise for India, for i
very opening event of the ath
programme, the 110 metres h
heat 1, Satvir Singh qualifie
best on the basis of the best
for losers. He actually finished
and only the first three fro
heat are eligible to qualify.
as well as the fifth finishing
Ishtiaq of Malaysia, returned
timing among the losers.
[illegible] also have the
[illegible] Ishtiaq,

Hari Chand

India's haul of three 'golds'

By R. SRIMAN

BANGKOK, December 14.

AFTER a lapse of eight years the Indian national anthem was played for the first time in the Asian Games today, when Harb Chand ran a magnificent gold medal winning 10,000 metres race to the delirious cheering of a packed National Stadium.

Maimen Rajinder Singh and Kartar Singh took India's gold tally to three by winning the 74 and 90-kg class contests. Satpal grabbed a silver in the super-100-kg event.

The 25-year-old Central Reserve Police inspector literally burnt the red clay track in his last lap, sprinting with a fantastic burst and plenty of stamina to spare. Since as he told me later that his main task to win the gold medal and timing or record did not matter much to him[illegible]

winning time of 30 minutes 07.7 second is neither better than the Asian Games record timing of Sri Lankan Rosa (29:55.6) or his own best record at Montreal two years ago (28:48.72).

Nevertheless, it was a truly great run, for the diminutive Bajigar kept himself at the best part of the race leading a bunch of six for more than 14 laps of the 25-lap race and then as the field narrowed down to three, he was still in the lead, ever ready to stave off the challenge grimly posed by two Burmese, Robert and Koko, who were following him like a shadow. Some 400 metres from the finish Hari Chand started wearing so he knew that the two Burmese and other[illegible]

Hari Chand,]
strike gold;

BANGKOK, Dec. 14 (PTI, UNI) —
long distance runner, setting the pace for the
Asian Games Athletics Championship here to

Giving a brilliantly
display against Mongolia
warts, maimen lifted
sagging sports image
heights when they captur
golds and one silver
wrestling matches.

First, Rajinder Singh
74-kg weight class, cause
near defeat to turn mo
against Devaraj of
a much stronger an
lished grappler and had
a 2000 strong wildly
crowd on their feet.
chaired out of the mat
brilliant win.

In the 90 kilogramme
Kartar Singh who had
a fine win against his J
opponent, yesterday,
averted a near defeat
Mongolia's C. Gochostuin
thrilling victory pinnin
stocky opponent in
round.

Before the gold standa
hoisted India's pride an
Hanuman's most
disciple Satpal, was
with a silver medal wi
final bouts between Jai
Yatsu and Pakistan's
Iqbal going the Japane

The wrestling events
ed here tonight.

Hari Chand who ran
liant race clocked 30:07
ds. His timing fell
sian Record of 29
ert, of Burma wa
Koko and of Burt
ed third.

Singh, Satvir Singh
r the finals of the 1
hurdles event finishing
in his heat but qualif
best time among los
The final will be son

silver

ed soccer league encoun-
Bangladesh by three goals
qualified for the quarter-
led 2-0 at half time.
ged ahead through Bidesh
first half and following
re Harjinder Singh slam-

Singh and Sa
topped
heats today to
horiw's finals o

am Singh clocke
bring was far below
ala timing of 1
tashi Ishii of Ja
cked 1:52.6.

ant Kumar came
at two with a timing
he third heat was wo
t Pin of Thailand i
The following qualifi
final: Sriram Singh
Takashi Ishii (Japa



राजस्थानी नृत्य करते हुये कोहिमा रेंज के जवान

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

क्रैपलर

के० रि० पु० बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

खण्ड VIII अंक-2

[द्वैमासिक–हिन्दी संस्करण] 31 मई, 1979] [10 ज्येष्ठ, 1901





लखनऊ में 28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों के समय के० रि० पुलिस बल के खिलाड़ियों में प्रोत्साहन भरते हुए महानिदेशक श्री आर० सी० गोपाल



डिकथलन में क्रमशः द्वितीय व प्रथम स्थान पाने वाले जनकचन्द और प्रभातासिंह



ऊँची कूद में क्रमशः तृतीय और द्वितीय स्थान पाने वाले प्रभाती लाल और सतबीर सिंह

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० नई दिल्ली-110072 ।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

सम्पादकीय कार्यालय : द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-1100221

★कैपलर ★

द्वैमासिक

हिन्दी संस्करण



खण्ड VIII

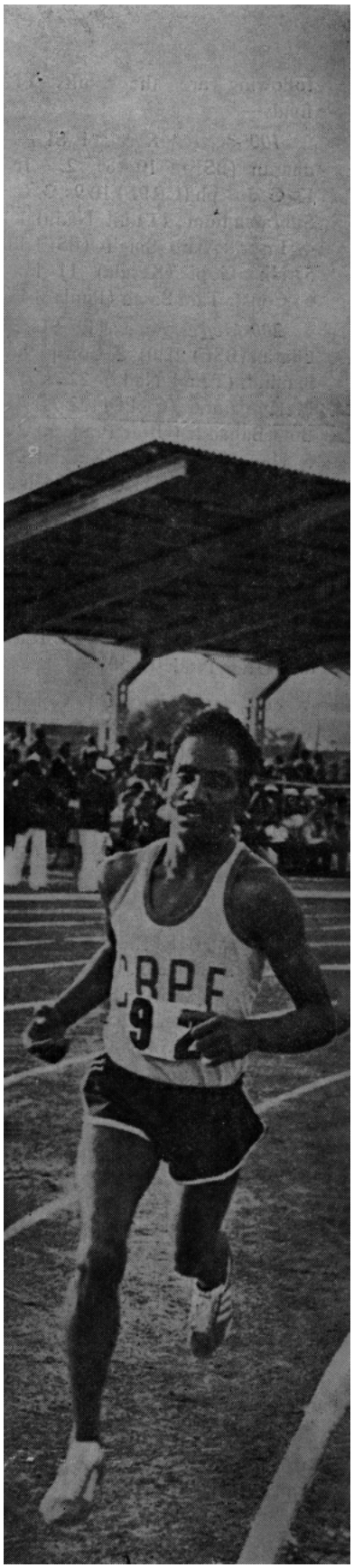
अंक 2

[10 ज्येष्ठ, 1901 31 मई, 1979]

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी]** [छाया चित्रकारः **एस. के. खन्ना**
हिन्दी सम्पादक : जे० एस० शर्मा

I. गौरवगाथा : प्रशंसायें और जनसेवायें
II. रिपोर्ताज :
(i) पुंछ उपद्रव और के० रि० पु० बल
(ii) उत्तम खेल दक्षता पुरस्कृत
(iii) शिक्षा-निधि
(iv) आत्म-संतुष्टि को कोई स्थान नहीं
(v) भावभीनी विदाई
III. लेख :
(i) दौड़ना, दौड़ना और सदैव दौड़ना, ले०—श्री आर० श्रीमन्
(ii) पुलिस का सामाजिक नियन्त्रण, ले०—श्री आई० एस० डागर
IV. कविता :
दुराशंका, रचियता—का०सुशील चन्द चौहान, 2 बटा०
V. कहानी :
जुआ, ले०—रे० आ० राजनाथ पाण्डेय, 2 सिगनल बटा०
VI. स्वास्थ्य-सन्देश :
अम्लरोग से संघर्ष, ले०—डॉ० जी० सी० सत्यपथी
VII. क्रीडा-क्षेत्रे :
के० रि० पु० बल को दौड़कूद (एथ्लीटिक्स) के सिरमौर की पुन: प्राप्ति ले०—श्री एच० एस० सेठी, जनसम्पर्क अधिकारी
VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :
IX. विविध :
(i) यह भी खूब रही
(ii) सूक्तिसुधा
(iii) पहेलियाँ
(iv) जवानों के स्थानान्तरण

मुख पृष्ठ—उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री तपासे के कर-कमलों से पुलिस खेलों की एथ्लीटिक ट्राफी पाते हुये श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक, के० रि० पु० बल।


92

प्रख्यात दूरधावक हरीचन्द ।

गौरव गाथा

राष्ट्रपति द्वारा सराहना

फरवरी 1979 में अरुणाचल में की गई अपनी यात्रा के समय, श्री नीलम संजीव रेड्डी, भारत के राष्ट्रपति ने 12 बटालियन के०रि०पु० बल द्वारा दिये गये सामारोहिक सम्मान गारद की सराहना की है।

मंत्री की प्रारणरक्षा

जम्मूकश्मीर के वित्तमन्त्री के आवास पर 15.2.79 को एक भीड़ ने घेर कर पथराव किया। वहां निरत 8 बटालियन के० रि० पु० बल के जवानों ने भीड़ से उन्हें तथा उनके परिवार को बचा लिया। पुलिस महानिरीक्षक, जम्मू-कश्मीर ने गारद जवानों को 200 रु० का नकद पुरस्कार दिया है।

बाढ़ पीड़ितों को दान

देश में निरत के० रि० पु० बल के सभी यूनिटों के अधिकारी और कर्मचारी जनों ने स्वेच्छा से 2.06 लाख रु० का दान प्रधान मन्त्री सहायता-कोष में दिया। प्रधान मन्त्री के निजी सचिव ने महानिदेशक, के० रि० पु० बल को लिखे अपने पत्र में प्रधान मन्त्री का धन्यवाद भेजा है और कहा है कि इस धनराशि से बाढ़-पीड़ितों के संकट में राहत मिलेगी।

बाढ़-पीड़ितों को कम्बल दान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने बिहार सरकार को बाढ़पीड़ितों में बाँटने लिए 2,000 कम्बल प्रदान किये । के० रि० पु० बल की ओर से, कमांडैंट सुखजिन्दर सिंह ने श्री आर० एन० सिन्हा; ज़िला मजिस्ट्रेट पटना, को ये कम्बल एक साधारण समारोह में दान दिये। 1975 की तथा अन्य बाढ़ों के समय, के० रि० पु० बल की सेवाओं का स्मरण करते हुये, श्री सिन्हा ने हमारे जवानों की सच्ची निष्ठा तथा कर्त्तव्य-परायणता की प्रशंसा की। इस अवसर पर एक परेड भी हुई। श्री एल. पी. सिन्हा, बिहार सरकार के संयुक्त सचिव ने, श्री आर. सी. गोपाल महानिदेशक, के० रि० पु० बल को अपने पत्र में इस दान के प्रति राज्य सरकार का आभार प्रकट किया है।

विद्यार्थियों का छात्रावास

आगामी शिक्षा-सत्र में, नई दिल्ली हैदराबाद और जम्मू के तीन ग्रुप केन्द्रों में

बालकों के लिये छात्रावास खोलने का प्रस्ताव है । सर्व प्रथम, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में 50 बालकों का छात्रावास 25 जून 1979 से खुलेगा अर्थात् यह वह दिन है जब ग्रीष्मावकाश के उपरान्त अगले शिक्षा-सत्र को केन्द्रीय विद्यालय खुलेगा। हैदराबाद और जम्मू के ग्रुप केन्द्रों में छात्रावासों के खुलने की तिथियाँ शीघ्र ही तय की जायेगी।

इन छात्रावासों का व्यय शिक्षा-निधि से पूरा होगा। के० रि० पु० बल के ऐसे सदस्यों के ही पुत्र इनमें भर्ती किये जायेंगे, जो (अस्पताल और लिपिक वर्ग समेत) शिक्षानिधि के सदस्य हैं और जो छात्रावासों के अन्य विहित नियमों के अनुसार बालक भर्ती के योग्य हैं तथा जिनके मातापिता छात्रावास वाले नगरों में नहीं रहते हैं।

ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में, राजधानी में नहीं रहने वाले सदस्यों के उन लड़कों को भर्ती किया जायेगा, जो या तो छठी कक्षा में पढ़ रहे हैं अथवा छठी और उससे ऊपर कक्षा में प्रवेश पा रहे हैं। छात्रावास में 50 बालकों के रहने की सुविधा होगी। छात्रों की संख्या अधिक होने पर गुणवत्ता के आधार पर 50 छात्रों का चयन होगा।

छात्रावास में भर्ती हुये छात्रों को रहना और खानापीना मुफ़्त रहेगा। मातापिताओं को लगभग 850 रु० बालक के विस्तर हेतु देने होंगे। यह रकम छात्रावास छोड़ने पर लौटा दी जायेगी। वस्त्रों, पुस्तकों, लेखन-सामग्री, व धोबी पर खर्चा मातापिताओं को उठाना पड़ेगा।

बिजली, जल, दवाइयाँ आदि जैसे अन्य मुद्दों पर व्यय छात्रावास-सहन करेगा। पुलिस उपमहानिरीक्षक नई दिल्ली के सीधे नियंत्रण में ग्रुपकेन्द्र नई दिल्ली के कमांडैंट द्वारा छात्रावास की व्यवस्था होगी। भर्ती के योग्य छात्रों के विषय में सभी यूनिटों से जानकारी ग्रुपकेन्द्र नई दिल्ली ने मंगाई है।

नये डी. आई. जी. हैदराबाद

श्री वाई० एन० सक्सेना (भारतीय पुलिस सेवा) ने के० रि० पु० बल में पुलिस उपमहानिरीक्षक हैदराबाद का पदभार ग्रहण किया है।

54 बटालियन का सैनिक प्रशिक्षण

यह कोई बिरला ही अवसर होता है जब देशभर में भारी मांग वाले के० रि० पु० बल की किसी बटालियन को किसी सैनिक संस्थान में प्रशिक्षण के रूप में साँस लेने का समय मिल जाए। यह सुनहरा अवसर 54 बटालियन को पिछले वर्ष मिला, जिसे सेवा की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर पहले इस प्रशिक्षण से बंचित रहना पड़ा था। यह प्रशिक्षण 4 सितम्बर 1978 को सही रूप से प्रारंभ हुआ । यद्यपि सामान्य निदेश सेना से मिलते थे, किन्तु भूमि पर प्रशिक्षण देने की मौलिक ज़िम्मेदारी 54 बटालियन के प्रशिक्षकों पर ही रही। कॉनवाय (रक्षकवाहन) तथा मार्ग सुरक्षा, खोज

तथा किसी गॉव की घेराबन्दी जैसे विषयों पर विशेष बल के साथ प्रगतिशील प्रशिक्षण देना तथा आर० सी० एल/81 मि० मी० गन/25 पाउन्डर आरटीलरी जैसे हथियारों से परिचित होना ही इसका मौलिक ध्येय था। समरक्षेत्र में, सचमुच विगोपित टैंक का शिकार वाले अभ्यास पर बड़ा महत्व दिया गया।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता वहिरंग अभ्यास द्वारा जाँची गई। रणकौशल-अभ्यास तो वस्तुतः एक उत्साहवर्धक अनुभव रहा। ब्रिगेडियर कमांडर के अनुरोध पर, 54 बटालियन के जवानों ने आन्तरिक सुरक्षा पर प्रत्यक्ष अभ्यास करके दिखाया, जिसकी सबने प्रशंसा की।

अधीनस्थ अधिकारियों तथा हेड कान्स्टेबलों को हर जगह मेस

अफसर मेसों की भाँति, अब हर विशेष स्थान पर अधीनस्थ अधिकारियों और हेड कान्स्टेबलों के लिये अपना-अपना मेस हुआ करेगा। एक स्थान के परिसर में स्थित पर ग्रुप केन्द्र प्रशिक्षण संस्थानों, सिगनल बटालियनों के सभी अधीनस्थ अधिकारियों और हेड कान्स्टेबलों का संयुक्त मेस होगा। रेंज पुलिस उपमहानिरीक्षक के आदेशानुसार, किसी भी संस्था द्वारा मेस का प्रशासन किया जायेगा। ग्रुप केन्द्र और केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज नीमच में विश्राम करती हुई बटालियनें अपवाद होंगी। इससे एक ही स्थान पर स्थित विभिन्न प्रतिष्ठानों के अधीनस्थ अधिकारियों और हेड कान्स्टेबलों में संघ भावना और सद्भाव पैदा होंगे।



6 मार्च 69 को दिल्ली पत्रकार संघ द्वारा पुरस्कृत खिलाड़ियों के साथ इस वर्ष के सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ी की ट्राफ़ी लिये हरीचन्द

दौड़ना, दौड़ना और सदैव दौड़ना

लेखक—श्री आर० श्रीमन्

बहुत ही कम भारतीय किसी अन्त राष्ट्रीय दौड़कूद प्रतियोगिता में उस दृढ़ता तथा आत्मविश्वास से छाये हैं, जिससे बैंकाक में पिछले एशियाई खेलों में बोनसा-हरीचन्द छाया रहा। यदि प्रतियोगिता के खिलाड़ी का कोई पुरस्कार होता, तब वह निश्चय ही इस सौम्य दूर-धावक-सम्राट को मिलता, जिसने 10,000 मी० और 5,000 मी० के स्वर्णपदक ऐसी सरलता से जीते, जिसने किसी जैटोपेक या कुट्स को श्रेय दिया होता।

यह सत्य है कि एशिया का सर्वप्रमुख दूर धावक जापानी ताशिआकी कमाता बैंकाक में नहीं था, क्योंकि उन खेलों से इज़राइल के निष्कासन के कारण जापान को अपने प्रबल दल को बैंकाक भेजने में हिचकिचाहट रही । अतः इन दोनों दूरी की

दौड़ों को आयोजित करने से पूर्व ही यह स्पष्ट हो गया था कि हरीचन्द को कोई खास प्रतिस्पर्धा नहीं होगी; किन्तु इन दौड़ों के पूर्ण हो जाने पर, सभी दौड़कूद विशेषज्ञों की यह सहमति थी कि यदि वहाँ कमाता भी होता, तब उसे हरीचन्द की चुनौती का कठोर मुकाबला करना पड़ता। जिस प्रकार हरीचन्द इन दोनों दौड़ों में दौड़ा, उसने यह सिद्ध कर दिया कि एशिया में हरीचन्द सर्वोत्कृष्ट दूर धावक है।

इस चौबीस वर्षीय होशियारपुर वाले बाज़ीगर आदिवासी ने इन दो स्वर्ण पदकों को केवल कठोर परिश्रम तथा निष्ठा से ही जीता है। सब समय दौड़ने के अतिरिक्त किसी अन्य चीज़ का कभी ध्यान नहीं करते हुए, यह अपना सारा वक्त दौड़कूद में ही कृतसंकल्पता से लगाता है। इस नितान्त अभ्रष्ट पुरुष में कोई दुर्गुण नहीं है; इसने अत्युत्तम प्रकार से स्वयं को अवगुणों से बचाये रखा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में इंस्पेक्टर होने के नाते, यह अपने क्रीड़ा-प्रिय के.रि.पु.बल के प्रति अतीव कृतज्ञ है, जिसने इसे केवल छै वर्षों के सेवा काल में ही एक साधारण सिपाही से चढ़ा कर इस पद पर पहुँचा दिया है। पुलिस दल में रहते हुए, इसने समय निकाल कर असैनिक शिक्षा प्राप्त कर दसवीं कक्षा पास की और पदोन्नति पाने के लिए स्वयं को योग्य बनाया।

जैसी आशा की ही जा सकती है, हरीचन्द अखिल भारतीय पुलिस खेलों के लिये स्वयं को तैयार कर रहा है। 1974 से इस वर्ष के शुरू तक लगातार चार वर्षों के खेलों में, 10,000 मी० 5,000 मी० और 2,500 मी० की तीन दौड़ों में सर्व-प्रथम आना इसे साधारण बात हो गयी है। इन पिछले चार अवसरों पर, इसने गृहमंत्री के स्वर्णपदक को भी सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट होने के नाते प्राप्त किया है।

इसकी अन्तर्राष्ट्रीय सफलता की कथा सियोल में एशियाई अमेच्योर दौड़कूद चैम्पियनशिप से चार वर्ष पूर्व प्रारम्भ होती हैं, जब इसने दूर की दो दौड़ों को जीता था। शीघ्र ही, मनीला में, इसने 10,000 मी० का स्वर्ण पदक पाया। दूसरे वर्ष, रूस में इसने उसी दौड़ को 49:22 मि० में पूरा कर एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीती।

मानट्रियल ओलिम्पिक खेलों में उसी वर्ष, इसके 28:482 मि० ने इसे केवल आठवाँ स्थान दिलाया; किन्तु इससे कोई प्रतिष्ठा कम नहीं हुई। मलेशिया की आगामी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में, 10,000 मी० दौड़ में इसे रजत पदक मिला। अब बैंकाक में दो स्वर्णपदक पाकर, इस वर्ष के खेल में यह चरम सीमा पर पहुँच गया।

हरीचन्द अपने लिए कष्टसाध्य समय-सारिणी रखता है--**अर्थात् दौड़ना-दौड़ना और हर समय दौड़ना**। उस निष्ठा से, जिसे देखकर ही विश्वास किया जा सकता है, हरीचन्द ने दौड़ कूद में स्वयं को समर्पित कर दिया है।

यह विवाहित है और एक बच्चे का पिता है। होशियारपुर के निकट गाँव में अपने छोटे परिवार को सुविधापूर्वक प्रश्रय देने की ही इसकी केवल महत्वाकाँक्षा है। अपने लिए तो टेप रिकार्डर की विलासिता और दौड़ कूद के नवीन जटिल उपकरण तक इसे नहीं चाहिये, जो इस स्तर वाले खिलाड़ी अन्तर्राष्ट्रीय यात्राओं में इकट्ठे करके लाते

हैं। यह अपना हरेक रुपया बचाता है, और अपने पारिवार के स्तर उठाने में यह अपने सब स्वल्प साधनों को जुटाता है।

स्वास्थ्य संदेश :

अम्ल रोग से संघर्ष

ले०-डॉ० जी० सी० सत्पथी

दिल की जलन और भूखदर्द के विशेष लक्षणों से अम्लता पहचानी जाती है, जो पेट के फोड़े जैसे रोगों के मुख्य चिह्न हैं । यह रोग सारे देश में समान रूप से नहीं बँटा हुआ है। यह असम, बंगाल, दक्षिण भारत और कश्मीर में आम तौर पर पाया जाता है; किन्तु पंजाब और उत्तर प्रदेश में विरला ही मिलता है।

सामान्य कारण : वर्षों तक यह विश्वास घर जमाये रहा कि दक्षिण भारत में इस रोग की अधिकता के ये कारण हैं— प्रोभूजन (प्रोटीन) की कमी, गर्म भोजन और मसाले। यह स्मरण रखना चाहिये कि पेट के फोड़े के विषय में महत्वपूर्ण यह है कि "भोजन कैसे खाया जाता है ?" नाकि "क्या खाया जाता है ?" जिस भोजन को खाते समय खूब चबाना पड़ता है, इस फोड़े को वह बनने से रोकता है, क्योंकि लार में क्षारीय श्लेषमा रस होता है, जो अम्लीय पाचन-क्रिया का प्रतिरोध करता है।

पंजाब की तुलना में दक्षिण भारत में ये फोड़े इस लिये अधिक होते हैं कि दक्षिण भारतीय चावल और रस वाले भोजन खाते हैं, जब कि पंजाबी रोटी खाते हैं, जिसको बहुत चबाना पड़ता है। अम्लता बड़े लोगों का रोग माना गया था; किन्तु दक्षिण भारत में अधिकांश रोगी निर्धन होते हैं।

पथ्य—अम्लता की चिकित्सा में आहारीय उपचार महत्वपूर्ण माने जाते हैं, किन्तु वे वैज्ञानिक आधार पर आश्रित नहीं होकर, केवल परम्परागत हैं । दुग्ध इसमें पथ्य माना गया है। दूध चिकित्सा की धारणा अम्लता की रोकथाम के कारण बनी है; किन्तु इसका प्रभाव थोड़े ही काल को होता है। थोड़ी देर में थोड़ा-थोड़ा भोजन लेना अम्लहर दवाओं के समान है और पेट में भोजन मौजूद रहने से अम्लहर दवाओं का प्रभाव ज्यादा देर तक रखने में सहायता मिलती है। अम्लता के बढ़ने पर, पूर्ण शारीरिक तथा मानसिक विश्राम की सलाह दी जाती है।

लक्षणों में आराम पाने के अर्थ फोड़े के ठीक होने के नहीं हैं। आराम तो पाँच छै दिनों में मिल जाता है, परन्तु रोग ठीक होने में छै या उससे भी अधिक सप्ताह लग सकते हैं। ऐसे रोगियों को मदिरा या धूम्र के पान से परहेज़ रखना चाहिये । जल्दी-जल्दी भोजन, बिना खाये घंटों भूखे पेट रहने, और मिर्चमसाले वाले भोजन से दूर से

हो डेढ़ हाथ का नमस्कार करना चाहिये । थोड़ा-थोड़ा साधारण भोजन थोड़ी-थोड़ी देर में खाते रहने से अम्लता की रोकथाम होती है। लार की प्रतिरोधात्मक क्रिया को ठीक रखने के लिए भोजन को चबा-चबा कर खाने का परामर्श दिया जाता है ।

अम्लता की लड़ाई में, इन तीनों नारों को याद रखना चाहिए- (I) जल्दबाजी मत करो (II) चिन्ता पास नहीं फटकने दो (III) रसवाले व्यंजन (कढ़ी) को सरल बनायो।

औषध चिकित्सा : अम्लहरों और रतूवत रोकने वाले मिश्रणों के अलावा, उग्र अम्लीय आपाचिक तत्व को रोकने या प्रतिरक्षात्मक श्लेष्मारस वाले तत्व को बढ़ाने के लिए, अन्य कोई उपयुक्त दवा भी तो नहीं है; मेदे के अम्लहर औषधों को सर्वाधिक दुरुपयुक्त होने वाली दवायें पाया गया है। यह अधिकतर गैर ज़िम्मेदार विज्ञापनों के कारण है। मनुष्य यह विश्वास करने लगे हैं कि वे अम्लता से सदैव संघर्ष कर रहे हैं। तभी ज़रासी पेट में गड़बड़ पाते ही, वे अम्लहर औषधों का सेवन करते हैं। सरलता से मिल जाने के कारण सोडियम बाई कार्बोनेट (जो सोडे के नाम से आम जाना जाता है) बहुत ही लोकप्रिय है; किन्तु सोडे या दूसरे अम्लहरों का दीर्घकालीन सेवन हानिकारक है; क्योंकि मेदों के तत्वों को अत्यधिक प्रभावहीन करने से मेदे की एन्जाइम (पाचन) क्रिया में बाधा पड़ती है।

आधुनिक सिद्धान्त : भारत में इन्हीं दिनों की गई खोजों ने यह बताया है कि केले की सब्ज़ी, खट्टी रतूतवत को कम कर और पेट के श्लेष्मरस बढ़ाकर अम्लता की रोकथाम में मदद देती है । इससे एक नये युग का श्रीगणेश हो सकता है। आयुर्वेद, जड़ीबूटियों के साथ-साथ, घी तथा दूसरे चिकने पदार्थ खाने की सलाह देता है।

पुनश्च : यद्यपि अम्लता या पेट-फोड़ा एक सामान्य रोग है और सदियों से चला आ रहा है; इस रोग का कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो पाया है और ना ही कोई कारग़र चिकित्सा निकली है। परन्तु पेटफोड़ों के रोगियों को निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि मौजूदा उपचारों से 50 प्रतिशत रोगी ठीक हो जाते हैं और विषम स्थितियों में शल्य-हस्तक्षेप से बड़ी मदद मिलती है।

उचित यह है कि पेट-फोड़े के रोगी को शुरू में ही जल्द से जल्द डाक्टरी सलाह लेनी चाहिये। जितनी ही जल्दी रोग निर्णय और चिकित्सा होगी, उतना ही रोग की साध्यासाध्यता का उत्तम पूर्वज्ञान होगा।

पुलिस का सामाजिक नियंत्रण

ले०-श्री आई० एस० डागर

मानव इतिहास में किसी भी प्रयास की भाँति, पुलिस-समाज-सम्बन्धों का क्षेत्र सामाजिक मतभेदों से परिपूर्ण है पुलिस-समाज-सम्बन्धों की साधारण व्यक्तियों वाली

पारिभाषा यों की जा सकती है - 'वह सम्बन्ध है, जो पुलिस समाज के साथ रखती है।' यदि किसी और ठोस परिभाषा की आवश्यकता है, तो डॉ० कोविस ए० रडेलेट लिखते हैं- 'यह उन अनेक तथा विभिन्न ढंगों का कुल योग है, जिनमें इस बात पर बल दिया जाता है कि पुलिस उन समुदायों से अलग नहीं हो कर, एक अंग है, जिनकी वह सेवा करती है।'

विचारधारा- रेमंड एम. माम्बोइसेस, उप महान्यायवादी (कैलीफोनिया) के अनुसार, पुलिस-समाज-सम्बन्ध के ठीक वे ही अर्थ हैं,जो इस पद से ध्वनित होता है- सारे समाज और पुलिस दल के सदस्यों के बीच सम्बन्ध । इसमें मनुष्य, जाति, जनता तथा समाचारपत्रजगत के सम्बन्ध' शामिल हैं।

दूसरे शब्दों में यह सम्बन्ध बुरा तथा तटस्थ या अच्छा भी हो सकता है । क्या व्यक्तिगत और क्या सामूहिक रूप, दोनों ही प्रकार से, इस दल के हरेक सदस्य के रुख और ढंग पर यह पूरा निर्भर करता है।

एक अन्य लाभदायक वैचारिक परिभाषा यह हो सकती है कि पुलिस-समाज सम्बन्ध एक कला है; अपने अधिकार क्षेत्र के समुदाय की समस्याओं को समझने और सही-सही सुलझने वाली पुलिस की योग्यता से यह सम्बद्ध है। पुलिस की भूमिका तथा कठिनाइयों के प्रति सामाजिक चेतना का विचार इसमें संनिहित है तथा शान्ति और सहयोग के लिए सच्चे प्रयत्नों के साथ पुलिस और समाज दोनों के उभयनिष्ठ ध्येय में शामिल होने के लिए उन दोनों के ईमानदार यत्न उलझे हुए हैं।

प्राचीन काल में पुलिस- समाज सम्बन्ध कोई नये नहीं हैं । भारत में पुरातन काल में, प्रारक्षण पुलिस काम जनता की सामूहिक ज़िम्मेदारी के सिद्धान्त पर आधारित था। उस समय के देश के सरल तथा कृषिप्रधान समाज को यह पद्धति ठीक रही ।

हिन्दू राजाओं ने सामूहिक सुरक्षा सिद्धांत, को भंग नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने पुलिस का सामाजिक नियंत्रण इस जरूरी सामाजिक कर्तव्य को निबाहने के लिए ग्रामीण समाज को उत्प्रेरित किया। उस समय न्याय-व्यवस्था की समस्यायें मुख्य कर ग्रामों की स्थानीय सीमा तक ही घिरी रहती थीं और प्रचलित न्याय और विधि की अवधारणाओं के आधार पर, समाज में ही उनको हल करना सम्भव होता था। फुर्ती तथा सस्तेपन के कारण, यह हल जनता को पसन्द था।

बाद को पाने वाले मुसलमानों ने इस पद्धति को बदल। सामुदायिक ज़िम्मेदारी को प्रोत्साहित करने के स्थान पर, कानूनों और सरकारी हुक्मों को उत्तरोत्तर निरंकुश रूप से पालन कराया जाने लगा। जमींदारों के रूप में अब खास समाज का उदय हुआ। फलस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों तक में, देशीय आरक्षण पद्धति अपना लोकतांत्रिक रूप खो बैठी।

ब्रिटिश काल में, ज़मींदारों ने निकृष्ट भ्रष्टाचार का बीज बोया गया और ग्रामीण जनता पर अत्याचार किए गए । अंग्रेजों ने ज़मीदारों के स्थान पर वेतन पाने वाले दरोगा लगाये, जो उनसे भी बुरे सिद्ध हुए। - यह प्रणाली 1861 के V अधिनियम

(पुलिस आधिनेयम) तक चलो।

वास्तव में, हमारे विचार से समुदाय द्वारा आरक्षण की पुरानी पद्धति बहुत बेहतर थी।

रवैये- उस जनता के (जिसकी पुलिस सेवा करती है और जिससे उसका सदा सम्बन्ध पड़ता है) खुशी-खुशी सहयोग, समर्थन तथा सद्भावना के बिना, पुलिस-विभाग कारग़र तथा कुशल ढंग से काम कर ही नहीं सकता। लोक-समर्थन की कमी पुलिस पर जरूर दुष्प्रभाव डालती है। जब पुलिस की गतिविधियों पर संशय किया जाता है, तब मनोबल का ह्रास होता है । किन्तु जनता के रुख को पुलिस बताती व संभालती है, जो अपनी ओर से जनता का रवैया भी प्रकट करती है।

जनता की खुशी-खुशी सेवा करना ही पुलिस के सही रवैये का सार है; किन्तु साथ ही, सेवा और दासता तथा विनम्रता और मृदुलता में अन्तर रखना है।

रवैये को प्रभावित करने वाले कुछ ये तत्व हैं

(i) **लोकमत**- मनुष्य और समाज के लिए लोकमत का बड़ा महत्व है। प्रश्न यह उठता है कि पुलिस के विषय में जनता क्या सोचती या कहती है ? यदि लोकमत अनुकूल नहीं है, तब लोकमत को बदलने का यत्न करना चाहिए, जिससे पुलिस व समाज में सम्पर्क तथा सहयोग स्थापित हो सके।

(ii) **समाचार पत्र**- समाचारपत्रों से स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित तथा बनाये रखना जरूरी है, जिससे भलाई के लिए लोकमत प्रभावित किया जा सके। यथा सम्भव, वरिष्ठ अधिकारी, पत्रकारों से निजी सम्पर्क बनाये रखें।

(iii) **रेडियो, दूरदर्शन तथा अन्य सामूहिक साधन**- रेडियो, दूरदर्शन, थियेटर तथा अन्य सामूहिक साधन सूचना तथा विज्ञापन के आजकल महत्वपूर्ण साधन हैं और पुलिस तथा जनता से स्वस्थ सम्पर्क स्थापित करने के लिए इनकी भी सहायता जरूरी है।

व्यक्तिगत सम्पर्क- यदि पुलिस और जनता के सदस्यों में व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया जाए, तब जनता में पुलिस के विषय में अच्छी जानकारी उपलब्ध हो सकती है। चाहे सेवा में निरत हो या विरत यह हर पुलिस अफसर पर लागू होता है। चौबीस घन्टे, जनता की आँख पुलिस अफसर पर गढ़ी रहती है और उसके दुर्व्यवहार से, सारा पुलिस दल बदनाम हो जाता है। समाज से अधिक से अधिक मेलजोल पुलिस अफसरों को रखना होगा।

सामुदायिक सम्पर्क निकाय- सामुदायिक सम्बन्ध के विकास की मदद के लिए पुलिस को हर जिले में पुलिस-समाज सम्पर्क परिषदें तथा समितियाँ स्थापित करनी चाहिए। सामुदायिक सम्बन्धों को चलाने वाले विशेष अधिकारी और कर्मचारी के नेतृत्व तथा निदेशन में, इन परिषदों और समितियों को काम करना चाहिये। जिला समितियों और परिषदों के सामान्य उद्देश्य ये होने चाहिए कि हर नागरिक को कानून

व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारियों से अवगत कराने का कार्यक्रम बनायें तथा क्रियान्वित करें, जिससे अपराध की कमी की दिशा में रोकथाम के काम में सहायता मिल सके, पुलिस और आसपड़ोस के प्रतिनिधियों में सम्पर्क स्थापित हो सके तथा तनाव, समस्यायें और संघर्ष को नष्ट करने में अथवा कम करने में मदद मिल सके।

पुलिस-नियंत्रण- पुलिस के अधिकारों के सहित, सरकार के विभिन्न अंगों के अधिकारों तथा कानून के नियम से सरकार, एक लोकतन्त्रात्मक शासन में, बचनबद्ध होती है और उनकी भूमिका भलीभाँति परिभाषित होती है। अपनी शक्ति और अधिकार बरतने के ढंग से, पुलिस प्रायः राज्य का सही राजनीतिक रूप और हर नागरिक द्वारा स्वतन्त्रता मनाने की मात्रा का दिग्दर्शन कराती है। पुलिस पर अमित अधिकार और उनके अनुचित प्रयोग की संभावना यह प्रश्न उभार कर लाती है कि पुलिस को कौन नियंत्रित करे ? आदर्श स्थिति तो वह होगी, जहाँ अपने आज्ञाप्राप्त कामों में पुलिस को बेरोक टोक स्वतन्त्रता प्राप्त हो; किन्तु साथ में, अपनी भूलचूक के लिये, वह न्यायालयों के ही नहीं, बल्कि जनता के समक्ष भी जवाब देह हो ।

पुलिस पर नियंत्रण रखने के लिये पद्धति बनाते समय, हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि पुलिस को ही सरकार समझा जाता है; फलस्वरूप, जब कभी लोग सरकार की नीतियों के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करना चाहते हैं, तब पुलिस ही उनके क्रोध - का लक्ष्य सर्व प्रथम बनती है। पुलिस की जिम्मेदारी के लिये हमें सही-सही साँचा बनाना चाहिये।

भारत में पुलिस पर अस्वस्थ अधिशासी नियंत्रण है और इसे प्रायः अवैध कार्यकारी इच्छा को, पुलिस द्वारा पूर्ण कराने के काम में लाया गया है।

वर्तमान स्थिति- किसी खास विभाग के परिचालन कमान और जवाबदेही के अर्थ उत्तरदायित्व के होते हैं। भारत में, पुलिस केवल कानून के प्रति ही जवाबदेह नहीं है, अपितु परिचालन क्षेत्र में भी वह दोहरे नियंत्रण से दबी जा रही है : अर्थात, विभाग में, वरिष्ठ अधिकारियों तथा सरकार में, जिला मजिस्ट्रेटों द्वारा वह उत्तरदायी है। कानून पालन कराने के लिए किसी बाहरी अधिशासी शक्ति के प्रति पुलिस की जवाब देही, उसकी निष्पक्षता, और स्वस्थ संगठनात्मक नेतृत्व के विरुद्ध जाती है। इससे पुलिस पर्यवेक्षकों (सुपरवाइजरों) में गैर जिम्मेदारी की भावना भरती है। क्योंकि इस दोहरे शासन से गैर जिम्मेदारी और संवेदन शून्यता पैदा होती है। शाह प्रायोग की कार्यवाहियों में इसकी झलक बखूबी दिखाई पड़ती है, जहाँ पुलिसजन और जिला मजिस्ट्रेट अपने माथे से लांछन का टीका हटाने के प्रयत्न में प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। पिछला अनुभव यह बताता है कि राजनीतिक दुरुपयोग के लिये, पुलिस अत्यन्त ही कमजोर है। अतः आज का पुलिस संगठन असंतोषजनक है।

1861 का पुलिस अधिनियम- पुलिस अधिनियम 1861 की 3 धारा के अनुसार 'पुलिस जिले में पुलिस की निगहबानी, राज्य सरकार में निहित है। राज्यों द्वारा लगातार गठित आयोगों ने सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा पुलिस को अपना एजेन्ट बनाने वाली

राज्य सरकारों की प्रवृत्ति की कड़ी आलोचना की है । अतएव इस अनुच्छेद की भाषा बदलने की आवश्यकता है।

अधिनियम की 4 धारा से, पुलिस मामलों में जिला मजिस्ट्रेट को प्रधानता मिलती है। इससे, उसे पुलिस मामलों में इन्तज़ाम के व्यापक अधिकार ही नहीं मिले हैं, साथ में, पुलिस उपमहानिरीक्षकों की वह जड़ भी काट देता है। इसने पुलिस महानिरीक्षक तक को एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति में जा गिराया है, जो "चमड़े चमकाने और पीतल पर पालिश करने का ही ज़िम्मेदार रह जाता है।"

अपने देश में पुलिस के उत्तरदायित्व के विषय में अपना मत प्रकट करने से पूर्व, आइये, ब्रिटेन और जापान में इस जिम्मेदारी के विषय का अध्ययन करें :

ब्रिटेन में उत्तरदायित्व- ब्रिटिश पुलिस के अध्ययन से चार दलों का पता लगता है-कंट्री, बॉरो, मेट्रोपॉलीटन और लंदन नगर, प्रत्येक दल, गृह सचिव की पूर्व अनुमति से पुलिस अधिकारी द्वारा नियुक्त किसी कमिश्नर या प्रमुख सिपाही के नेतृत्व में काम करता है; कंट्री और बारो में प्रमुख अन्तर, जनसंख्या का होता है।

अमरीका से भिन्न, जहाँ मेयर सिटी मनेजर और गर्वनर स्थानीय पुलिस दलों को नियंत्रित करते हैं, इंगलैंड और वेल्स की पुलिस पर पुलिस प्राधिकारी नामक संगठनों की निगहवानी होती है। स्थापना तथा उस अधिकार क्षेत्र के लिये कुशल पुलिस की आपूत्ति तथा रखरखाव, पुलिस के प्रमुख काम होते हैं, जिसके लिए पुलिस अधिकारी ज़िम्मेदार होता है। कुछ सम्बंधानिक ज़रूरतों के कारण, पुलिस अधिकारी अपने कर्त्तव्य पूरे करते हैं। उदाहरणार्थ "दल में हर श्रेणी के लिये जन-शक्ति तय करना और दल के मुख्य सिपाही को नियुक्त करना, गृह सचिव की अनुमति के अधीन होता है।"

राज्य सचिव, इंगलैंड की पुलिस की कार्यकुशलता के लिये जिम्मेदार होता है।

जापानी पुलिस-- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्, जापान में केन्द्रीय भूत पुलिस की पद्धति बिल्कुल बदल गयी है। पाश्चात्य मित्रों की नीति के अनुसार, जनरल मॅक आॅर्थर ने जापानी पुलिस को लोकतांत्रिक रूप से चलाने के लिये एक नयी प्रणाली चलायी। नयी व्यवस्था में, पुलिस का विभाजन ग्रामीण पुलिस में किया गया; किन्तु यह प्रणाली ठीक से चल नहीं सको; और पुलिस को लोकतांत्रिक और कुशल बनाने के लिये और राजनीतिक हस्तक्षेप से अलग रखने के लिये, अनेक सुधार किये गये। राष्ट्रीय स्तर पर और पुलिस संगठन के स्तूप के शीर्षकोण पर, एक राष्ट्रीय लोकरक्षा-आयोग है, जिसमें पाँच सदस्य हैं: जिन्हें (संसद) डॉइट के दोनों सदनों की स्वीकृति के साथ, प्रधानमंत्री से नियुक्त किया जाता है। वे पाँच वर्षों तक पदभार संभाले रहते हैं। मजोदार बात यह है कि इस आयोग का अध्यक्ष एक राज्यमन्त्री होता है। बराबर मत होने पर, अध्यक्ष को अपना निणयिक मत देने का अधिकार होता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह मन्त्री आयोग के सदस्यों को अनुचित रूप से प्रभावित नहीं कर सके, आयोग की बैठकों में निर्णय परस्पर विचार-विनमय तथा बहुमत से लिये जाते हैं

। जिसने पॉच वर्ष आंभेयोक्ता (प्राज़ोक्यूटर) के रूप में काम किया है, वह सदस्य नहीं बन सकता। एक ही राजनीतिक पार्टी के तीन सदस्यों से अधिक आयोग में नियुक्त नहीं हो सकते और यदि हो जायें, तब उन्हें राजनीतिक पार्टी से त्यागपत्र देना होगा। साथ ही, ना तो अधिकारतन्त्री और ना ही चुने राजनीतिज्ञ राष्ट्रीय या शासकीय आयोग के सदस्य बन सकते हैं।

सुझाव- एक लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था में कार्यपालिका पर रोक रखना महत्वपूर्ण है। देश में गणतन्त्रीय स्वतन्त्रता आई; किन्तु औपनिवेशिक पुलिस पद्धति फिर भी जारी रही, जिसको राजनीतिक असहमति सहन नहीं थी।फलस्वरूप, भारतीय पुलिस पर नियंत्रण तथा सन्तुलन नहीं हैं, जो लोकतन्त्र में नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए उत्तम पुलिस कार्य के लिये बहुत ही ज़रूरी है।

जिला मजिस्ट्रेट को प्रमुख स्थान देना दूसरी त्रुटि है। जिला मजिस्ट्रेट को (जो अपेक्षाकृत अवर अधिकारी होता है) पुलिस महानिरीक्षक की तुलना में अधिक अधिकार प्राप्त हैं । इससे पुलिस नेतृत्व की जड़ कटती है और पुलिस विभाग की कार्यवाही खटाई में पड़ती है।

शायद यह उत्तम रहेगा कि जापान के राष्ट्रीय लोक रक्षा आयोग की भाँति हर राज्य में एक समिति गठित की जाए। इस समिति का नाम राज्य लोकरक्षा आयोग रखा जाये तथा (विरोधी दल के एक सदस्य के समेत) राज्यविधान सभा के दो वर्तमान सदस्य मिला कर उसके पाँच सदस्य होने चाहिए। अन्य तीन सदस्य, शिक्षा, सामाजिक सेवायें, अर्थशास्त्र, विधि आदि के क्षेत्रों से लिये जाने चाहिये । इन तीनों में से एक उच्च या उच्चतम न्यायालय का सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हो सकता है और उसे अध्यक्ष चुना जाये। एक सदस्य पेंशन प्राप्त पुलिस महानिरीक्षक हो सकता है। मुख्य मन्त्री की सिफारिशों पर, लोक रक्षा आयोग के सदस्यों को पाँच वर्ष के लिये राज्यपाल द्वारा नियुक्त किया जा सकता है। यह समिति कामों की तात्कालिकता तय कर सकती है, वर्गीय आन्दोलनों से निपटने के लिये मोटे मोटे सिद्धान्त बना सकती है, पुलिसदल की पर्याप्ता तथा तत्सम्बद्ध मामलों के विषय में सरकार को परामर्श दे सकती है, पुलिस के लिये जन-समर्थन तैयार कर सकती है, राजनीतिक प्रभाव से पुलिस को अलग रख सकती है, क़ानूनों में वाँछित परिवर्तनों के लिये सरकार को मंत्रणा दे सकती है, अधिकार के दुरुपयोग तथा उत्पीड़न की शिकायतों की जाँच कर सकती है तथा तहकीक कर सकती है सरकार से दिये । गये आदेशों की दुरुस्ती के विषय में।

भागग्राही प्रबन्ध- पुलिस का आन्तरिक प्रशासन खुद अलोकतांत्रिक सिद्धान्तों पर आधारित है। उसमें भागग्राही प्रबन्ध की कमी है। पुलिस अधिकारियों और अधी नस्थों में खुले तथा स्पष्ट विचार-विन्मय को स्थान नहीं है। इसको दूर करने के लिये, ब्रिटेन की भाँति पुलिस परिषदों का निर्माण होना चाहिये। ब्रिटिश पुलिस परिषदों में, सभी श्रेणियों के प्रतिनिधि होते हैं और कार्य करने की स्थितियों, वेतनों की उपयुक्तता आदि से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार-विमर्श होता है। वे गृह सचिव से भी

नियतकालिक बैठकें करती हैं और अपनी समस्याओं से उसे अवगत कराती हैं।

ऐसी परिषदों के गठन से, सभी पुलिस जनों को अपने काम के अच्छे मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी और उसे पूरा करने के लिये वे मिल कर रणनीति तय कर सकते हैं।

साथ में, इस से वह भावना नष्ट होती है, जिसमें अधीनस्थ कर्मचारी यह सोचते हैं कि उसकी सेवा-शर्तों को सुधारने के लिये उनके नेता यत्नशील नहीं हैं।

* यह भी खूब रही *

राम : यह तुमने कहाँ से जाना कि गालिब पागल थे।

श्याम : तुम खुद पढ़ सकते हो । उनकी इस शायरी की किताब के मुख पृष्ठ पर लिखा है "दीवाने गालिब ।"

एक व्यंग लेखक ने कारपोरेशन को 'कर-परेशान' की उपाधि दी है।

कृष्ण : देख, इस मरघट जाने वाली सड़क पर निगम ने लिख रखा है-एक ओर को रास्ता ।

गोपाल : ठीक ही तो लिखा है।-मर घट से कौन लौट कर आया है ।

रिंकू : आजकल सोना बड़ा तेज है।

टिंकू: पर हमें तो बड़ा सस्ता मिलता है । आँख मींची नहीं कि सोना हाथ लगा; फिर लगे, खुर्राटे भरने ।

सीताः सखी, आज पतिदेव का जन्म दिन है; बोल क्या दूँ?

सखी: मेरी बात मानो, तो तलाक़ दे दो। रोज की झिकझिक से बच जामोगी।

बड़े दिन की रंग रेलियाँ का वर्णन करते हुये, एक रसिक कवि ने लिखा है **'किसमिस में बढ़ जात हैं, किसमिस हू के दाम ।'**

अध्यापक : 'सती' को वाक्य में प्रयोग करो।

शिष्य : आज धूप बड़ी झुलसती है ।

सूक्ति सुधा

मनुष्य को चाहिये कि क्रोध को दया से, और बुराई को भलाई से जीते।-

गौतमबुद्ध

पुरुषार्थ में दरिद्रता नहीं, ईश्वरचिन्तन में पाप नहीं, मौन धरने में कलह नहीं तथा जागने वाले को भय नहीं होता।

- चारणक्य

पेड़ अपने सिर पर गर्मी सह लेता है, लेकिन दूसरों का छाया देकर उनकी गर्मी हरता है

-कालिदास

मोक्ष रूपी महल के ये चार द्वारपाल हैं-शान्ति, अच्छे विचार, सन्तोष तथा साधु संगति ।

-योग वसिष्ठ

सन्ताप से रूप नष्ट होता है; बल नष्ट होता है; और होता है नष्ट ज्ञान । साथ में सन्ताप से मनुष्य रोगी हो जाता है।

-वेदव्यास

पुंछ उपद्रव और के० रि०पू० बल

पुंछ उपद्रव में के० रि० पु० बल के दो सिपाही मारे जाने पर, श्री बी. एन. प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक (के० रि० पु० बल) जम्मू के नाम श्री शेख अब्दुल्ला, मुख्य मन्त्री, जम्मू-कश्मीर का शोक सन्देश-

'बड़े दुःख के साथ, मुझे यह पता लगा है कि सेवाभार उठाते हुये के० रि० पु० बल के का० नरेश प्रसाद और शिव पूजन सिंह पुंछ में मारे गये हैं। राज्य सेवा की वेदी पर प्राण बलिदान करने हेतु, जम्मू-कश्मीर की जनता सदा उनका नाम लेकर उन्हें याद किया करेगी। शोक-संतप्त परिवारों को भेजने के लिये, मैं और मेरी सरकार हादिक सम्वेदना प्रेषित कर रही है।

आभार-स्वरूप, सरकार ने प्रत्येक दिवंगत सिपाही के परिवार को पाँच हजार रुपये की अनुग्रहात सहायता प्रदान की है। इस धन राशि को उनकी विधवाओं और अन्य परिवारजनों को देने के लिये आपके पास तुरन्त भेजने के आदेश मैंने मुख्य सचिव को दे दिये हैं।'

दिसम्बर 1978 में, शिक्षकों की भर्ती में तथाकथित क्षेत्रीय असन्तुलन के खिलाफ़

एक आन्दोलन आरम्भ हुआ । 26 जनवरी 1979 को, जब गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम पुंछ में चल रहा था, तब कुछ उपद्रवी तत्वों ने राष्ट्र विरोधी नारे लगाये और राष्ट्रध्वज को गिरा कर, उसका अपमान किया और 2 दिसम्बर 1978 को पुलिस गोली से मरने वाले श्री वरियम सिंह की समाधि पर उसे फहरा दिया। स्थानीय पुलिस ने राष्ट्र ध्वज के अनादर रोकने वाले अधिनियम 1971 के अन्तर्गत अपराधियों के विरुद्ध एक मामला दर्ज कर लिया।

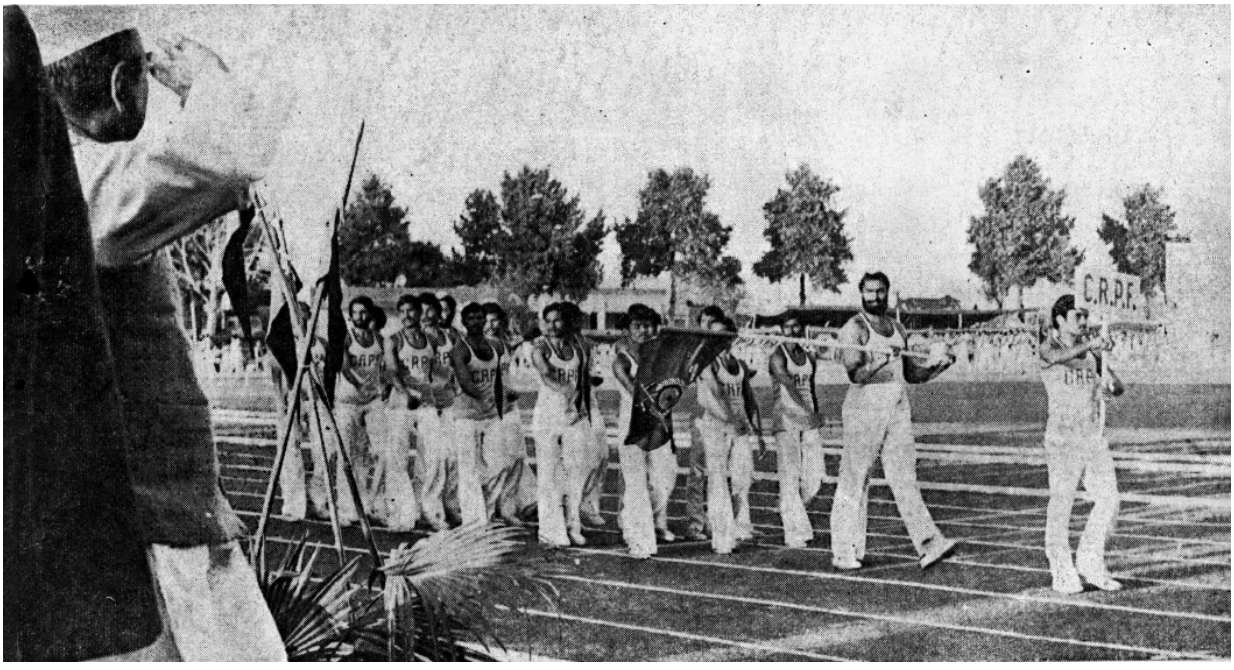
3 फरवरी 1979 की रात्रि को, के० रि० पु० बल की सहायता से स्थानीय पुलिस ने तीन व्यक्तियों को इस सम्बन्ध में बन्दी बनाया। दूसरे प्रात ही, लोगों ने अपना रोष प्रकट किया और बन्दी व्यक्तियों के छोड़ने की मांग की। पुलिस वालों पर पथराव हुमा और अस्त्रों की बौछार हुयी। गुज्जर छात्रावास में आग लगा दी तथा बैंकों और कुछ सरकारी कार्यालयों पर आग लगाने के यत्न किये गये। के० रि पु० बल को हिंसात्मक भीड़ छिन्न भिन्न करने के आदेश दिये गये । स्थानीय मजिस्ट्रेट के हुक्म पर, इस बल के एक सब इन्स्पेक्टर ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिये, हवा में पाँच गोलियां चलाईं। नगर के पुलिस थाने, टाउन हाल और पुलिस सुपरिन्टेन्डेट के कार्यालय के निकट निरत पुलिस पर देशी बमों, बोतलों और अन्य शस्त्रों से लैस प्रचण्ड भीड़ ने धावा बोल दिया। पास की छतों से भी पुलिस पर पथराव हुआ। भीड़ को अवैध बताकर चले जाने को हुक्म दिया गया; किन्तु वह टस से मस नहीं हुयी। इसी बीच, उत्पातियों ने सुपरिटेन्डेंट पुलिस के दफ्तर पर सारी शक्ति लगा दी और उसका कुछ भाग भस्मीभूत करने में सफल भी हुये । स्थानीय पुलिस ने अश्रुगैस छोड़ी; किन्तु विफल मनोरथ । अपनी जान जोखिम में डालकर, वहाँ सदैव उपस्थित के० रि० पु० बल के डी० वाई० एस० पी० ने भीड़ को पीछे धकेल दिया। अश्रुगैस के दुष्प्रभाव के कारण, इस बल का एक जवान गिर गया; उसे भीड़ खींच कर ले गई और बुरी भाँति पीटा। बाद में, उसे अचेत अवस्था में स्थानीय अस्पताल में पाया गया। बीस गोलियों से भरी उसकी रायफल छीन कर भीड़ ले गई।

5 फरवरी 1979 को, पुंछ में 40 बटालियन के० रि० पु० बल की दो और कम्पनियाँ निरत की गईं। डिग्री कॉलेज में उनका शिविर लगाया गया । 10.35 पूर्वाह्न को, जब हमारे जवान सामान उतार रहे थे, तब लगभग 250 लोगों की भीड़ ने धावा बोल दिया। स्थानीय पुलिस ने उसे धकेल दिया; परन्तु शीघ्र ही उसकी संख्या 2,000 के लगभग हो गई और भारी पथराव होने लगा। उसने राष्ट्र विरोधी नारे लगाये, और के० रि० पु० बल से अपना बोरिया-बिस्तर नहीं उतारने का तथा कालेज से चले जाने का आग्रह किया। पथराव से, एक अधिकारी समेत, हमारे 46 जवान घायल हो गए। सब प्रकार से लाचार होकर, के० रि० पु० बल ने गोली चलाई। प्रारम्भ में, हवाई फायरों से भीड़ को डराने-धमकाने की चेष्टा की गई, किन्तु भीड़ नहीं हटी और सभी तरफ से भारी पथराव करने लगी। पाँच बार फायर करने पर भीड़ तितर बितर हुयी। कोई दुर्घटना नहीं हुई । उपस्थित स्थानीय पुलिस ने भी फायर किए, जिससे छह लोग जख्मी हो गए, जिनमें तीन मर गये। पुलिस पर फेंके गये देशी बम और अन्य अस्त्र पाये गए।

उसी दिन साढ़े तीन बजे अपराह्न को, के० रि० पु० बल के तीन सिपाही कॉलेज के नलके पर पानी पीने और भोजनोपरान्त प्लेटें धोने गये। पास की छतों से अज्ञात व्यक्तियों ने तीन गोलियाँ दाग़ीं । एक सिपाही की छाती पर गोली लगने से वहीं मर गया। दूसरे की छाती पर भी गम्भीर चोट आयी। उसे फौजी अस्पताल में भर्ती किया गया और खतरे से बाहर है। तीसरा ओट के सहारे बच गया। जब कभी भी मृत सिपाही के शव उठाने की चेष्टा की गई, उपद्रवियों ने के० रि० पु० बल पर गोलियां दाग़ीं। लगभग छै बजे शाम को के० रि० पु० बल शव पाने में सफल हुआ। मृतक तथा अन्य जवानों की सुरक्षा ध्यान में रखते हुए, के० रि० पु० बल रणनीति पूर्वक पीछे हटा। उन दो प्लाटूनों को आड़ देने के लिए, जिन्हें शव ले जाना था, एक सब इन्स्पेक्टर के नीचे के० रि० पु० बल की एक और प्लाटून लगाई गई, जो गुज्जर छात्रावास के पीछे निरत की गई। ज्योंही शव और दो प्लाटूनें हटीं, तीसरी प्लाटून ने भी हटना शुरू किया, किन्तु जैसे ही चौराहे पर वह पहुँची, तभी किसी अज्ञात व्यक्ति ने पास से गोली दागी और तुरन्त दूसरे जवान के प्राण पखेरू उड़ा दिये।

5 व 6 फरवरी की रातभर उपद्रवी रुक रुक कर के० रि० पु० बल की विभिन्न चौकियों पर गोली चलाते रहे। उस डिग्री वाले कॉलेज में, देशी बम फिंके हुये पाये गये । इस बल के मुर्गीपालन क्षेत्र वाले शिविर में, एक सन्तरी बाल बाल बचा, जबकि गोली सन्तरी के पास दीवाल में जा धंसी।

इस उपद्रव में, के० रि० पु० बल के दो सिपाही बलिदान हो गये और 46 जख्मी हये । उन दो सिपाहियों की मृत्यु पर, जम्मू कश्मीर के मुख्य मंत्री ने श्री बी० एन० प्रसाद, पुलिस उपमहानिरक्षक श्रीनगर को लिखे अपने पत्र में अत्यन्त दुःख प्रकट किया। आभार स्वरूप, राज्य सरकार ने प्रत्येक दिवंगत सिपाही के परिवार को पाँच-पाँच सहस्र रुपये प्रदान किये हैं। (देखिये ऊपर उद्धरण)



क्रीड़ा क्षेत्रे :

के० रि० पु० बल को दौड़कूद (एथ्लीट) सिरमौर की पुनः प्राप्ति

ले०—श्री एच० एस० सेठी

लखनऊ में, सशस्त्र पुलिस के महानगर स्टेडियम में 2 से 5 मार्च तक खेले गये 28वें अखिल भारतीय पुलिस एथ्लीट खेलों में, के० रि० पु० बल ने फिर से दौड़ कूद का सिरमौर जीत लिया (जिसे पिछले वर्ष सीमा सुरक्षा दल ने छीन लिया था)।

परम्परागत प्रतिद्वन्द्वी, के० रि० पु० बल और सी० सु० दल में अत्यन्त संघर्ष रहा और 17 अंकों के ही छोटे अन्तर से के० रि० पु० बल विजयी हुआ (पिछले वर्ष सी० सु० दल ने भी केवल 18 अंकों से सिरमौर जीता था)। दौड़कूद के चारों दिनों, के० रि० पु० बल और सी० सु० दल में बड़ी भीषण प्रतिद्विन्द्वता चली । जितनी भी कम क्यों न हो, परन्तु के० रि० पु० बल की निरन्तर बढ़त रही। परन्तु दौड़कूद के अन्तिम चरणों में ही जाकर, के० रि० पु० बल को अपनी जीत की निश्चितता हुयी। अन्तिम अंक-प्राप्ति इस प्रकार रही— के० रि० पु० बल 273; सी० सु० दल 266 और पंजाब तथा उत्तर प्रदेश (हरेक) 38 ।

इस तीक्ष्ण प्रतिस्पर्धा में कोई अनेक कीर्तिमान स्थापित नहीं किये । दर असल, केवल एक ही रिकार्ड सारी प्रतियोगिता में भंग हुआ। इसका श्रेय **सी० टी० नटराजन** को जाता है, जिसने नेजा 68.80 मी० फेंका और 1974 में सी० सु० दल के नरेन्दर सिंह द्वारा स्थापित 67.02 मी० वाला कीर्ति मान तोड़ा। **नटराजन के० रि० पु० बल की नयी उपलब्धि है।**

चौड़ी कूद में, सी० सु० दल के शशि-धरन ने के० रि० पु० बल के वी. एस. रणधावा द्वारा स्थापित 7.26 मी० वाले कीर्तिमान की बराबरी की।

शायद नये काष्ठ-पथ के निर्माण के कारण रिकार्ड नहीं बन सके; किन्तु क्षेत्रीय खेलों में कोई सुधार नहीं होने का कोई तर्क नहीं मिलता।

सर्व दर्शकों के नेत्रों का तारा के० रि० पु० बल का प्रख्यात धावक हरीचन्द था, जिसने बैंकाक में हुये एशियाई खेलों में इन्हीं दिनों दो स्वर्ण पदक जीते थे। निरन्तर पाँच वर्षों से हरीचन्द इस बार भी 10,000 मी०, 5,000 मी० और 1,500 मी दौड़ों को जीतकर, प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित हुआ। परन्तु इस प्रतिष्ठा में, उसे सी० सु० दल के शशिधरन को भागीदार बनाना पड़ा, जिसने भी 200 मी०, 100 मी० दौड़ों

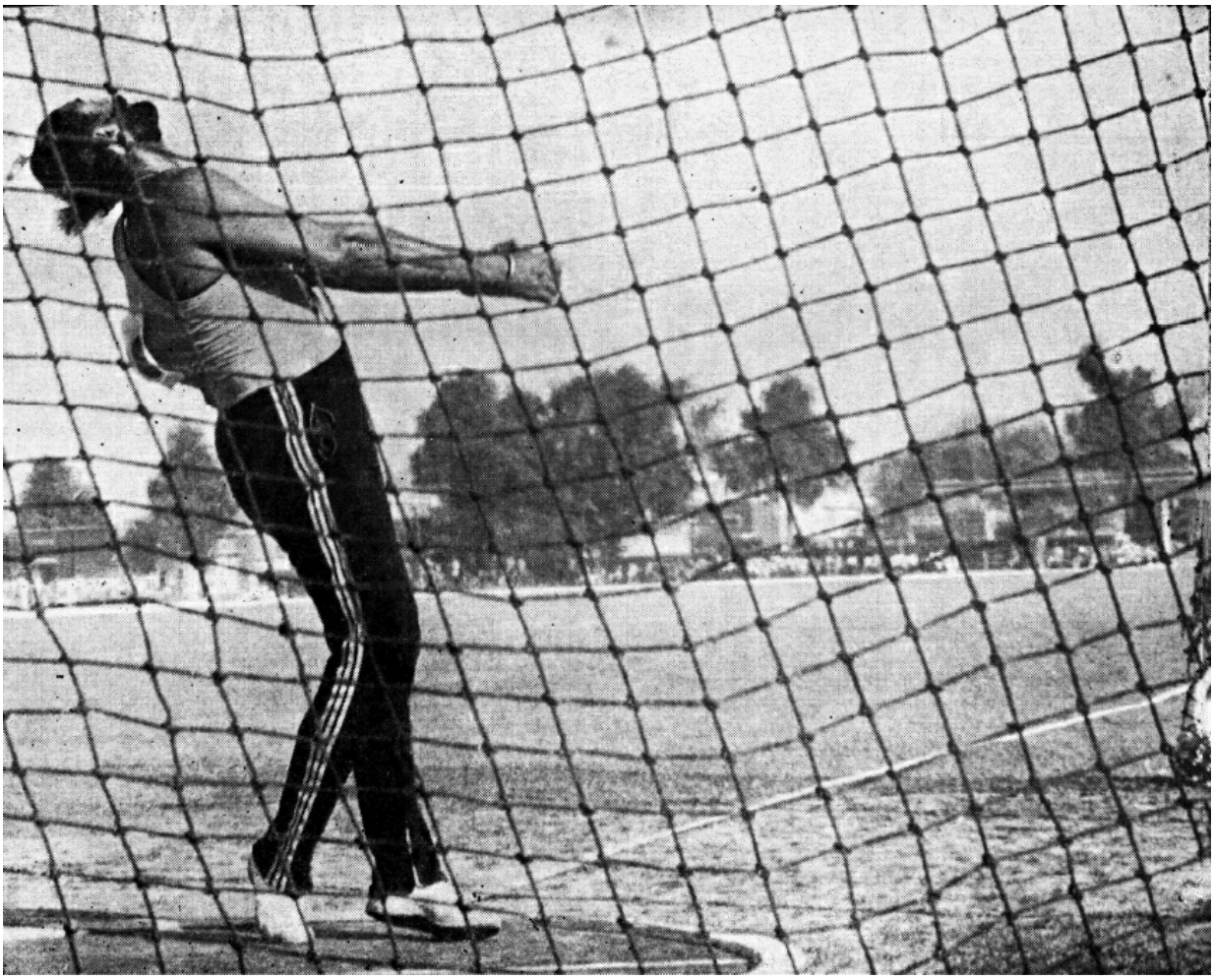
तथा लम्बीकूद में तीन स्वर्णपदक पाये थे। हरीचन्द की दक्षता पूरी निखार पर नहीं पायी, इसका कारण शायद यह था कि लम्बी दौड़ों में कोई भी बड़े धावक स्पर्धा नहीं कर रहे थे।

आयोजकों को कभी ऐसी आशा नहीं थी कि **'सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट पदक'** को दो में बाँटा जायेगा; उन पर तो इसके लिए एक ही पदक था। जब हरीचन्द और शशिधरन दोनों उत्तर प्रदेश के राज्यपाल तपा से के निकट गये, तब हरीचन्द ने बिगड़ती हुयी स्थिति को यह प्रार्थना कर संभाल लिया कि क्योंकि शशिधरन प्रथम बार सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित हुआ है, पदक उसे प्रदान किया जाये । नन्हें हरीचन्द का वस्तुतः हृदय महान है।

के० रि० पु० बल को नई उपलब्धि कुंजूमन में भी हुयी है। इस सिपाही ने 1 मि० 53.5 से० में 800 दौड़कर स्वर्ण पदक अर्जित किया।

कष्टसाध्य **मैरॅथॅन** दौड़ को 2 घ० 22 मि० 50.2 से० में पार कर पंजाब के विनोद कुमार ने जीता। वह अपने ही स्थापित रिकार्ड से 45.2 से० पीछे रह गय। दूसरा स्थान के० रि० पु० बल के **रासदेवसिंह** ने पाया, जिसने 2घ० 23 मि० 18.8 से० का समय लिया।

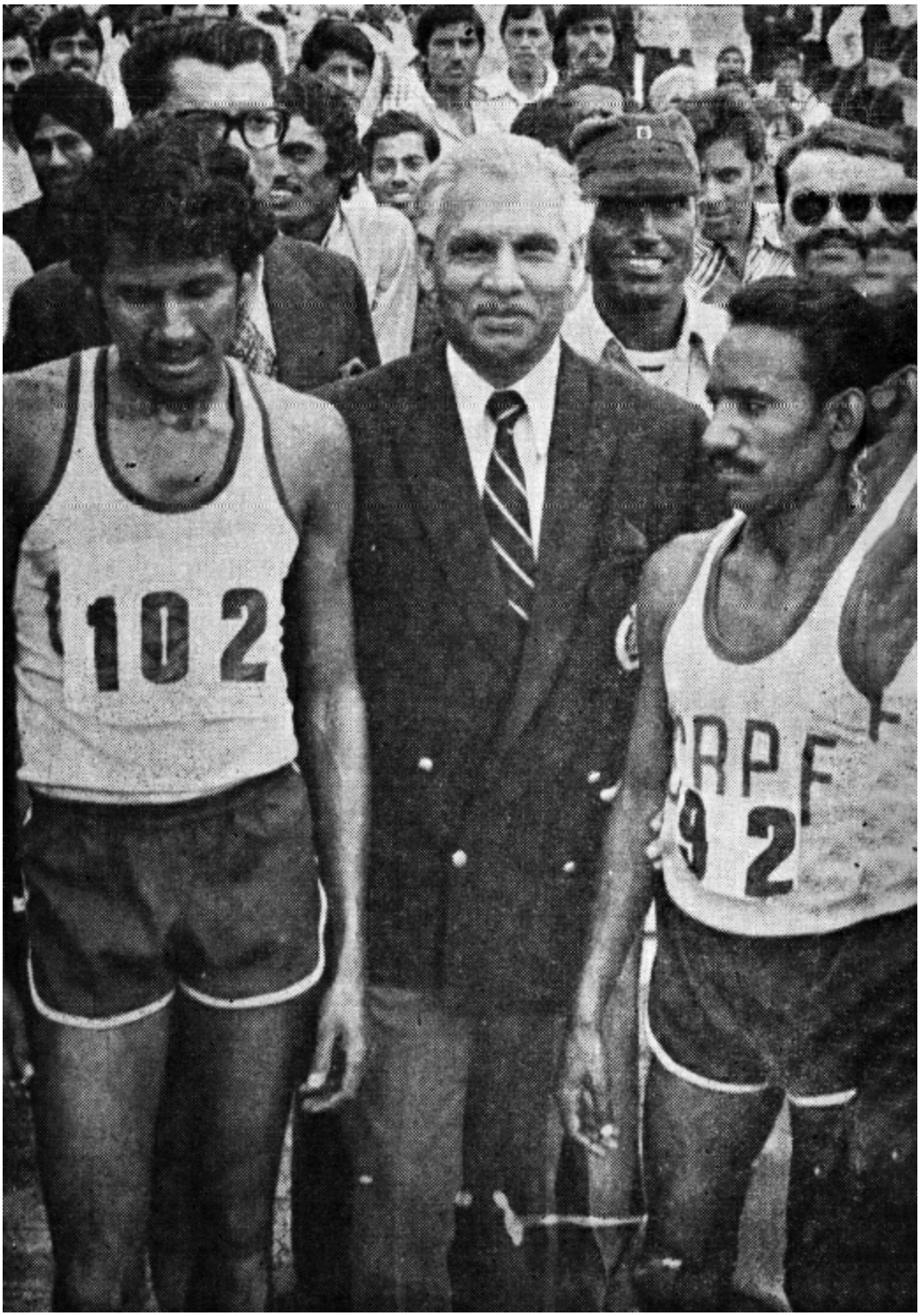
28वें अ०भा० पुलिस खेलों की कुछ झलकियाँ



अभ्यास करता हुआ धन फेंक विजेता रघुबीर सिंह ।



के० रि० पु० बल के श्री के० आर० के० प्रसाद से हाथ मिलाते हुये उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव श्री डी० के० भट्टाचार्य।



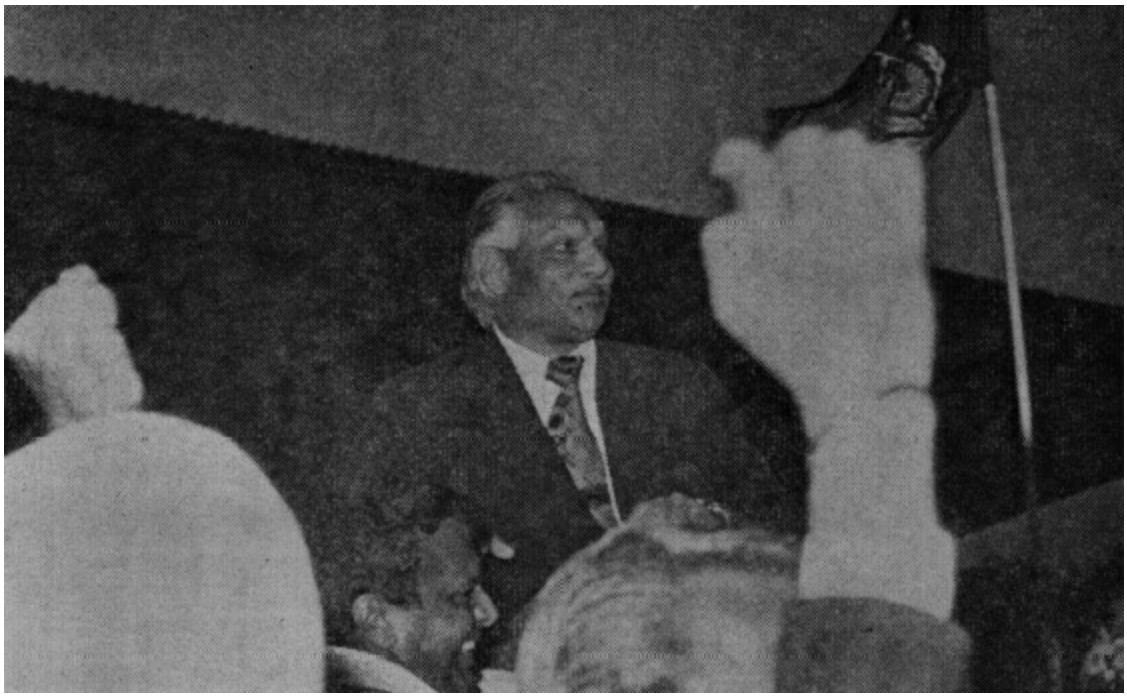
5000 मीटर दौड़ में क्रमशः प्रथम तथा तृतीय स्थान पाने पर हरीचन्द और शशिधरन को शाबाशी देते हुये महानिदेशक श्री आर० सी० गोपाल।



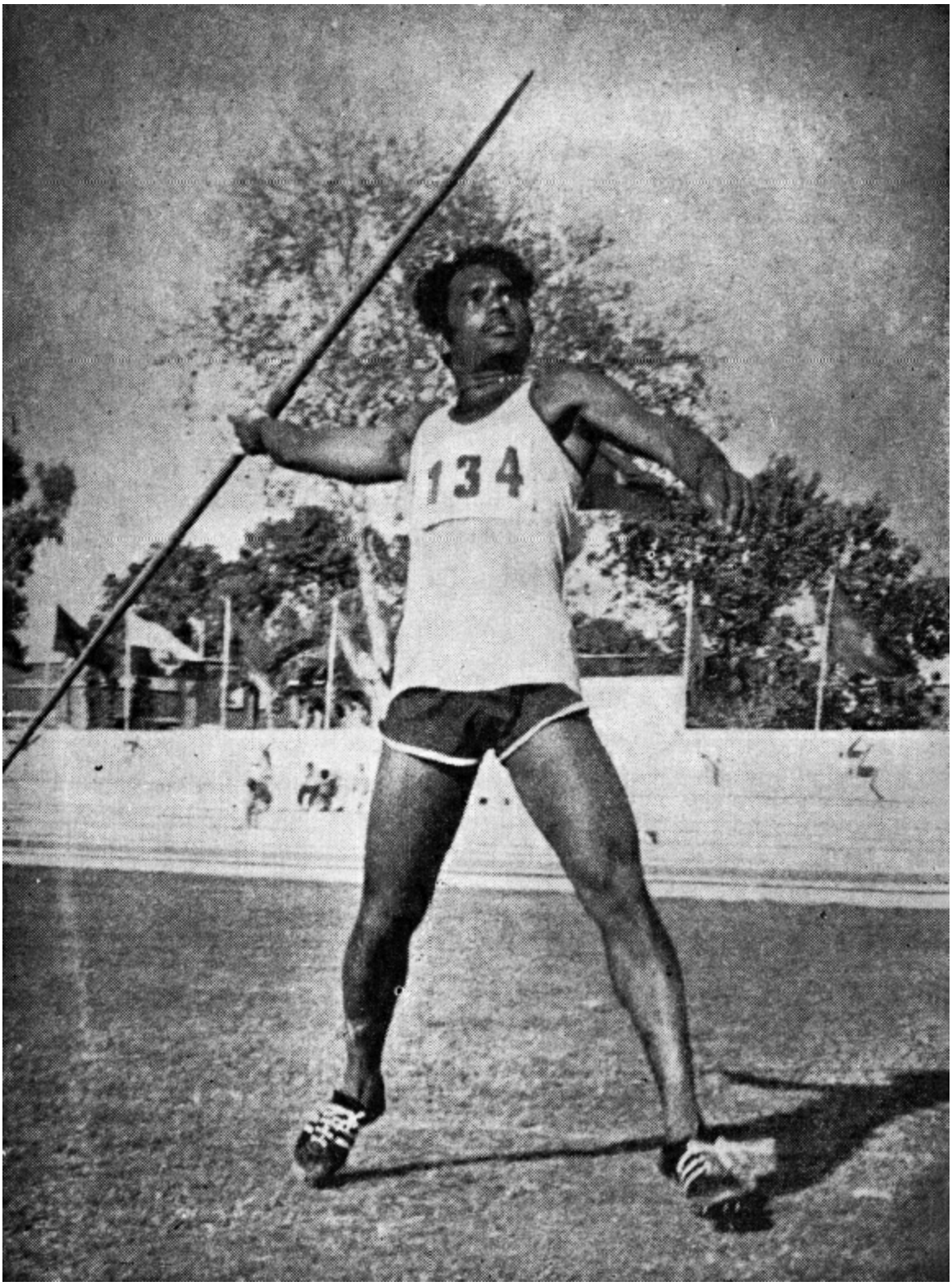
के०रि०पु० बल के कोचों (शिक्षकों) से वार्तालाप करते हुये ब्रिगेडियर एस०बी० रजा उपमहानिरीक्षक कोहिमा तथा महानिदेशक श्री गोपाल ।



सिनेमा अभिनेत्री जया भादुड़ी समेत विशिष्ट दर्शक गण।



झंडा ऊंचा रहे हमारा-विजयोल्लास



नेजाफेंक में स्वर्णपदक विजेता नटराजन्

6,283 अंक पाकर, के० रि० पु० बल के **प्रभातसिंह** ने सरलतापूर्वक डिक थलन में प्रथम स्थान पाया। पिछला कीर्तिमान उसका ही 6,553 अंक का रहा था। दूसरे

स्थान पाने वाला भी, 6,054 अंक लेकर के० रि० पु० बल का **जनकचन्द** रहा।

स्टीपलचेज़ में के० रि० पु० बल के जिस **प्रदीपकुमार** ने बैंकाक में चौथा स्थान एशियाई खेलों में पाया था, उसने इसमें 9 मि० 09.2 से में दौड़ कर सरलतापूर्वक स्वर्णपदक पा लिया। उसको कोई और भी प्रतिस्पर्धा को नहीं था; दूसरे स्थान पाने वाला सी० सु० दल का ईश्वरसिंह 100 मी० पीछे रह गया था।

कुल मिलाकर, के० रि० पु० बल ने 10 स्वर्ण, 7 रजत और 10 कांस्य पदक जीते। अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे :—

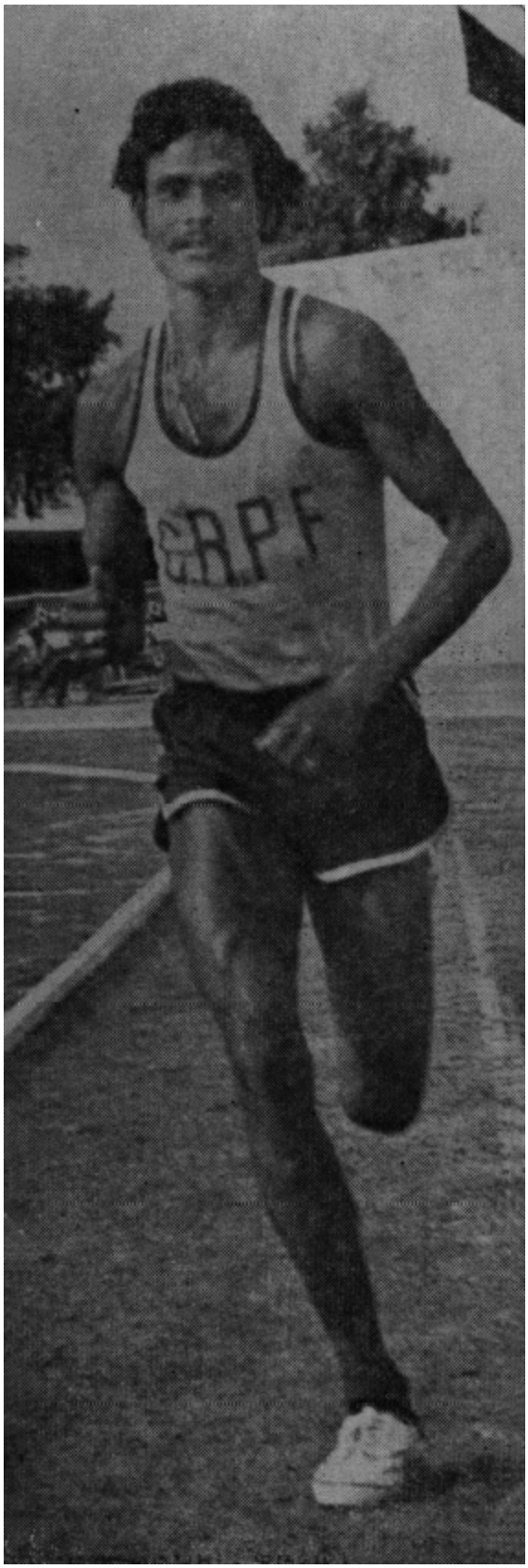
100 मी० दौड़ : शशिधरन (सी० सु० दल) **I; के०जी० ज़ोज़ेफ (के.रि०पु० बल)** II व सुब्रह्मण्यम (त० ना०)

200 मी० दौड़ : शशिधरन (सी० सु० दल) I; सुब्रह्मण्यम (त० ना०) II **पी. कञ्जम्बू (के० रि० पु० बल)** III.

400 मी० दौड़ : अजायबसिंह (सी० सु० दल) I; बल्देवसिंह (सी० सु० दल) II व **बच्चूसिंह (के० रि० पु० बल)** III.

800 मी० दौड़ : टी० कुन्जूमन (के० रि० पु०) I; राजेन्द्रसिंह (दिल्ली) II व एम. एम. पाटिल (के०रि०पु० बल) III.

1,500 मी० दौड़ : हरीचन्द (के.रि० पु० बल) I; राजेन्द्रसिंह (दिल्ली) II व **चन्द्रप्रकाश (के० रि० पु० बल)** III.


C.R.P.F

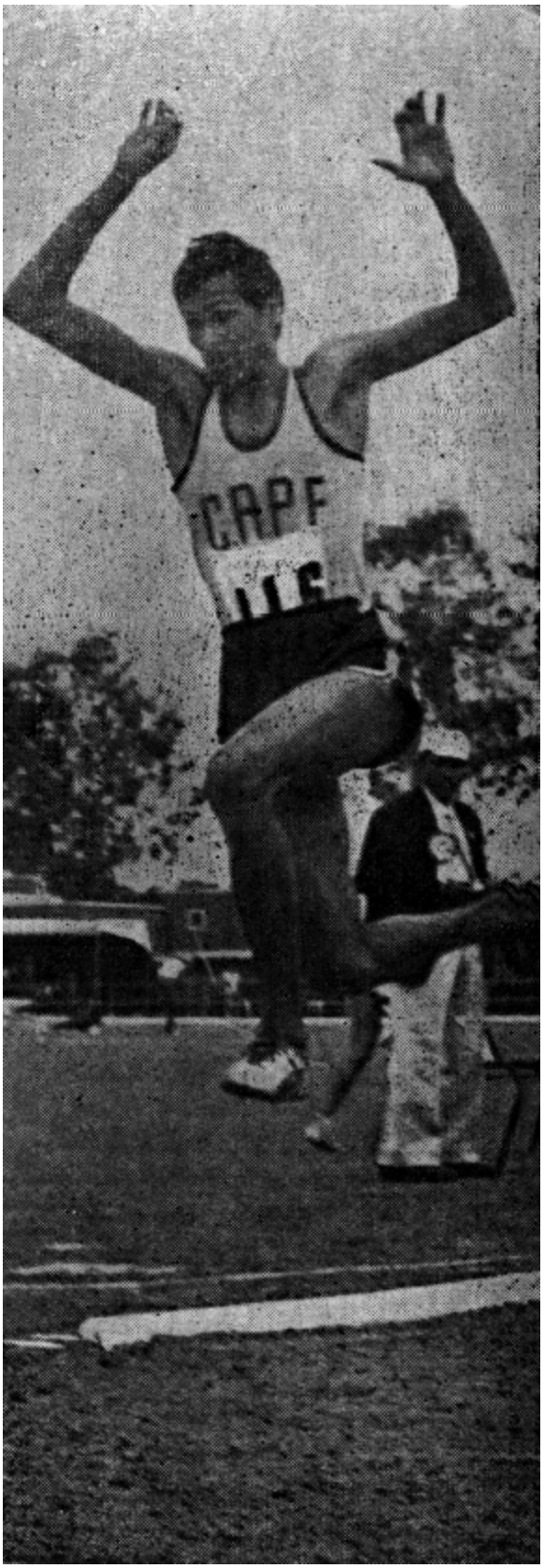
5,000 मी० दौड़ः हरीचन्द (के०रि०पु० बल) I; एन. टोडरमल (भा०ति० सी० पु०) II व **एन० शशिधरन (के० रि० पु० बल)** III.

10,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (के० रि०पु० बल) I; टोडरमल (भा० ति० सी० पु०) II व मोहनसिंह (सी० सु० दल) III.

3,000 मी० दौड़ : प्रदीप कुमार (के०रि०पु० बल) I; ईश्वरसिंह (सी० सु० दल) II व **चन्दरभान (के०रि०पु० बल)** III

110 मी० वाधा : ए. एस. रणधावा (सी०सु० पुल) I; ओमप्रकाश (हरियाणा) II व लेहम्बर सिंह (सी० सु० दल) III.

400 मी० (बाधा) : राजबलकर सिंह (सी० सु० दल) I; बी० नागेश्वर राव (आ० प्र०) II व **लेहम्बरसिंह (सी० सु० दल)** III.



त्रिकूद विजेता के. सुधाकरन

ऊँची कूद : बलतेज सिंह (सी० सु० दल) I; **सतबीरसिंह (के० रि०पु० बल)** II व **प्रभाती लाल (के० रि० पु० बल)** III.

पोलवाल्ट : फूलकुमार (हरियाणा) I; आर. एल. पाण्डेय (उ०प्र०) II व **प्रेमचन्द्रन (के० रि० पु० बल)** III.

चौड़ी कूद : शशिधरन (सी० सु० दल) I; बल विन्दरसिंह (सी०सु० दल) II व **प्रभाती लाल (के० रि० पु० बल)** III.

त्रिकूद : के० सुधारकरन (के. रि. पु. बल) I; परमजीत सिंह (सी० सु० दल) II व **विश्वेश्वर दत्त (के . रि. पु. बल)** III.



3,000 मी० दौड़ स्टीपलचेज़ में प्रदीप कुमार ।

शाटपुट : विजयबहादुर (सी०सु० दल) - I; गुरदीपसिंह (सी० सु० दल) II व रक्षापालसिंह (पंजाब) III.

चक्काफेंक : प्रवीण कुमार (सी० सु० दल) I; **एच.एस. वाल (के.रि. पु. बल)** II. व बलकरसिंह (पंजाब) III.

घन फेंक : आर. एस. बल I; जे. एस. भुल्लर (दोनों **के. रि.पु. बल**) II व प्रवीण कुमार (सी० सु० दल) III.

नेजाफेंक :नटराजन (के. रि. पु. बल) I; नरेन्दरसिंह (सी० सु० दल) II व जोगिन्दर सिंह (सी० सु० दल) III.

4X100 मी० (रिले) : के. रि. पु. बल I; सी०सु० दल II व तमिलनाडु III.

4X400 मी० (रिले) सी० सु० दल I; **के. रि. पु. बल** II व उत्तर प्रदेश III.

मैरॅथॅन : विनोद कुमार (पंजाब) I; **रासदेवसिंह (के. रि. पु. बल)** II व मोहन सिंह (सी०सु० दल) III,

डिकथलन :प्रभातकुमार सिंह (के.रि.पु. बल) I; **जनकचन्द (के रि०प० बल)** II व बल्लविन्दर सिंह (सी. सु. दल) III.



दंगल में उपविजेता

फरवरी 1979 में लखनऊ में हये 28वें अ० भा० पु० खेलों के दंगल में, इस बार के० रि० पु० बल ने अपनी स्थिति सुधारी और 24 अंक पाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सी० सु० दल 27 अंकों से चैम्पियन रहा । के० रि० पु० बल को तीन स्वर्ण, दो रजत और तीन कांस्य पदक मिले।

(I) **स्वर्ण पदक विजेता**—1. का० पतिराम (बन्टमभार 57 कि० ग्रा०) 2. नायक यशपाल (हेवीभार-100 कि० ग्रा०) तथा 3. ईश्वर सिंह (सुपर हेवीभार)।

(II) **रजत पदक विजेता**—1. रघुवीर सिंह (81 कि० ग्रा०) तथा 2. ओम प्रकाश (90 कि० ग्रा०)।

(III) **काँस्य पदक विजेता**—1. सिया राम (48 कि० ग्रा०). 2. सन्तराज (52 कि० ग्रा०) और 3. मन्नीराम (74 कि० ग्रा०)।

पतिराम और यशपाल की कुश्तियों से महानिदेशक इतने प्रसन्न हुये कि उन्होंने उनको नायक तथा हेड कांस्टेबल की क्रमशः तुरन्त पदोन्नति घोषित कर दी।

कबड्डी में उपविजेता

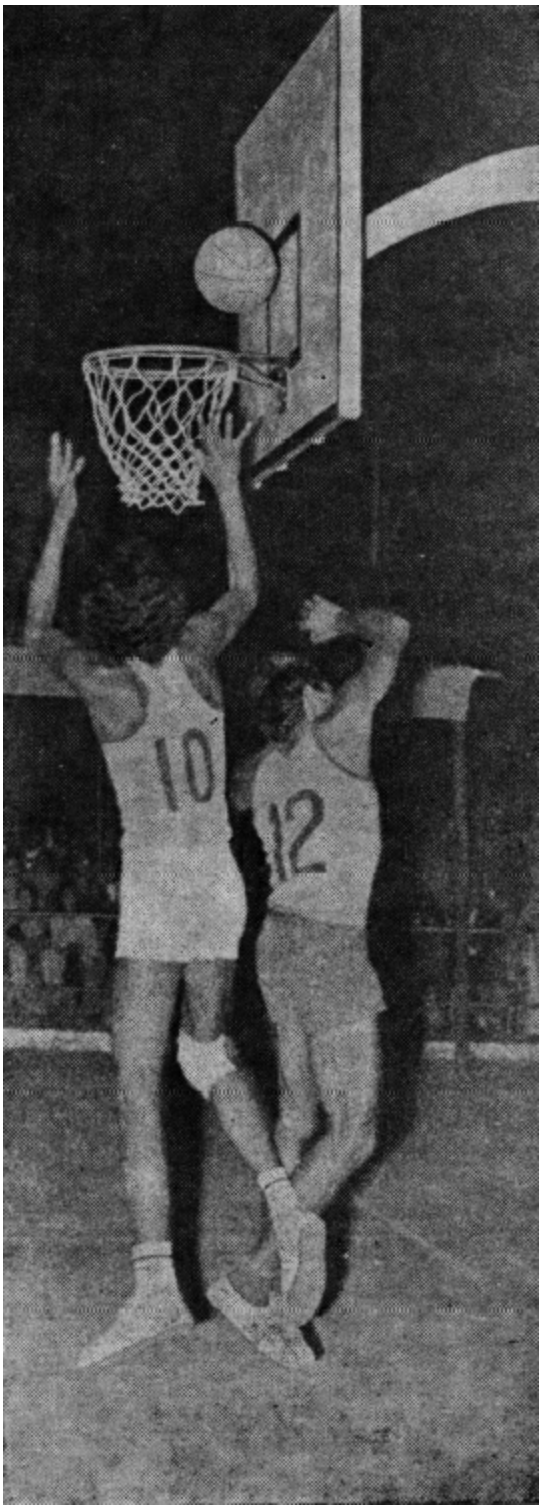
फरवरी 1979 में खेली गयी 28वीं अ० भा० पुलिस खेल प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल से पंजाब पुलिस द्वारा 21-5 से कबड्डी में सरमौर छिन गया। हमारा बल पिछले दो वर्षों से चैम्पियनशिप जीत रहा था। प्रारम्भ में, हमारी बढ़त रही; किन्तु बाद में पंजाब पुलिस का बोलबाल रहा ।

बास्केटबाल में उपविजेता

के० रि० पु० बल अपने परम्परागत प्रतिद्वन्द्वी सी० सु० दल से फाइनल में 64-57 से हार कर, 28वें अ० भा० पुलिस खेलों के बास्केटबाल टूर्नामेंट में उपविजेता रहा । अन्त समय तक, खेल बड़ा संघर्षमय रहा; पिछले तीन मिनटों में ही, सी० सु० दल अपनी स्थिति दृढ़ कर सका। हमारे बल के एन० एन० कुट्टी (14), गोकुलचन्द (12) और पी० पी० सिंह (11) ने सर्वाधिक अंक बनाये।

वालीबाल

क्वार्टर-फाइनल में, के० रि० पु० बल 28 वें अ० भा० पु० खेलों के वालीबाल टूर्नामेंट में भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस से परास्त हो गया।



बास्केट में बाल डालते हमारे जवान



दूसरे के क्षेत्र में पाला देते हमारे जवान—कबड्डी- - -कबड्डी।

जिमनास्टिक्स में तीसरा स्थान

लखनऊ में आयोजित 28वें अ० भा० पुलिस खेलों में (1975 से 1978 तक) निरन्तर चार वर्षों से चले आते चैम्पियन के० रि० पु० बल को इस वर्ष तीसरे स्थान पाने पर सन्तुष्ट होना पड़ा। उत्तर प्रदेश (514.48 अंक) और सीमा सुरक्षा दल (481.61 अंक) क्रमश: प्रथम तथा द्वितीय रहे। के० रि० पू० बल को 468.18 अंक मिले।

समीर भट्टाचार्य ने रोमन रिंग में केवल काँस्य पदक पाया। जजों के पक्षपात पूर्ण रवैये के विरुद्ध शिकायत की गयी; किन्तु कुछ सुनवाई नहीं हुयी।

मध्य प्रदेश जिम्नास्टिक्स

दिनांक 11 से 13 जनवरी 1979 तक आयोजित मध्यप्रदेश जिम्नास्टिक्स चैम्पियनशिप में के० रि० पु० बल ने भाग लिया और उसका सिरमौर जीता। का० के. राजेन्द्र ने व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती और का० बख्तावर सिंह ने फ्लोर एक्सरसाइज़, पैरेललबार तथा बोल्टिग हार्स में प्रथम स्थान पाया।

अ० भा० पुलिस खेलों में फुटबाल

लखनऊ में हुए 28वें अ० भा० पुलिस खेलों के फुटबाल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल नागालैंड पुलिस से क्वार्टर फाइनल में 0-3 से हार गया।



समीर भट्टाचार्य



पंजाब पुलिस से हाकी में हमारा संघर्ष

हाकी में तृतीय स्थान

लखनऊ में आयोजित 28वीं अ० भा० पु० खेलों की हाकी प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल को तृतीय स्थान मिला। इसने हार्ड लाइन मैच में बिहार पुलिस को 1-0 से हराया था । अर्द्ध फाईनल में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिवाले खिलाड़ियों वाली पंजाब पुलिस को इसने मुंह तोड़ उत्तर दिया; किन्तु टाई-ब्रेकर (अवरोध भंजक) में 4-3 से झुकना पड़ा।

रामचरण लाल स्मारक हाकी

वाराणसी में रामचरण लाल स्मारक हाकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल को इण्डियन एअर लाइन्स के साथ संयुक्त विजेता घोषित किया गया, क्योंकि अन्तिम मैंच में दोनों ने एक-एक गोल करके हार जीत बराबर रखी।

<u>कविता:</u>

दुराशंका

[रचयिता—**का० सुशीलचन्द्र चौहान, 2 बटा०**]

मिलता है वेतन हम को कम ।
यों ही सोचा करते सब हम ।
कसो कसौटी पर निज मन को।
फिर देखो अपने जीवन को।
सेवा का पथ है पथरीला,
ऊबड़-खाबड़ बीहड़ वन ज्यों।
नव-निर्माण कर उस पथ का,
जिस पर नाचें खुशियाँ हर दम ।
अष भी कहते-क्या वेतन काय ?
बिछे कांच के पग-पग टुकड़े।
कोमल पद कहते निज दुखड़े।
बहें कम वेदी पर लहु-सर,
सुख परिधान हुये सब चिपड़े।
शोर मचाते खड़े खड़े बस,
हमें खा रहा, अपना ही राम ।
क्या सचमुच मिलता वेतन कम ?
विलख रहे निष्ठा के गान ।
काँटों की गति पद ही जाने ।
जिन्हें चाहिये सेज फल की,
थे बाढ़ों से लड़ना ठाने ।
धर्म-कर्म सब बेच रहे क्यों,
चाँदी के टुकड़ों पर नित हम?
मिलता वेतन क्या सचमुच कम

उत्तम खेल दक्षता पुरस्कृत

दिनांक 5 मार्च 1979 को सम्पन्न हुये 28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, अपनी असाधारण दक्षता दर्शाने के उपलक्ष्य में, इन 44 जवानों की पदोन्नति महानिदेशक, के०रि०पु० बल ने घोषित की है—

क्रमांक	नाम, पदनाम तथा सम्बद्ध यूनिट	उन्नीतपद
	I एथ्लोटिक्स (व्यायामिक)	
1.	स० इ० प्रदीप कुमार 22 बटा०	इन्स्पेक्टर
2.	स० इ० प्रभात सिंह 16 बटा०	”
3.	हे० का० चन्दर प्रकाश, 30 बटा०	सब इंस्पेक्टर
4.	हे० का० के० सुधाकरन, 1 सिंग० बटा०	”
5.	हे० का० रमा शंकर राव, , 9 बटा०	”
6.	ना० बच्चू सिंह, 60 बटा०	हेडकांस्टेबल
7.	ना० जनक चन्द, ग्रुपकेन्द्र नागपुर	”
8.	ला० ना० के० नटराजन, 18 बटा०	”
9.	ला० ना० सतबीर सिंह, के० प्र० कालेज II	”
10.	ला० ना० रामभगत, 53 बटा०	नायक
11.	ला० ना० रमा शंकर, 40 बटा०	”
12.	का० टी० कुंजूमन, 30 बटा०	”
13.	का० गुरदयाल सिंह, 3 बटा०	”
14.	का० ए० एन० शरीधरन, 30 बटा०	”
15.	का० बुद्धाखास, 60 बटा०	”
16.	का० लारेंस कैचप, 52 बटा०	लांसनायक
17.	का० मदन नायक, 29 बटा०	”
18.	का० पीटर एंड, 11 बटा०	”

19.	का. गुरुमुख ।सिंह 6 बटा०	”
20.	का० भार० वोरह, 29 बटा०	”

II बास्केटबाल

21.	स० इ० एस० पी० यादव, 5 बटा०	इंस्पेक्टर
22.	है० का० वी० एन० कुट्टी, 5 बटा०	सबइन्स्पेक्टर
23.	का० हवा सिंह, 14 बटा०	लान्स नायक
24.	का० गंगाधर, ग्रुपकेंद्र प्र० II	लान्स नायक
25.	का० दया राम, 49 बटा०	”
26.	का० शम्भू नाथ, 15 बटा०	”

III हाकी

27.	का० एम० तिर्के, 18 बटा०	लान्स नायक
28.	का० ए० लकरा, 49 बटा०	”
29.	का० निस्तर खजूर, 5 बटा०	”
30.	का० ईश्वर दत्त, 3 बटा०	”
31.	का० पतरास बली, 39 बटा०	”

IV. कबड्डी

32.	का० उमराव सिंह 60 बटा०	लान्स नायक

V. वालीबाल

33.	हे० का० रोहतास सिह, 48 बटा०	इंस्पेक्टर
34.	ना० स्वतंत्र सिंह, ग्रुपकेंद्र नीमच	हे० कांस्टेबल
35.	का० जयपाल सिंह, 15 बटा०	लान्स नायक
36.	का० टी० वी० लक्ष्मण, 34 बटा०	”
37.	का० सतबीर सिंह, 7 बटा०	”
38.	का० बेबी डेनियल, 55 बटा०	”

36.	का० टी० जे० बेबी, 18 बटा०	”
40.	का० मईन कुट्टी, 19 बटा०	”
41.	का० जीत राम, 29 बटा०	”

VI. दंगल

42.	नायक यशपाल, 7 बटा०	हेडकान्स्टेबल
43.	ला० ना० सन्तराज, II बटा०	नायक
44.	का० पत्ती राम. 34, बटा०	”

कहानी :

जुआ

ले०—रे० अ० राजनाथ पाण्डेय, 2 सि० ब०

“अरे रमना, तू हारा क्या? ऐसा मुँह लटका कर बैठ गया मानों तेरी ज़ोरू मर गई हो! यार, जुये में हार जीत चलती ही रहती है। वैसे भी रुपये पैसे तो हाथ के मैल हैं, उससे तो हाथ धोना ही चाहिये” ऐसी ही शिक्षायें उसके साथी जवान देते रहे।

पर आज वह सब कुछ हार कर, कर्ज़ से लदा बाँस की चारपाई पर औंधे मुँह पड़ा है। भीगी हुई आँखें लाल-लाल सूज रही हैं; चेहरे पर चिड़चिड़ापन झाँक रहा है; मनहूसियत उस पर सिक्का जमाये बैठी है। फ़ौज़ में नौकरी है; हवलदार का रुतवा है। ऐसी स्थिति में तो और दस को खिला सकता था ? किन्तु उसकी आज यह स्थिति है कि पास में कानी कौड़ी नहीं है। पहली ही तारीख को कर्जदार उसके घोंसले का माँस नोंच-नोंच कर ले जाते हैं। उसको झुँझलाहट आ रही है; घर से पाये तार को पढ़कर वह फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देता है—‘औरत बीमार है तो रमना क्या करे ? किसी से भीख मांगे ! तभी उसे लगा कि आकाश के चाँद-तारे उसकी मज़ाक़ उड़ा रहे हैं; सारी प्रकृति उसकी खिल्ली उड़ा रही है। आखिर उसे देगा भी कौन ?

उधर अर्धांगिनी के भली-भाँति लालन-पालन की कसमें पुरोहित पाधा, किन किन देव-देवताओं और भाई-बन्धुओं के समक्ष पाणिग्रहण के समय खिलवाते हैं—इधर आज वह परिस्थितियों से विवश सब कुछ मुकर रहा है। उसका हृदय रह-रह कर कचोट रहा है । उसे मालूम है कि फ़ौज़ में जुना खेलना संगीन जुर्म हैं। पर आसानी से धन कमाने की प्रवृत्ति हमें पथ भ्रष्ट कर देती है और एक अंधकूप में गिरा देती है। जी हाँ, ऐसे गहरे कुयें में, जहाँ भीषण अंधकार है; जो बिल्कुल सूखा है; निर्मम है । वहाँ आदमी मृग तृष्णा से छटपटाता है। पर दूर-दूर तक पानी की बूंद नहीं मिल पाती।

राधिका को तेज बुखार है। वह अंधेरी कोठरिया में पड़ी कराह रही है; खाट के नीचे नीम हकीम का काढ़ा रखा हुआ है । उसका हलक़ सूख रहा है, पर अबोध बच्चे सब बाहर खेलने चले गए हैं। अन्त में, प्यास 'बुझाने को उसने उसी काढ़ को पीने के लिए हाथ बढ़ाया और बुदबुदण्या—'ये पापी 'प्राण भी तो नहीं निकलते, जो जीते नरक से छुट'...." वाक्य पूरा भी नहीं कर पाई थी, तभी कोई जानी पहचानी ध्वनि कर्णरंध्र में गूंजी—"रधिया, कहाँ हो रधिया; देखो तेरे सामने कौन खड़ा है ?"

अपने प्राणाधार को पहचानने में किस स्त्री को कठिनाई हो सकती है ? पति को निहारते ही वह बिलख-बिलख कर रोने लगी।

'छिः अब क्यों रोती है इस शुभघड़ी में ? अब तू जल्द ठीक हो जायेगी'

'मुझे ठीक होना नहीं चाहिये । परन्तु घड़ी जरूर बड़ी शुभ है। कम से कम अर्थी —'रधिया के मुँह पर हाथ रखते हुये वह बोला—

'चुप पगली । ऐसी बुरी बात मुँह तक से भी नहीं निकालते'

इतने में पिता के आने की सूचना पाते ही तीनों बच्चे दौड़े-दौड़े घर चले आये, जैसे अंधड़ से टूटे पत्ते घर में घुस आते हैं । धूल-धूसरित बच्चों की अजीब दयनीय दशा थी। वे टुकुर-टुकुर कर अपने 'बापू' को देखे जा रहे थे और यह आशा लगा रहे थे कि पहले की भाँति वह कुछ न कुछ खेल खिलौना उन्हें देगा; उन्हें चूमेगा; परन्तु यह क्या ? वह तो उल्टा बिखर पड़ा "कैसी अनाथों की सी सूरत बना रखी है । क्यों स्कूल नहीं गये राजू ।'

राजू पत्थर की मूर्ति बना मौन था । छोटे भाई बिहारी ने साहस कर के कहा 'बापू, कई महीनों की फीस बाक़ी थी। मास्टर साहब ने नाम काट कर निकाल दिया।' और ऊँ ऊँ कर रोने लगा। रमना के हृदय पर मनों के हथौड़े चल रहे थे। तब तक रचना भी तुतला कर बोली 'बापू, मैं गाने में अव्वल आयी हूँ। आप सलवाल फलाक लाये हो ना।'

रमना का हृदय टुकड़े टुकड़े हो रहा था। वह मन ही मन कह रहा था—'बच्चों, तुम्हारे लिये, यह बाप क्या-क्या लाया है यह ऊपर वाला ही जानता है ।"

उसने आकाश को निहारा और एक ठण्डी साँस ली। बच्चे कभी-कभी प्रौढ़ों से भी अधिक समझदारी से काम लेते हैं। अपनी आशाओं पर पानी फिरता देख, वे पिता के क्रोधभाजन बनने से बचने के लिये, चुपके से फिर बाहर खिसक गये।

तभी एक तरल तीक्ष्ण ध्वनि ने रमना का ध्यान भंग किया—आप कौन से मुलक में नौकरी करते हैं, जहाँ मेरी चिट्ठी तक नहीं पहुँचती ? जवाब तक नहीं मिलता।"

रमना असलियत को छिपाता हुआ भभक पड़ा "तुम औरतों को क्या खबर कि आदमी को कैसी जान जोखिम उठानी पड़ती है, तब दो जून की रोटी मिल पाती है— आज कल मनीपुर—तू क्या जाने मनीपुर— वह जादू टोनों का घर है—वहाँ एक चौकी पर तैनाती है । वहाँ हवाई जहाज से ही थोड़ा बहुत खानापीना मिल पाता है

डाकघर तो मीलों दूर तैमंगलॉग पर है। कभी कोइ लाया तो खत के दशेन हो गये—इतने में राधिका की तबियत बिगड़ी। रमना ने उसे तुरन्त संभाला और डाक्टर के लाने की मन्त्रणा की। 'डाक्टर' रधिका ने व्यंगात्मक हँसी से कहा 'आप पर पैसे हैं। यहाँ घर में पहले ही चूहे दण्ड पेल रहे हैं। बच्चों के नाम कट गये हैं, भर पेट खाने के लाले पड़े रहते हैं; मेरी हालत आप देख ही रहे हो—'

तो मायके के क्या सब मर गये हैं ?' 'कब तक भइया बहिन को करते हैं । बापू की बात अलग थी; फिर कलमुहीं मँहगायी ने सबको बेमुरब्बत बना दिया। सब की अतड़ियाँ कुल हो अल्लाह पढ़ती रहती हैं दूसरे की दाढ़ी की आग कौन बुझावे ? फिर अच्छे खासे कमाते को उन्होंने ब्याहा है । आखिर मैं पूछती हूँ कि आपकी तन्खाह जाती कहाँ है ?'

'बस आये देर नहीं हुई कि तक़रार शुरू हो गई। अनपढ़ के साथ यही तो मुश्किल है । वह चार दिवीरी की घरौंदी क्या जाने कि देश में क्या-क्या तरक्की हो रही है —'रोब गाँठते हुये रमना बोला। राधिका की दुखती नस पकड़ी गई थी। वस्तुतः वह अपनी निरक्षरता पर स्वयं खीज पड़ती थी। तुरन्त लतिका की भाँति नव गई—'मुझे आपकी मजबूरियों का अहसास है। मगर नौकरी करते कितने दिन हो गये हैं। गाँव में सभी फ़ौज में भर्ती हैं। कोई मकान बना रहा है तब कोई जेवर । आपको भी तो कुछ —'

रमना पहले तो सकते में आ गया; परन्तु फ़ौज़ी जवान होने के नाते, उसने दूसरे ही क्षण पैतरा बदला और एक किताब दिखाता हा बोला—'देखती हो इस किताब को-इसे पास बुक कहते हैं—बैंक में जो रुपपे जमा मैंने किये हैं, उन सब का इसमें ब्यौरा है'

राधिका फूली नहीं समाई; आज उसे एक गृहणी होने का सच्चा सुख मिला। वह रमना के गले से लिपट गई और अपने पति को निकम्मा समझने की प्रवृत्ति को बारम्बार धिक्कारने लगी।

इतना ही नहीं; पति के बाहर जाते ही उसने जोर से आवाज लगाई—'अरी ओ शीला'

शीला पड़ोस में रहती थी; वह पढ़ी लिखी ग्राम सेविका थी। राधिका ने उससे ही ढींग हाँकने का अच्छा मौका समझा। मनुष्य को उतना सुख धनी बनने में नहीं होता, जितना दूसरों से स्वयं को धनी सुनाने में आता हैं। वैसे भी पति की अनुपस्थिति में, शीला ही उसकी सेवा शुश्रूष्या करती थी। शीला राधिका की आवाज सुनते ही दौड़ी-दौड़ी चली आई। उसे आशंका हुई कि कहीं राधिका की तबियत तो ज्यादा खराब नहीं हो गयी।

'देखती हो शीला। यह मेरे पति का पास बुक है, मैं वैसे ही जली कटी यहाँ बैंठे कहती रहती थी। मगर वह बड़े बुद्धिमान निकले। बैंक में बचाते हैं अब'

उत्सुकतावश शीला ने वह 'पास बुक' राधिका से ले ली। किन्तु यह क्या ; वह खिलखिला कर हँस पड़ी 'क्या खूब ?'

'बहिन, हँसो नही। वह कहते थे। अभी-अभी जोड़ना शुरू किया है। बेचारों को अकेला दूर वन पर्वतों में रहना पड़ता है; कहाँ से ज्यादा जोड़ पायें'

'अरे पगली। इसमें तो बहुत चीजें जुड़ी हैं, एक मच्छर दानी, दो कम्बल, एक जोड़ा जूता—'किताब बन्द करते हुए शीला बोली 'अभी तक जेवर के ही लिए बैंक लाकर्स होते थे, लेकिन तुम्हारा बैंक तो किट का सारा सामान भी रखने लगा है'

'दूर जो हुआ। बताते थे कि कभी कभार हवाई जहाज से चीजें वहां पहुँचती है ।'

'ओफ़ । निरक्षरता के साथ यह खिल वाड़ आज पहली बार देखा।'

'इसके क्या मायने ?'

पुस्तक को राधिका के कपोलों पर थपथपाते हुए शीला ने बताया 'महारानी जी, यह पास बुक नहीं होकर तुम्हारे पति देव को सरकार से मिलने वाले सामान की पुस्तिका है।'

राधिका को स्वयं पर विश्वास नहीं हुआ। उसने शीला के सामने ही पति के सारे सामान को एक-एक करके अटैची से निकाला और पास बुक नहीं पाने पर नितान्त निराश हई । परन्तु शीला ने ढाढस बंधाया, 'सब मर्द बच्चे ऐसे होते हैं। भोली भाली बातों से अपनी पत्नियों को मोहते हैं। तभी तो तुम्हारे कहते रहने पर भी, मैं इस झमेले से दूर वह कर अविवाहित ही भली हूँ।'

शीला तो कहकर चली गई; किन्तु राधिका आत्मग्लानि से जल जल कर राख होने लगी और पति के आते ही उसने वह खरी-खोटी सुनाई कि रमना अवाक रह गया। 'आपकी पास बुक तो बहुत बढ़िया है। उसमें रुपयों के स्थान पर किट का सामान—'

'अरर । गलती से यह कौन किताब चली आयो।'

'आप की साफ़गोयी, अर्द्धांगिनी को धोखा देने का साहस और बचत की योजना सब सराहनीय है। ऐ जनाब, अब आप मुझे और ज्यादा बेवकूफ़ नहीं बना सकते। दूसरी पुस्तक में भी क्या लिखा होगा— दस बोतल शराब—आधा किलो गाँजा— सौ रुपये श्याम के देने, दो सौ राम के। अरे पाप को भगवान के न्यायालय का भी डर नहीं।'

रमना के काटो, तो खून नहीं था। उधर राधिका की जिह्वा पर सरस्वती बैठ गई थी। वाच्यावाच्य सब कहे जा रही थी 'जो सम्भले होते हैं, उनकी सन्तान बिगड़ जाती है। पर जिसके बड़े बिछाये

खाट, उनका घर है बारहवाट। बच्चे आवारा, औरत भिखारिन, खुद जुआरी, शराबी, कवाबी—

'बस रहने दे, रहने दे, तूने मेरी आँखें खोल दी, राधिया' अनुतप्त रमना ने कहा।

'पांते देव जुआ ऑखों वालों को भी अन्धा करता है। युधिष्ठिर को अन्धे के पुत्रों ने जुए में अन्धा किया। नल का राजपाट खुआ। सभी सुखशान्ति छिनी'

रमना अत्यन्त लज्जित था, 'तूने मुझे सच्चा रास्ता दिखाया है। तूने वह काम किया है जो तुलसीदास और कालीदास की पत्नियों ने किया। आज से मैं प्रण करता हूँ कि जुये की ओर मुख भी नहीं करूंगा।'

'देखो पति देव, जुआरी हमेशा कंगाल रहता है। कहावत है कि जुये से बैल भी हारे'

'तू ठीक कहती है। जुये से ग़लत आकाँक्षायें उत्पन्न होती हैं और चोरी का माल मोरी में जाता है' कहते हुये रमना ने कान पकड़े।

आज पहली तारीख है। रमना को वेतन के लिए जाना पड़ा है; वह अपने नारकीय जीवन की झाँकी देख रहा है। एक तरफ उसके कर्ज़दाता उससे हिसाब चुकाने को खड़े हैं, दूसरी तरफ रधिया की बिगड़ती बीमारी की चिट्ठी आई है। उसने उन शैतानों की ओर वह चिट्ठी फेंकी 'मेरे मेहरबान, इस चिट्ठी को पढ़ने का कष्ट करें। मैं आप की पाई पाई चुका दूँगा-किन्तु इस बार मेरी पत्नी के जीवनमरण का प्रश्न है। मुझे वहाँ कुछ भेजना—

'हा हा, कर्ज लेते वक्त, जुआ खेलते समय, यह सोचने की मति कहाँ चरने चली गई थी ? हमने तुम्हारे घर के चलाने का कोई ठेका नहीं ले रखा है। जुआरी शराबी का क्या विश्वास ? अपनी जान बचाने को कितने ऐसे झूठे खत लिखवाकर मँगवाते हैं' कहते हुए ऋणदाता रमना का सारा वेतन छीनने को तैयार थे।

बेचारा रमना पैसों का हारा ही नहीं, सर्व प्रकार से हारा खड़ा था। बेबसी में उसके नेत्रों से गंगा जमुना वह रही थी। एक हाथ में उसकी पत्नी की चिट्ठी बिलख रही थी, दूसरे हाथ में वेतन ठंडा पड़ा था, जिस पर नरगृद्धों की लोलुप दृष्टियाँ निष्पलक निहार रही थीं। आज उसका हृदय अपनी भूल पर सिर धुन रहा था

जवानों के स्थानान्तरण-नियम

महा निदेशक, के० रि० पु० बल ने अराजपत्रित कार्यकारी जवानों के ट्राँसफर (स्थानान्तरण) के विषय में नये नियम बनाये हैं। इनके अनुसार—

(I) एक रेंज के अन्दर, जवानों का स्थानान्तरण रेंज डी० आई० जी० (पुलिस उपमहानिरीक्षक) के आदेश से और एक सेक्टर के भीतर, सेक्टर महानिरीक्षक के आदेश से होगा।

(II) एक सेक्टर से दूसरे सेक्टर में, स्थानान्तरण महानिदेशालय द्वारा होगा।

(III) नये दीक्षा पाये हुये रंगरूटों को किसी ड्यूटी बटालियन में चार वर्ष सेवा करने के उपरान्त ही, स्थिर यूनिट में नियुक्त किया जायेगा। इसी प्रकार, सीधे नियुक्त अधीनस्थ अधिकारियों और अवर अधिकारियों को किसी स्थिर यूनिट में स्थानान्तरण

से पहले, किसी डयूटी बटालियन में तीन वर्ष सेवा करनी होगी।

(IV) परस्पर स्थानान्तरण और एक बटालियन से दूसरी बटालियन को स्थानान्तरण को निरुत्साहित किया जायेगा।

(V) किसी स्थिर यूनिट में सेवाकाल साधारणतया चार वर्ष होगा। इस सेवाकाल के पश्चात् जवान को अपनी मूल यूनिट में लौटा दिया जायेगा। यदि किन्हीं कारणों से उसको अपनी मूल यूनिट में नहीं भेजा जा सकेगा, तब किसी अन्य बटालियन में उसका पद-स्थापन हो सकेगा। परन्तु किसी भी प्रकार, उसे फिर किसी अन्य स्थिर यूनिट में निरत नहीं किया जायेगा।

(VI) यथा सम्भव, शिक्षा-सत्र के बीच में, स्थानान्तरण नहीं किये जायेंगे।

विज्ञान के चढ़ते चरण

जापान के वैज्ञानिकों ने काली खाँसी के रोगाणु से मधुमेह (डाइविटीज़) की सब से अधिक प्रभावकारी दवा बनाई है। इसके कोई दुष्परिणाम भी नहीं होते। काली खाँसी के रोगाणुओं से एक ऐसा प्रोटीन खोज निकाला है, जो यकृत को इन्सूलिन बनाने में मदद देता है।

वैज्ञानिकों ने मक्का से इथनोल बनाकर उसे वाहनों के ईंधन रूप में सफलतापूर्वक काम में लाया है। इससे विश्वव्यापी तेल संकट कम होगा। यही नहीं, इथनोल से बिजली भी बनाई गई है।

छाती में एक लम्बी नलिका होती है, जिसमें शरीर के सभी अंगों की लसीका बह कर आती है। यह नलिका निरन्तर सिकुड़ते और फैलने वाले वाला सक्रिय अंग है, जो उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना हृदय है; **तभी तो इसे मनुष्य का दूसरा हृदय कहते** हैं। यह हृदय पाँच-छै लिटर श्वेत रक्त शरीर में भेजता है। इसकी कमी या जयादती का पता लगाने पर बीमारी मालूम की जा सकती है।

तनाव ग्रस्त व्यक्तियों के लिए अमरीका में एक नई गोली एल-ट्राप्टोफान निकली है, जिससे तनाव, चिन्ता व निद्रा से छुटकारा होता है। यह गोली पूर्णतः प्राकृतिक पदार्थ है और कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है।

अमरीकी खाद्य एवं औषध प्रशासन का कहना है कि कुछ सौन्दर्य प्रसाधनों में कैंसर पैदा करने वाले यौगिक पदार्थ नाइट्रोसेमीन्स मिले होते हैं।

पहेलियाँ

अन्दर मेरे खून है,

फूला ज्यों फुटबाल।

खायें मुझ को चाव से,

बकरी बूढ़े-बाल ॥1॥
बिना जान की यक में नारी।
रखूँ साड़ियाँ तीयल मारी।
कोट-पैंट को मेरे हैंगर।
रखते मुझ में सब ज़र-ज़ेवर ॥2॥
तीन वर्ण से ढकूँ वसन।
मध्य कटे तो बनता बन।
अन्त छटे तो होऊँ बरगद।
आदि कटे तो बोझा बेहद ॥3॥
चील बनी भौंरा सी कारी।
माथे पर लागूँ मैं प्यारी।
जो कोई मेरे अर्थ को खोले।
कुत्ते की बोली वह बोले ॥4॥

उत्तर : 1. तरबूज 2. अलमारी 3. बटन 4. भौंह।

पुत्र : पिता जी, नदी के पास साइन बोर्ड पर लिखा है—जब पानी इस बोर्ड से ऊपर बहे, तो यहाँ से पार करना कठिन है।

पिता : पर ऐसी स्थिति में साइन बोर्ड की चेतावनी पार करने वाला जानेगा कैसे ?

शिक्षानिधि

दिनांक 1 जनवरी 1979 से के०रि०पु० बल में **'के०रि०पु० बल का शिक्षानिधि'** नाम की एक नयी योजना प्रारंभ हुई है। चाहे राजपत्रित हो या लिपिक वर्ग के, अस्थायी या स्थायी, अथवा दूसरे संगठनों से डेपूटेशन (प्रतिनियुक्ति) पर इस बल में आये हुये सेवी हों, बल के सभी लोग इसके सदस्य होंगे। इस निधि के चलाने के पीछे उद्देश्य यह है कि बल के सदस्यों के आश्रितों को शिक्षा तथा छात्रावास की सुविधायें मिलें।

एक सामान्य समिति का गठन हुआ है, जिसमें महानिदेशक और उपनिदेशक (प्रशासन) क्रमशः पदेन अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष होंगे। महानिदेशालय तथा दिल्ली में स्थिर यूनिटों के हर पद से प्रतिनिधि इस केन्द्रीय समिति में लिये जायेंगे।

साधारणतया, डी. आइ. जी. के पद से ऊपर वाले सब अफसरों के आश्रितों को इस निधि का लाभ नहीं मिलेगा। अर्हता-छात्रवृत्ति उन आश्रितों को दी जायेगी, जो उच्चतर माध्यमिक या उसके बराबर परीक्षा में 60% अंक पायेंगे। यदि विद्यार्थी छात्रावासवासी हुआ, तब अतिरिक्त व्यय सहन के लिये अधिक राशि दी जायेगी।

योग्यता-सह-आवश्यकता छात्रवृत्तियाँ उन आश्रितों को दी जायेंगी, जो उच्चतर माध्यमिक या उसके समान वाली परीक्षा में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होंगे तथा केन्द्रीय समिति की दृष्टि में, मातापिता की आर्थिक स्थिति देखते हुये, उन्हें आर्थिक साहाय्य की आवश्यकता है।

किसी सरकारी संस्थान में व्यावसायिक प्रशिक्षण में बल के सदस्य के आश्रित छात्र द्वारा दिये गये शिक्षा-शुल्क की उसे पूर्ति कर दी जायगी, जब वह शिक्षा-शुल्क-प्रतिशोधन की योजना में आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ होगा।

यदि बल का कोई सदस्य सेवारत प्राण गवाँ बैठेगा, तब उसकी विधवा या आश्रित को शिक्षावृत्ति दी जायेगी।

केन्द्रीय समिति की अनुमति से स्थापित नर्सरी-स्कूलों (शिशु-शालायें) को चलाने में यह निधि मदद करेगा।

ग्रुप केन्द्रों, प्रशिक्षण केन्द्रों या कहीं अन्यत्र स्थापित छात्रावास भी 11 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के बालकों के लिये इस निधि से चलाया जायेगा।

दो उपनिदेशकों को भावभीनी विदाई



दिनांक 16 मार्च 1979 को, महानिदेशालय के० रि० पु० बल के कर्मचारीवर्ग ने श्री जे० एफ० रिवीरो, उपनिदेशक (प्रशासन) और कर्नल पी० के० जैन, उपनिदेशक (निर्माण) को भावनीनी विदाई दी।

श्री आर० एन० अग्रवाल (प्रशासन अधिकारी) और श्री एस० के० गर्ग (अवर लिपिक) ने इन दोनों अफसरों की कर्त्तव्यनिष्ठा तथा उदारता की सराहना की।

श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक ने कहा कि इस बल में आये हुए उन्हें कठिनता से 7 मास हुये हैं; किन्तु इतनी थोड़ी अवधि में, इन दोनों उपनिदेशकों की योग्यता का पता उन्हें लग गया; वे कभी नहीं चाहते थे कि इनमें से कोई भी इस बल को छोड़े; परन्तु उनके वश के बाहर की स्थितियों के कारण, ऐसा हो रहा है। उन्होंने इन दोनों अफसरों को शुभकामनायें देते हुए कहा कि ऐसे उत्तम अफसर बिरले ही मिलते हैं।

श्री जे० एम० कुरैशी, उपनिदेशक (प्रशासन) ने भी इन दोनों निवर्तमान अधिकारियों की योग्यता की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सर्वश्री रिवीरो और जैन ने इस **विदाई**-समारोह के प्रति आभार प्रकट किया।

कुमारमंगलम टूर्नामेंट में हमारी विजय

जबलपुर में हुये कुमारमंगलम फुटबाल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल ने अपने खेल का उत्तम प्रदर्शन किया तथा फाइनल में राजस्थान पुलिस को 3-1 से हरा कर सिरमौर जीता।

मोटर दुर्घटनाओं पर चिन्ता

कमांडैंटों को लिखे अपने पत्र में, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने मोटर-दुर्घटनाओं की बढ़ोत्तरी पर चिन्ता अभिव्यक्त की है। फरवरी 1979 में यह संख्या 7 और 15 मार्च 1979 तक 4 हो चुकी है। 1978 में 84 दुर्घटनायें हुयीं, जिनमें 133 के० रि० पु० बल के जवान घायल हुए, 7 नागरिक मरे और 29 जख्मी हुये।

महानिदेशक महोदय ने कमांडेन्टों से इनके कारणों की पूरी छानबीन तथा इनके दूर करने के ठोस उपायों को प्रयुक्त करने का आग्रह किया है।

आत्म संतुष्टि को कोई स्थान नहीं

'यदि आप परिश्रम करेंगे, तब मैं पुरस्कृत करने से पीछे नहीं रहूँगा'

—आर० सी० गोपाल

दिनाँक 26 मार्च 1979 को, 28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लेने वाले एथ्लिटों और खिलाड़ियों का स्वागत समारोह का और बड़ा खाने का आयोजन किया गया। महानिदेशालय के वरिष्ठ अधिकारियों तथा दिल्ली स्थित बटालियनों के कमाँडैंटों ने उसमें भाग लिया।

उस अवसर पर बोलते हुये, ब्रिगेडियर पी० एन० खन्दूरी, उपनिदेशक (प्रशिक्षण) ने पिछले एक वर्ष में हुये खेलों और दौड़-कूदों में इस बल की सफलताओं का उल्लेख किया। खेलों और दौड़-कूदों में प्रशिक्षण उपकरणों के दिये जाने के महत्व पर उन्होंने प्रकाश डाला तथा यह बताया कि के० रि० पु० बल विभिन्न खेलों में धीरे-धीरे उन्नति कर रहा है। उन्होंने उन खिलाड़ियों के नाम बताये, जिन्होंने विविध प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के हेतु पुरस्कार तथा पदोन्नति पायी है।

श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने स्मरण किया कि अ० भा० पुलिस खेलों में के० रि० पु० बल की प्रारंभिक पराजयों से उनके हृदय पर कैसी ठेसें पहुँचीं; किन्तु अन्त में, एथ्लीटों की टीम को ट्राफी मिलने पर उन्हें सन्तोष हुआ। उन्होंने आग्रह किया कि के० रि० पु० बल द्वारा अपने खिलाड़ियों को अपेक्षाकृत अधिक टूर्नामेंटों का अनुभव दिलाना चाहिये; तभी कुछ अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है। हम यथा सम्भव नयी प्रतिभा वाले खिलाड़ियों को भर्ती कर रहे हैं; और फुटबाल के लिये एक प्रशिक्षक को डेपूटेशन पर ले लिया है। उन्होंने के० रि० पु० बल के शिक्षकों (कोचों) की इन शब्दों में प्रशंसा की— 'उन्होंने कठोर परिश्रम किया। इसे हम दुर्भाग्य ही कहेंगे जो कुछ टीमें लखनऊ में हार गयीं।'

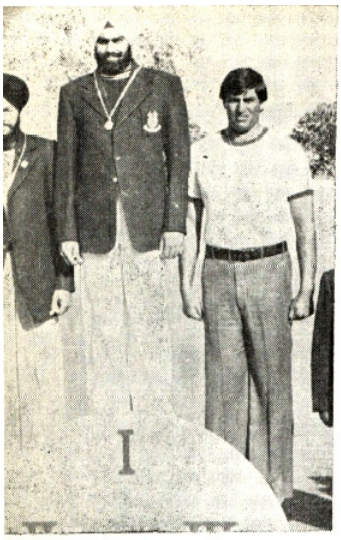
उन्होंने खिलाड़ियों को सन्तुष्ट या अतीव आत्मविश्वासी नहीं होने का परामर्श दिया। ‘जब आप प्रगति कर रहे है, तब और भी तो वैसा ही कर रहे हैं—यह सदा ध्यान में रखना चाहिये।’

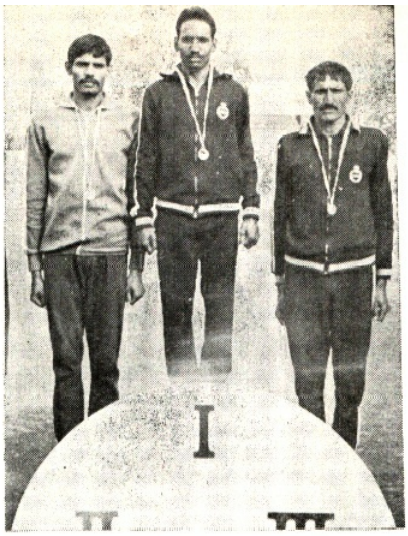
उन्होंने खिलाड़ियों से अगले वर्ष सभी खेलों के जीतने का आग्रह किया। उन्होंने कहा—**“यदि आप परिश्रम करेंगे, तब प्रापको पुरस्कृत करने में मैं कभी पीछे नहीं रहूंगा।”**

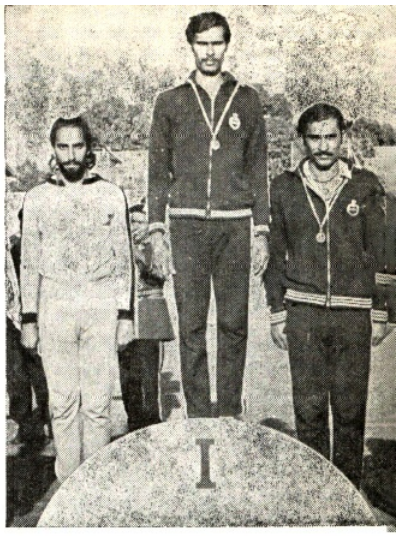
गर्वीले क्षण

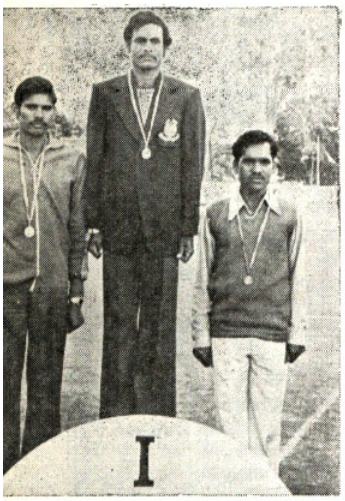
28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों को दौड़कूद प्रतियोगिता में विजय सोपानों पर बायीं से दायीं ओर (ऊपर से)

1. घन फेंक, 2. 1,500 मी० दौड़ 3. त्रिकूद, 4. ऊँची कूद, 5. 5,000 मी० दौड़, 6. चौड़ी कूद, 7. मैरॅथॅन दौड़, 8. 800 मी० दौड़

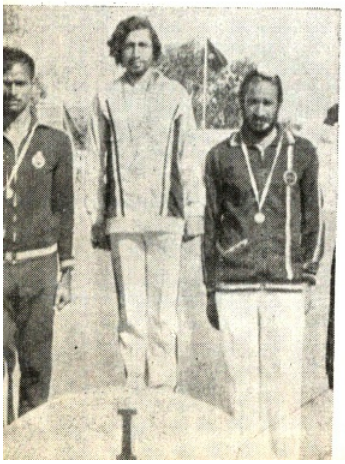


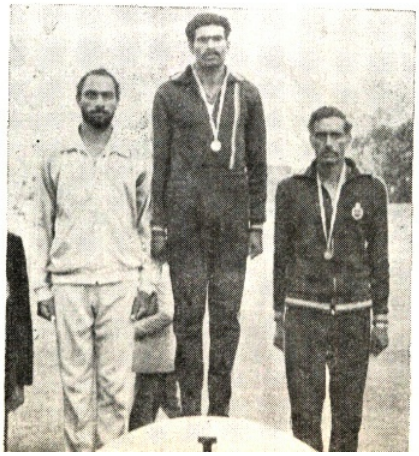














राज० नं० 2562/74



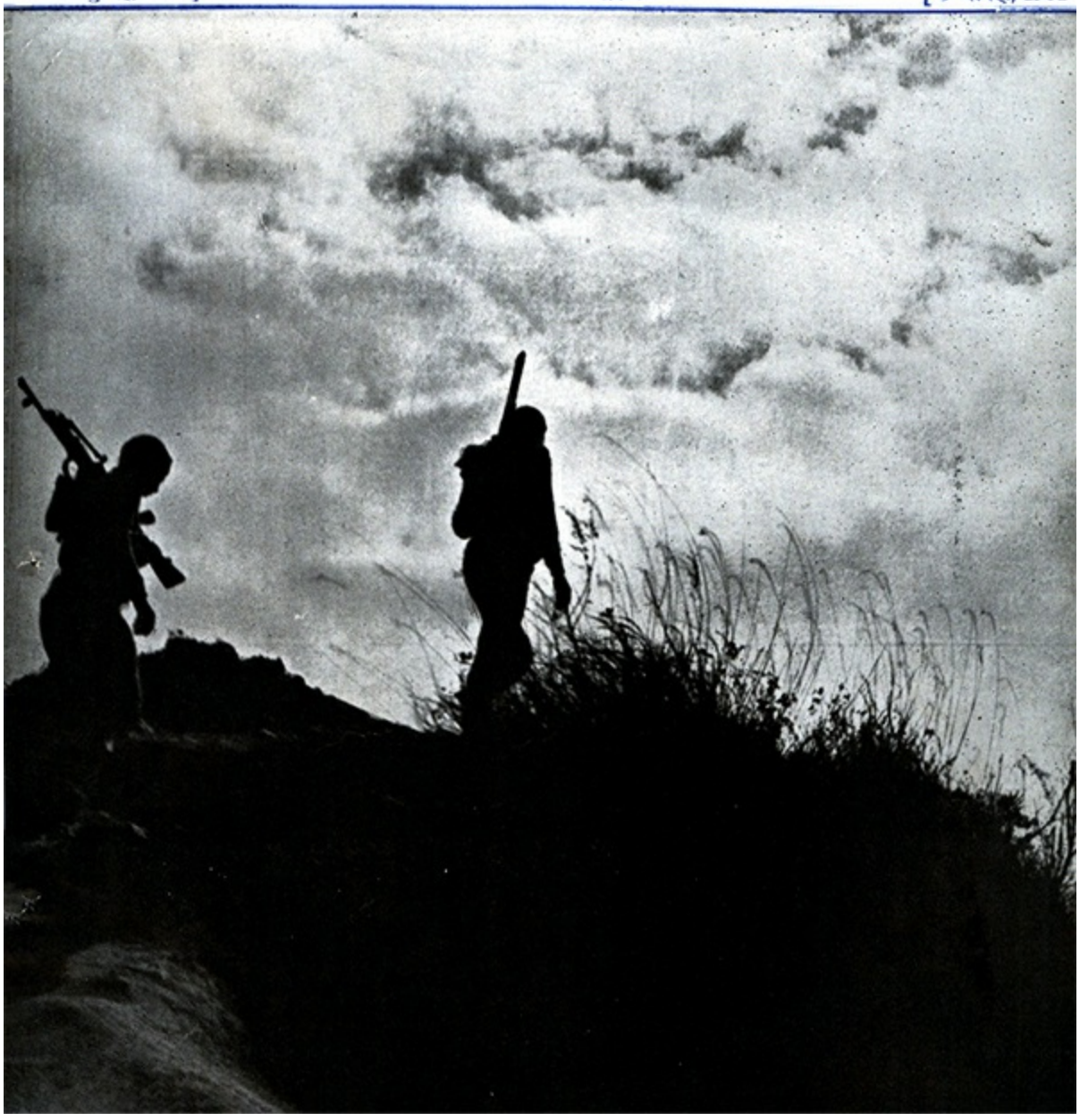
ानगर में 12 बटालियन के० रि० पु० बल द्वारा दी गई गृह-सुरक्षा के कमांडेंट तथा अन्य सदस्यों के साथ राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी

★ क्रै प ल र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 जुलाई, 1979] खण्ड VIII अंक 3 [9 श्रावण, 1901




Boost

★ क्रैपलर ★

द्वैमासिक

[हिन्दी संस्करण

खण्ड VIII

अंक 3

31 जुलाई, 1979]

[9 श्रावरण, 1901



मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी]** [छाया चित्रकार : **एस० के खन्ना**
हिन्दी सम्पादक

जे० एस० शर्मा



ऊपर तैराक हे० का० सोमशेखरन।

मुख्य पृष्ठ : अरुणाचल में के० रि० पु० बल के सजग प्रहरी।
सम्मुख पृष्ठ : गोतेखोर स० इ० ढाका सिंह
मुद्रक- सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।
प्रकाशन- महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।
सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110072 ।

क्रम संख्या

विषय

I. गौरवगाथा : प्रशंसा व पुरस्कार तथा के० रि० पु० बल का पुनर्गठन व सेवाशर्तों में सुधार

II. रिपोर्ताज :

(i) भयंकर अग्नि से संघर्ष

(ii) चीनी मिल में अग्निशमन

(iii) असम-नागालैंड-सीमा पर महानिदेशक की यात्रा

(iv) मिज़ोरम निर्वांचन में हमारे बल का सहयोग

(v) केन्द्रीय विद्यालय झड़ौदा कलां का वार्षिकोत्सव

III. लेख :

1. अग्निकांड के अनुचिह्न–ले० श्री एच० एस० सेठी, जनसम्पर्क अधिकारी
2. शहरी आतंकवाद, ले०–श्री एफ० वी० अरुल
3. उपद्रव की जड़, ले०–श्री पी० के० मेनन
4. चिरस्मरणीय क्षण, ले०-स० इ० एम. पी. बड़थ्वाल, 2 बटा०
5. असम वन की दुःखद घटना, ले०- श्री पी० के० मेनन
6. सनकों के कीर्तिमानों के स्थापक, ले०-श्री एम० पी० नैथानियल

IV. कहानी : सच्चा प्रेम, ले०-डीवाई० एस० पी० आई. एस. डागर

V. कविता : देश प्रेम, र०–ना० गुरदयाल सिंह, ग्रुप केन्द्र दिल्ली

VII. क्रीड़ा-क्षेत्र :

VI. स्वास्थ्य-सन्देश : स्नान और स्वास्थ्य, ले०-श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

IX. विविध :

(i) बल का रक्तदान

(ii) अम्पतालों में हमें रुधिरादान की सुविधा

(iii) सूक्तिसुधा

(iv) यह भी खूब रही

(v) पहोलेयॉ

महानिदेशक द्वारा सामान्य-स्थिति को लौटाने की अपील

मुझे प्रसन्नता है कि के० रि० पु० बल में फिर सामान्य स्थिति आ गई है और जवान अपनी स्वाभाविक निष्ठा तथा धैर्य से सेवाभार उठा रहे हैं। दुर्भाग्य से, एक-दो स्थानों पर कुछ मतफिरे तत्त्व ऐसी कार्रवाइयों में अब भी लगे हैं, जो के० रि० पु० बल के एक जवान होने के नाते शोभा नहीं देता है।

यद्यपि ऐसे लोगों की संख्या नगण्य है। फिर भी सारे बल को कलंकित करने के लिए तो काफ़ी है। मैं एक बार सबकी बुद्धिमत्ता से अनुरोध करता हूं कि वे अनुशासन तथा व्यवस्था के पथ पर चलते रहें। चाहे शिकायतें जायज़ हों या नहीं, कोई भी सरकार सशस्त्र बल में अनुशासन हीनता गवारा नहीं कर सकती।

सेवा तथा भक्ति की सदा हमारी परम्परा रही है और इसी परम्परा को अपना कर ही हम जनता तथा सरकार का दिल जीत सकते हैं। मैंने आपकी समस्यायें सरकार के सामने रखने में कोई कसर उठा नहीं रखी है और सरकार आपकी सभी कठिनाइयों के प्रति जागरूक तथा सम्वेदनशील है।

आपको यह समझना होगा कि जब तक सामान्य स्थिति नहीं लौटती है, हमें रियायतें नहीं मिल सकतीं। मुझे विश्वास है कि वर्तमान संकट से उभरने के लिए हम सबको एकजुट होकर काम करना होगा।

<u>गौरव-गाथा :</u>

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का पुनर्गठन

केन्द्र सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हेड कांस्टेबलों के 1044 अतिरिक्त पदों तथा नायकों के 1,044 अतिरिक्त पदों की तत्काल स्वीकृत दी है। फलस्वरूप, 2088 कांस्टेबलों को लांस नायक, इतने ही लांस नायकों को नायक तथा 1,044 नायकों को हेड कांस्टेबल बनाया जायेगा। उससे कार्यशक्ति में सुधार लाने के साथ-

साथ, लांस नायकों की संभावनाओं में वृद्धि होगी।

बल की सेवाशर्तों व भत्तों में सुधार

भारत सरकार ने 20 जुलाई 79 को के० रि० पु० बल की सेवा शर्तों में सुधार और भत्तों में कई प्रकार की वृद्धि की घोषणा की है।

जिस क्षेत्र में इसे राशन भत्ते के रूप में 78 रु० मिलते थे, वहाँ 100 रु० और जहाँ 48 रु० मिलते थे, वहाँ 78 रु० मिलेंगे। साथ में, जहाँ राशन की मद में कोई सहायता अब तक नहीं दी जाती थी, वहाँ भी 50 रु० मासिक मिलेंगे।

जवानों की वार्षिक छट्टी 45 दिनों से बढ़ा कर 60 दिन कर दी गई।

परिवार रखने के लिए मकान भाड़ा 14% जवानों से बढ़ा कर 25% जवानों को कर दिया गया।

परिवार में शादी, गम्भीर रोग या मृत्यु के कारण घर जाने लिए जवानों को एक तरफ का रेलभाड़ा निःशुल्क मिलेगा। रेलवे स्टेशन से जिनके मकान 50 कि० मी० से दूर होंगे, उन्हें पूरा बस भाड़ा दिया जायेगा। परिवार कल्याण केन्द्रों में जवानों के परिवारों को लाभ देने के लिए, सिलाई भाड़े में भी वृद्धि की गई है।

लांस नायकों को 5 रु० प्रतिमास विशेष वेतन दिया जायेगा।

हमारे जवानों द्वारा अनेकों की प्रारगरक्षा

दिनांक 2 अप्रेल 79 के तड़के, जब 4 बटालियन की 'ई' कम्पनी की एक प्लाटून रात्रि की प्रहर ड्यूटी करके किद्देरपुर घाट से लौट रही थी, तब मार्ग में उसने एक बस और तेल ट्रक को गंभीर दुर्घनाग्रस्त पाया। बस एक ओर को गिर गई थी और यात्री फँस गये थे। तुरन्त हमारे जवानों ने खिड़की के शीशे तोड़ डाले और यात्रियों को निकाल लिया, और घायल यात्रियों को अस्पताल भेजा। एक व्यक्ति तो घटना-स्थल पर ही मर गया।

यद्यपि स० इ० साही ने पुलिस और दमकलों को सूचना दे दी, किन्तु वह सहायता तब आई, जब हमारे जवान काम पूरा कर चुके थे और अनेकों के जीवन बचा लिये गये थे।

श्री एस. आई. अहमद, पुलिस उपायुक्त, कलकत्ता बन्दर मंडल ने के० रि० पु० बल के इस उत्तम कार्य की बड़ी सराहना की।

हमारी खड्ग टुकड़ी पुरस्कृत

लखनऊ में 28वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों के समय एक सांस्कृतिक समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें सभी पुलिस संगठनों ने भाग लिया। के०रि०पु० बल की खड्गम टुकड़ी ने दक्षिण भारतीय नृत्य का सुन्दर प्रदर्शन किया। उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक तथा केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के महानिदेशक ने इस उत्तम नृत्य

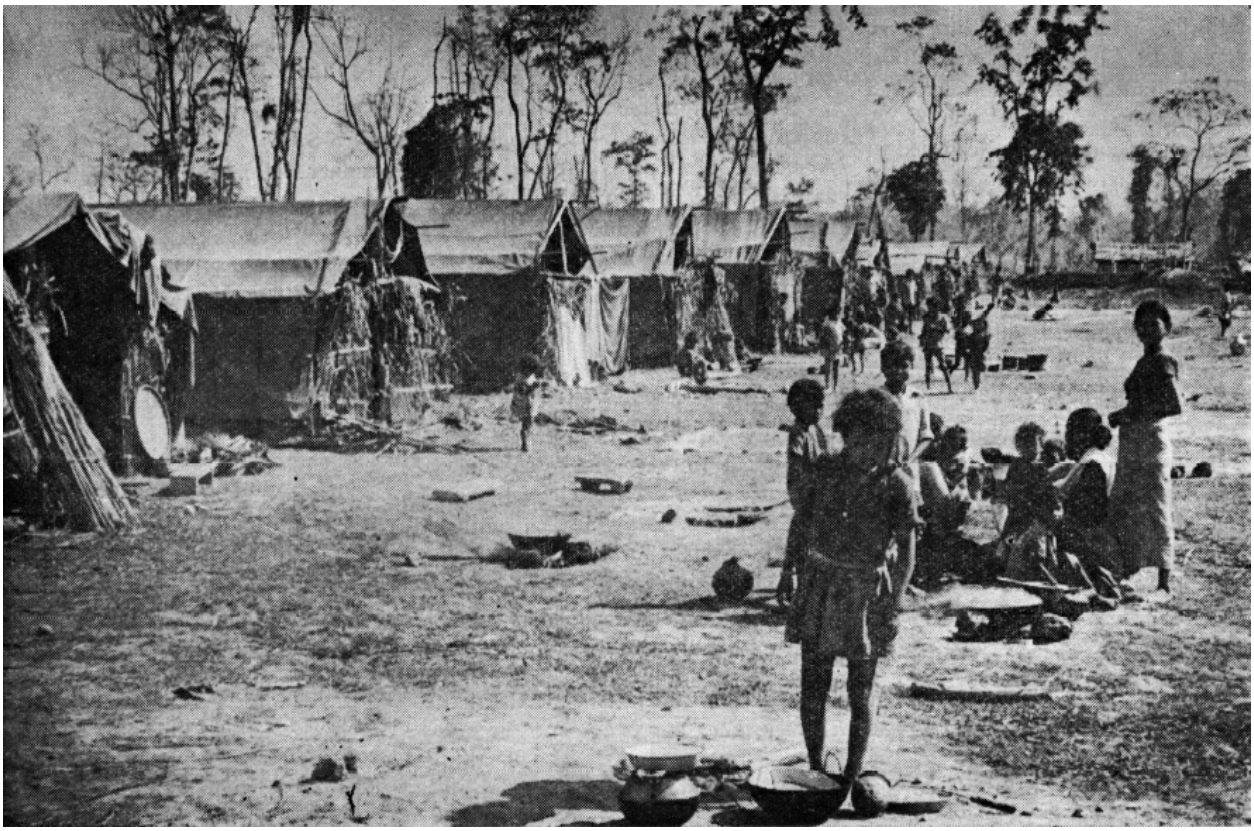
के लिये, 500-500 रु० दिये।

53 बटालियन पुरस्कृत

श्री वाई० सुइया, मणिपुर के मुख्य मंत्री 16 मार्च 79 को 53 बटालियन के विदा के समय पधारे, जब इस बटालियन को आगामी अप्रेल में दुर्गापुर जाना था। उन्होंने शस्त्र भेट करने वाली गारद को 100 रु० प्रदान किये। वह उसके चुस्त प्रदर्शन और ड्रिल से प्रभावित हुये। चार वर्षों से अधिक सराहनीय सेवा के लिये, उन्होंने बटालिन को धन्यवाद दिया तथा सभी जावनों के कल्याण के लिये 800 रु० का दान भी दिया।

2 व 18 बटालियन पुरस्कृत

असम-नागालैंड-सीमा पर सिवसागर ज़िले के दुर्गम क्षेत्रों में कठिन तथा दुस्साध्य सेवा के लिये, पी० पी० सी० दास, पुलिस महानिरीक्षक असम ने 2 तथा 18 बटालियनों को 500-500 रु० प्रदान किये।



अपने ही ग्राम में शरणार्थी

अग्निकाण्ड के अनुचिह्न

ले-श्री एच० एस० सेठी

नागालैंड के तड़कभड़क वाले मैदान स्थिति व्यापारिक नगर, दीमापुर में मैं तब था। इस पहाड़ी-राज्य में शायद दीमापुर ही कहलाने योग्य नगर है। शेष नागालैंड और मणिपुर के लिए यह द्वार मार्ग है। 15 जनवरी 79 को, असम के ग्रामों पर अपने आक्रमण के बाद, सेमा नागाओं द्वारा लगाई गई आग का अनुचिह्न भी मुझे वह लगा। मैंने एक जीप ली और गौहाटी के राजपथ पर चल पड़ा।

पाँच मिनट में, मैं शहर से बाहर असम क्षेत्र में आगया। यहाँ बिल्कुल भिन्न ही दृश्य था। धुस्स की दायीं ओर असम में आटे की चक्की थी; आगे सड़क के किनारे लहलहाते धानों और ऊँचे-ऊँचे गन्नों के खेत तथा बाँसों के निकुंज और जंगल बारी-बारी से स्थित थे तथा एक सीमेंट की फैक्टरी थी। कोलतार की सड़क चौड़ाई जा रही थी और कितनी ही पुलियों को बनाया जा रहा था। बोकजन तक 18 कि० मी० वाले मार्ग से असम-क्षेत्र की प्रगति तथा समृद्धि झलक रही थी।

यहाँ तक, उपद्रव का कोई चिह्न नहीं दीखता था। बोकजन पर आकर परिवर्तन नज़र आया। के० रि० पु० बल के जवान मार्ग के किनारे एक चौकी बना रहे थे। मुझे मालूम हुआ कि नागा प्रधान ग्रामों में, नागालैंड सशस्त्र पुलिस की जगह के० रि० पु० बल लगाया जा रहा है। इन्हें आरक्षित वनों में भी बन सम्पत्ति बचाने तथा घुसपैठ रोकने के लिए निरत किया गया था।

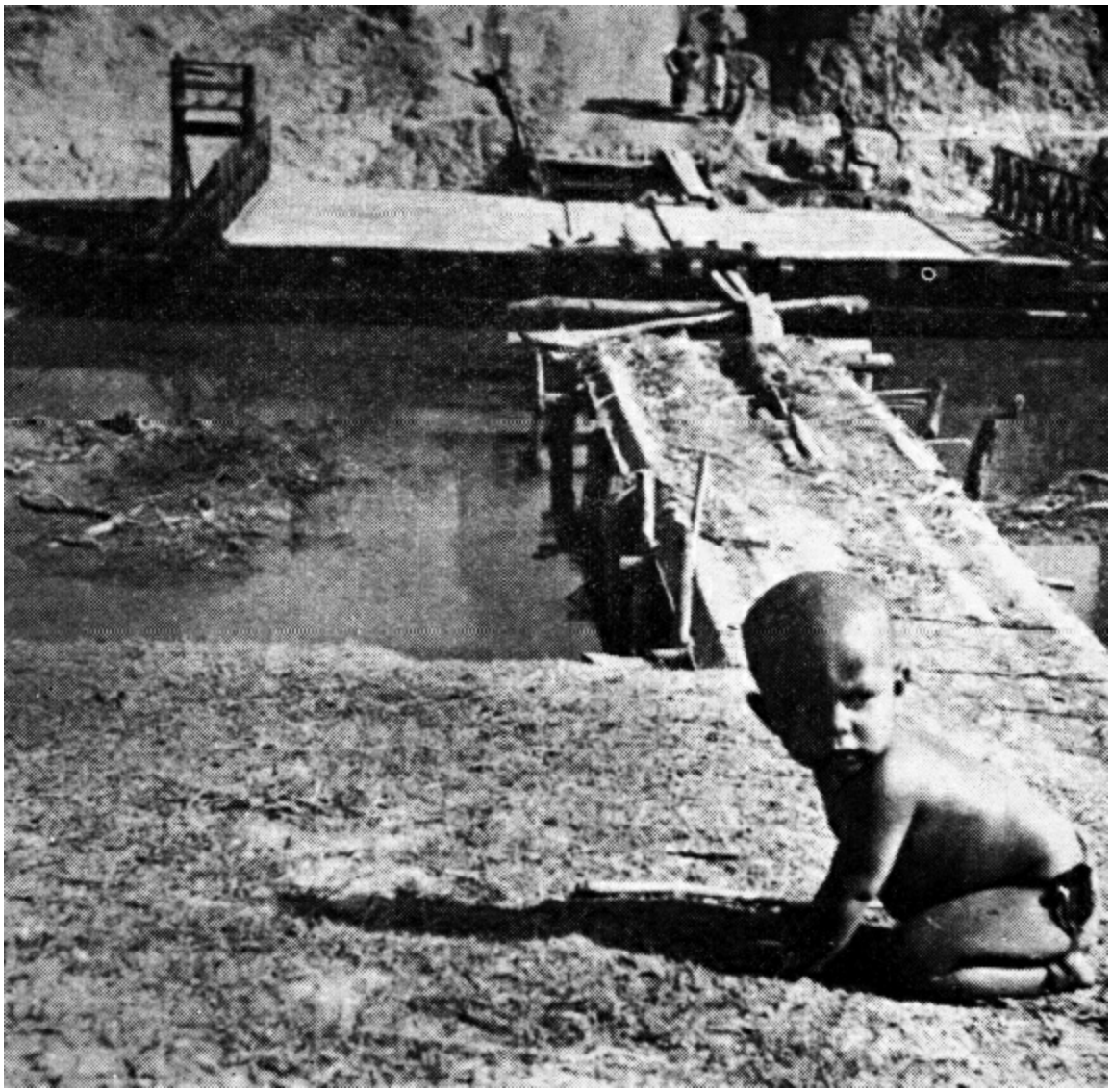
यह केवल अग्निकांड का अनुचिह्न था; इस के पीछे पीछे मैं राजपथ की दायीं ओर चल पड़ा। रेल पटरी तथा बाज़ार को मैंने पार किया। धनश्री नदी से कोई 1 कि० मी० दूर नाओजन नामक एक स्थान है। यहीं पुल के पास एक नन्हा मुन्ना खेल रहा था, जहाँ सशस्त्र नागानों ने अनेक वेगुनाह निवासियों की निर्मम हत्या की थी। वहीं बीचोंबीच स्थिति असम पुलिस चौकी के जवानों ने उनकी प्राण रक्षा के लिए कुछ नहीं किया। फिर उनकी जगह नये अधिकारी और जवान लगाये गये। ऐसा प्रतीत पड़ा कि नागाओं ने असम-जवानों को उल्लू बना दिया। धावे से पूर्व, असम पुलिस को यह जानकारी दी गई कि खुद चौकी पर ही हमला होगा। अत: पुलिस जनों ने चौकी नहीं छोड़ी।

सचमुच में, बड़ी खून खच्चरी हुई। असम रायफल्स की भी एक दूसरी चौकी हत्याकांड के बाद नाओजन पर क़ायम की गई और एक मास के भीतर ही, उसके जवानों ने तीन सड़ी गली लाशें पायीं।

कुछ कि० मी० आगे चलकर, मैं नाउकुटीजन के ग्राम में आया, जो बिलकुल स्वाहः कर दिया था। काले जले शहतीर उस सर्वनाश की गवाही दे रहे थे। एक वृद्धा ने रुलासु होकर कहा--**'हम तो अपने ग्राम में शरणार्थी हो गये।'**

सरकार ने कुछ झोपाड़ियाँ उनके लिए बनायी थीं। उनमें सुरक्षा का कुछ भाव भरने के लिए, असम पुलिस और असम रायफल्स हरेक की अपनी-अपनी चौकी के बीच एक शरणार्थी-शिविर लगाया गया था। इसकी उन्हें बड़ी ज़रूरत थी। उन्हें पता था कि नाओजन से कठिनतापूर्वक 4 कि० मी० दूर जनवरी में नागाओं ने पुलिस उपमहानिरीक्षक बी० एस० बब्बर तथा असम पुलिस की टुकड़ी पर घात लगाने की जुर्रत की थी। उस घात में एक हल्की मशीन गन का प्रयोग हुआ था। बब्बर के जवानों ने गोलावारी से जवाब दिया था। सौभाग्य से, किसी ने प्राण नहीं गँवाये।

सरकार ने जनता में सुरक्षा के भाव भरने के लिए कितने ही उपाय किये थे; जिनमें थे-असम के दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्र में असम रायफल्स और के० रि० पुलिस बल की दो-दो बटालियन निरत करना; नागालैंड की सीमा के साथ-साथ चौकियां तथा बाहरी चौकियाँ स्थापित करना; दिन में कारग़र पहरा लगाना; रात्रि में रक्षा टुकड़ी निरत करना तथा ग्रामीणों और लोक निर्माण विभाग तथा वन विभाग के कर्मचारियों की रक्षा करना।



नृशंस हत्याकांड के स्थल पर खेलता एक मासूम नन्हामुन्ना

इन उपायों से बाँछित फल मिले। नाओकुटीजन के हत्यास्थल पर मैंने शरणार्थी शिविर में युवतियों को जल-कलश ले जाते देखा, जिसके मायने थे कि जीवन की शाश्वत नदी फिर बह चली है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नागाओं द्वारा पांच जनवरी वाला आक्रमण सुयोजित था। 150 कि० मी० की पट्टी में उपद्रवी एक ही समय में क्रियाशील थे। वह तो बिजली सी तत्क्षण कार्यवाई थी; जब तक न्याय-व्यवस्था के तंत्र जगें, तब तक वे सारा काम तमाम कर चुके थे। जैसे चुपचाप आये थे, वैसे ही वे चम्पत हो गये। इसमें व्यावसायिक कुशलता का पुट था।

उन्होंने उस क्षेत्र के नेपाली तथा कछारी लोगों को ही मौत के घाट उतारा तथा वहाँ के नागाओं और ईसाई कलियों पर होशियारी से कोई क्षति नहीं होने दी। और सबसे

मुख्य तो यह बात थी, उन्होंने यह कार्यवाइ उस उपजाऊ तराइ में की थी, जिस क्षेत्र को 1925 में अन्तर्राज्यीय सीमाओं पर भारत सरकार द्वारा किये गये समझौते में असम को ग़लती से दिया हुआ वे समझते हैं। डेफ्यू, नम्बोर और रेंगमा के तीन आरक्षित वनों पर भी उनका दावा है - एक क्रुद्ध असम अधिकारी के शब्दों में "इससे असम ज़िले और शिवसागर से कम से कम आधे भाग पर उनकी गृद्ध-दृष्टि है।" इस आक्रमण का आशय यह था कि सबको पता लग जाये कि नागा लोग अपना दावा नहीं छोड़ेंगे। कौन नहीं यह मानेगा कि इस मामले पर ध्यान आकर्षित करने में नागा सफल हुये हैं। किन्तु क्या यह बात अपने प्यारे खिलौने को किसी रूठे बच्चे द्वारा तोड़ने जैसी नहीं है ?

भयंकर अग्नि से संघर्ष

वह 1 अप्रेल 1979 का रविवार था। ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट में किसी को कुछ नहीं पता था कि पटना से लगभग 10 कि० मी० दूर कन्हैयापुर ग्राम में क्या घटना घट रही थी। लगभग 100 झोपड़ियों का यह ग्राम आग की चपेट में बुरी तरह आ गया था। शाम छै बजे के कमांडैंट के कार्यालय में टेलीफोन खनखनाने लगा। वह एस० डी० ओ० ज़िला बाढ़ पटना का था, जिसमें मदद माँगी गई थी।

बस फिर क्या था? ग्रुप केन्द्र में तुरन्त कार्रवाई शुरू हुयी। जवान इकट्ठ हुये; अग्निबुझाने वाले यन्त्र तथा वाहन बीस मिनट में तैयार कर लिए गये। जब तक श्री मंजूरूल हक़ के नेतृत्व में 64 जवान पहुँचे, सारा ग्राम भस्म हो गया था; किन्तु प्रकृति ने उसके नियंत्रण में मदद की थी।

मलवे की चिनगारियाँ निकटवर्ती ग्रामों को खतरा बन गयी थीं। हमारे जवानों ने पटना से आये एक दमकल की मदद से आग बुझाना शुरू कर दिया। रात के 11 बजे, वे जैसे ही लौटने लगे तभी पटना की ओर आकाश में ऊँची-ऊँची लपटें उठती दिखाई दीं; वहाँ से लगभग 2 कि० मी० दूरी पर स्थिति ग्राम नया टोला में भयंकर आग लगी हुयी थी; तेज पवन उस आग को और भड़का रही थी। श्री मंजूरूल हक़ ने वहाँ तुरन्त पहुँच स्थिति की भीषणता देखकर, और जन शक्ति मँगाई। श्री एस० ए० मिश्र, सहायक कमांडैन्ट तथा श्री उमेशचन्द्र डी०वाई० एस० पी० के अधीन एक टुकड़ी रात्रि के डेढ़ बजे वहाँ पहुँची। गलियें काट कर, आग पर काबू पाने की कोशिश की गई तथा बाल वृद्धों, उनके पशुओं तथा सम्पत्ति को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया। हमारे जवान 2 अप्रेल को 8 बजे पूर्वाह्न तक आग बुझाने में लगे रहे। आग की लपटों में से निकाल कर एक युवती और एक बच्चे के प्राण बचाये गये। वहाँ कोई जनहानि नहीं हुई; किन्तु कन्हैयापुर ग्राम में अल वत: एक दस वर्षीय बालक जलने से प्राण गवाँ बैठा।

<u>स्वास्थ्य सन्देश:</u>

स्नान और स्वास्थ्य

ले०- श्री०जे०एस शर्मा

भारत में अनादि काल से जल-स्नान नित्य मुख्य कर्म माना जाता है। तीर्थों पर जा कर स्नान करने का अपना ही महत्व है। यही नहीं, प्रत्येक हिन्दू अपने देवी देवताओं को भी पूजनोपासना के समय सर्वप्रथम स्नान कराता है। इससे वह समझता है कि उसके इष्ट देव प्रसन्न होंगे और सुख तथा स्वास्थ्य प्रदान करेंगे। देवता प्रदान करें अथवा नहीं, किन्तु स्नान करने से मनुष्य को स्वयं स्फूति तथा स्वास्थ्य मिलता है।

इसका एक कारण भारत में जल की प्रचुरता भी हो सकती है; अन्यथा जल विहीन तिब्बत देश में लोग स्नान नहीं करते रहे हैं। अरब आदि गर्म देशों में, 'जुम्मे के जुम्मे' नहाने का ही महत्व रहा है। भारत में ही, सिन्धु गर्म प्रान्त में, सिन्धु सभ्यता काल के अवशेषों में स्नानागारों का पाया जाना भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि स्नान प्रथा यहाँ प्राचीन काल से महत्वपूर्ण रही है। यह तो रहा नैसर्गिक दृष्टिकोण; किन्तु कुछ विशेष समाज तथा व्यक्तियों की अभिरुचि विचित्र रही है। जिस योरुप के फैशन का अन्धानुकरण हम आजकल कर रहे हैं, उसमें पाँचवीं शताब्दि के अन्त तक नहाने वालों को मूर्ख पुकारा जाता था और सामाजिक बहिष्कार तक किया जाता था। ऐसे लोगों के कपड़े धोने से धोबी और उनके बाल काटने से नाई आनाकानी करते थे। स्पेन की महारानी आइसाबेला अपने जीवन में केवल दो बार नहाई थी और फ्रांस के सम्राट लुई ने तो केवल एक ही बार स्नान किया था। इसी प्रकार संत पीटर भी जीवन में एक बार ही बस नहाया था। मगर सब से आगे तो इंगलैंड का सम्राट हेनरी षष्टम् रहा, जो उम्रभर नहाया ही नहीं।

ठीक इसके विपरीत, नहाने वालों ने बड़े-बड़े कीर्तिमान स्थापित किये हैं। रोम सम्राट शार्ल मैन अपने दरबारियों के साथ बहुमूल्य हमामों में घंटों नित्य नहाया करते थे। उन्होंने दैनिक स्नान की प्रथा प्रारंभ की और अपनी प्रजा को नित्य-स्नान स्वास्थ के लिए परमावश्यक बताया तथा स्थान-स्थान पर शासन की ओर से सार्वजनिक स्नानगृह निर्माण कराये । दीर्घ स्नान का कीर्तिमान पश्चिमी जर्मनी के क्लीमेंस म्यूटर नामक एक रिक्शा चालक ने 1977 में स्थापित किया है, जो पानी की बौछार में दो सौ घंटे अविचल खड़ा रहा। वह ही निरन्तर 120 घंटे पानी से भरे टब में लेटा रहा, जो अपने में एक अन्य रिकार्ड है।

स्नान का मुख्य उद्देश्य रहा है—स्वास्थ्य तथा स्वरूपता। इससे त्वचा आदि के रोग दूर होते हैं; हृदय-सम्बन्धी रोग को लाभ पहुँचता है तथा विभिन्न अंगों में सुचारुता आती है और आती है सर्वांगीण सुन्दरता।

कुछ प्रमुख प्राकृतिक स्नान इस प्रकार हैं—

I. साधारण स्नान : गर्म या ठंडे जल से किया जाता है। इससे शरीर में स्वच्छता,

ताजगी तथा फुर्ती आती है और शरीर स्वस्थ होता है।

II. फौबारा स्नान : धारायंत्र के नीचे किया जाता है। यह रक्त का ठीक परिवहन करता है; स्वास्थ्य तथा सुन्दरता प्रदान करता है।

III. वर्षा स्नान : बरसात की बौछारों में किया जाता है। गर्मियों में घमौरी मर जाती हैं। शरीर शीतल हो जाता है और आनन्द पाता है।

IV. नदी/स्त्रोत स्नान : अत्यन्त लाभप्रद माना है। गंगा जैसी नदियों में तथा सोने के जैसी गर्म स्त्रोत में गंधक का मेल होने से त्वचा के रोग इससे दूर होते हैं; गठिया आदि वात रोगों को लाभ मिलता है तथा स्वास्थ्य सुधरता है। कार्तिक माघ आदि महीनों में तथा कुम्भों पर गंगा स्नान और सूर्य-चन्द्र ग्रहणों पर कुरुक्षेत्र आदि कुण्ड में स्नान अपना विशेष महात्म्य रखते हैं। इनसे भक्तों के मन का मैल भी धुल जाता है।

V. सूर्य स्नान : प्रातः काल ही हल्की सूर्य-किरणों के 10-15 मिनट तक सेवन से विटामिन 'डी' मिलती है; आँखों की ज्योति बढ़ती है; रक्तसंचार और पाचन कर्म ठीक होता है तथा मस्तिष्क हलका रहता है तथा त्वचा के रोग ठीक होते हैं ।

VI. चन्द्र स्नान : पलकों को बिना झपके चन्द्रमा को घंटे आध घंटे निहारते रहने से किया जाता है । इससे नेत्र-ज्योति बढ़ती है; शरीर शीतल होता है तथा मन की एकाग्रता बढ़ती है।

VII. वायु स्नान : अधिकतर ग्रीष्मकाल में प्रातःकाल शीतल, स्वच्छ तथा सुगन्धित उपवन में वस्त्र पहने या नग्न देह हरी हरी घास पर घूमने से किया जाता है । विभिन्न प्राणायाम भी इसी श्रेणी में आते हैं। इससे जठराग्नि शान्त होती है, भूख लगती है, दमा, खाँसी जैसे फेफड़ों के रोग दूर होते हैं, नेत्र खराब नहीं होते तथा मस्तिष्क हल्का तथा कुशाग्र रहता है।

VIII. वाष्प स्नान : काष्ठ या लोहे के बक्से में गर्दन बाहर रखते हुए बैठ कर नली के द्वारा भाप से शरीर को गर्मी पहुँचायी जाती है। रोगानुसार वैद्य कुछ जड़ी-बूटी की भाप देते हैं। इससे समस्त वात रोग, पक्षाघात आदि ठीक होते हैं। मोटापा, फालतू चर्बी कम होती है और शरीर हल्का, तथा स्वस्थ होता है।

IX. चिकनी मिट्टी से स्नान : त्वचा पर चिकनी मिट्टी मलने को कहते हैं। इससे त्वचा के रोग ठीक होते हैं; नसों की दुर्बलता दूर होती है, रक्त संचार संभलता है तथा शरीर शीतल होता है।

X. रगड़ा स्नान : स्वच्छ सूखे वस्त्र से शरीर के अंगों, पैरों से जंघा की तरफ और हाथों से कन्धों की तरफ रगड़ने को कहते हैं। मुख्यकर, सर्दियों में नहाने से पूर्व ऐसा करने से ठंड नहीं लगती। इससे रक्त संचार ठीक होता है।

XI. तुर्की स्नान : स्नानागारों में पूर्ण व्यक्ति को आध घंटे तक भाप में स्नान तथा बाद को साबुन से और फिर शरीर ठंडे होने पर साधारण जल से नहाने को कहते हैं। इससे शरीर की फालतू चर्बी तथा मोटापा दूर होता है ।

ये स्नान तो रहे सारे शरीर के; किन्तु प्राकृतिक चिकित्सक रोगों के अनुसार कुछ

विशेष अंगों का स्नान अलग बताते हैं; जिनमें प्रमुख ये हैं—

(क) **पग स्नान :** पैरों का दर्द तथा थकान दूर करने के लिए, बाल्टी में नमक मिले गर्म पानी में घुटने तक पगों को घंटे आध-घंटे डाले रहते हैं।

(ख) **सिर स्नान :** नकसीर फूटने पर सिर को ठंडे जल से धोते हैं। तेज ज्वर को कम करने के लिये, सिर को शीतल जल से धोते हैं : या ठंडे जल की पट्टी मस्तक पर रखते हैं अथवा बर्फ की बोतल रखते हैं।

(ग) **कटि स्नान :** दो प्रकार का होता है (I) गर्मियों में ठंडा और जाड़ों में गर्म जल टब में भर गर्दन व पैरों को निकाल कर, कमर और कूल्हों को घंटे भर तक टब में रखते हैं और स्वच्छ गीले कपड़े से उनको रगड़ते हैं; तथा (II) गहरे पानी में कमर तक डुबो कर स्नान किया जाता है। इससे गुप्त रोग, कटि-शूल, कब्जियत, जठराग्नि का दबाव, आदि बीमारियाँ खत्म होती हैं।

स्नान-प्रसाधन : स्वास्थ्य तथा सुन्दरता के लिए आदि काल से स्नान के नाना प्रकार के प्रसाधन काम में आते रहे हैं। आजकल भी वृद्धाओं द्वारा युवतियों के लिए 'दूधो नहाओ-पूतो फलो' का आशीर्वाद सुनने को मिलता है। जरासन्ध और कंस की रानियों का तो वास्तव में दूध से स्नान करते रहने का उल्लेख है। वैसे **दुग्ध-स्नान** को हम समृद्धि का प्रतीक ही मानते रहे हैं; किन्तु सौन्दर्य निखारने के लिये, विश्व सुन्दरी क्लोपेट्रा गधी के दूध से स्नान करती थी। अपने साथ वह डेढ़-दो सौ दुधारु गधियों का काफ़िला इसीलिये सदा रखा करती थी। वह ही क्यों, रोम के कुख्यात बादशाह नीरो की रानी पंपिया भी गधियों के दूध में स्नान करती थी, जिसके लिए पांच सौ से अधिक गधियों का दूध बड़े-बड़े हमामों में एकत्र किया जाता था। आयरलैंड में **छाछ स्नान** भी बहुत लोक प्रिय रहा है।

फ्रांस की अनुपम रूपसी मादाम-द-मैसेनान प्रतिदिन दो-दो बार **सुगन्धित इत्र** से भरे हमामों में स्नान किया करती थी, ताकि वह **आकर्षण-केन्द्र** बनी रहे। अमेरिका की एक फिल्म अभिनेत्री हल्की **गर्म काफी** से भरे हमामों से नहाया करती थी। इससे बढ़ कर, स्पेन की सर्वांग सुन्दरी मेरिया-द-पाडिल्ल थी, जो **शराब से** भरे हमामों में स्नान करती थी।

सबसे विचित्र स्नान विधि नेपोलियन महान की रानी जोसेफन की थी, जो अपनी सुन्दरता अक्षुण्ण रखने के लिए ढेरों **स्ट्रावेरी** नहाने से पूर्व देह में मला करती थी।

भारत में भी **उबटन** स्नान से पूर्व मले जाते रहे हैं, जिनमें बेसन, आटा, तेल आदि का मिश्रण होता है। और नहीं तो केवल तेल का उत्सादन, ही स्वास्थ्य एवं स्वरूपता के लिए अत्यन्त उपयोगी माना गया है। दर्द आदि में, जल में **मीठा सोडा** मिला कर स्नान करना लाभकारी रहता है। रूस के स्टैलिन प्रतिदिन घंटों इस सोडे से मिले जल में स्नान किया करते थे।

योरुप में **बालु-रेत** से रगड़-रगड़ कर नहाने की प्रथा खूब रही है।

आजकल **सिकाकाई साबुन** आदि प्रसाधन बहुत प्रचिलित हैं। बालों की असमय

सफ़ेदी का कारण उन्हें बताकर, कुछ वैद्य इनका उपयोग कम करने की सलाह देते हैं। बेसन, दही या रीठे के पानी से बालों को धोने से इससे बचा जा सकता है।

सुन्दर दीख़ते रहने की इच्छा से कुछ लोग बालों की सफेदी खिजाबों (हेयर डाइयों) से छिपाते हैं; किन्तु कैलिफोर्निया के एक वैज्ञानिक ने यह पुष्टि करदी है कि केश रंजन औषधियों में ख़तरनाक वस्तुयें शामिल होती हैं और कैंसर तक पैदा करती हैं। 'न्यू साईंन्टिस्ट' नामक पत्रिका के अनुसार, हेयर डाई सिर से होकर शरीर के भीतर तक पहुँचता है। परीक्षणों में, यह उन लोगों के मूत्र में पाया गया है, जो बाल रंगते हैं। अतः यह तर्क ग़लत है कि बाहरी अंग में प्रयोग करने से हेयर डाई का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। हमें पूरा-पूरा सावधान रहना होगा कि कहीं हम सुन्दरता की एवज़ में भयंकर बीमारी तो कैंसर जैसी मोल नहीं ले रहे हैं।

चीनी मिल में अग्निशमन

रज़ा शुगर मिल के एक भण्डार में 14 अप्रेल 79 को 4 बजे अपराह्न आग लग गई। उसमें 70,000 चीनी की बोरियाँ थीं। सूचना पाते ही ग्रुप केन्द्र रामपुर के जवान मिल में पहुँच गये और लगे वीरतापूर्वक आग बुझाने । उन्होंने आध घंटे में सब आग बुझा ली और लाख़ों की सम्पत्ति भस्मीभूत होने से बचा ली।

के० रि० पु० बल का रक्तदान

हैदराबाद के चिकित्सीय विशिष्टता संस्थान (इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल स्पेशलीटीज़) में 11 अप्रैल 79 को एक सोलह वर्षीय कन्या अरुणा के दिल में चीरा लगना था। उसमें रक्त चाहिये था। अस्पताल के अधिकारियों ने रक्तदान के लिये समाचार-पत्रों द्वारा अपील की। उसे पढ़ते ही हैदराबाद में निरत 51 बटालियन के जवानों ने अपने रक्तदान देने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। हे० का० नत्थूलाल, ना० गोपाल गुरंग और का० फ्रांसिस मिंज का ही रक्त अरूणा के रक्त से मेल खा गया।

अस्पताल अधिकारियों तथा जनता ने इस त्याग और उदारता के कार्य की बड़ी प्रशंसा की।

अस्पतालों में हमें रुधिराधान सुविधा

डॉक्टर एम० एल० गुप्ता, (रक्त बैंक, भारतीय रेड क्रास सोसाइटी के निदेशक) ने दिल्ली के सभी अस्पतालों को लिखे अपने पत्र में बताया है-

"प्रत्येक वर्ष रक्तदान कार्यक्रम में, हम केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल से अच्छा योगदान पा रहे हैं। मेरा यह विचार है कि आवश्यकता के समय के० रि० पु० बल के जवानों को रक्त दिलाना हमारा नैतिक कर्तव्य है और इससे हमें आगे और भी उत्तम योगदान में सहायता मिलेगी। अतएव मेरी आप से प्रार्थना है कि पहचान पत्रों के दिखाने या कमांडैंटों के प्रमाण-पत्रों के दिखाने पर, के० रि० पु० बल के ज़रूरतमन्द रोगियों को रक्त देने का प्रबन्ध करेंगे।'

इससे आपात् काल में के० रि० पु० बल के सभी जवानों को सरलतापूर्वक रक्त मिलने लगेगा।

जिम्नास्टिक्स

दिनांक 1 से 5 अप्रैल 1979 तक 13वीं जिम्नास्टिक्स प्रतियोगिता केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज I नीमच में खेली गई। अजमेर रेंज I; नीमच रेंज II तथा गौहाटी रेंज III रही।

शहरी आतङ्कवाद

ले०—श्री एफ० वी० अरुल

क्या कोई बुद्धिमान पुरुष कभी यह न्याययुक्त विश्वास कर सकता है कि एक अव्यवस्थित समाज जीवित रह सकता है ? लिखित इतिहास बताता है कि ऐसा कभी नहीं हुआ है। इसके विपरीत, पिछले इतिहास ने दिखाया है कि हरेक समाज, जो बेलगाम या पतनशील हुआ, वह शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो गया और पतन का सर्वप्रथम प्रमाण देखा गया क़ानून की अवहेलना को लगातार सहते रहने में।

ये पुराने तथा सर्वदेशीय सबक़ हैं; किन्तु इन्हीं दिनों हम सबने देख ही लिया है कि क्या हमारे देश और क्या विश्व में अन्यत्र उच्छृंखलता की घटनाओं की सुयोजित ढंग से शीघ्र प्रसार की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है, जिसके फलस्वरूप निजी तथा सरकारी सम्पत्ति का अंधांधुन्ध नाश हो रहा है तथा कभी-कभी तो प्राणों की क्षति तक होती है । शायद निरंकुश व्यवहार का सब से तेज प्रादुर्भाव शहरी आतंकवाद में है, जिसने संसार के कुछ भागों में इतना भयानक रूप धारण कर लिया है कि सभ्य जीवन लगभग असम्भव हो गया है।

भारत में, आतंकवादीय गतिविधियों में बंगाल सदा अग्रणी रहा है। तीसरे दशक के शुरू में, स्वतंत्रता-संग्राम में, बंगाल के अन्धानुयायियों ने बड़े पैमाने पर आतंकवाद फैलाया और उनकी रोक थाम में ही कलकत्ते के तत्कालीन पुलिसायुक्त, सर चार्ल्स टेगॉर्ट ने ख्याति पायी, जो बाद को इज़रायली आतंकवाद को रोकने के लिए फिलीस्तान भेजे गये। मुझे अब भी याद है वह दिन, जब 1933 में एक स्कूल छात्र के रूप में मैंने जार्जटाउन में उन तीन बंगाली क्रान्तिकारियों को पुलिस द्वारा बन्दी बनते देखा था, जिन्होंने एक घर के चबूतरे से बमों को फेंक कर सुरक्षा दलों को कुछ देर घेरे रखा था। इन्हीं दिनों, ज़मींदारों तथा पुलिस के विरुद्ध नक्सलपंथियों द्वारा अन्धाधुंध हिंसा की बढ़मार ने बंगाल को एक बार फिर बदनाम किया है।

यह आतंकवादी आन्दोलन शीघ्र ही केरल और आंध्रप्रदेश में फैल गया तथा तमिलनाडु ने भी कुछ क्षेत्रों में इसका प्रभाव देखा। इस आन्दोलन से सुलझते हुए ही

केरल के कुछ वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को इन्हीं दिनों पछताना पड़ा है जबकि आँध्रप्रदेश के अनेकों अफसरों से पूछताछ चालू है तथा तमिलनाडु के अधिकारियों का एक दल बेलोर में मुकदमों में फँसा है। इससे एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या गणतंत्र समाजों द्वारा अपनाये गये पूछताछ और क़ानून के ढर्रे, क्रान्तिकारी आन्दोलनों से दी गई चुनौती से निबटने को उपयुक्त हैं ? इस प्रश्न का उत्तर आगे चल कर दिया जायेगा।

आतंकवाद—आइये, सर्वप्रथम आतंकवाद की परिभाषा करें। किसी स्पष्ट राजनीतिक या सामाजिक उद्देश्य के लिये जनता में चिन्ता तथा भय बिठाने की नियमित चेष्टा को आतंकवाद कहते हैं। एक उस व्यावसायिक क्रान्तिकारी कार्लोस मैरी घेसा के अनुसार (जो आपको याद हो, 1975 में, ओ० पी० ई० सी० के तेल मंत्रियों को वियना में उनके मुख्यालय से अपहृत करने का ज़िम्मेदार था)—"आतंकवाद एक हथियार है, क्रान्तिकारी कभी भी उसे नहीं तिलाँजलि देगा और आतंकवादी होने से कोई भी सज्जन सरफ़राज़ बन सकता है।"

जैसा आप देखते हैं, सभ्य समाज द्वारा स्थापित मूल्यों से, यह विचारधारा सरासर उलटी है। पिछले दशक में उन छापेमार युद्धों के स्थान पर (जो ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर चलते थे और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद औपनिवेशिक शासनों के अन्त से साधारणतया कम हो गये थे) शहरी आतंकवाद ने अपना प्रभुत्व जमा लिया। ग्रामों से नगरों में आन्दोलनों के आने पर, शहरी क्रूर युद्ध के युग का आरम्भ हुआ। शहरी आतंकवादी अधिकतर तीन, चार या पाँच की टुकड़ी में, तथा सारे क्रान्तिकारी आन्दोलन में सौ के लगभग, और अधिकतर केवल एक दर्जन में काम करते हैं। उनकी कम संख्या ही उनकी कार्यवाइयों की जान है; क्योंकि छोटे दलों का पता लगाना कठिन है, उधर वे आधुनिक अस्त्रशस्त्रों से भयंकर नुक़सान पहुँचा सकते हैं । भारत के नक्सलवादियों को ही ले लीजिये या ले लीजिये आयरलैंड में आई० आर० ए०, जापानी संयुक्त लाल सेना, पश्चिमी जर्मनी की बदर मीन हॉफ टुकड़ी, इटली की लाल ब्रिगेड, अंग्रेजी "नाराज़ ब्रिगेड" या अमरीकी सिम्वियानी मुक्त सेना, जिसकी एक सदस्य पैट्रिसिया हर्स्ट थी—ये नन्हें-नन्हें संक्षिप्त से दल हैं; पर इन्होंने भीषण अत्याचार के आरे चलाये हैं और सम्पत्ति तथा जीवन को अमित क्षति पहुँचायी है।

शहरी आतंकवाद को दो स्पष्ट प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम प्रकार सीधा आतंकवाद है—शक्ति के वास्तव आधार पर की जाने वाली कार्रवाइयाँ । सरकारी अफसर का अपहरण या हत्या का यह रूप धारण कर सकता है और साधारणजन कार्रवाई से अछूता रह जाता है।

द्वितीय प्रकार (जो बहुत जाना माना है और शायद बहुत कारग़र है) अप्रत्यक्ष या शुद्ध आतंकवाद है यानी नागरिकों पर अकारण आक्रमण, जिनसे घोर मनोविज्ञानिक प्रतिक्रियायें उत्पन्न हों। सब जनता में चिन्ता की सामान्य भावना फैलाना इसका ध्येय है। साधारण नागरिक को इस तथ्य से जागरूक कर कि वह किसी भी नियत समय पर बलि बनाया जा सकता है, अव्यवस्था फैलाने की यह चेष्टा करता है ।

अविचारपूर्णता ही शुद्ध आतंकवाद की महत्वपूर्ण कुंजी है। आतंकवादी गतिविधि के ध्येय तथा उद्देश्य तो कई हैं। प्रथम, कोई सन्देश या कोई विशेष सिद्धान्त फैलाने की इच्छा होती है, जैसे, नक्सलपंथी अपनी आतंकवादी करतूत के बाद घटना स्थल पर अपने सिद्धान्त के बताने वाले इश्तिहार छोड़ जाते हैं । दूरदर्शन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र जैसे आजकल के प्रगत संचार माध्यम, आतंकवादियों को बड़े उपयोगी हथियार मिल गये हैं। यदि कोई उग्रवादी पकड़ा या मारा जाता है, तब इसके अर्थ ये नहीं है कि वह असफल रहा है; क्यों कि इन माध्यमों द्वारा उसके दल की मांगे तथा नीतिपत्र को तो खूब प्रकाशन मिल जाता है।

द्वितीय ध्येय है सरकार से सरकारी मान्यता पाना। निर्दोष नागरिकों को निरन्तर परेशान करने से सरकार को आतंकवादियों के विरुद्ध अपना अभियान चलाना पड़ता है, जिसे आतंकवादी अपनी दृष्टि में बड़ी सफलता समझता है। इससे उसे स्वयं को एक प्रमाणिक दल में गठित होने में मदद मिलती है।

तत्पश्चात् तृतीय उद्देश्य है अपनी शक्ति के आधार को फैलाना । सरकार से जूझने के लिये, नागरिकों को भर्ती करने से यह ध्येय पूरा होता है।

चौथा उद्देश्य है—अधिकारियों की प्रतिष्ठा तथा मनोबल को क्षीण करना । बड़ा ध्येय तो जनता जनार्दन को यह दिखाना है कि सरकार देश में कारग़र शासन नहीं कर सकती है। पुलिस सहित सरकारी नौकरों में ज्यों ज्यों भय बढ़ता जाता है, त्यों त्यों उनकी कार्यकुशलता तथा मनोबल गिरता जाता है, अपने कर्मचारियों या जन साधारण की रक्षा करने में विफल एक कमज़ोर सरकार की तस्वीर उभर कर आती है और यह वह स्थिति होती है, जब सरकार के भीतर से शक्ति का ह्रास शुरू हो जाता है।

पांचवा ध्येय है—सरकार को उकसाना, जिससे नागरिक आतंकवादी की ओर प्रायः झुकने लगता है । यद्यपि अतीव प्रतिक्रिया का कुप्रभाव भी पड़ सकता है, दीर्घकाल तक का अनिर्णय तथा अकर्मण्यता भी उसी प्रकार विनाशकारी हैं। अतएव, किसी भी सरकार को यह समस्या तय करने की होती है कि वह किस हद तक व्यापक क्रान्तिकारी कार्रवाइयों के विरुद्ध निज प्रतिक्रिया दर्शाये।

यहाँ एक और मौलिक प्रश्न उठ खड़ा होता है—यह आतंकवादिता है ही क्यों ? प्रथम कारण है स्वयं वंचित होने की भावना। यही प्रेरणा नक्सलपंथियों के आन्दोलन में स्पष्ट झलकती है, जिसका नेतृत्व बेरोज़गार शिक्षित युवकों ने किया। द्वितीय हिंसा की अपील, मुख्यकर युवा पीढ़ी में बड़ी ज़बरदस्त होती है तथा तृतीय, क्रान्तिकारी कार्रवाई में ख़तरे कम हैं।

कई बार जब कोई आतंकवादी बन्दी बनाया जाता है, उसका दल तुरन्त कुछ बन्धक बना लेता है और अपने साथी को मुक्ति दिला देता है। याद होगा कि विगत सितम्बर में बम्बई से एक वायुयान को जापानी संयुक्त लाल सेना के अनुयायी ढाका को ज़बरदस्ती ले गये और उसे अधिकार में कर लिया। जापान सरकार ने, कितने ही आतंकवादियों को छोड़ कर, जिन्हें उसने टोकियों में बन्दी बना रखा था तथा बड़ी

धनराशि को छुड़ाई देकर, अत्यन्त बुरी भाँति घुटने टेक दिये। यही तो मनोवैज्ञानिक चिन्ता की तीक्ष्ण प्रतिक्रिया होती है, जिसे आतंकवादी उत्पन्न करता है तथा जो उसे अन्तर्राष्ट्रीय निर्मुक्ति दिलाती है।

आतंकवादी को रोका कैसे जा सकता है ? सर्वप्रथम तो उसके शरणस्थलों, और आश्रयों का सफ़ाया करने के लिये हमें सब लोगों का सहयोग लेना चाहिए। द्वितीय, गुप्त आसूचनाओं द्वारा एक बहुत ही कारग़र प्रतिरोध तैयार करना चाहिये। आजकल, आतंकवादियों के दलों की कम संख्या होने तथा निरन्तर घूमते रहने से, उनकी प्रगत इलेक्ट्रानिक निगरानी कठिन है; किन्तु सभी आधुनिक वैज्ञानिक दंगों को प्रयुक्त कर उनका पता लगाया जा सकता है। आसूचना के साथ, विश्लेषण भी उत्तम होना चाहिये। किसी आपात्काल में शीघ्र कार्रवाई के लिये यह ज़रूरी है कि विभिन्न आतंकवादी दलों की रणनीतियों, ढंगों तथा स्वभावों पर अनुसन्धान हो और प्रतिक्रिया वाले उपायों का विश्लेषण हो।

अन्त में, यह सामान्य निर्णय हो कि किसी भी आतंकवादी दल से कोई बातचीत नहीं होगी और ना ही उसे कोई रियायत दी जायेगी। इससे आतंकवादियों की सारी प्रेरणा निश्चय ही नष्ट हो जायेगी। चिरकालीन प्रतिभूति तक को लेकर भी, हर समय कठोर रुख अपनाना होगा।

पूर्व उठाये हुये इस प्रश्न पर अब विचार करते हैं कि क्या आतंकवादी आन्दोलन से निबटने के लिये अनुसन्धान और क़ानून की सामान्य प्रक्रियायें उपयुक्त हैं ? पिछली मार्च में, इटली की लाल ब्रिगेड ने उस आल्ड मोरो के पाँच सशस्त्र अंगरक्षकों को गोली से भून दिया, जो पाँच बार इटली के प्रधान मन्त्री रहे थे। उनका अपहरण किया और बाद में, उनको भी मार दिया। लाल ब्रिगेड का तात्कालिक उद्देश्य था अपने 15 आतंकवादी साथियों को छुड़वाना, जिन पर शहरी क्षेत्रों में कई बलात्कारों के आरोपों पर ट्यूरिन में मुक़दमा चल रहा था। वह मुक़दमा रुका पड़ा था, क्योंकि अभियोजकों, गवाहों तथा जूरी सदस्यों को डराया-धमकाया गया था।

नक्सलवादी, आई. आर. ए. और अलफतह अपने-अपने ढंगों में एक समान ही क्रूर हैं और न्यायालयों के प्रति उनको कोई आदर नहीं है। उस प्रश्न को फिर दोहराया जाता है कि जब आतंकवाद क़ानून प्रवर्तन के सामान्य अभिकरणों और प्रक्रियायों से बाहर की चीज़ हो जाए, तब कौन से क़ानूनी उपाय काम में लाये जायें ? सर्वोत्तम दृष्टान्त हमारे सम्मुख ब्रिटेन का है, जो विश्व का सबसे पुराना तथा सबसे दृढ़ गणतन्त्र है तथा जो लगभग एक दशक से उत्तरी आयरलैंड में तथा इंगलैंड के कुछ भागों में आयरलैंड लाल सेना से लोहा ले रहा है। आयरलैंड लाल सेना के वन्दूक़चियों ने न्यायमूर्त्तियों, जूरी सदस्यों तथा ग़वाहों को मार डाला और दुकानों, होटलों, सिनेमा, थियेटरों में गोले बारूद रखकर तथा निरपराधी पुरुष, स्त्रियों तथा बच्चों को मार कर, वे शुद्ध आतंकवाद फैलाते रहे।

क़ानून-प्रवर्तन के इस संकट से ब्रिटिश सरकार ने कैसे मुकाबला किया? प्रथम, उसने आपात्कालीन व्यवस्था अधिनियम को लगाया और बन्दी प्रत्यक्षीकरण का

नियम निलम्बित कर दिया। इससे उसने अनेक संदेग्ध आतंकवादियों को बिना मुक़दमे के नज़रबन्दी स्थानबद्ध कर दिया। कई सौ संभाव्य बन्दूकचियों की गतिविधियाँ रोकने से बहुत सी हिन्सा समाप्त हुई। भारत में लटकन ठीक दूसरी ओर जा चुका है। नक्सलपंथियों के साथ नम्रता का व्यवहार किया जा रहा है, जिसका परिणाम विनाश में होगा। द्वितीय, आपात्कालीन अधिनियम ने ये प्रावधान किये थे कि बिना वारंट के गिरफ्तारी, गोलाबारूद तथा हथियारों की खोज और पकड़धकड़, गम्भीर खोज बीन के लिये किसी संदिग्ध व्यक्ति को 7 से अधिक दिन नज़रबन्द रखना तथा किसी व्यक्ति को (चाहे यह विश्वास करने का कोई ख़ास कारण नहीं हो कि वह व्यक्ति आतंकवादी है) रोक कर उसकी शिनाख्त करना। तृतीय, न्यायालयों में आतंकवादियों को सहज दण्ड देने के लिये, दण्ड प्रक्रिया और अपाराधत्मक अभियोगों में साक्ष्य के नियमों को ढीला किया गया। जूरी के बिना मुक़दमे चलाने की इजाजत दी गई तथा आतंकवादी के सामान्यतम अपराध (नामतः गोलाबारूद व हथियार का अवैध संचय) के लिये यह तय कर प्रमाणीकरण सरल कर दिया गया कि यदि किसी ऐसे वाहन या स्थान पर ऐसा अवैध सामान पाया जायेगा, जिसमें एक से अधिक व्यक्ति हों, तब सब के सब अपराधी माने जायेंगे, जब तक कि वे स्वयं को अन्यथा सिद्ध नहीं कर दें। पुलिस संरक्षण में अपराधरोधक साक्ष्य या कच्चा सुनासुनाया साक्ष्य (जो भागे या मारे हुये गवाहों के निबटाने की अनुमति देता है) स्वीकार्य किया गया। चौथे, पत्रों का सेंसर (दोषवेचन) करने की तथा टेलीफोनों का मॉनीटर (गुप्त सुनना) करने की खुल्लमखुल्ला इज़ाज़त दे दी गई और अन्त में महापराधों के लिये प्राणदण्ड का लाज़मी हुक्म हो गया।

आतंकवाद के लिये ये उपरलिखित ब्रिटिश उपाय—मुख्यकर नज़रबन्दी, जूरी बगैर मुक़दमें, साक्ष्य और प्रमाण के दायित्व से सम्बद्ध नियमों में ढील, किन्हीं विशेष संगठनों की सदस्यता को अपराध मानना—कम से कम वे उपचार हैं, जो अराजकता के सुनियोजित प्रसार को रोकने तथा दबाने के लिए कोई भी सभ्य समाज प्रयोग में ला सकता है और मेरा यही अनुरोध है कि भारत में ब्रिटिश उदाहरण का अनुगमन करना चाहिये । आतंकवादी को हराने की इसके सिवाय अन्य कोई तरकीब नहीं है कि उसे, उसके साथियों को और उसके समर्थकों को इस बात का विश्वास दिलाना है कि उन्हें अपनी हठधर्मता के लिये कोई स्थान नहीं है। यही कारण है कि साम्यवादी सरकारों में आतंकवादियों को अपने सिर उठाने की हिम्मत नहीं हुई है, क्योंकि वे जानते हैं कि वहाँ की खुफ़िया पुलिस, वैध उपायों की निपट चिन्ता नहीं कर, उनका बस सफ़ाया कर देगी।



असम-नागालैंड-सीमा पर महानिदेशक की यात्रा

श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक के० रि० पु० बल ने 4 मई 79 को होमलैंड पर स्थित 2 बटालियनों के डिटैचमेंट हेडक्वार्टर का निरीक्षण किया। उनके साथ श्री एस० दत्त चौधरी, पुलिस महानिरीक्षक 12 (के० रि० पु० बल), नागालैंड के पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस उपमहानिरीक्षक (गौहाटी / कोहिमा) (के० रि० पु० बल) तथा अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी थे। सेमा नागाओं के सहित, जनजाति की जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने अपने नृत्यगानों और लोक संस्कारों से महानिदेशक को मनोमुग्ध किया। सद्भावना के परम्परागत प्रतीक तथा स्नेह-संकेत के स्वरूप, उन्होंने महानिदेशक को एक सेमा शाल भी भेंट में दिया।

5 जनवरी 79 को सशस्त्र नागाओं द्वारा अनेक असैनिकों की हत्या के फलस्वरूप, असम-नागालैंड-सीमा पर तनावपूर्ण स्थिति हो गई थी। तत्पश्चात्, तुरन्त ही असम सीमा पर नागालैंड सशस्त्र पुलिस ने कुछ बाहरी चौकियां स्थापित कीं। होमलैंड पर, उनके स्थान पर 2 बटालियन के० रि० पु० बल की पाँच कम्पनियाँ लगा दी गईं, जिससे शान्ति-व्यवस्था फिर स्थापित हो जाए।

इन कम्पनियों के निरत-स्थल नीची दलदली क्षेत्रों में हैं। वर्षा ऋतु में पाँच-छै मास वहाँ पहुँचना दुष्कर है। वे घने वनों में स्थित हैं और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक वातावरण है। संघर्ष और अव्यवस्था की रोक-थाम के हेतु, यहाँ हमारे जवान दिन-रात निरन्तर पहरा लगाते रहते हैं।

गृह-मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में, महानिदेशक महोदय ने के० रि० पु० बल और अन्य दलों की नियुक्ति तथा स्थिति का जायज़ा लेने के लिये उस उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र में यात्रा की थी।

कविता :

॥देश-प्रेम॥

[रचायेता—**ना० गुर दयालसिंह, ग्रुप केन्द्र, दिल्ली**]

कभी न भूलेंगे हम उनका, यह भारी अहसान /
देश हेतु जो बार गये हैं, हँसते-हँसते प्राण //
कुछ ने चूमी थी जब फाँसी, कुछ ने थी तब लाठी खाई /
लाखो अनमोली जानें दे, कर यह थी आज़ादी पाई /
घरती माँ की प्यास बुझाई, करा रूधिर निज पान /
कभी न भूलेंगे हम उनका, यह भारी अहसान //
दुश्मन की तोपों को रोका, थे सीने चट्टानों जैसे /
मोड़ दिये मुँह टैंकों के झट, थे साहस तूफान जैसे /
कभी शिकन नहिं लाये मुँह पर, होकर लहू लुहान /
कभी न भूलेंगे हम उनका, यह भारी अहसान //
रहें, रहें नहिं, इस दुनिया में, यह चमन सदा आबाद रहे /
कहते जायेंगे जीवन भर, भारत-माता आज़ाद रहे /
झण्डा ऊँचा रहे हमारा, ऊँची इसकी शान /
कभी न भूलेंगे हम उनका, यह भारी अहसान //
उठो आज के वीर जवानो, तुमको भी तो है कुछ करना /
मातृभूमि के ख़ातिर जीना, मातृभूमि के ख़ातिर मरना /
मातृभूमि पर मरने वाले, मरते नहिं इन्सान /
कभी न भूलेंगे हम उनका, यह भारी अहसान //

13वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता

हैदराबाद रेंज सिरमौर

उत्तरी रेल संतरण-ताल दिल्ली में 27 से 29 अप्रैल 1979 तक खेली गई 13वीं अंतर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में 27 अप्रैल को का० हाकिम (अजमेर) ने 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 2 मि० 52.3 से० में तैर कर 2 मि० 54 से० का रिकार्ड भंग किया। उसी दिन, 5 मि० 2 से० का पिछला कीर्तिमान भंग हुआ, जब हैदराबाद रेंज ने 4X100 मी० मेडले तैराकी को 4 मि० 55.3 से० में पूरा किया। हे० का० दलीप सिंह को 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 1 मि०

16.2 से० में तैरकर अपना ही रिकार्ड सुधारा । चैम्पियनशिप के लिए हैदराबाद रेंज और अजमेर रेंज में जबरदस्त मुकाबला रहा; जब 4X100 मी० फ्री स्टाइल को जीत कर हैदराबाद रेंज सिरमौर बनी । श्री आर० सी० गोपाल महानिदेशक ने पुरस्कार वितरित किए।

परिणाम इस प्रकार रहे :

200 मी० फ्रीस्टाइल—ना० पी. पद्मनाभन (अजमेर) I, का० विलासचंद्रन (मद्रास) II व का० रूपसिंह (अजमेर) III.

200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक—का० ए. हाकिम (अ०) I, हे० का० दलीप सिंह (कलकत्ता) II व का० के. आर. हीरामथ (अ०) III.

400 मी० व्यक्तिगत मेडले—हे० का० डी. क्लीमेंट (श्रीनगर) I; हे० का० के. सोमशेखरन (हैदराबाद) II व हे० का० दलीप सिंह (कलकत्ता) III.

4X100 मेडले रिले—हैदराबाद रेंज I. अजमेर रेंज II व मद्रास रेंज III.

हाईबोर्ड डाईविंग—स०इ० कपूर सिंह (अ०) I, का. वी.एन. नामचे (है०) II व हे० का० पी. वी. पिल्ले III.

1500 मी० फ्री स्टाइल—का० विलासचंद्रन (मद्रास) I; ना० पी. पद्मनाभन (अ०) II व हे० का० अब्राहम कुरैन (म०) III.

400 मी० फ्रीस्टाइल—ना० पी. पद्मनाभन (अ०) I; हे० का० के. सोमशेखरन (है०) II व का० बिलासचंद्रन | (म०) III.

200 मी० बटरफ्लाई—हे० का० दलीपसिंह (कलकत्ता) I; का० ए० हाकिम (अ०) II तथा हे० का० डी. क्लीमेंट (श्रीनगर)III.

200 मी० बैकस्ट्रोक—स० इ० वेणु गोपाल (है०) I; ना० पी. दास (श्रीनगर) II व हे० का० दलीप सिंह (कलकत्ता) III.

4X200 फ्री स्टाइल रिले—हैदराबाद रेंज I; अजमेर रेंज II व मद्रास रेंज III.

100 मी० फ्रीस्टाइल—हे०का० के. सोमशेखरन (है०) I; ना० पी. पद्मनाभन II व हे० का० एलोशियस (है०)III.

100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक—हे० का० दलीपसिंह (कलकत्ता) I; का० ए. हाकिम II व हे०का के. सोमशेखरन (है०) III.

100 मी० बटरफ्लाई—हे० का० के. सोमशेखरन (है०) I; हे० का० आर. एस. नायर (दिल्ली) II व हे० का० दलीप सिंह (कलकत्ता) III.

100 मी० बैकस्ट्रोक—स० इ० पी. बी. पिल्ले (है०) I; ना० पी. पद्यनाभन (अ०) II ना०पी. दास (श्रीनगर) (III).

4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले—हैदराबाद रेंज I; अजमेर रेंज II व मद्रास रेंज III.

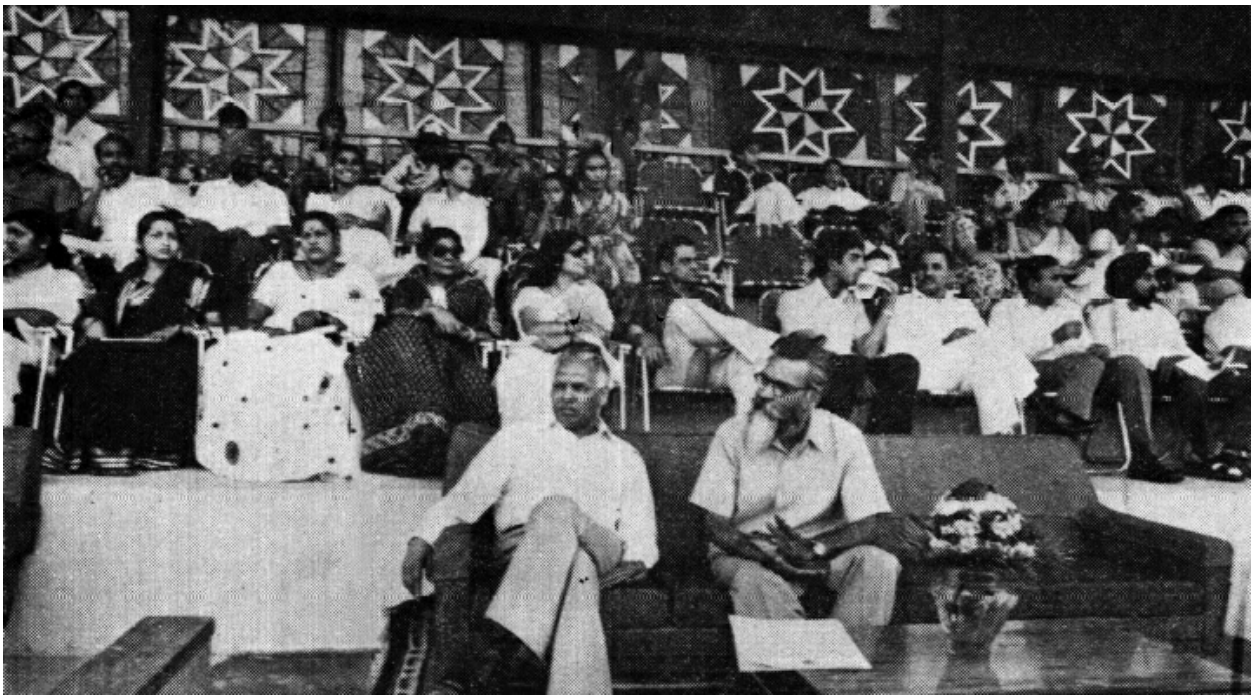
सर्वोत्तम तैराक—हे० का दलीप सिंह व ना० पो. पद्मनाभन।



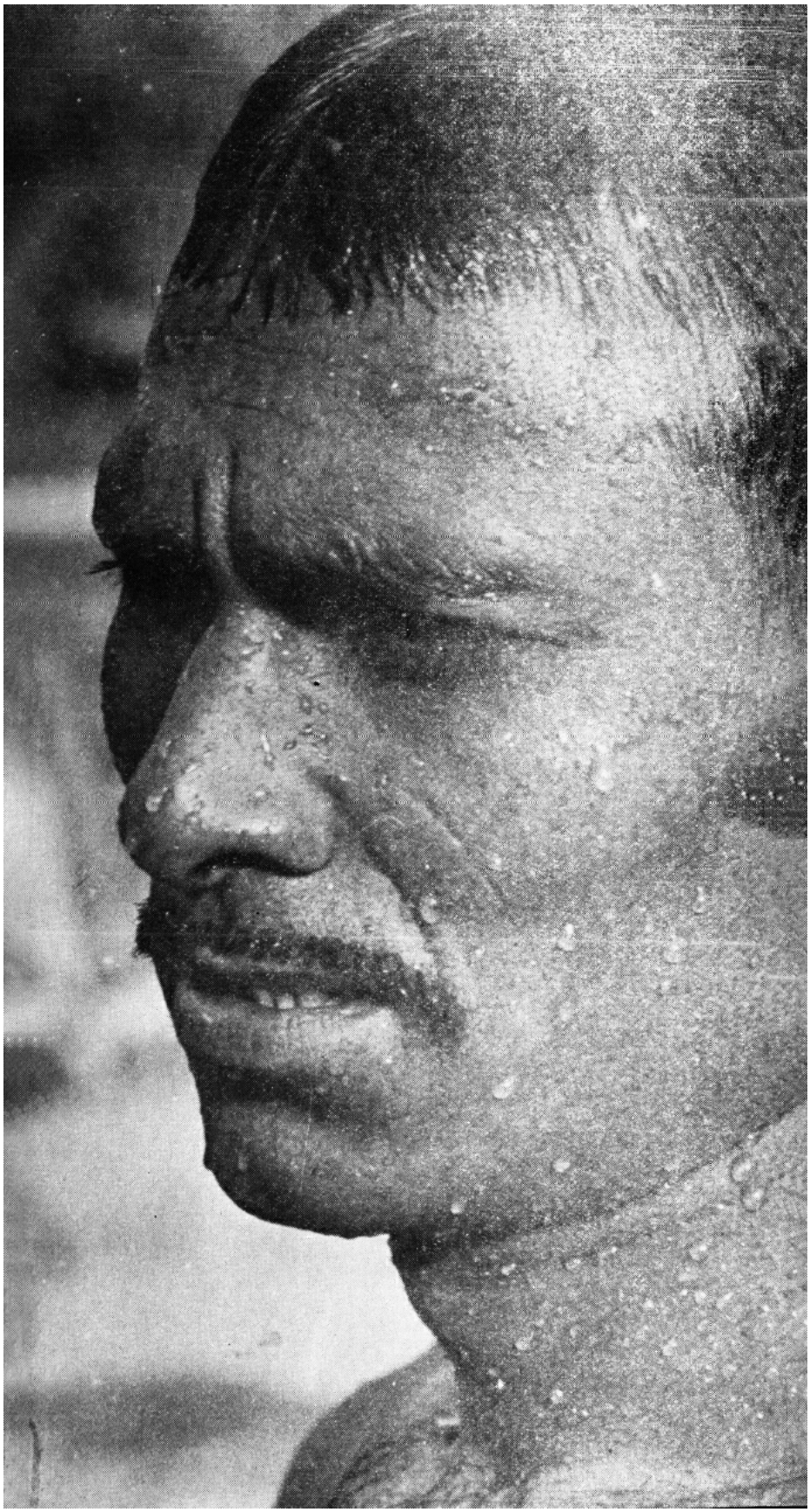
ट्राफी पाते हैदराबाद रेंज मैनेजर यादव।



मैडले विजेता हैदराबाद टीम ।



विशिष्ट दर्शक गण ।



हे० का० दलीप सिंह ।

क्रीड़ा क्षेत्र :

शतरञ्ज

दिनांक 4 से 12 मार्च, 1979 तक आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउण्ट आबू में के०रि०पु० बल की प्रथम अन्तर्रेञ्ज शतरंज प्रतियोगिता हुई। दसों रेन्जों, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी तथा महानिदेशालय के 34 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

स्विटजरलैंड लीग के नौबारियों के आधार पर, प्रतियोगिता व्यक्तिगत तथा टीम दोनों ही प्रकार से खेली गई। परिणाम इस प्रकार रहे—

व्यक्तिगत :

श्री बी०के० दास I; श्री उदयनारायण II व श्री आर० चक्रवर्ती III.

टीम :

श्रीनगर रेन्ज I; दिल्ली रेंज II व महानिदेशालय III.

श्री ए०के० बोस (दिल्ली) प्रतियोगिता के निदेशक थे। श्री बी० वर्मा, महानिरीक्षक से० III ने इस प्रतियोगिता के अयोजन का सुझाव दिया था। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जैसे निरन्तर घुमन्तू बल की बटालियन को शतरंज खेलना सरल है; मुख्यकर दूर तथा दुर्गम स्थानों पर, जहाँ अन्य मनोरंजन सुविधायें नहीं हैं।

यह अत्यन्त उत्तम समारम्भ हुआ है और वह दिन दूर नहीं, जब एथ्लैटिक्स (दौड़ कूद) आदि जैसे खेलों की भाँति शतरंज में भी हमारे खिलाड़ी देश में नाम की कमायेंगे।

कलकत्ता स्पोर्ट्स क्लब

के० रि०पु० बल स्पोर्ट्स (खेल) क्लब 1977 में गठित हुआ। प्रथम ही वर्ष, हमारी हाकी टीम ने III श्रेणी हाकी लीग कलकत्ता की चेम्पियनशिप ट्राफी जीती; साथ मे "कैवन कप' में उपविजेता रही। अब II श्रेणी लीग प्रतियोगिताओं में, वह भाग ले रही है।

पश्चिमी बंगाल दंगल संघ की चैम्पियनशिप 8वीं वार्षिक पूर्वीय ढंग की प्रतियोगिता में हमारे दंगली दल ने जीती। पहलवानों ने ये सफलतायें पायीं—का० सुरेश कुमार (52 कि० ग्रा०) I; का० जवाहरलाल (57 कि० ग्रा०) I, ना० उदय राज सिंह (62 कि० ग्रा०) I; हे० का० धर्म देव यादव (68 कि० ग्रा०) I; का० रामेश्वर सिंह (74 कि० ग्रा०) I; का० राज नाथ सिंह (82 कि० ग्रा०) I व का० अशोक प्रसाद सिंह (90 कि० ग्रा०) II

गौहाटी सिरमौर

तेरहवीं अन्तर्रेंज मोटर परिवहन प्रतियोगिता 26 से 28 मार्च 79 तक ग्रुप केन्द्र गौहाटी में आयोजित हुई। ना० भुवलसिंह (गौहाटी) और का० आर. एन. मिश्रा (मद्रास) क्रमशः I व II आये।

अखिल भारतीय खुली दौड़ कूद

जमशेदपुर में 9 से 11 मार्च 79 तक अखिल भारतीय खुली दौड़ कूद प्रतियोगिता आयोजित हुयी, जिसमें हमारी टीम ने भी भाग लिया। इं० आर. एस. बल सर्वत्र छाया रहा। उसने धन तथा चक्का फेंकों में स्वर्ण पदक पाये। स० इं० प्रदीप कुमार ने 3000 मी० स्टीपल चेज़ में द्वितीय स्थान पाया। डिकँथलँन में ना० जनक चन्द तथा ऊँची कूद में ला ना० सतवीर सिंह ने रजत पदक प्राप्त किये।

प्राथमिक चिकित्सा

विगत 24 मार्च को, ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में प्राथमिक चिकित्सा की अन्तर्रेञ्ज प्रतियोगिता आयोजित हुई। अजमेर रेंज प्रथम, गौहाटी रेंज द्वितीय तथा दिल्ली रेंज तृतीय रही।

व्यक्तिगत प्रतियोगिता में, का० महताब सिंह और का० हनुमान प्रसाद दोनों गौहाटी रेंज के प्रथम तथा द्वितीय रहे, और अजमेर रेंज का का० प्रेम शंकर तृतीय रहा।

दक्षिण क्षेत्र में तैराकी प्रतियोगिता

छठी दक्षिण क्षेत्र तैराकी प्रतियोगिता मद्रास में विगत मार्च में आयोजित हुई। तमिलनाडु तथा आन्ध्रप्रदेश राज्यों की और से खेलते हुए हमारे इन तैराकों ने अधोलिखित स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक पाये—

I तामिलनाडु

स०इ०पी.वी. पिल्लै—100 मी० बैकस्ट्रोक (स्वर्ण); 200 मी० बैक स्ट्रोक (स्वर्ण); 4X100मी० मैडले रिले (स्वर्ण) व जलपोलो (रजत)।

हे० का० डी. क्लीमेंट—400 मी० व्यक्तिगत मेडले (रजत) व जलपोलो (रजत)।

हे० का० आर. एस. नायर—100 मी. बटरफ्लाई (रजत); 200 मी० बटरफ्लाई (रजत); 4X100 मी० मेडले (स्वर्ण) व जलपोलो (रजत)।

हे० का० के. सोमशेखरन—100 मी० फ्री स्टाइल (स्वर्ण); 4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले (स्वर्ण); 4X200 मी० फ्री स्टाइल (स्वर्ण); 4X100 मी० मेडले रिले (कांस्य) व जलपोलो (रजत)।

हे० का० पी. पद्मनाभन—200 मी० फ्रॉ स्टाइल (स्वर्ण); 4X100 मी० फ्रॉ स्टाइल रिले (स्वर्ण); 4X200 मी० फ्री स्टाइल (स्वर्ण); 100 मी० फ्री स्टाइल रिले (रजत) व जल पोलो (रजत)।

ना० एस. लोचनन—4X200 मी० फ्री स्टाइल रिले (स्वर्ण); 1500 मी० फ्री स्टाइल (रजत); 400 मी० फ्री स्टाइल (कांस्य) व जलपोलो (रजत)।

ना० पीताम्बरदास—100 मी० बैंक स्ट्रोक (कांस्य); 200 मी० बैंक स्ट्रोक (रजत) व जल पोलो (रजत)।

का० अब्दुल हाकिम—100 मी० बेस्ट स्ट्रोक (रजत) व 200 ब्रेस्ट स्ट्रोक (स्वर्ण)

II आंध्र प्रदेश

हे० का० के. एलोसियस—जलपोलो (रजत)।

का० जयचन्द्रन—जलपोलो (रजत); 4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य) व 4X200 मी० फ्री स्टाइल (कांस्य)।

का० रमणकुट्टी—जलपोलो (रजत) व 4X100 फ्री स्टाइल रिले (कांस्य)।

का० रूपसिंह—4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य) व 4X200 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य)।

का० के. आर. हीरामथ—4X100 मी० मेडले रिले (कांस्य)।

का० विलास चन्द्रन—4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य) व 4X200 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य)।

का० जी. श्रीकण्ठन—4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य) व 4X200 मी० फ्री स्टाइल रिले (कांस्य)।

का० एस. राजू—4X100 मी० मेडले रिले (कांस्य)।

का० जी. राधाकिशन—4X100 मी० मेडले रिले (कांस्य)।

उपद्रव की जड़

ले०—श्री पी० के० मेनन

जब से ब्रिटिश राज्य ने अपना आधिपत्य स्थापित किया था, नागालैंड को नागा हिल्स और त्येनसंग क्षेत्र पुकारा जाता था। इससे पूर्व, ये नागा पहाड़ियाँ शिरच्छेदकों की धरती के नाम से दुनिया में जानी जाती थी।

1872 में रेवरेंड क्लार्क नामक एक अमरीकी पादरी मोककचंग ज़िले में म्युँगएम

सेन नामक एक गोरोशेखर ग्राम में पहुँचा। इससे पूर्व, ब्रिटिश अभियान नागालैंड के आदिवासियों को डराने के लिये हुआ करते थे, जिससे वे सीमा स्थित असमी ग्रामों पर धावा नहीं बोलें। उन दलों को उन अंगामी योधाओं से बड़ा जूझना पड़ता था, जिनके ग्राम दुर्गम्य पर्वत शिखर पर बसे थे। इन ग्रामों पर पहुँचने के लिये, संकीर्ण मार्गों में जाते समय कोई भी दल इन बर्बर नागाओं की दया पर निर्भर रहता था।

ब्रिटिश अभियान दलों के अतिरिक्त, असम के अहोम नृप तथा मणिपुर और बर्मा के शासक भी समय समय पर नागा पहाड़ियों पर धावे बोलते रहते थे। अतः नागाओं को या तो अपने ग्रामों की रक्षा करनी पड़ती थी या आक्रमणकारी दलों के सम्मुख भाग जाना पड़ता था।

बीसवीं शताब्दि के प्रारम्भ में ब्रिटिश शासन ने वृहत् आसाम के एक उपमंडल स्वरूप, नागालैंड तथा त्वेनसंग क्षेत्र पर शासन करने की सोची। इस उपमंडल पर, सिवसागर जिले के उपायुक्त तथा पुलिसाधीक्षक ने अपना अधिकार जमाया। क्योंकि यह एक उपमंडल मात्र था, इसलिये इसमें और आसाम में कोई स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं थी।

1925 में, इस को आसाम का एक जिला बना दिया गया, जिसपर कोहिमा में स्थित उपायुक्त का अधिकार था। इस ज़िले की सीमा मैदानों को जोड़ती हुयी लक्ष्मण रेखा मानी गई। उस समय कछारी राज्य की राजधानी दीमापुर थी; अतः दीमापुर नागाहिल्स ज़िले में सम्मिलित नहीं था। 1947 में इस ज़िले की सीमा विधिवत् मान ली गई। इस विषय में कोई विरोध नहीं हुआ।

1955 में, शिलांग और नई दिल्ली की सत्ताधारी सरकारों के लिये, राजनीतिक स्थिति ने बुरी करवट ली। राजनीतिक जागृति तेज हुई और दावानल की भाँति फैल गयी। स्वतंत्रता की माँग ठुकरा दी गई, फलस्वरूप, नागा पहाड़ियों में चिरस्थायी राजद्रोह फैल गया।

जयप्रकाश नारायण, स्व० श्री चालिहा, मुख्यमंत्री, असम, पूज्य माईकेल स्काट और डॉ० राम के नेतृत्व में तीन शान्ति आयोगों के प्रयत्नों के बावजूद, कोई ठोस सफलता नहीं मिली।

1960 में पूर्णांग राज्य गठित हुआ और नागालैंड कहलाया। 1925 में निर्धारित ज़िले की सीमा ही, इस राज्य की सीमा मान ली गई। असम सरकार ने नागालैंड में दीमापुर को मिलाने पर कोई आपत्ति नहीं की। नागा लोग इससे सन्तुष्ट नहीं हुए; किन्तु नागालैंड के निर्माण के समय, उस व्यवस्था को उलटना उन्होंने नहीं चाहा।

असन्तुष्ट नागाओं ने बाद को भिनभिनाना शुरू कर दिया ; किन्तु बह असन्तोष बहुत धीमा चलता रहा। तबभी, नागाओं को ऐसी आशंका थी कि कभी भी विस्फोट हो सकता है। किन्तु कब और कहाँ को कोई नहीं जानता था।

ऐसी अनुश्रुति है कि 19वीं शताब्दि के अन्त तक, नागाओं का अधिकार आसाम के मैदानों पर व्याप्त था और वह अधिकार सिवसागर तक फैला था। किसी पर कोई

प्रमाण नहीं है, किन्तु नागाओं का कहना है कि 1925 की सीमा विदेशी ब्रिटेन वालों ने निश्चित की थी और उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था। दूसरी ओर, असम 1925 वाले सीमा-निर्णय का आदर करता है और संवैधानिक तथा पूरा जायज़ मानता है। इस आधार का समर्थन प्रधानमंत्री श्री देसाई तथा गृह मंत्री श्री एच० एम० पटेल भी करते हैं। भारत सरकार ने यह दोहराया भी है कि क्योंकि असम और नागालैंड की सीमा संवैधानिक रूप से 1947 में निर्धारित की जा चुकी है, उसमें परिवर्तन करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है । उसने उन दोनों राज्य सरकारों को यही बात लिखी है।

नागालैंड-वासियों की यह समस्या नाज़ुक़ है। अनेकों नागाओं ने नेपाली, बिहारी और बंगाली जैसे ग़ैर-नागाओं की मदद से, असम के आरक्षित वनों का सफ़ाया कर दिया है। ये ग़ैर नागा लोग उन सफ़ा किये जगलों में धान, लाई तथा अन्य फसलों को उगा रहे हैं और उपज का आधा भाग नागाओं को दे रहे हैं। किन्तु अब ग़ैर नागा भी चालाक हो गए हैं और आधी (अर्द्ध विभाजन) की प्रथा अस्वीकार कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, अपनी भूमि पाने के लिए नागा उनको निकाल भगाना चाहते हैं और स्वयं कृषि करना चाहते हैं। इसके लिये, सीमा रेखा को पार कर नागाओं को असम के आरक्षित वनों में आना पड़ता है

क्योंकि वह भूमि वैधानिक रूप से असम की है, इसलिये नागा उन्हें निकाल फेंकने में असमर्थ रहे हैं। नागा लोग इस भूमि पर नागालैंड को अधिकार दिलाना चाहते हैं, जिससे मैदानी उपजाऊ भूमि उनके काम में आ सके। जितना सरल प्रतीत पड़ता है, उतना यह है नहीं। यही कलह की जड़ है ।

क्योंकि पिछले दस सालों से, असम और नागालैंड दोनों की सरकारें सीमा विवाद को तय नहीं कर पा रही हैं और नागालोग गणतंत्रात्मक ढंगों से भली भाँति परिचित नहीं हैं, इसलिये उन्होंने अपनी वर्षों पुरानी लूट खसोट की प्रथा प्रारम्भ कर दी है और निर्दोष निस्संशयालु गांव वालों पर असम के आरक्षित वनों में लूटपाट मचा रखी है।

क्यों कि नागालैंड सरकार, अंगामी, ओ और सेमा जैसी नागा जातियों से झगड़ा मोल लेना नहीं चाहती, इसलिये क़ानूनी कार्रवाई कर लेने पर भी, वह सेमा नागाओं के कार्यों की ख़ुल्लमख़ुल्ला नुक़्ता-चीनी नहीं करना चाहती।

यदि भारत, नागालैंड और असम की सरकारें इस सीमा विवाद को सुलझाने में असमर्थ रहती हैं, तब निकट भविष्य में दूसरे ज्वालामुखी फूटने की संभावना को टाला नहीं जा सकता।

चिरस्मरणीय क्षण

ले०—स०इ० एम. पी. बड़थ्वाल 2 बटा

अपना सारा परिवार थल-सेना एवं के० रि० पु० बल में सेवा-रत होने के कारण, मेरी भी इच्छा इस फोर्स में भर्ती होने की हुई। कॉलेज की शिक्षा समाप्त होने के बाद, मुझे इस फोर्स में 28 अप्रेल 1969 को सब इन्स्पेक्टर के पद पर सीधी नियुक्ति मिली। मेरी पहली यूनिट 21 बटालियन थी, जो उस समय दुर्गापुर में नक्सलवादियों से जूझ रही थी। उस बटालियन में रहते हुए, जमशेदपुर (बिहार) में संघर्ष के दौरान कुछ आतंकवादियों को पकड़ने हेतु, मुझे पारितोषिक मिला।

उस के उपरान्त, मेरा स्थानांतरण ग्रुप केन्द्र रामपुर में हो गया और वहाँ दो-ढाई साल रहने के बाद, मेरी पोस्टिंग 2 बटालियन में हो गई, जिसका हेडक्वार्टर उस समय ओखा (नागालैंड) था। वहाँ ट्रेनिंग करने के बाद, मेरी कम्पनी कोहिमा (नागालैंड) आ गई, जहां हमें 'स्टेटिक ड्यूटी' मिली।

अचानक सितम्बर 78 को, मेरी बटालियन की सभी कम्पनियों को तुरन्त गौहाटी जाने का आदेश मिला। तब हमें पता लगा कि 22 सितम्बर 78 को असम-बन्द की घोषणा हो चुकी है। जब हम गौहाटी पहुँचे, तब असम पुलिस के उच्चाधिकारी बड़ी बेसब्री से के० रि० पु० बल का इन्तज़ार कर रहे थे। वहाँ पहुँचते ही, ड्यूटियाँ लगना शुरू हो गईं; मेरी कम्पनी नार्थ (उत्तरी) लखीमपुर भेजी गई; वहाँ कभी जोरहाट, कभी तिनसुकिया, तो कभी डिबरूगढ़ न्याय-व्यवस्था हेतु हम आते जाते रहे। पहले हफ्ते मार्च 79 को, हमें ज़खई जाना था, मैंने राशन तथा आपरेशनल हथियार व अन्य सामान अलग गाड़ी में रखवा लिए। असमियों पर नागाओं के अतिक्रमण से निपटने के लिए, हमारी पास की बटालियनों ने पहले ही मोर्चा सम्भाल लिया था। अन्दरूनी तनाव काफ़ी बढ़ता देखकर, मेरी यूनिट को भी वहीं भेज दिया गया और हमारे साथ-साथ, 16 बटालियन असम राइफल्स व 18 बटालियन के० रि० पु० बल को भी अलग-अलग जिम्मेदारियाँ बाँट दी गयीं।

घने जंगल में हमारी तैनाती होने के कारण, हमने सब मुसीबतों का सामना करने के लिए अपना डिफेंस तैयार किया। स्टेट इन्टेलीजेंस आदि से हमें यह सूचना मिलती रही कि उपद्रवी नागा अमुक रास्ते से अमुक जंगल में हैं और उन पर कौन-कौन से हथियार हैं। हम बड़ी चिन्ता में त्रस्त थे, लेकिन श्री हरवंश सिंह राम सहायक कमाडैंट समय-समय पर वहाँ पहुँच कर हम सभी को हिम्मत बँधाते रहे।

अन्त में, मोर्चे का समय आ ही गया। वह 25 मार्च 79 की भयानक रात थी। चारों ओर वर्षा ही वर्षा हो रही थी; घन-घोर घटाओं में गर्जन-तर्जन करती हुई बिजली चमक रही थी। अचानक रात के 8 बजे, हमारे कैम्प के ऊपर एल०एम०जी० का बर्स्टफायर हुआ। हमारे कैम्प के चारों तरफ भी, एल०एम०जी० पोस्ट लगी हुई थी। सन्तरियों के अलावा, हमारी एक सेक्शन भी पैट्रोलिंग कर रही थी। उसके हवल्दार देवीदत्त ने तुरन्त कैम्प स्टैंड टू कर दिया। अपना दिन भर का काम छोड़कर, मैंने भी अपनी पोजीशन ली; परन्तु यह वह मोर्चा था, जिस ओर से फायर आया था। सन्तरी और हवल्दार देवीदत्त ने फायर वाली जगह की ओर संकेत किया। बिना कोई क्षण बर्वाद किये, मैंने खुद रायफल ग्रिनेड से उस ओर फायर किया, जिससे कैम्प व

जवान सुरक्षित रहें । उस ग्रेनेड के फेंकने के बाद हम पर फायर आना बन्द हो गया; लेकिन तूफ़ान और वर्षा के मुचैटे सहते हुए हम वहाँ डटे रहे।

इसकी सूचना शीघ्र हमने डी०सी०ओ० हरवंशसिंह राम साहब को भेजी। उन्होंने नफ़री और भेजने के बारे में पूछा। नफ़री मेरे पास थी ही, सो मैंने मना कर दिया। जब उनसे बात कर मैं जवानों का हौंसला बढ़ाते हुए, अपने मोर्चे पर (रिगंते हुए) पहुँचा ही था कि लगभग पौने दस बजे पुनः एल०एम०जी० का बर्स्ट कैम्प पर हुआ । इसके जवाब में, मैंने भी एक छोटा बर्स्ट करवाया, जिससे नागाओं को पता लगे कि हम भी ईंट का जवाब पत्थर से दे सकते हैं। इसके उपरान्त कोई फायर तो नहीं हुआ; किन्तु रात के दो बजे, हमें जंगल में कुछ आवाजें चलने की आईं। उस ओर हवल्दार देवीदत्त का मोर्चा काफ़ी नज़दीक पड़ता था ; वह मुझे अपने मोर्चे में ले गया। जैसे ही मैंने चलने की आवाज़ सुनी, मैंने फायर करने के आदेश दे दिये। अन्धेरी रात में स्पष्ट न दिखने के कारण टार्गेट हिट न हो सका। फिर भी हम 26 मार्च 79 की सुबह तक कीचड़ व वर्षों में डटे रहे और स्टैण्ड डाउन से पहले, हमने एक सर्चिंग पार्टी भी भेजी; किन्तु बीहड़ वनों के कारण, कोई सफलता हमें प्राप्त नहीं हुई। फिर भी वह जान जोखिम की विकट रात थी। जब कभी उस रात की याद आती है, तब शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

विज्ञान के चढ़ते चरण

• भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने पटसन के बाल और कूड़े से हार्ड बोर्ड, पेपर बोर्ड और क्राफ्ट पेपर बनाये हैं, तथा केले के तने और अनन्नास के पत्तों से कपड़ा और कपास व पटसन के कूड़े से कपड़े व कम्बल तैयार किये हैं।

• रूस चिकित्सक श्व्यात स्लब फ्योदोरोव का दावा है कि 10 मिनट के आपरेशन से, नज़दीक की दृष्टि कमज़ोरी को ठीक किया जा सकता है। आँख के श्वेत मंडल के बीच और किनारे की वक्रता की सतह कुछ छीलकर और ठीक आकार दे कर, ऐसे 500 सफल आपरेशन हो चुके हैं।

• सरलतापूर्वक प्रसव के लिए, अब आक्सीटोसिन की गोलियाँ भी उसके इंजेक्शन के अलावा तैयार की गई हैं, जिनको हर आध घंटे बाद चूसा जा सकता है।

• सिसपरडर्म नामक एक कृत्रिम त्वचा तैयार की गई है, जो आग से जले रोगी के लिए उत्तम तथा सस्ता उपचार है ।

• मनुष्य मुख्यकर मधुमेह रोगी और शराबी की जरावस्था रोकने के लिए डिसूमेरोल और काउमाडिन दवायें बड़ी लाभकर सिद्ध हुई हैं।

• केदारनाथ की घाटी में एक ऐसा पत्थर मिला है जो लाल है तथा कुछ ऐसे पत्थरों पर सुनहरी लकीरें हैं। सरसों के तेल में डुबोने पर मोमबत्ती की तरह यह जलने लगता है।

असम - वन की दुःखद घटना

ले०—श्री पी० के० मेनन

रेंगमा, नम्भार, दोयांग के घने आरक्षित वनों से सुबह का कुहासा बस उठ ही रहा था। वनों को काट-साफ़ किये भाग के निवासी गहरी निद्रा में पड़े थे। सर्वत्र पूर्ण शान्ति विराज रही थी, किन्तु इन छली वनों में सब कुछ ठीक नहीं था। इनमें छिपे हुये बैठे थे —भय, घृणा और सर्वनाश ।

उस अभागे प्रात के 3.30 बजे के लगभग वे अकाण्ड ताण्डव करने लगे। सोते हुये निवासियों ने नागाओं के युग-परिचित घोर युद्ध घोष सुने। अनेक तो समझ ही नहीं पाये कि यह सब कुछ क्या हो रहा है। उस शांत घने कोहरे में न तो कुछ दीख रहा था और न ही शक़ किया जा सकता था।

सहसा लपटों को उठते देखकर, वृद्धों के मस्तिष्कों में तुरन्त साफ़ तथ्य उभर आया। अब वे पूरे पूरे जाग चुके थे; उन्होंने अब भी निरापद ग्रामीणों को चिल्ला चिल्ला कर चेतावनी दी ; कितनों को तो वह चेतावनी बहुत बाद में मिली, क्योंकि ऐसी दुर्घटना की कभी स्वप्न में भी किसी को आशा नहीं थी।

दुष्ट नागा लोग विजयी सेना का सा गर्व अनुभव कर रहे थे; किन्तु अन्तर यह था कि वे दुष्ट, अपने ही देशवासियों का —अरक्षित, शान्तिमय बेचार असमियों का — संहार कर रहे थे।

आक्रमण करने की उनकी योजना शत-प्रतिशत सफल रही थी। नम्भर दक्षिण-पूर्वीय दोयांग व रेंगांमा पानी के आरक्षित वनों के कम से कम 16 गाँवों में उन्होंने खून-खच्चरी की थी। उनके अत्याचार तीन-चार घंटे तक चलते रहे थे।

असम ग्रामीण इधर-उधर बेतहाशा भागे और कुछ भाग्यशाली घने वनों में जा छिपे ; किन्तु सेमा नागाओं की चिर-स्थायी रक्त-पिपासा ने बिल्ली-चूहे की भाँति असमियों को खदेड़ मारा।

इन उपरलिख़ित 16 ग्रामों में नागाओं की गति इतनी तेज थी कि ग्रामीणों को कुछ भी करने का कोई अवसर नही मिला। 100 वर्ग मील के क्षेत्र में 250 से अधिक ग्राम भस्म हो गये । घरों के पास मृतक पड़े थे।

तब भी, अनेकों ने उन मतफिरे नागाओं के चंगुल से अपने प्राण बचा लिए। उस दृश्य को देखकर हृदय फटा जाता था, जहाँ बदमाशों ने एक साल वर्ष के बालक का वध किया था। उस बच्चे की मृत देह घंटों मार्ग के किनारे बुरी स्थिति में पड़ी रही। इसी भाँति, एक तीन वर्ष के बच्चे को मरा पाया, जिसकी छाती छै इंच गहरी और आठ इंच लम्बी चाक कर दी गयी थी।

बाद में, जब अधिकारियों ने दुर्घटना ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया, तब उस सर्वनाश के पैमाने का पता लगा। बीस-तीस लोग आरक्षित वनों को छोड़ भागे थे।

जुल्मोसितम करने के उपरान्त, सेना नागा तुरन्त ही चम्पत हो गये और उनका कोई पता नहीं लगा। असम पुलिस की चौकी ने इन नागाओं को रोका और कम से कम 16 बन्दी बना लिये।

कितनी ही कथायें प्रचलित हैं कि सेमा नागा उन असमी ग्रामों पर कैसे पहुँचे। कुछ का कहना है कि 5 जनवरी 79 को "शुक्रवार बाजारों' में सैकड़ों नागा दीमापुर से बसों और रेलों में बोकाजन, चंगाजन तथा अनेक दूसरे ग्रामों में आने लगे। निश्छल असमियों ने बिल्कुल साधारण बात समझी और वे प्रसन्न हुए कि साप्ताहिक पैंठों में इससे बिक्री बढ़ने की आशा थी। तब वे नागा लोग दो-दो, तीन-तीन करके वनों में घुस गये और 4 जनवरी की रात्रि को असमी ग्रामों के वनों में चारों ओर फैल गये।



सर्वनाश के मौन गवाह : जले शहतीर

दूसरे अनुमान के अनुसार, 4 जनवरी 79 की संध्या को नागाओं ने अपनी सीमा से दूरी तय की तथा मध्यरात्रि तक ग्रामों में पहुँच गये।

धावे की सूचना पाते ही, असम और नागालैंड के न्याय-व्यवस्था तंत्र ने अपने प्रसाधन जुटाये। सशस्त्र-पुलिस जनों के लिए मोटर वाहनों को माँगा गया। के० रि० पु० बल की 2 बटालियनें और दो ही असम रायफल्स की बटालियनें, असम सरकर

की अन्तरराज्यीय सीमा पर असम की ओर दौड़ा दी गई। साथ ही अन्तरराज्यीय सीमा पर कई असम पुलिस सीमा की चौकियां स्थापित की गई । अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक के पद का एक वरिष्ठ अधिकारी इस अभियान का प्रभारी बनाया गया। कार्रवाइयों के वित्तीय आदेश देने के लिए, आयुक्त के पद का एक वरिष्ठ नागरिक अधिकारी नियुक्त किया गया। अपने-अपने दलों की सेवा की निगहबानी के लिए, के० रि० पु० बल, असम रायफल्स तथा असम पुलिस के कमांडैंटों, उपायुक्त तथा पुलिसाध्यक्षों को घटनाग्रस्त क्षेत्रों में शिविर लगाने को आदेश दिये गये । केन्द्र तथा राज्यों के मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों ने घटना स्थल का दौरा किया।

नागालैंड पुलिस ने उस आर० जी० एन० के (जिसने 1963 में नागालैंड के राज्यपाल को आत्मसमर्पण किया था) एक भूतपूर्व ब्रिगेडियर सहित 49 संदिग्ध व्यक्तियों को बन्दी किया। असम पुलिस ने 50 नागाओं को इस दुर्घटना में हाथ होने के सन्देह में पकड़ा।

इस प्रकार, दोनों ओर के न्याय तथा व्यवस्था तंत्रों ने फुर्ती तथा प्रभावी रूप से काम किया। ग्रामीणों में खोया हुआ विश्वास फिर से जागा और शरणार्थी शिबिरों में वे लौटने लगे। मृतकों के निकटतम सम्बन्धियों को अनुदान स्वीकृत हुए।

असम सरकार के निवेदन पर, 18 बटालियन (के० रि० पु० बल) जो 3 जनवरी 79 को नागालैंड गयी थी, असम में फिर लगा दी गई। कम्पनियाँ अन्दर आईं, उन्होंने अपनी चौकियँ बनाई और आदेश प्राप्त सेवायें करनी प्रारम्भ कर दीं।

कमान-रचना को विवेकपूर्ण कर, असम पुलिस आधिकारियों ने परिचालन क्षेत्र छै सेक्टरों में विभक्त कर दिया तथा हरेक को या तो असम रायफल्स के एक लेफ्टीनेन्ट कर्नल या के० रि० पु० बल अथवा असम पुलिस के कमांडैंट के कमान में रख दिया। इन सेक्टरों में, तीनों दलों के पद स्थान मिला दिये गये, जिससे सब विषयों में आपस में निकट सम्पर्क रहे । साथ में, नागालैंड सशस्त्र पुलिस और नागालैंड में सीमा के निकट निरत के० रि० पु० बल की बटालियन से इन दलों का निकट सम्पर्क बना रहता है। अतएव, किसी भी सन्देह या ग़लत-फ़हमी को सरलतापूर्वक दूर किया जा सकता है।

के० रि० पु० बल ने अन्तर्राज्यीय सीमा पर निष्पक्षता तथा नितान्त न्यायसंगति का रुख रखा है और उसको दोनों ओर की जनता द्वारा बारम्बार सराहा गया है।

असम रायफल्स और असम पुलिस के साथ बारह घंटों से अधिक प्रहरी सेवा द्वारा असम की जनता में विश्वास फिर उत्पन्न कर के० रि० पु० बल के जवान यह देख कर फूले नहीं समाते हैं कि दुःखार्त्त लोग अपने पुराने घरों को लौट रहे हैं और वे हरेक वस्तु के पुनर्निमाण में जुट गये हैं।

प्राण रक्षा

नीमच के नया गाँव में अपने कुँए की जुताई करते समय, लक्ष्मीचन्द और प्रभुलाल 60 फीट गहरे उस कुँए में गिर पड़े। तुरन्त इस दुर्घटना की सूचना राजस्थान के

चित्तौड़गढ़ जिले में तैनात के० रि० पु० बल के डीवाइ० एस० पी० एच. कामथ को दी गई। वह तुरन्त अपने जवानों के साथ घटनास्थल पर पहुँचे तथा डूबे हुये उन दोनों को बेहोशी की हालत में निकाला और प्राथमिक चिकित्सा करने के बाद, उन्हें नया गाँव के अस्पताल में भर्ती कराया।

स्थानीय ग्रामवासियों ने के० रि० पु० बल द्वारा उन दो युवकों के प्राण बचाने की बड़ी सराहना की।

मिज़ोरम-निर्वाचन में के० रि० पु० बल का सहयोग

दिनांक 11 नवम्बर 1978 को मिज़ोरम विधान सभा भंग हो गई। निर्वाचन आयोग ने 24 अप्रेल 79 और 27, अप्रेल 1979 को उसके चुनाव होने घोषित किए।

मिज़ोरम के केन्द्र शासित क्षेत्र में 5 प्रमुख राजनीतिक दल थे । चुनाव की तिथियों की घोषणा होते ही, विभिन्न राजनीतिक दलों ने चुनाव अभियान आरम्भ कर दिया। मिज़ोरम राष्ट्रीय मोर्चे में फूट होने के कारण, ऐसा भय था कि छिपे विद्रोहियों के विविध दल अपनी मन पन्सद सरकार बनाने के लिए किसी न किसी राजनीतिक दल का समर्थन करेंगे। इस लक्ष्य को पाने के लिए, ऐसा सन्देह था कि कहीं उपद्रव नहीं हो और शान्तिपूर्वक मतदान में बाधा पड़े। इसलिए, सुरक्षा दलों को अत्यधिक सावधान होना पड़ा। नागरिक प्रशासन कोई ख़तरा मोल लेना नहीं चाहता था। वहाँ पर निरत के० रि० पु० बल की यूनिट के अतिरिक्त, उसने दो और माँगी।

वहाँ पर के० रि० पु० बल के ये उत्तर-दायित्व थे—विभिन्न मतदान केन्द्रों पर जाते समय मतदान कराने वाली टुकड़ियों की सुरक्षा; मतदान मन्डपों को स्थापना; मतदान केन्द्रों और मतदान कर्मचारियों, मतदाताओं पर किसी भी विरोधी गतिविधि को रोकना; लौटते समय मतदान कर्मचारियों और मतपेटियों की सुरक्षा ।

चुनाव के समय, सीधा प्रभाव डालने वाला एक अन्य कर्त्तव्य था-संचार ब्यवस्था । कुछ मतदान केन्द्र तो बटालियनों के मुख्यालयों से बड़ी दूर-80 से 236 कि० मी० तक थे। कहीं कहीं तो मतदान केन्द्रों को स्थापित करने के लिए छै-छै दिन पैदल चलना पड़ा।

दोनों दिन निर्वाचन शान्तिपूर्ण रहा। पकड़-धकड़ के विरुद्ध कोई दुर्घटना नहीं हुई, जिससे के० रि० पु० बल की कर्तव्य-निष्ठा का प्रमाण मिलता है।

<u>कहानी :</u>

सच्चा प्रेम

ले० श्री आइ० एस० डागर

नीलम से विवाह हुये लगभग दो वर्ष बीत चुके थे, किन्तु रमेश अपनी पत्नी से से उसी आसक्ति से प्रीति करता था, जैसे उसकी पहली सुहागरात हो। दफ्तर से आने के पश्चात्, कोई फ़ौजी अफसर मेस में तफ़रीह करने जाता था, तो कोई किसी पार्टी में अकेला जाम पर जाम पीता होता था; परन्तु रमेश को अब कभी किसी ने अकेला नहीं देखा था। सब यही कहते थे कि "कैप्टन की शादी होते ही, हुलिया ही बदल गया है।"

नीलम भी उसे जीजान से चाहती थी। उसकी बस यही लालसा बनी रहती थी। "ना मैं देखूँ और को, ना तोय देखन देऊं।" उसकी पड़ोसिने भांति-भांति की फबतियाँ कसतीं—भौंरे और कली की उपमा देती चकई-चकवा कहकर पुकारतीं। परन्तु नीलम इन सब की क़तई चिन्ता नहीं करते हुये, सदा अपने दाम्पत्य रस में डूबी रहती थी।

आज की शाम भी कोई अपवाद नहीं थी; किन्तु रमेश को कुछ अजीब सा प्रतीत हो रहा था। अन्य दिन की भाँति, नीलम उसे द्वार पर स्वागतार्थ मिलने नहीं आई थी, जब कि वह स्कूटर का हार्न बजा-बजा कर थक गया था।

क्रोधावेश में जब रमेश अन्दर घुसा, तब नीलम को पलंग पर आराम करते पाया। 'यह क्या बेहूदा हरकत' कहते हुये रमेश ने नीलम को झकझोरा ; किन्तु वह पड़ी पड़ीं मुँह बिचकाती रही "डियर., अब मेरा रुतवा बढ़ गया है"

"सौ कैसे ?"

"आज जब मैने नौकरानी से इमली खाने की इच्छा प्रकट की, तब वह हँस पड़ी "मेम साब कुछ गड़बड़ है क्या ?" फिर पैर देखते हुये बोली-बिल्कुल सच, तुम्हारे तो पैर भी भारी हैं। मैं तब भी कुछ नहीं समझी, तब उसने वृद्धा सुलभ स्वभाव से मेरे गाल थपथोड़े—"अब खुशियाँ मनाओ। तुम माँ बनने वाली हो"—कहती हुयी नीलम के गाल लज़्जाभ से कुछ लाल हो गये और रही सही कमी रमेश ने अपने प्रचुम्बनों से पूरी कर दी। वे दूध से धुले कन्धारी अनार लगने लगे।

वह रात बड़ी दर्दनाक थी। नीलम को असह्य वेदना थी। उसकी तबियत खराब होती चली जा रही थी। नर्स उसके सिराहने लगातार बैठी थीं; डॉक्टर उसे कभी गोली दे रहा था, तो कभी मिक्सचर और अन्त में हारकर इन्जेक्शन; किन्तु नीलम की दशा ऐसी थी कि मर्ज़ बढ़ता ही जा रहा था, ज्यों-ज्यों दवा की जा रही थी।

तभी नीलम ने अतीव कठिनता से नेत्र खोले और धीरे धीरे बुदबुदाया "रमेश—मेरे निकट आओ"। रमेश को ऐसा लगा, मानों किसी ने वक्ष-स्थल पर मर्मान्तक चोट की हो। बज्र हृदय कर जब वह आगे बढा, तो उसे श्रवणगत हो रहा था—'देखो, हमने कितने सुन्दर स्वप्न संजोये थे ; उज्जवल भविष्य की कैसी आशायें जगाई थीं। तुम्हें मेरे प्यार...की सौगन्ध, उन्हें तुम पूरा...अवश्य ..." वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था, कि

नीलम ने नेत्र विस्फारित कर दिये।

डाक्टरों ने उसे बचाने के भरसक यत्न किये ; और वे गर्भस्थ शिशु को बचाने में सफल भी हुये; किन्तु दुर्दैव ने नीलम को उससे सदा के लिये छीन लिया। रमेश पर से मानो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। कई दिन तक, वह विक्षिप्त की भाँति आचरण करता रहा : न उसे दिन में भूख थी और न रात को नींद । उसे विश्वास ही नहीं होता था कि नीलम उसे छोड़कर सदा के लिये चली गयी है।

समय की गति अवाध है। दिन बीते, मास बीते, और अब वर्ष बीतने को आ गया, परन्तु कैप्टन रमेश अभी तक नीलम की याद में पागल रहता था। उसका हृदय कभी यह गवाही नहीं देता कि नीलम कभी उसे दग़ा भी दे सकती है ; उसे पूर्ण विश्वास था कि वह एक न एक दिन उसे अवश्य मिलेगी ; किन्तु यह सब उसका एकमात्र भ्रम था। वह सर्वथा भूल जाता था कि उसने अपने हाथों अपनी प्राण वल्लभा को चिता पर लिटाया था; अन्त्येष्टि की थी। वह जिधर देखता था, जिस वस्तु को देखता था; उसमें नीलम की ही मूर्ति दिखाई देती थी। वह कभी कभी घबड़ा कर उसे पकड़ने दौड़ता; परन्तु हाथ मलता रह जाता। वह तब ठण्डी सांस लेता—"काश हम मिले न होते—ग्रन्थि बंधन से बंधे न होते।"

आज भी ऐसी ही निश्वास उसने तारे गिनगिन कर ली ; परन्तु यह क्या उसी समय उसकी हत्तन्त्री में किसी की चूड़ियों की झन्कार गूँज गयी। उठकर देखा तो वस्तुतः एक चलती फिरती युवती दिखाई दी— बिल्कुल नीलम जैसा क़द;—सफ़ेद साड़ी; कन्ट्रास्ट का ब्लाउज़ । परन्तु ऐसा धोखा वह अक्सर खा जाता था। अतः आज भी मतिभ्रांति समझ कर वह फिर लेट गया। परन्तु उस सफ़ेद साड़ी की गतिविधि देखने को वह लालायित हो उठा; उसने उठकर शीशे के दरवाजे से परदा हटा दिया और लगा एकटक निहारने । तभी उसे सुधि आयी कि यह सब सपना है—'नीलम को बिछुड़े एक वर्ष हो चुका हैं ।' उसने तभी मुखफेरा परन्तु यह क्या ? वह फिर उसके नेत्रों के सम्मुख आ खड़ी हुई। रमेश का सब्र समाप्त हो गया। उसने दौड़ कर उस छाया को दबोच ही तो लिया। जब चिबुक उठाये, तब वह दंग रह गया। वह नीलम नहीं होकर कोई अन्य रमणी थी। वह चिल्ला उठा "आज फिर धोखा"

"घोखा नहीं; आशा"

"आशा ही ने तो कितनी बार धोखा दिया है।"

"किन्तु आज वह सौ-सौ प्राणों से तुम्हारी होने आई हैं।'

रमेश को करेन्ट सी लगी; उसने उस रमणी को तुरन्त छोड़ दिया—कौन, तुम ? वह कॉलेज वाली आशा"

"और तुम किसे समझ रहे थे"

"अरे वही मनुष्य को पग-पग पर छलने वाली अभिलाषा" कह कर रमेश रुका और फिर वह बोला "तुम कौन सी कम हो ? कहो, तुम्हारे उन डॉक्टर प्रेमी का क्या हुआ"

"क्यों कटे पर नमक छिड़कते हो, मानों तुम्हें कुछ मालूम ही नहीं"

"सच ! मुझे नीलम के विवाह के बाद तुम्हारा कुछ भी पता नहीं रहा। पहले तो दाम्पत्य प्रेम में मग्न और उसके बाद उसके विछोह में मुझे दीन दुनिया की सुधि ही नहीं रही"

"तो सुनो, जब तुमने मेरे प्रेम को ठुकरा दिया, तब मैं तुम्हें चिढ़ाने को उस निर्मोही डॉक्टर के साथ घूमने चली जाती थी।"

"पर उसका हुआ क्या ?"

"जो होना चाहिए था। उसका पास पोर्ट बना ही हुआ था। एक दिन कनाडा चला गया और सुनते हैं कि किसी गोरी चमड़ी से वहीं शादी कर ली है।

"ईश्वर ने तुम्हें बहुत बचाया"

"मैं स्वयं यही सोचती हूँ। तभी तो तुम्हारे पास आई हूँ। पहले तो बहुत डरी; परन्तु फिर मैंने समझा कि तुम्हें नहीं सही, पर नीलम बहिन को तो अपने पुत्र के लिए मेरी सख्त जरूरत है।" कहते हुए पास में सोये हुए एक वर्षीय बालक को गोद में लेकर उसे खिलाने लगी—"ये बड़ी बड़ी आँखें, चाँद सा मुखड़ा, बिल्कुल पिता पर गया है।"

इतना सुनना था कि रमेश ने आशा को अंकवार लिया और रातभर दोनों किसी अभूतपूर्व प्रानन्द में खोये रहे। दूसरे ही दिन रमेश और आशा की शादी की चर्चा सारे सैनिक कैम्पस में रुई की भाँति धुन गई।

जेबकतरा गिरफ्तार

दिनांक 7 अप्रैल 79 को, का० मुहम्मद रसीद भुवनेश्वर रेल स्टेशन पर स० इ० हरनाम सिंह तथा हे० का० के.पी. सिंह को रेल पर चढ़ाने गया। जब भारी भीड़ में वह बिस्तर बोरिया रेल में रख रहा था, रसीद ने किसी यात्री की जेब काटते हुये एक जेबकतरे को देखा। उसने उसे तुरन्त पकड़ लिया। जेबकतरे ने रसीद पर हमला करने को चाकू निकाल लिया। बिना अपने प्राणों की चिंता किये हुये, रसीद ने जेब कतरे की मुट्ठी से चाकू छीन लिया। का० मार्कण्डेय डंग ने जो स्टेशन पर ड्यूटी कर रहा था, जेबकतरे को पकड़ने में रसीद की मदद की। उन्होंने रेलवे पुलिस को जेबकतरा पकड़ा दिया।

का० मुहम्मद रसीद और का० मार्कण्डेय डंग को कमांडेंट ने क्रमशः 50 और 25 रु० का नकद पुरस्कार दिया।

सर्वोत्तम बटालियन ट्राफी

सन् 1973 से चालित परिचालन ट्राफी का नाम सर्वोत्तम बटालियन ट्राफी हो रहा है । अभी तक यह ट्राफी पूर्व क्षेत्र के अग्रणी/परिचलन मंडल में निरत ही बटालियनों को परिचालन-दक्षता के आधार पर केवल दी जाती थी। सभी बटालियनों को इस प्रतियोगिता में सक्रिय भाग लेने के लिये तथा एक स्वस्थ प्रतिद्वन्द्वता स्थापित करने के

वास्ते, अब यह **सर्वोत्तम बटालियन ट्राफी** कहलायी जायेगी।

अपने रेंज में सर्वोत्तम बटालियन के लिये निज सेक्टर महानिरीक्षक सिफ़ारिश करते समय, पुलिस उपमहानिरीक्षक को इन बातों को ध्यान में रखना होगा—कल्याण, प्रशासन, अनुशासन, मोटर परिवहन दक्षता, प्रशिक्षण, खेलों में योगदान, शिक्षा, संचार व्यवस्था तथा परिचालन कुशलता।

पुलिस महानिरीक्षक भी अपने सेक्टर की सर्वोत्तम बटालियन चयन करते समय इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर महानिदेशक को सिफ़ारिश करेंगे । इन चारों सेक्टरों द्वारा नामांकित बटालियनों में से एक को महानिदेशक चयन करेंगे।

यह ट्राफी वार्षिकोत्सव के समय, सर्वोत्तम बटालियन को प्रदान की जाया करेगी।

हरीचन्द की पदोन्नति

इस वर्ष एशियायी खेलों में दो स्वर्ण-पदक पाने वाले इ० हरीचन्द को डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर प्रोन्नत कर दिया गया है।

सूक्ति सुधा

(प्रस्तोता—श्री उगमा राम सोलंकी, उ०श्रे० लिपिक, महानिदेशालय)

• इन्द्रियों का सुख ही दुःख का कारण है।

• क्रोध, आत्मा का श्रृंगार बिगाड़ता है ।

• परमात्मा की निरन्तर याद से परम बल मिलता है।

• सृष्टि रूपी ड्रामा अनादि अविनाशी है। ड्रामे के इस गुह्य राज को ज्यों का त्यों जानने वाले ही सदा हर्षित रहेंगे।

(**आधार :**—अव्यक्त वाणियों के संग्रह)

यह भी खूब रही

लाई के विषय में बोलती हुयी पड़ोसन —अरे सुने है, लाई जो तू लाई, उसकी मैंने करवाई पिलाई। पर जब उसके तेल से बत्ती जलाई, तब उसने वह झरप फैलाई कि मेरी आँख आँसू भर लाई।

एक बालक को गधा पकड़े ले जाते देखकर एक पुलिस सिपाही—भाई, इतना कसकर गधे को क्यों पकड़ रखा है।

बालक—कि कहीं यह भाग कर पुलिस में भर्ती नहीं हो जाये।

पत्नी—वह तो कहता है कि तुमसे उसका नज़दीकी रिश्ता है।

पति—अरे वह तो गधा है।

पत्नी—ऐसा तो होना ही था।

राम—इसके लिए मैं आपको दाद देता है।

श्याम—मेरे तो खाज पहले ही है, क्यों बेमौत मार रहे हो, अब दाद भी देकर।
अध्यापक—उम्र के मुकावले तेरा बड़ा शरीर है।
रिंकू—मुझे आज पता लगा कि आप मुझे बड़ा शरीर क्यों कहते हैं।
ज्योतिषी—तुम्हारा पुत्र सचमुच में कोई देव बनेगा, नवाब।
नवाब—बन्द करो बकवास। मैं उसे कभी देवदानव नहीं बनने दूंगा।

पहेलियाँ

[प्रोस्तोता—दफ्तरी गणेश प्रसाद, उपमहानिरीक्षक कार्यालय, श्रीनगर]

दो मुँह नीचे, एक मुँह ऊपर,
आधा मानव निगले खड़ा।
सब पै जामा फिर वह होता,
चाहे छोटा चाहे बड़ा ॥1॥
लम्बा जवान, कमर मुट्ठी में,
मुँह में लोह लगाम।
गड्ढे में सिर दे दे मारे,
ओ खल! नारि गुलाम ॥2॥
तीन अक्षर का नाम हे मेरा,
सब्जी सब कोई खाय।
पहला अक्षर कट गया,
शिव संग व्याही जाय ॥3॥

उत्तर—1 पैजामा 2. मूसल 3. मुगोरी

सनकों के कीर्तिमानों के स्थापक

ले—श्री एम० पी० नैंथानियल

अनादि काल से, मनुष्य लोकप्रियता मोर ख्याति के लिये लालायित रहा है। यद्यपि कुछ महापुरुषों ने बिना इच्छा के कीर्ति पाली, अन्य अनेकों को मान पाने के लिए तथा संकट मोल लेने की भावना को तृप्त करने के हेतु, लगभग असम्भव कामों को करना पड़ा है। आजकल, **गिन्नेस** की 'रिकार्ड-पुस्तक' में अमरनाम पाने के लिए लोगों ने विचित्र तथा हास्यजनक काम किये हैं।

मेंढक निगलना—यद्यपि अद्भुत लगता है, किन्तु कैम्ब्रेज (अमेरिका) के पॉल बॉसले ने 15 मि० 12 से० में पाँच दर्जन प्याजों का अचार खा कर, अचार खाने में विश्व का नया कीर्तिमान स्थापित किया।

क्या कभी मेंढक निगलने की चैम्पियनशिप सुनी? मगर आयरलैंड वासी 42 वर्षीय मॅकनामारा का 5000 दर्शकों के सामने 65 सेकन्ड में पांच मेंढक निगल कर एक विश्व रिकार्ड कायम करने का दावा है। अखिल आयरलैंड जीवित मेंढक निगलने प्रतियोगिता को पाँच प्रतिद्वन्द्वियों को हराने वाले, मॅक नामारा ने बाद में कहा—'मैंने कभी इससे बेहतर नहीं महसूस किया अन्य और लोगों को इसे करना चाहिये।'

यदि मूछों की लम्बाई ही पुरुषत्व का द्योतक माना जाये, तो शिकागो का 30 वर्षीय स्कूल-अध्यापक रिचार्ड साउलिगनिल सर्वाधिक पुरुषोचित है। पिछले वर्ष के प्रारम्भ में शिकागो में हुयी मूंछ-प्रतियोगिता में, एक सिरे से दूसरे तक 16 इंच लम्बी मूंछ रखने का उसने सिरमौर जीता। यह प्रतियोगिता 30 वर्ष के बाद फिर शुरू हुई।

चुम्बन रंगरास—चुम्बन आनन्द है; किन्तु तब नहीं, जब कोई विश्व-रिकार्ड बनाना हो । अमरीकी युगल, रेब्लीज़ीनिया मौर बॉबी शर्लाक, द्वारा 130 घं० 2 मि. 18 से० के सबसे दीर्घकालीन चुम्बन ने, अफ्रीकी दम्पति, अङ्गे ओडेनडॉल तथा बिल्ली वेस्थुयोजेन, द्वारा 119 घं० 12 मि० के अविराम लम्बे चुम्बन का कीर्तिमान भंग किया है। अमरीकी जोड़े को चुम्बन के प्रत्येक घंटे के बाद, पांच मिनट का विराम, अल्वत्तः दिया गया।

ऐसा कहा जाता है कि कुछ लोग बात करते थकते ही नहीं हैं । शायद किसी औपचारिक प्रतियोगिता में प्रवेश कर वे रिकार्ड पुस्तक में नाम कमा सकें; परन्तु तब तक यह तथ्य स्वीकार करना पड़ेगा कि कनाडा के दो पत्रकारों ने रेडियो पर अविराम रिकार्ड वार्ता की। दिसम्बर 1974 में, दो कोलम्बियावासियों के 86 घंटेवाला पिछला कीर्तिमान, उन्होंने 87 घंटे क्यूबेक रेडियो पर वार्ता कर तोड़ दिया।

चक्का व नेजा फेंकने के रिकार्ड सुनना तो उचित है; किन्तु पिछले वर्ष लन्दन के निकट एवेल पर एक 20 वर्षीय अध्यापिका जेनेट थामसन ने दो पौंड की बेलन को 152'-3" फेंक कर रिकार्ड बनाया। एक अमरीकी शेरी सेलर द्वारा स्थापित पिछले रिकार्ड से वह7'-11" आगे था।

गिन्नेस की रिकार्ड-पुस्तक में अपने नाम पाने की सनक ने, दो मिन्नियापोलिस कालेज छात्र, वॉर्ड हॉकिन्स और बिलबीसे को 103 कम्बलों के 134 कि० ग्रा० से अधिक सर्वाधिक कष्टप्रद भार के नीचे सोने को प्रेरित किया। बीसे ने तो पांच घंटे शयन किया, जबकि हॉकिन्स ने उस भारी बोझ से पन्द्रह मिनट में ही पिंड छुड़ा लिया।

पिछले रिकार्ड से दुगना एक नया विश्व रिकार्ड कायम करने के लिए, चार सनकी अमेरिकियों ने जल के नीचे दो सिलेंडरों में 60 दिन बिताये।

ऐसा कहा जाता है कि कीर्ति की ललक अवस्था के साथ कम होती है, परन्तु

भूरेबालों वाली एक नोवा स्कोशिया प्रौढ़ा पर यह बात लागू नहीं होती, जिसने रेकार्ड-पुस्तक में नाम पाने के लिए 93 घंटे तक पढ़ा और बुना।

जागना—किन्तु क्या यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि एक नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए सैन डीगो के एक व्यापारी रावर्ट गाई ने लगातार 288 घंटे या 12 दिन जागकर कोई थकान के चिह्न नहीं प्रकट किये। पिछला रिकार्ड बनाने वाली दक्षिण अफ्रीका की गृहिणी बर्थावान दर मार्वे थी, जो 282 घं० 55 मि० जागती रही थी।

धूम्रपान—वर्ष भर हुक्का पीने वाले चैम्पियन का नाम सुनकर भौंहें चढ़ सकती हैं, किन्तु ऐसा दर असल हुआ जब ब्रिटेन वासी हैरोल्ड हन्काक ने 107 घं० 58 से० धूम्रपान किया। उसने सबसे अधिक तम्बाक पीते रहने पर 1,000 डालर जीते ।

मुक़दमेदारी—कचहुरी में हाज़िर होना बड़ा दुःखदायी होता है। इन्ही दिनों, लीड्स (इंगलैंड) का जॉर्ज ऑर्थर लिसट्रम विश्व रिकार्ड बनाने के लिए 592वीं बार न्यायालय में उपस्थित हुआ, जो सबसे पहले 1922 में मद्यपान के अपराध में कचहरी गया था। यह उसकी अन्तिम उपस्थिति, अपनी पिछली उपस्थिति से 24 घंटे के बाद ही शराबखोरी और उत्पात के कारण हुयी थी।

पैदल भ्रमण—एक नया कीर्तिमान स्थापित करने के खब्त के कारण एक ब्रिटिश वासी सैनिक सर्जेण्ट ने अविराम 385 कि० मी० चल कर, 371 कि० मी० का पिछला रिकार्ड भंग किया। एक और नये रिकार्ड बनाने की सनक में, चार बच्चों वाले विवाहित फ्रेड लांग ने प्रति घंटे पर पांच मिनट विश्राम ले लेकर, 480 कि मी० चलने का पिछला कीर्तिमान भंग किया।

ध्वजदण्ड पर बैठना—ध्वजदंड पर बैठने वाले विश्व चैम्पियन का दावा करने वाले, 71 वर्षीय रिचर्ड डिक्सी ब्लैण्डी को मृत्यु से आलिंगन करना पड़ा, जब शिकागो के उपनगर वाले वाणिज्य केन्द्र में 50 फूट के ध्वजदण्ड टूटने पर वह उस पर से गिर पड़ा; जिस पर बैठे उसे चार दिन हो गये थे— — —।

भारत—कीर्ति की इस दौड़ में भारतीय पीछे नहीं रहे हैं। 15 दिन अविराम चलने से सन्तुष्ट नहीं होकर, 26 वर्षीय कैम्बेटोरवासी एन० पार्थासाथी ने 24 घंटे में 86 कि० मी० किनारे-किनारे चलने में एक दूसरा रिकार्ड क़ायम किया है। उसकी अन्य विचित्र सफलताओं में हैं कूद-कूद कर पाँच कि० मी० की दूरी तय करना; एक टांग पर 30 घंटे अविराम खड़े रहना और 33 घंटे ऊपर निष्पलक निहारते रहना।

इन रिकार्ड-भंजकों पर दया आती है, क्योंकि इनके नाम गिन्नेस की रिकार्ड-पुस्तक में अधिक देर नहीं टिक पाते हैं। एक कीर्ति मान स्थापित होते ही, दूसरे प्रतिद्वन्द्वी उसको तोड़ने का यत्न शुरू कर देते हैं। इस प्रकार रिकार्ड जोड़ने-तोड़ने के करतब चलते रहते हैं; जो कीर्ति दिलाने के साथ-साथ, मानव-क्षमता से परे के यत्न भी कराते रहते हैं ।



प्रदर्शनी देखते हुए अतिथिगण

केन्द्रीय विद्यालय झड़ौदा कलां का वार्षिकोत्सव

केन्द्रीय विद्यालय, के० रि० पु० बल, झड़ौदा कलां ने 23 मार्च 1979 को अपना वार्षिकोत्सव मनाया। कार्यवाहक आयुक्त श्री एच० डी० गुलाटी मुख्य अतिथि थे तथा श्री के० दादाभाई उपमहानिरीक्षक, के० रि० पु० बल ने समारोह की अध्यक्षता की।

विधालय के बालचरों (स्काउटों) तथा पथ प्रदर्शकों (गाइडों) ने अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। मुख्य अतिथि श्री गुलाटी ने विधालय की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में विज्ञान, सामाजिक शिक्षा, भाषायें, चित्रकारी आदि विविधि विषयों के कक्ष थे। छात्रों द्वारा प्रस्तुत सीने और सुई के काम, विद्युदत पुर्जे और कार्यकर प्रतिरुप (मॉडेल) अत्यन्त आकर्षक थे। वह प्रदर्शनी छात्रों और अध्यापकों के कठोर परिश्रम की झाँकी थी।

प्रदर्शनी देखने के बाद, अतिथि मनोरंजन-कक्ष में गये, जहाँ सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। श्री चिन्तामणि पाण्डेय, अध्यक्ष, विधालय कार्यकारिणी

सामोता ने आतोथेयों का स्वागत किया। विधालय की प्रध्यापेका ने वार्षेक रिपोर्ट पढ़ी। स्कूल के चलाने में श्री पाण्डेय के सहयोग की उन्होंने सराहना की। अन्त में, मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में यह बताया कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने देश में 100 अन्य स्कूल खोलने का निर्णय किया है।

2 बटालियन की सेवा

नागालैंड के दुर्गम क्षेत्र में चार वर्ष की सेवावधि के उपरान्त, 2 बटालियन असम-नागालैंड-सीमा पर निरत की गयी। यहां की जलवायु निष्ठुर थी। वनों में मार्ग नहीं थे और सभी आनाजाना पैदल ही होता था। जल की जबरदस्त कमी थी और दूर-दूर से जवानों को पानी लाना पड़ता था। साथ में अनेकों नदी-नाले थे, जिन्हें वर्षा ऋतु में पार नहीं किया जा सकता था। नागालैंड सरकार ने यह स्वीकार कर लिया कि 5 जनवरी 79 के पश्चात् असम नागालैंड सीमा पर खोली गई नागालैंड सशस्त्र पुलिस की सभी चौकियाँ बन्द हो जायेंगी। नागा प्रधान ग्रामों में के० रि० पु० बल की नियुक्ति दोनों ही राज्यों को मंजूर थी; सो कितने ही स्थानों पर 2 बटालियन की टुकड़ियों ने नागा सशस्त्र पुलिस का स्थान लिया।

कई कठिनाइयों के होने पर भी, इस बटालियन ने इस दंगा ग्रस्त क्षेत्र में क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में भरसक यत्न किए। 4 मार्च को, असम सरकार के मख्य सचिव ने इस की कई बाहरी चौकियों का निरीक्षण किया। एक चौकी पर उन्होंने यह लिखा—"थोड़े ही समय में बनी शानदार चौकी; अत्यन्त ही प्रभावशालिनी।"

नीमच रेंज-सर्वोत्तम लक्ष्यभेदक

दिनांक 27 से 31 मार्च, 1979 तक, 13वीं अन्तर्रैञ्ज गोलीचालन प्रतियोगिता केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज I नीमच में आयोजित हुयी। नीमच रेंज प्रथम, गौहाटी रेंज द्वितीय तथा पटना रेंज तृतीय रही। विभिन्न अस्त्रों में परिणाम इस प्रकार रहे—

I रायफल

नीमच I, पटना II व कोहिमा III,

II पिस्तोल—गोहाटी I ; नीमच II व दिल्ली III.

III हल्की मशीनगन—गौहाटी I; पटना II व कोहिमा III

सम्मुख पृष्ठ पर-म्यूर नृत्य करता एक छात्र

अग्निशमन

दिनांक 27 अप्रेल 19 को अरुणाचल प्रदेश के लोहित ज़िले में रोइंग कस्बे में एक भयंकर आग लगी। 35 बटालियन की 'डी' कम्पनी के जवान तुरन्त घटनास्थल पर जा पहुंचे। रोइंग से 20 कि० मी० दूर शान्ति पुर की चौकी से भी सहायता बुलाई गई।

सूचना पाने के प्राध घंटे के अन्दर हो, श्री एस० बी० सिंह कमांडेंट, दो सहायक कमांडेंट, चिकित्सा अधिकारी, एक कम्पाउंडर तथा 63 जवान तेजू से भी दौड़े चले आये, जल का भरा टैंकर भी लाया गया, तब तक 100 घर स्वाहः हो गये थे ? उस अपराह्न तथा आगामी रात भर कठिन संघर्ष के बाद, आग पर काबू पाया गया। जब तक प्रशासन ने कोई दूसरा प्रबन्ध नहीं किया, हमारे जल ट्रक ने तीन दिन बेघर लोगों को जल प्रदान किया। बिना लाभ के आधार पर, अनिवार्य सुविधाओं को देने के लिये यूनिट कैंटीन खोली गई।

30 अप्रेल 79 को उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, मुख्य सचिव और अरुणाचल के पुलिस महानिरीक्षक ने के० रि० पु० बल की भूरि भूरि सराहना की उस समय समस्त रोइंग हमारी सामयिक सहायता से कृत्कृत्य था।



रजिस्टर्ड नं० 25627/74



पोनम नृत्य करती हुयी अरुणाचल प्रदेश की आदि किशोरियाँ

★ क्रै प ल र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

30 सितम्बर, 1979] खण्ड VIII अंक 4 [8 आश्विन , 1901





★ कै पल र ★

द्वैमासिक

हिन्दी संस्करण

खण्ड VIII

ग्रंक 4

30 सितम्बर,1979]

[8 प्राश्विन, 1901



मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी]** [छाया चित्रकार : **एस. के. खन्ना**

हिन्दी **सम्पादक :**

जे० एस० शर्मा

क्रम संख्या

विषय

I. श्री पी० आर० राजगोपाल का महानिदेशक-पद-ग्रहण व सन्देश

II. गौरवगाथा: पदक, प्रशंसा व पुरस्कार

III. लेख:

(i) साम्प्रदायिक दंगे की रचना, ले०-श्री के० एफ० रुस्तमजी

(ii) पुलिस का उत्तरदायित्व, ले०-श्री के० एम० माथुर

(iii) नेतृत्व के गुण, ले०-ले० कर्नल के० गोस्वामी

(iv) प्रकृति की संतान, ले०-श्री एच० एस० सेठी, जन सम्पर्क अधिकारी।

(v) क़ानून, और आन्तरिक सुरक्षा, ले०-श्री आई० एस० डागर

IV. कविता : मानवता, रचयिता-ह० विष्णुदत्त गुर्जर 50 बटा०

V. कहानी : मृगतृष्णा, ले०-ह० रमाशंकर पाण्डेय, 28 बटा०

VI. क्रीड़ा-क्षेत्रे :

VII. स्वास्थ्य-सन्देश : सूचीवेध चिकित्सा, ले०-श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

IX. विविध :

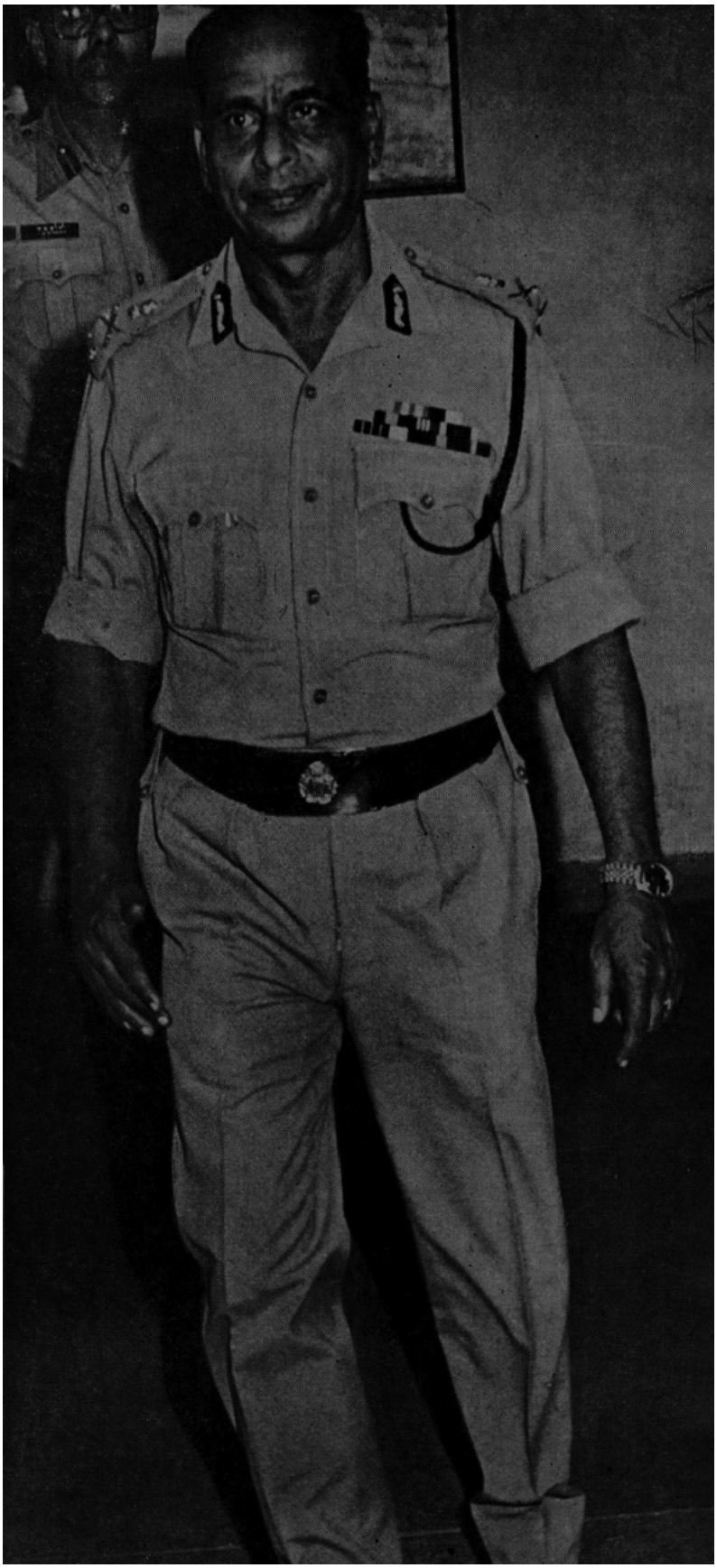
(क) सूक्ति सुधा

(ख) पहेलियाँ

(ग) यह भी खूब रही

मुखपृष्ठ : अरुणाचल में रज्जुमार्ग पर चलते के० रि० पु० बल के जवान।
सम्मुख पृष्ठ : मणिपुर में के० रि० पु० बल की चौकी।
23 पृष्ठ : अरुणाचल के आदिवासी से युद्ध नर्तकों वाला शिरस्त्राण पहनते हुये जवान ।

शुभागमन ! स्वागतम् !!



श्री पी०आर० राजगोपाल, नवनियुक्त महानिदेशक, के०रि०पु० बल

महानिदेशक का प्रथम संदेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के 74,000 सदस्य-परिवार की अध्यक्षता ग्रहण करते ही, मैं उन अनेक शहीदों को श्रद्धाञ्जलि अपित करता हूं, जो कभी इस बड़े परिवार के सदस्य थे तथा जिन्होंने इस महान देश तथा जनता के लिये अपनी सेवा की वेदी पर प्रारणों का बलिदान किया। उन विशिष्ट अधिकारी-वृन्द को भी मेरा प्रणाम है, जिन्होंने अतीत में इस बल के नेतृत्व प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस विशेष संकट-वेला में, इस बल के नेतृत्व को ग्रहण करने के आदेश को मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि इस महान उत्तरदायित्व में स्वयं को योग्य सिद्ध करने के लिये, वह मुझे बुद्धिमत्ता, सदाचार तथा कार्यकुशलता प्रदान करे !

दशाब्दियों से, के० रि० पुलिस इस राष्ट्र के जीवन की अभिन्न अंग बनी हुयी है। इस देश के नागरिक इसे वह बल मानते हैं, जो जनता के जीवन तथा सम्पदा को खतरा पहुँचाने वाले अभिद्रोही, उद्दण्ड तथा असामाजिक तत्वों के विरुद्ध न्याय निष्ठ नागरिकों के समर्थन तथा साहाय्य के हेतु उपस्थित रहता है। मुझे आशा है कि वर्षों से इस महान बल के कितने ही सदस्यों के बलिदानों से पुनीतकृत सेवा की सुनहरी परम्परा को इन दिनों केवल कुछ क्षणिक ही आँच आई है। इसलिये, यह युक्तियुक्त रहेगा कि राजलेख में अंकित अपने कर्तव्यों तथा जिम्मेदारियों के प्रति, हम फिर स्वयं को समर्पित करें और वह इस प्रकार से करें कि इस बल की ईमानदारी, अनुशासन तथा दक्षता के प्रति, सरकार और जनता का विश्वास फिर से जीवित तथा स्थापित हो सके।

इस महान बल के हरेक सदस्य को प्रात्मसम्मान तथा मानवोचित प्रतिष्ठा का सुनिश्चित कराना मेरा परम धर्म होगा, जिनके बिना (मुझे विश्वास है कि) कोई भी बल अपने ध्येय में कारगर सफल नहीं हो पायेगा। इस महान बल के आप सभी संघटकों से क्या मैं यह अनुरोध नहीं कर सकता हुँ कि आप वह आवश्यक सहायता और सममर्थ प्रदान करें, जिनके ही द्वारा, सफलता तथा कीर्ति की और भी अधिक ऊँचाइयों पर इस बल को ले जाने में हम समर्थ हों

श्री पी0आर0 राजगोपाल का महानिदेशक के०रि०पु० बल का पद ग्रहण

दिनांक 10 अगस्त 79 को, श्री पी० आर० राजगोपाल ने के० रि० पु० बल के महानिदेशक का पदभार श्री प्रार. सी० गोपाल से ग्रहण किया। श्री पार० सी० गोपाल, जो गृह मंत्रालय में विशिष्ट-सेवा-अधिकारी नियुक्त किये गये, छुट्टी पर चले गये ।

श्री पी. आर. राजगोपाल, भारतीय पुलिस सेवा 1948 में शामिल हुये और आप मध्यप्रदेश कॉडर (संवर्ग) के हैं। आप सीमा सुरक्षा दल तथा दिल्ली पुलिस में महानिरीक्षक रह चुके हैं। जून 1977 में, आप शाह आयोग के सचिव नियुक्त । हुये थे। इस बल में आने से पूर्व, आप पुलिस अनुसंधान तथा विकास ब्यूरो के निदेशक थे। आप को राष्ट्रपति वीरता पदक तथा राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक मिल चुके हैं।

के० रि० पु० दल के महानिदेशक के पदभार संभालते ही, आपने सभी सदस्यों को आत्म-सम्मान तथा मानवोचित प्रतिष्ठा देने का वचन दिया है और उन से इस कार्य में सहयोग करने की अपील की है, जिसका 'अविकल रूप' कार दिया है।

आपका कल्याण - मेरी पहली चिन्ता

महानिदेशक (के० रि० पु० बल) का पदभार संभालने के तुरन्त बाद, श्री राजगोपाल ने महानिदेशालय में अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुये कहा-'इस संकट के समय, सरकार ने जो ज़िम्मेदारी और आशायें मुझ पर डाली हैं; उसका मुझे पूरा-पूरा एहसास है। मुझे अपनी सीमाओं, कमजोरियों, कमियों तथा क्षमता का भी ज्ञान है। यह मैं कह सकता हूँ कि आप सब के सहयोग के बिना, मैं अपने ध्येय में सफल नहीं हो सकता। पहले की भाँति, राष्ट्र को अब भी इस शानदार बल से अनेक आशायें हैं।

"मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहूँगा कि आपका हित-साधन मेरा प्राथमिक काम रहेगा और यही मेरे मस्तिष्क में सब से ऊपर रहेगा। कोई भी अपने वरिष्ठ अधिकारियों से शिकायतें दूर कराने के लिये मिल सकता है। यदि कोई मुझ से मिलना चाहता है, तब वह बिना डरे मुझ से मिल सकता है। मेरे और आप के बीच में कोई भी बाधक नहीं हो सकता, क्योंकि जिस परिवार का मैं अध्यक्ष हूँ, वह कभी भी नहीं चल सकता, जब तक उसके सदस्यों का सीधा सम्पर्क मेरे साथ नहीं होगा।"

किन्तु उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि मौलिक अनुशासन अवश्य कायम रखना होगा। उन्होंने इस बल को शानदार बनाने के उपलक्ष्य में, अपने पूर्वाधिकारियों की बड़ी सराहना की।



गौरव गाथा:



चन्द्रन



शशिधरन

दो जवानों का परम बलिदान

मिजोरम राष्ट्रीय मोर्चेद्वारा 'मिजोरम छोड़ो' की चेतावनी पाते ही, कोलासिव के उप संभाग अधिकारी (एस० डी० ओ०) के आवास पर एजल स्थित 28 बटालियन, (के० रि० पु० बल) के जवान सुरक्षा को लगाये गये थे। जुलाई, 1979 को जब भारी वर्षा तथा कोहरे के कारण कुछ नहीं दीख पड़ रहा था, सन्तरियों के पास तक विद्रोही आगये और स्वचालित हथियारों से गोली बरसा दी। कां० चन्द्रन की कनपटी में लग कर एक गोली ने, उसे मार गिराया, जब कि कां० भास्करन घायल हुआ। कां० शशिधरन ने भास्करन का स्थान लिया ही था कि वह भी विद्रोहियों का लक्ष्य बना और प्राण गाँव बैठा। कां० ब्रजलाल यादव ने गारद कक्ष से निकल कर गोली चलाई; पर वह भी जख्मी हो गया।

ना० टी. रामाकृष्णन, का० राजेश्वर प्रसाद और का० कॉईकोथंग ने गारद कक्ष से निकल कर गोली चालन किया तथा एस० डी० ओ० और उसके परिवार को मार डालने में विद्रोहियों को सफलता नहीं मिल पाई। इन जवानों को महानिदेशक ने नकद पुरस्कार दिये। मिजोरम सरकार ने मृतकों को दस-दस हज़ार और घायलों को पाँच-पाँच हजार रुपये दिये।

अनुकरणीय ईमानदारी

सब-इंस्पेक्टर गोविन्द सिंह (8 बटा०) जो अब जम्मू है, 12 जून 79 को नियंत्रण कक्ष से लौट रहा था। वह तीन-टन वाले वाहन में अगली सीट पर बैठा था, जबकि उसकी प्लाटून पीछे वाली सीटों पर थी। जब वाहन कम्पनी बाग़ के पास पहुँचा, तब भारी भीड़ के कारण वह धीमा चला। सब इन्स्पेक्टर ने एक-ऑटोरिक्शा से एक बण्डल गिरते देखा। उसने वाहन रुकवा कर, बण्डल उठाया और उसमें दस हजार

रुपये के नोट पाए।

कम्पनी के मुख्यालय पर पहुँच कर, उसने वह बंडल अपने कमान अधिकारी को दे दिया, जिसने जम्मू के पुलिसाध्यक्ष को दे दिया। फिर वह धन उसके मालिक को मिल गया।

समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी जम्मू ने इस ईमानदारी की बड़ी चर्चा की। स० इ० गोविन्द सिंह को 200 रु० जम्मू कश्मीर पुलिस ने तथा 100 रु० उसके अपने कर्मांडेंट ने पुरस्कार-स्वरूप दिये ।

इस्पात-तस्करी

दिनांक 21 जुलाई 79 के तड़के, 4 बटालियन (के० रि० पु० बल), की एक टुकड़ी स्टील प्लाण्ट के रेलवे यार्ड पर पहरा दे रही थी। उसने कुछ लोगों को इस्पात संदिग्ध प्रकार से ले जाते देखा। उसकी डाट लगाने पर, अपराधी चीजें छोड़ कर आज़ाद बस्ती में भाग गये । टुकड़ी ने सावधानी से काम लिया। वह गायब हो गई तथा घात लगाकर बैठ गयी । अपराधी 15-20 मिनट बाद फिर पाये और लगे उठाने इस्पात को । उस टुकड़ी ने ललकारा और जैसे ही अपराधियों ने भागने की चेष्टा की, उसने दो फायर किये और तीन चोरों को चोरी के माल के साथ पकड़ने में वह सफल हुयी। टुकड़ी के हे० का० एम. एम. बोदरा, का० बी. एन. झा, का० जोगा सिंह तथा का० चण्डेश्वर प्रसाद को, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के स्थानीय कमांडैंटने नकद पुरस्कार दिया।

इससे पूर्व 12 जुलाई 79 को, इसी बटालियन के ला० ना० रामावतार पांडेय व का० जगदीश सिंह ने एक चोर को पकड़ा तथा बोकारो प्लांट की सीमा से 60 गज दूर ऊबड़-खाबड़ जगह में छिपे 34 गर्डर प्राप्त किये । चोरी को चोर की वस्तुओं के साथ के० औ० सु० दल को सौंप दिया गया। इन दोनों जवानों को भी, उस दल ने नकद पुरस्कृत किया।

स्वाधीनता दिवस पदक.

स्वाधीनता दिवस 1979 के उपलक्ष्य में, के. रि० पु. बल के इन 17 सदस्यों को सराहनीय विशिष्ट सेवा के लिये पदक प्रदान किये गये:

I. **राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक**

1. श्री जे० एम० कुरैशी,

उपनिदेशक (प्रशासन)।

II. **पुलिस सराहनीय सेवा पदक**

1. श्री प्रीतमजीत सिंह, कमांडैंट (42 बटा०) 2. श्री रामेन्द्र दीक्षित, सहायक कमाँडट (12 बटा) 3. श्री जे० सी० महरेश, सहायक कमांडैंट (के.० प्र० केन्द्र II) 4. डी. वाई० एस० पी० मोंकार सिंह (ग्रुप केन्द्र नागपुर) 5. डी० वाई० एस० पी. पी. एन.

दीनदयालन, ग्रुपकेन्द्र बनतालाब 6. सूबेदार मेजर नारायण सिंह (21 बटा) 7. सू. सानूराम (गुपकेन्द्र प्र०) 8. - सू० हंस राज (24 बटा०) 9. स. इ० - सी. एल. पाटिल (4 बटा०) 10. स० इ० के. एम. पिल्लै (2 सिग० बटा०). 11. स० इ० राम स्वरूप (16 बटा०) 12. स० इ० चन्दर सेन (41 बटा०) 13. हे० का० हरी सिंह (50 बटा०) 14. हे० का० गिरधारी लाल (ग्रुप केन्द्र बनतालाब) 15 हे० का० निरंजन सिंह (28 बटा०) तथा 16. ना. जोगेन्द्र सिंह (16 बटा०)।

गोलाबारूद तथा ट्रांसमीटर की पकड़

मिज़ोरिम में तूरियल नदी के निकट घने जंगल में लोमड़ी के एक बिल से स० इ० जोरावर सिंह के नेतृत्व में 20 बटालियन की एक टुकड़ी ने, 4 हथगोले 58 कारतूस और 6 हल्की मशीन गन पाई। इसी प्रकार, वहीं 'झूम' से इसी बटालियन की एक प्रहरी टुकड़ी ने एक ट्रांसमीटर पाया।

महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने इस उत्तम काम की प्रशंसा की है।

अन्तरेंज हॉकी टूर्नामेंट

दिनांक 20 से 28 जून 1979 तक ग्रुप केन्द्र I अजमेर में खेली गई अन्तरेंज हॉकी टूर्नामेंट में, दिल्ली रेंज ने अजमेर रेंज का हरा कर सिरमौर जीता। पटना रेंज तीसरे स्थान पर रही।

साम्प्रदायिक दंगे की रचना (भाग-1)

ले०-श्री के० एफ० रुस्तमजी

सन् 1969 के उपरान्त (जो एक बुरा साल था, जिसमें लगभग 600 मनुष्य साम्प्रदायिक दंगों में मारे गये थे), घटनाओं तथा हताहतों का ग्राफ (लेखा चित्र) बहुत ही नीचे आ गया। 1970 में, हमने स्वयं को बधाई दी कि भूमि से सदा को साम्प्रदायिक दंगों की कालिख तथा त्रासदी उठ गयी है। और अब फिर, एक बार इस खतरे ने सिर उठाया है और अब, यह उत्तरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रहा; किन्तु जिस दक्षिण का लेखा-जोखा इस विषय में अपेक्षाकृत साफ़ रहा था, उस में भी इसने प्रवेश किया है।

यदि धार्मिक मतभेदों के कारण ही साम्प्रदायिक दंगे होते, तब शिक्षा तथा धर्म निर्पेक्षता के आदर्शों ने निश्चय ही इसकी इतिश्री कर दी होती; किन्तु तथ्य यह है कि यह कभी भी धार्मिक समस्या नहीं रही है। अतीत में साम्प्रदायिक दंगा एक राजनीतिक समस्या रही है जो राजनीतिक लाभ खोजती रही है और मुख्य कर यह दोनों समाजों के उच्च वर्गों तक ही सीमित रही है और जनता जनार्दन अप्रभावित रही है; किन्तु आतंक और प्रतिभय तथा राजनीतिक प्रेरणा के कारण, उसे कलह में घसीटा जाता है। इन्हीं दिनों, साम्प्रदायिक दंगे के लिए राजनीतिक प्रेरणा भी देश में

कमजोर रही है, और ऐसी आशा थी कि यदि जिला अधिकारीगण दक्षतापूर्वक इस से निबटें, तब ये दंगे बिल्कुल खत्म हो जायेंगे; किन्तु दंगों की इस नई लहर से ऐसा प्रतीत होता है कि राजनीतिक अवसरों की चाहना फिर से जागी है या प्रशासन की विफलता बारम्बार अधिक रही है अथवा किसी बाहरी शक्ति से उकसाया जा रहा है, जो राजनीतिक मनो मालिन्य को वांछनीय घोषित कर रही है।

सरकारी ग़लतियों तथा भूलों से, कितने ही दंगों को दबाने में कठिनाई हुई है। वास्तव में, भीषण दगे तब होते हैं, जब जिला अधिकारीगण या तो उसके लिये तैयार नहीं होते हैं, या डरपोक होते हैं अथवा कहीं न कहीं पक्षपात करते हैं। दुःख तो इस बात का है कि हर दंगे के बाद उसको छिपाने की चेष्टा होती है और फल यह होता है कि जनता को सच्चे कारण मालूम ही नहीं हो पाते हैं और कोई सबक़ सीख ही नहीं मिलता है।

सर्वनाश- मैंने बड़े पास से साम्प्रदायिक दंगे से सर्वनाश देखा है ; मैंने जन साधारण क्या, शिक्षित व्यक्ति को भी, भय तथा उन्माद के कारण एक रक्त पिपासु दानव बनते देखा है। मैं उस मनुष्य को कभी नहीं भुलूँगा, जो दौड़ा-दौड़ा एक शरणार्थी शिविर में मेरे पास आकर गिड़गिड़ाने लगा था "हुजूर, मैं आपका हेडक्लर्क था, मेरे दो लड़कों की हत्या कर दी गई है; मेरी पत्नी गुम है; मेरा घर जला कर मटियामेट कर दिया गया है और यह सब तबाही उनके हाथों से हुई है, जिन्हें मैं अपना मित्र मानता था।" दंगे से निर्धन घरों की कतारें पर कतारें बर्बाद हो गयी थीं; गरीबों का दय नीय माल-असवाब गलियों में बिखरा पड़ा था; लोग शरणार्थी शिवरों में इकट्ठे हो गये थे और सबके मुखों पर निराशा, पीड़ा तथा भय झलक रहा था। पर सच्चा पुलिसजन डटा खड़ा रहता है। कर्फ्यू लगे एक मुहल्ले में राइफल ताने एक सब-इन्सपेक्टर अड़ा खड़ा है-आवेग भरे तनाव में एक जवान का केवल वह दल है-"मेरे होते कोई ग़लती नहीं करना।" प्रायः कलेक्टर और पुलिसाध्यक्ष दोनों ही सहायक, उत्सुक तथा बुद्धिमान होते हैं-इन दो को सारा नगर, वह टुकड़ी मानता है जिसने अपना सिर बनाये रखा है, जब उसके चारों ओर लोग अपने सिर गवाँ रहे हैं। क्या मैं शिविरों में उन विधवाओं को भूल सकता हूँ, जो हक्का बक्का, संतप्त थीं तथा ना कुछ वे समझ पा रही थीं और ना कुछ शिकायत कर रही थीं। सचमुच में, वे ही साम्प्रदायिकता की दुःखद त्रासदी थीं; तथा इन भयानक दुःस्वप्नों की वे निर्दोष बलि थीं। यदि वे सुरक्षित भी थीं, तब वे घरों में महदूद थीं-आतंकित थीं तथा पुरुषों की कुशलता के लिए थीं वे सदैव चिन्तित । कफ्यू में तो अन्नजल से प्रायः वंचित मरती थीं। कभी-कभी तो बीमार बच्चे को चिकित्सक नहीं मिलता था; गर्भवती स्त्री अस्पताल नहीं भेजी जा सकती थी तथा मुर्दे को कब्रिस्तान नहीं ले जाया जा सकता था।

तुरन्त मदद :- एक बात, जिसे हम साम्प्रदायिक दंगों में नहीं देख पाते हैं, वह यह है कि शुरू में मुठभेड़ (यदि कुछ हुई भी) तो बहुत कम होती है। उसका आँधीधांधी बढ़ना ही सच्ची समस्या है । एक दुर्घटना से दूसरी पैदा होती है और उससे तीसरी तथा उत्तरोत्तर ऐसे ही बढ़ती जाती है। मनुष्यों के मन में यह भावना पैदा हो जाती है

कि सरकार न्याय नहीं करेगी और न ही उन पर होने वाले हमले को वह रोक सकेगी। भीषण हताहतों के कारण हैं- (i) हुल्लड़बाज़ी के पागलपन में बदले की भावना; (ii) हमले का भय; तथा (iii) अपने शत्रु के व्यापार या कम्पनी को क्षति पहुँचाने की चाहना।

यदि आप घटनाचक्र तोड़ दें, तब दंगे बिल्कुल रुक जायेंगे और प्राय: मुख्य अपराधी यह स्वीकार करते हैं कि वे क्रोध तथा . भय के तैश में बह गये और उनकी किसी से सचमुच में शत्रुता नहीं है। "पश्चात्ता मुझे प्रायः कसम खाकर कचोटता है।" **परिणाम** -दंगे के सब मामले खत्म हो जाते हैं।

साम्प्रदायिक दंगे के दोष को ठीक-ठीक मापा या निर्धारित नहीं किया जा सकता है; किन्तु आदर्शतः हमें सभी जातियों पर पूरा-पूरा दोष वास्तव में मढ़ना होगा। कोई भी पुलिस अधिकारी इस बात को निर्धारित स्वयं नहीं कर सकता है कि कौन धर्मावलम्बी दंगे करने या बढ़ाने के अपराधी हैं। ऐसे (क, ख और ग) व्यक्तियों पर दृढ़ता तथा निष्पक्षतापूर्वक बिना यह सोचे कि वे किस जाति के हैं दोष लगाना होगा; पकड़ना होगा और मुकदमा चलाना होगा। स्पष्ट बात तो यह है कि राजनीतिक नेता गुंडों को अपने झगड़ों में प्रयुक्त करते हैं; और कानून के चंगुल से बचने के लिए, वे पुलिस या जिला अधिकारीगणों का मुँह ताकते हैं और साम्प्रदायिकता का दोष उन पर मढ़ते हैं, जिसका उत्तर अधिकारीगण, बिना वाद-विवाद में फंसे नहीं दे सकते।

बुरी परम्परा :- एक परम्परा यह चल पड़ी है कि सामान्य स्थिति फिरते ही, सभी अपराधी छोड़ दिये जाते हैं अथवा उन पर मुक़दमा नहीं चलाया जाता। कम से कम साम्प्रदायिक दंगे में, ऐसी नीति एक उत्तम सरकार के विपरीत है।

दंगा होते ही, पुलिस की ज़िम्मेदारी साफ़ और निश्चित है। पुलिसजन शुरू में ही दबा सकते हैं, या उस पर ध्यान ही नहीं दे सकते हैं अथवा भड़काने पर चश्मपोशी या अन्य उपाय से, उसे भयंकर सर्वनाश के मुंह में बढ़ने दे सकते हैं। यद्यपि रोकथाम में असावधानी जैसी विशेष-स्थितियों को छोड़ कर, पुलिस पर दंगे कराने का दोष पूर्णतया नहीं थोपा जा सकता है; पर इस स्थिति से आगे, तो सारी जिम्मेदारी साफ़-साफ़ पुलिस पर है । यह सर्वप्रकार से स्पष्ट है।

राजनीतिक क्षेत्र में, ऐसे आरोप प्रायः लगाये जाते हैं कि अमुक सरकार ने उकसाया या दंगा शुरू करने या भाग लेने वाले फ़िसादियों को बचाने की भरसक चेष्टा की। ऐसे सब आरोप झूठे या बढ़ाचढ़ा कर लगाये जाते हैं; किन्तु ग़लतियाँ बारम्बार होती हैं और उन्हें कारगर ढंग से छिपाया जाता है और वे ग़लतियां (जो प्राण घातक भी हो सकती हैं) पुलिस तथा न्यायपालिका की होती हैं।

भारी भूल- एक बड़ी ग़लती प्रायः यह होती है कि आत्मरक्षा के लिए इकट्ठी भीड़ पर गोली चलाना । जिन्होंने भीषण दंगे देखे हैं, वे समझ सकते हैं कि यह त्रुटि कितनी सरलता से हो जाती है । ऐसी घटना सामान्यत: रात को होती है, मुख्यकर उन क्षेत्रों में, जहाँ आगजनी और छुरा भोंकने का बुरा दिन रहा है और जहां जलते घरों की चरपरी बदबू वातावरण में व्याप्त है तथा अंधेरा और अफवाहें, खौफ़ और खतरे का

अजीबोगरीब माहौल पैदा करती हैं और घबड़ाने वाले व्यक्ति तिल-सी घटना को ताड़नुमा बुराईयों की सभी आशंका कर बैठते हैं। एक गली से ताँगेभरी महिलाओं को भिजवाने दीजिये; फिर देखिये कि क्या अफवाह उड़ेंगी कि उस जाति ने अपनी स्त्रियों को इसलिए बाहर भेज दिया कि वह तेजाब भरे उन बल्बों तथा बमों से खुलकर लड़ सके, जिन्हें विदेशी शक्तियों ने अपने खर्चे से रेल-ट्रकों में लाद-लाद वहाँ ज़खीरे लगाये हैं। ऐसे भय और उन्माद के वातावरण में, घटना पर दुर्भाग्यवश दो ही प्रमुख मनुष्य प्रायः होते हैं—ज़िला मजिस्ट्रेट और पुलिसाध्यक्ष— दोनों ही अयोग्य, दुर्बल या पक्षपातपूर्ण तथा कार्रवाई करने से कतराते हुये, रणनीतियाँ बनाने के लिए जवानों को समझाने में अक्षम अथवा नितान्त झूठे आधारों पर उत्पन्न भय के कारण, बढ़ते हुये तनाव को गली में देखने-जाने से भी भयभीत होते हैं। एक अनुभवहीन मजिस्ट्रेट के साथ बिना सिखाये-समझाये पुलिस की आतंकित टुकड़ी ग़लत सूचना तक पर भेजी जाती है और जब वह मशालें लिये कुछ लोगों के समूह को देखती है, तब वह उन्हें फ़िसादी समझ बैठती है। अंधकार में, खलबली मचती है; आतंक फैलता है, नारेबाज़ी होती है तथा पथराव तक होता है । मजिस्ट्रेट को तो यह भी ख़बर नहीं होती कि किसने गोली चलाई और किसने गोली चलाने के आदेश दिये। पुलिस टुकड़ी पर ईंट-पत्थर बरसते है ।

बढ़े-चढ़े आँकड़े—घटनास्थल पर पड़ी ईंट-पत्थरों की बड़ी संख्या, सूचना माध्यम, वरिष्ठ अधिकारियों तथा मंत्रियों तक से, पुलिस पर अकारण ही धावे का सच्चा सबूत मान ली जाती है । तब एक अनुभवी थानाध्यक्ष सारे मामले को हाथ में लेता है । वह अभिलेखों में मिलावट करता है, छायाचित्र लेता है; अपने पत्रकार मित्रों को लाता है तथा सम्वाददाताओं से यह सुनिश्चित कराता है कि वे आगज़नी और लूटपाट की कहानियाँ छापेंगे, जिससे मुआवजे के दावें भरे जा सकें। वास्तव में, जिन बेचारों ने गोली चालन में हानि उठाई है, उन्हीं से यह दुराव-छिपाव का खेल किया जाता है। जिस टुकड़ी ने मौतें सहन की हैं, अपने आपको मात खाने से बचाने के लिए, वह उस दुःखद घटना में सर्वप्रकार की ऐसे अतिशयोक्तियाँ जोड़ती है जैसे बलात्कार, डकैती, लूटपाट, आगजनी तथा बच्चों का कुचला जाना। बीमा तथा मुआवजे के लिए, जली तथा लूटी सम्पत्ति की असंभव रूप से संख्यायें बड़ी लिखी जाती हैं।

झूठ की छानबीन—जिला अधिकारीगण स्वयं को विकट स्थिति में पाते हैं। कभी-कभार तो उन्हें कुछ भी पता नहीं होता कि घटना क्या हुई है और वे झूठ को सच मान लेते हैं अथवा एक झूठी रिपोर्ट इसलिए तैयार करते हैं कि "मनोबल का ह्रास नहीं हो" मानों मनोबल पर तब आँच नहीं आती है, जब सारे पुलिस दल और मजिस्ट्रेटों को मालूम होता है कि यह सारा मामला जिला अधिकारियों की मनगढ़न्त कथा है। बहुत से अधिकारी तो रिपोर्ट ही नहीं भेज कर अपने आपको बचाते हैं।

तब न्यायिक जाँच प्रारम्भ होती है, और तब न्यायधीश को झूठ की छानबीन करने का काम मिलता है, क्योंकि किसी ने सच्चाई बताने की चिन्ता ही नहीं की है,) और

अन्त में जॉच रिपोर्ट में किसी बात को निश्चय रूप से कहने में विचारणीय हिचकिचाहट दीखती है, क्योंकि न्यायाधीश के सामने सभी कुछ झूठ पेश किया गया होता है। और जब तक रिपोर्ट प्रकाशित होती है, सारी घटना जनता के ध्यान से उतर गयी होती है। लोक व्यवस्था तथा पुलिस विश्वास की क्षति कोई महत्त्वपूर्ण नहीं समझी जाती। आख़िरकार क्षुद्र लोगों ने स्वयं को बचा लिया होता है।

सूक्ति सुधा

जहाँ युक्ति तथा शक्ति दोनों से काम लिया जाता है, वहाँ सब ओर सफलता मिलती है।

—शुक्र

मृत वही है, जो पराधीन है।

—चाणक्य

जिसका क्रोध हानिकारक नहीं होता तथा जो विपत्तियों को दूर करता है, लोग उसके वश में अपने आप हो जाते हैं।

—भारवि

पहेलियाँ

तीन वर्ण का जलता नाम ।
आदि कटे पर्दे का काम ॥
मध्य छटे तो बनते कुंतल ।
अन्त कटे तो लप-लप केवल ॥1॥
नीला हूँ, पर खंजन नहीं।
ताज धरूँ, पर राजन नहीं।
बेगुन कह मेरे गुन मेटे ।
भुरता कर जग मुझे समेटे ॥2॥
कभी आप पीता नहीं,
खिला रखूँ जग पाल ।
मिर्च बीज मेरे बना,
बनिया मालोमाल ॥3॥

उत्तर—1. लपट 2. बेंगन 3. पपीती ।

पुलिस का उत्तरदायित्व

ले०—श्री के० एम० माथुर

पिछले तीस वर्षों से, एक लोकतंत्रीय समाज में पुलिस के उत्तरदायित्व की समस्या उलझी पड़ी रही है। क्या केन्द्र और क्या कुछ राज्यों में, जनता पार्टी सत्तारूढ होने पर, इसने और भी अधिक महत्व ग्रहण कर लिया है।

आज पुलिसकर्मी चौराहे पर खड़ा है "आपात्काल में क्यों और कैसे ज्यादतियाँ हुई —"इनके ठीक-ठीक कारण जानने के लिये, शाह आयोग ने गहराई से छान-बीन की। पुलिस द्वारा आपात्काल में किये गये अत्याचारों और हत्याओं के एवं नक्सलपंथियों तथा राजद्रोहियों पर जुल्मोसितम के रोमांचकारी वृतान्त नित्यप्रति समाचारपत्रों में प्रकाशित होते ही रहते हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा नियुक्त श्री तारकुंडे की अध्यक्षता में गठित नौ-सदस्यों की समिति की रिपोर्ट में ऐसे अनेकों दृष्टान्तों का भंडा-फोड़ किया गया है, जिनमें आंध्रप्रदेश में तथाकथित नक्सल-पंथियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

पश्चिमी लोकतंत्र में अपराधी पुलिसजनों को बारम्बार दंड देकर अपने सच्चे उत्तरदायित्व के प्रति सजग कर दिया गया है; किन्तु भारत में पुलिस जनों ने उत्तरदायित्व को सीखना छोड़, ध्यान तक नहीं दिया है। इस संदर्भ में असैनिक कर्मचारियों और मुख्यकर पुलिस के उत्तरदायित्व का सावधानीपूर्वक ठीक-ठीक विश्लेषण करना होगा।

समस्या को विधिवत् समझने के लिये, सर्व प्रथम हमें 'पुलिस', 'उत्तरदायित्व' तथा 'लोकतंत्रीय समाज' का आशय जानना होगा।

आजकल "पुलिस" का अर्थ राज्य के उस अधिशासी असैनिक दल से है, जिसको लोक-व्यवस्था क़ायम रखने तथा अपराध की पकड़-धकड़ और रोकथाम का कर्तव्य सौंपा जाता है (इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटॉनिका)।

उत्तरदायित्व क्या है ? अपने कामों को बताने, स्पष्ट करने तथा न्याय-संगत सिद्ध करने को ही उत्तरदायित्व कहते हैं। साधारणतया, उत्तरदायित्व ज़िम्मेदारी के समान है और प्रशासन क्षेत्र में कामों की ज़िम्मेदारी के निहितार्थ उसमें होते हैं । इसके अर्थ ये हुये कि सरकारी नौकर तथा अधिकारी वर्ग को अपना काम इस प्रकार से करना पड़ता है कि उनका प्रत्येक काम या गतिविधि लोक-समीक्षा के लिये खुली रहे। उत्तरदायित्व अंशतः वैधिक और अंशतः प्रशासनिक अवधारणा है—किसी संगठन में किसी उपयुक्त प्राधिकारी को काम तथा कारण का जवाब देने का यह विषय है।

लोकतंत्रीय समाज—लोक कार्य के क्षेत्र में, लोकतंत्र शब्द शायद सब से अधिक दंडित है। लोकतंत्रता हरेक की बाँदी है; जो अपने ऊपर की गई मांगों के अनुरूप ढलती है, और फिर भी निष्ठापूर्वक चमकने को बाध्य होती है (नासेर के मुंजी)। किसी लोकतंत्रीय समाज की मौलिक विशेषतायें निम्नलिखित हैं—(i) मौलिक आज़ादियों का

और अभिव्यक्ति तथा वक्तता की आज़ादी का, जनसंग्रह तथा मिलने-जुलने की आज़दी का, आज़ाद और जिम्मेदार पत्रकारिता जैसे मौलिक मानव अधिकारों का, सच्चा रक्षक (ii) एक स्वस्थ, सजक, रचनात्मक तथा सांवैधानिक रूप से चुना विपक्षदल (iii) आत्मानुभूति और आत्मसन्तुष्टि के लिये समान अवसर (iv) सामाजिक न्याय व क़ानून का नियम (v) व्यक्तियों के मूल्य तथा मान की मान्यता (iv) जनता को अपना निर्णय बताने तथा अपनी मन पसन्द सरकार चुनने के लिये स्वतंत्र तथा समुचित निर्वाचन । प्रशासन के लोकतंत्रात्मक ढंग की मुख्य विशेषतायें हैं— जवाबदेही, आज़ादी और खुलापन । मंत्रिवर्गीय ज़िम्मेदारी के सिद्धांत पर चलता समाज अपने वरिष्ठ प्रशासकों से यह रक्षा करता है कि वे गैर सरकारी राजनीतिक नेताओं के प्रति सर्वथा अधीन और ज़िम्मेदार रहें।

द्विविधा—किसी लोकतंत्रीय समाज में, विधान सभाओं तथा संसद के वहुमत दलों से क़ानून बदले जा सकते हैं और ये दल आगामी लोक चुनाव में अल्पमत में हो सकते हैं। आज जो राजनीतिज्ञ मंत्री हैं, वे कल विपक्षदल के सदस्य बन सकते हैं।

ऐसे गतिशील और द्रुत परिवर्तनशील समाज में, पुलिस जनों को यह द्विविधा होती है कि वे अपने कामों के लिये किस के प्रति जवाबदेह हों। लोकतंत्र में, हरेक को अपना काम संविधान के अनुसार करना होता है। यह राजनीतिक मंत्री ही होता है जिस पर अधिकार होता है और जो ज़िम्मेदारी ओढ़ता है। जब नियमों, अधिनियमों तथा विधान से हटकर, बिना मंत्री को बताये अपनी इच्छानुसार कोई नागरिक कर्मचारी काम करता , तब वह अपने कामो का तथा भूलचूक का ज़िम्मेदार होता है।

कभी-कभी असैनिक कर्मचारी को अपने निर्णय के विरुद्ध काम करने को मजबूर होना पड़ता है और आपात्काल में तो खासतौर पर, ऐसी बातें असंख्य हुयी हैं । के० हनुमंतैया (इलस्ट्रेटेड वीक्ली ऑफ इंडिया) के अनुसार, इनके लिये असनिक कर्मचारियों को दिक़ करना और मुक़दमा चलाना अनुचित है।

नेता और पुलिस-पक्षपात और राजनीतिक दादागीरी, राजनीतिक हस्ताक्षेप एवं राजनीतिक अधिकारियों के निदेशों ने बहुधा पुलिस दलों के मनोबल का नाश किया है, उन्हें अप्रभावी बनाया है और बनाया है जनमानस के सम्मुख घृणा का पात्र । अमेरिका के संयुक्त राज्य में, इसे साधारणतया "विकृत ढंग" कहकर पुकारा जाता है।

किसी भी लोकतंत्र में, राजनीति और प्रशासन में बिल्कुल विच्छेद तो नहीं हो सकता और यद्यपि अवांछनीय है; किन्तु उचित प्रभाव से अनुचित प्रभाव को अलग करने के लिए कुछ मोटे-मोटे निर्देशन बनाना भी ज़रूरी हैं । नेताओं के निदेशन नितान्त क़ानून के अन्दर होने चाहिये और लोक हित के अनुकूल होना जरूरी है।

लोकतंत्रीय समाज में, जनता की शिकायतें दूर करने के लिए राजनीतिक नेताओं का नियमित संवर्ग होता है और अपने निर्वाचकों की ओर से प्रशासन से बीच-बचाब करना, किसी भी राजनीतिज्ञ का सही कर्तव्य होता है। राजनीतिक नेता मुख्यकर सत्तारूढ़ दल के, विधान सभाओं और संसद के सदस्य, राज्य के पुलिस प्रशासन में

हस्ताक्षेप करते हैं और पुलिस अधिकारी राजनीतिज्ञों के आदेशों का पालन करते हैं। पुलिसजनों की नियुक्तियाँ, स्थानांतरण, पदोन्नतियाँ, वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट आदि के कार्य आखिरकार गृहमन्त्री या मुख्य मन्त्री तक के द्वारा नियंत्रित तथा प्रभावित होते हैं।

केरल पुलिस पुनर्गठन समिति (1960) ने यह उल्लेख किया है—'जब पुलिस नेताओं की कठपुतली बन जाती है, तब कानूनों के अवैध पालन में, निषिद्ध सेवा तथा पुलिस प्रतिष्ठा के साधारण ह्रास में, उसकी झलक दीखती है; उससे गैर-ज़िम्मेदाराना नुक्ताचीनी होती है, और फलस्वरूप पुलिस तथा जनता में खाई बढ़ती जाती है तथा पुलिस के ध्येयों और ईमनादारी में जनता के विश्वास पर आँच आती है।"

जहां तक कोई सोच सकता है, इस प्रकार के (राजनीतिक) हस्ताक्षेप ने देश के कई भागों में ईमानदार प्रशासन के लिए एक खतरा सचमुच में पैदा कर दिया है।' (एक डी० गोरवाला)।

पुलिस पर राजनीतिक नियंत्रण, सच्चे और ईमानदार पुलिस अधिकारियों के लिये समस्यायें उत्पन्न कर देता है। जनता से निर्वाचित नेता बन कर, राजनीतिज्ञ देश के नेताओं के रूप में तथा संसद, विधानसभाओं पौर स्थानीय निकायों के सदस्य की हैसियत से, अपने निर्वाचन क्षेत्र की सही शिकायतों को दूर करने की जरूर मांम कर सकते हैं और पुलिस इन राजनीतिज्ञों के प्रति अपनी जवाबदेही से इन्कार नहीं कर सकती। एक ओर पुलिस संगठन में निष्पक्षता तथा कुशलता की सुनिश्चितता की आवश्यकता में तथा दूसरी ओर जनता से निर्वाचित प्रतिनिधियों और नेताओं के प्रति जवाब देही तथा जिम्मेदारी में, एक नाज़ुक संतुलन की जरूरत है।

सरकार के प्रति जिम्मेदारी—देश में, मुख्यकर आपात्काल में, कानून-प्रवर्तक होने के नाते पुलिस की कार्रवाइयों के ढंग पर अत्यन्त असन्तोष रहा है । हाल की घटनाओं की पृष्ठभूमि में, यह विश्वास करना कठिन है कि पुलिस सत्तारूढ़ों के हाथ में हथियार नहीं है। 1960 में न्यायमूर्ति एन० एच० भगवती, श्री एम० के० नम्बियार और श्री पी० अमीन वाले भारतीय आयोग की केरल जाँच समिति ने लिखा है—"इस बात पर जोर देना पड़ेगा कि पुलिस इस प्रकार से राज्य सरकारों की चरणदासी नहीं है कि कानून द्वारा दिये गये विविध कार्यों के ढंग तथा पद्धति का आदेश तो सरकार दे सकती है; किन्तु जब क़ानून के विहित प्रावधानों के अन्तर्गत विशेष स्थितियाँ मौजूद हैं, तब पुलिस का यह सांवैधानिक कर्त्तव्य हो जाता है कि वह विधानमण्डल के आदेशानुसार ही कार्य करे और तब राज्य सरकार के लिए संविधान की अवहेलना होगी, जब वह कानून के प्रावधानों के विरुद्ध प्राचरण संहता में परिवर्तन लायेगी। जैसे ही कोई अपराध किया जाता है या करने की इच्छा होती है, क़ानून अपना मार्ग ग्रहण करता है और विविध अधिनियमों के प्रावधानों के अनुसार, पुलिसजन को अपना वैध कर्तव्य निवाहने को मनाह करना तो दूर रहा, कोई भी पुलिस अधिकारी या मुख्यमन्त्री क़ानून मार्ग को बदलने की भी सामर्थ्य नहीं रखता है।

निश्चय ही, पुलिस विभाग के अध्यक्ष होने के नाते मन्त्री का यह सांवैधानिक

दायित्व हो जाता है कि वह यह सुनिश्चित करे कि पुलिसजन अपने-अपने काम समुचित तथा परिश्रम से कर रहे हैं। ब्रिटिश पद्धति का हवाला देते हुए डिसे ने यह बताया है कि "जिस किसी सरकारी कार्य में कोई मन्त्री भाग लेता है, तब यह उसका वैध दायित्व हो जाता है कि मान लो वह कार्य अवैध है, तब उस मन्त्री पर किसी न्यायालय में दीवानी या फौज़दारी का मुकदमा चलाया जा सकता है।"

महात्मा गाँधी की हत्याकांड के षड़यंत्र पर गठित कपूर आयोग को इस प्रश्न पर गहन अध्ययन करने का अवसर मिला था। उसने लिखा है—'आयोग के मत में, यद्यपि गृहमन्त्री पुलिस और पुलिस संगठन का अध्यक्ष होता है और उसके प्रति संसद में उत्तरदायी होता है, किन्तु उसे पुलिस को यह निदेश देने का कोई अधिकार नहीं है कि वह किस प्रकार सांवैधानिक अधिकारों, कर्तव्यों एवं विवेक से व्यवहार करे। यदि वह मन्त्री बन्दी या नहीं बन्दी बनाने का आदेश देता है, तब क़ानून के नियमों का अन्त हो जायेगा।'

इंगलैंड में पुलिसाध्यक्ष केवल क़ानून का उत्तरदायी हता है नाकि किसी लोक अधिकारी का इंगलैंड में सरकारी नियंत्रण से पुलिस की प्रचुर स्वाधीनता इस बात से प्रकट होती है कि पुलिस जन स्वयं को अधिशासियों का नौकर नहीं समझ कर, क़ानून का अधिकारी मानते हैं. जिनकी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी क़ानून से ही प्राप्त हुयी है।

एक लोकतांत्रिक समाज बनाने और बनाये रखने के लिए, पुलिस प्रशासन को समस्त हस्ताक्षेप से अलग रखना होगा। पुलिस अधिकारी को अपने नित्य के काम के प्रति जवाबदेही की समस्या मुँह फाड़े खड़ी दीखती है। यदि वह अपने अधिकार से आगे बढ़ जाता है या कारगर ढंग से काम करने में अयोग्य है, तब एक ओर तो न्यायालय हैं तथा दूसरी ओर विधान मंडल है. जिसके प्रति वह ज़िम्मेदार है। भारत के ज़िले प्रशासन में ज़िला पुलिसाध्यक्ष पुलिस दल का प्रधान होता है; किन्तु वह ज़िला मजिस्ट्रेट के सामान्य नियंत्रण तथा निरीक्षण में होता है।

भारतीय पुलिस पद्धति में दोहरी ज़िम्मेदारी का ढंग है। राज्य स्तर पर, पुलिस महानिरीक्षक गृहमंत्री के प्रति जवाब देह होता है और जिले स्तर पर, ज़िला पुलिसाध्यक्ष, जिला मजिस्ट्रेट के प्रति ज़िम्मेदार होता है। इसी प्रकार, के०रि०पू० बल, सीमा सुरक्षा दल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल आदि जैसे केन्द्रीय पुलिस संगठन अपने अध्यक्षों द्वारा संघीय गृहमंत्री के प्रति जवाबदेह हैं, जो अपने आप में जनता तथा संसद के प्रति जिम्मेदार हैं। क़ानूनन, राज्यों के पुलिस विभाग केन्द्रीय सरकार के प्रति (आपात्काल को छोड़ कर) कभी भी जवाबदेह नहीं हैं।

क़ानून के प्रति जवाबदेही—पश्चिमी लोकतंत्रों के ठीक विपरीत, भारत में क़ानून केवल पीछे ही नहीं रह गये हैं। साथ में, सामाजिक परिवर्तन के चक्र में गति रोधक ही नहीं, प्रत्युत् अत्यन्त बोझ भी सिद्ध हुये हैं। भारत जैसे शिशु लोकतंत्र में, जहाँ राजनीतिक दल राजनीतिक सत्ता पाने के मुख्य ध्येय से राजनीतिक क्रान्तियाँ चलाते

हैं अथवा लोक अव्यवस्था फैलाते हैं, क़ानून की अवहेलना पुलिस को कारवाइ करने के लिये बाध्य करती है, और फलस्वरूप, पुलिस ज्यादतियों के घोटाले उठ खड़े होते हैं। भारत में, बलशाली स्वार्थों के नये वर्ग के रूप में विधायकगण उभर कर आये हैं तथा सामाजिक-न्याय के हित में क़ानून का रूप बदलने में राजनीतिक संधियाँ विफल मनोरथ रही हैं।

पुनरुत्थान के इस भारत में, जहाँ उन सरकारों में बारम्बार परिवर्तन आ रहा है, जिन पर अत्यन्त ही भिन्न नीतियाँ तथा कार्यक्रम हैं, पुलिस को सत्तारूढ़ दल के हितों से आगे जाने का संदर्भ ढांचा बनाना होगा। पुलिस को केवल जनता के तथा कानून का विविध विधान निकायों तथा लोकमत के साधनों द्वारा उत्तरदायी बनना होगा। क्योंकि लोकतंत्रीय समाज में कानून तथा सदाचार की सारी सरकारी प्रणाली होती है, कोई भी असनिक सेवक अवैध तथा भ्रष्ट कार्य करने को बाध्य नहीं किया जा सकता। वह अपने किसी अवैध और भ्रष्ट काम के लिये मंत्री के लिखित या मौखिक आदेश की शरण नहीं ले सकता (चरण सिंह)। यदि किसी को गैर-क़ानूनी तरीके से कोई पुलिसजन सताता है या उसके विरुद्ध तृतीय श्रेणी के उपाय प्रयुक्त करता है, तब सामान्य क़ानून के अन्तर्गत उस पर मुक़दमा चलाया जा सकता है।

लोकतंत्रात्मक समाज में यह ज़रूरी है कि ऐसे व्यक्तियों से निपटते हुये भी, जो हिंसा में आस्था रखते हैं तथा कानून भंग करते हैं, पुलिस को कभी भी क़ानून को स्वयं नहीं तोड़ना होगा। सरकार को सही सही और साफ़-साफ़ निर्देशन घोषित करने चाहिये, जिससे कानून का अनुपालन करते समय, पुलिस कानून की अवहेलना नहीं करे।

अपने कर्तव्य निवाहते समय, पुलिसजनों ने मुख्यकर भारत में, निम्न प्रकार के अपराध किये हैं—(i) अवैध बन्दीकरण तथा ग़लत निरोध (ii) कर्तव्योपेक्षा (iii) अभिलेखों में हेर-फेर तथा झूठी गवाही (iv) संदिग्ध अपराधी को उत्पीड़न तथा हिंसा तक (v) भ्रष्टाचार (vi) अपराध प्रकाशन का निरोध (vii) आन्दोलनों में बलप्रयोग तथा गोली-चालन की ज्यादतियाँ (viii) आपराधिक बल प्रयोग तथा आक्रमण ।

गवाहों के अभाव में या क्रोध में, पुलिस जनों को स्वयं कानून तथा नियमों को तोड़ने का अपराधी नहीं बनना चाहिये, जिन्हें लागू करने का काम उन्हें सौंपा गया है। आपात्काल में किये गये अत्याचार कई विषयों में तो उन से भी बढ़ गये थे, जिन्हें राजनीतिक कर्ताओं ने विदेशी शासन में सहा था।

पुलिस अधिनियम की 23 धारा के अनुसार, पुलिस को क़ानूनी हुक्म और वारंटों पर अमल करना होगा। "प्रश्न यह उठता है कि पुलिस की पुलिसगीरी कौन करेगा? निश्चय ही, न्यायालय हैं और सो ही हैं विधान मंडल। किन्तु अन्ततः यह

पुलिसकर्मी ही है जो पुलिस की पुलिसगीरी कर सकता है।" (ओ. चिनप्पारेड्डी)।

"जनता की अन्तरात्मा" बनना ही पुलिस जन की सेवाभूमिका होनी चाहिये । लोकतंत्रीय समाज में दृढ़ तथा अटल लोकमत को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह समाज की अन्तरात्मा सतर्क रखे, ताकि वह विफल नहीं हो और ना ही लड़खड़ाये

तथा वह उस समाज के योग्य हो, जिसे उसको सेवा करनी है। लोकतंत्र में जहाँ पुलिस केवल कानून के प्रति उत्तरदायी होती है, पुलिस जन को दिये गये अधिकार अत्यन्त सीमाबद्ध होना चाहिये तथा अनेकों प्रतिबन्धों, सन्तुलनों तथा सुरक्षाओं से सुव्यवस्थित होने चाहिये, जिसमें वह अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सके।

जनता के प्रति जवाबदेही—डॉ जुल्यिन एस. हक्सले ने एक बार कहा था—"आधुनिक समाज में सुगठित अत्याचार, अपराध, या हिंसा के लिये पुलिस दल ही केवल विकल्प है तथा यह बड़े महत्व की बात है कि जनता यह समझे कि पुलिस समाज का अंग है, जो केवल सरकार या अल्पकालीन सत्तारूढ़ गुटबन्दी के नहीं हो कर, सकल जनता जनार्दन के अभिकरण (एजेंट) के रूप में काम कर रहा है।" अनुपालित कराये जाने वाले क़ानून के विषय में, किमी पुलिसजन की कार्यवाई से जनता मोर पुलिस में मतभेद नहीं होना चाहिये । एक लोकतंत्रीय समाज में, वह पुलिस कार्यवाही, जो किसी वर्ग तथा दल के स्वार्थों के अनुरूप होती है, चाहे वह कितना ही बहुसंख्यक क्यों न हो, एक भयंकर प्रवृत्ति है और सामाजिक न्याय एवं क़ानून के नियम के सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

पुलिम को बहुमत दल तथा अल्पमत दल में बड़ा सही संतुलन रखना होता है। लोकतंत्रीय समाज में, क़ानून की वैध प्रक्रिया के बिना तो, पुलिस एक मजिस्ट्रेट तक को बन्दी बनाने, जेल भिजवाने या जुर्माना करने से रोक सकती है तथा यह सुनिश्चित करती है कि स्वयं सरकार भी उन्हीं कानूनों से बंधी है, जो उसने बनाये है।

लोकतंत्रीय समाज में, पुलिस को अपने सभी कार्यों का उत्तदायित्व जनता के प्रति है, क्योंकि परमेष्ट सत्ता तो जनता ही के पास है । इंगलैंड में पुलिसजनों की आचरण नियमावलि में लिखा है—'पुलिसजन को इस प्रकार का प्राचरण करना चाहिये जिससे जनता पुलिसजन को सेवक तथा मित्र मानने को प्रेरित हो और वह यह देखे कि पुलिसजन के रूप में अपने अधिकार का प्रयोग ना तो डराने-धमकाने का हो और ना ही अत्याचारी हो; किन्तु सीधा-सादा केवल जनता की सेवा में समर्पित हो।"

दुर्भाग्य से, भारतीय पुलिस ने ब्रिटिश पुलिस की ये लोकतंत्रीय परम्परायें नहीं सीखी हैं। भारत में पुलिसजन जनता जना र्दन के सेवक के स्थान पर स्वामी समझे जाते हैं। भारतीय सामाजिक पद्धति पुलिस को नियंत्रित नहीं रखती; वह चुपचाप पुलिस से दुःख झेलती है और उसकी ज्यादातियों को सत्ताधारी स्वामियों की कानूनी कार्रवाई मानती है।

निष्कर्ष—आचार्य जे. बी. कृपालानी ने खूब ही कहा है—'पिछले 30 वर्षों में हमने अपने पुलिसजनों को ऐसे कानून-पालन सिखाने का श्री गणेश तक नहीं किया है, जो एक स्वतंत्र लोकतंत्रीय समाज कों वांछनीय है।" लोकतंत्रीय समाज में, जहाँ लोक अधिकार शासितों की अनुमति पर कायम होता है और जहाँ सचमुच में एक खास मोर्चे को जन सहयोग पाने के लिये बनाया जाता है, पुलिम जनों को उसी जनता पर क़ानून लागू तथा संरुद्ध करने का काम सौंपा जाता है, जिसके प्रति उनका उत्तरदायित्व है।

कितनी कुटनीतिकता तथा राजनीतिक प्रौढ़ता की आवश्यकता एक नागरिक को यह समझने के लिये चाहिये कि उसका लोक सेवक कभी-कभार उसका स्वामी भी बन सकता है ? दूसरी ओर, कितनी राज नीतिक बुद्धिमत्ता, संयम तथा चतुरता की जरूरत पुलिसजन को है कि वह यह समझे कि यद्यपि वह समाज के अधिकार पूर्ण स्वर में बोलता है, तथापि वह उसी समय निज समाज तथा जनता के प्रति ज़िम्मेदार और जवाबदेह है ?

कहानी:

मृग — तृष्णा

लेखक—ह. रमाशंकर पाण्डेय

संध्या का समय था। सूर्य की लाली पश्चिम दिशा में अपनी अस्तिमित आभा से आकाश को रंगीन बनाये हुये थी। अम्बर-डम्बर कितनी ही मानव-आकृतियाँ धारण कर परस्पर आलिंगन करते दग्गत होते थे। नारियल के छायादार वृक्षों से लिपटती ठण्डी हवा सब में सिहरन पैदा कर रही थी; किन्तु एक हवलदार सदानन्द था, जिसे वह विरह ज्वाल में झुलसा रही थी। सांध्यकालीन मेघों की काम किल्लोलें उसके वियोग को और भी उदीप्त कर रही थीं। तभी उसकी दृष्टि अपने अपने घोसलों में लौटते हुये पक्षीगणों पर गयी। अब उससे नहीं रहा गया; तुरन्त खड़ा होकर वह ठण्डी आह लेता बुदबुदाने लगा — 'हमसे तो ये पक्षी अच्छे, जिन्हें गृहस्थी का तो सुख है। इससे तो आधे पेट रहकर घर पर रहना उत्तम है, जहाँ जीवन का आनन्द तो मिलता है। ओफ़! एक हम हैं जो कैदियों की तरह इस रंगीन मौसम में भी अपने घर से हजारों मील दूर अनुशासन तथा सेवा की बेड़ियों में जकड़े पड़े हैं । ऐसी नौकरी से, ऐसे पैसे से क्या फायदा, जो जीवन-भर कैद से मिले ?"

सदानन्द ने शादी से लौटकर अभी ड्यूटी संभाली थी। ऐसे विचार माना उसको स्वाभाविक ही था; परन्तु हम सब ने उसे यही समझाने की चेष्टा की "मनुष्य को सुखमय जीवन बिताने के लिये अधिकतर नौकरी करनी ही पड़ती है। पारिवारिक सुख के त्याग के बदले, यहाँ जो सम्मान, धन तथा देशभक्ति का गौरब मिलता है, वह घर में कहाँ सम्भव है ?"

किन्तु दयानन्द के दिल में हमारी एक बात नहीं बैठी। बैठे भी कैसे? वह दिल्ली के पास के ज़मीदार घराने का सदस्य था। उसके पिता के पास साढ़े चार एकड़ जमीन थी। किसी चीज़ की वहां कमी नहीं थी। उसके दो भाई बी० ए० तक पढ़े थे और अच्छे सरकारी नौकर थे; किन्तु सदानन्द का मन सैलानी था, वह इन्टर से आगे नहीं पढ़ सका। फिर भी सरकारी नौकरी करने की इच्छा से के०रि०पु० बल में, वह सिपाही भर्ती हो गया । हृष्ट-पुष्ट तथा कुशाग्र-बुद्धि होने के कारण, वह थोड़े ही समय में

हवलदार बन गया, जब कि उसके अधिकांश सहचर अभी सिपाही ही पड़े हुये थे। शिक्षित तथा परिश्रमी होने के कारण, वह एज्यूकेशन हवलदार के स्पेशल पद पर था। इधर स्पेशल गार्ड रहने पर, वह हर साल दस-पाँच पुरस्कार पा लेता था। इसी कारण, थोड़े ही समय में, उसका रिकार्ड पुरस्कारों से भरा पड़ा था और भविष्य और भी उज्ज्वल था।

हमारे लाख समझाने पर भी, उसका टका सा यह जबाव था "अरे भाई, इतना तो हम घर बैठ पीट सकते हैं। तुम्हें नहीं मालूम-मेरे भाई अच्छे सरकारी नौकर हैं; कई रिश्तेदार की सरकार में ऊँची पहुँच है। फिर और कुछ नहीं तो—ज़मीन कहां गई है ?"

हम समझ गये कि उसे पुलिस नौकरी छोड़ने का भूत सवार हो गया है और हुआ भी वही। अन्ततः उसने डिस चार्ज की अर्जी दे ही दी। कम्पनी कमांडर ने उसके उत्तम भविष्य को देखकर बहुत समझाया; लेकिन उस पर कोई असर नहीं पड़ा। दयानन्द कमांडैंट साहब की नज़रों में भी बढ़ा-चढ़ा हुआ था। उन्हें जब पता लगा, तब इन्टरव्यू में बुलाकर बहुत समझाया-बुझाया; किन्तु उसकी डिसचार्ज लेने की धुन के आगे उनकी भी एक न चली।

जब सदानन्द डिसचार्ज लेकर घर पहुँचा, तब उसके दोनों भाई बड़े खुश हुये। बड़े भाई ने मझले से कहा—"चलो, यह अच्छा किया पिता जी के मरने पर सारी ज़मीन बारह बाट हो रही थी ! क्यों दयानन्द ?"

दयानन्द ने हाँ में हाँ मिलाते हुये उत्तर दिया "बिल्कुल, कहा है ना—खेती खसम सेती। हम लोग तो फँसे पड़े हैं; वरना जितनी कमाई जमीन में आजकल है, उतनी किसी में नहीं। यह धर्म का सोना उगलती है।"

किन्तु दयानन्द और खासतौर पर उसकी पत्नी सफेद पोशी चाहती थी। शहरी ज़िन्दगी उन्हें पसन्द थी। सिविल , सर्विस में भाइयों को जेबें भरते देखा था। फिर वह भी क्यों नहीं आनन्द से जीवन बिता कर अपनी नव विवाहिता पत्नी की कामनायें पूरी करे ?

अतएव इस नियान्नवे के चक्कर में, वह दौड़धूप करने लगा। भाइयों की सरकार में कुछ ज्यादा चलती नहीं थी; वैसे भी, उनकी बात नहीं मानने पर उन्होंने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई। उन्होंने लाभ इसी में देखा कि तीनों अपना अपना घर अपने आप संभालें। इस प्रकार, तीनों अलग-अलग हो गये। बेचारे सदानन्द को केवल डेढ़ एकड़ पर कनात करनी पड़ी। इधर जो रिश्तेदार उसे नौकरी के समय सब्जबाग़ दिखाते थे; उससे किनारा करने लगे। परिणाम यह हुआ कि जो थोड़ी बहुत उस पर जमा पूँजी थी, वह खत्म होने लगी। इधर उसकी पत्नी अपनी सुहागरात के दिन ऐशोआराम में बिताना चाहती थी और वैसा नहीं पाने पर, सदा पति को कोसती रहती थी।

"आखिर हाथ इसीलिए पकड़ा था कि अपने साथ दूसरे की ज़िन्दगी भी नरक बनाओ"

“क्या कहती हो? तुम मेरी अर्धांगिनी हो....”

“बस, बस रहने दो। धरम शासतर की बातों से किसी दूसरे का दिल बहलाइयो। खसम किया सुख सोने को— कि रातदिन रोने को...” सदानन्द खिसियानी बिल्ली की तरह खंभा नोचता था। पत्नी को ढाढ़स बँधाता था कि "कुछ ही दिन की बात है। फिर नौकरी मिल ही जायेगी”

“नौकरी मिलने की बात सुन सुन कर मेरे कान पक गये हैं। नौकरी करनी होती तो छोड़ी क्यों जाती?”

दयानन्द के ज़ख्मों पर ऐसे तानों से नमक छिड़क जाता। कभी वह आत्महत्या की सोचता; तो कभी पत्नी को कच्चा चबा जाना चाहता। पत्नी भी जिस पति को कभी आँख से ओझल देखना नहीं चाहती थी, आज उसके छाया से बचती थी। लोग कभी उन्हें आपस में दिनों बोलता नहीं देखते थे और कभी ऐसे बोलता पाते थे कि सारा गाँव मानों सिर पर उठा लिया हो। आज भी वही कुत्ते बिल्ली की सी तू-तू, मैं-मैं हुई थी। पत्नी छाती पीटती हुयी घर से निकल गई थी और जो सदानन्द उसके लिये शत शत प्राण कभी न्यौछावर करता था, आज उसे मनाने भी नहीं गया था।

तभी कोलाहल मचा, सब भागे-भागे बंजारे कुयें की ओर गये। आज एक स्त्री डूब गई थी। जब सदानन्द ने सुना, तो उसके हाथ-पैर फूल गये; वह हक्का-बक्का रह गया ‘हो न हो, कहीं...” पूरा सोच भी नहीं पाया कि सिर पर पैर रखकर भागा। किन्तु-तब बहुत देर हो चुकी थी। लोगों का कहना था कि यह पहली बार हुआ है जो यह कुआँ किसी के गिरने पर नहीं उफना है और सदानन्द की पत्नी को मरने दिया है; पर सदानन्द की स्थिति ही बड़ी विचित्र थी; अतीव विक्षुब्ध थी। वह जड़वत् बैठा उस दिन को कोस रहा था, जब उसने अच्छी खासी नौकरी को ठोकर मार कर, इस मृगतृष्णा का सहारा लिया था।

<u>28वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल-तैराकी प्रतियोगिता :</u>

के० रि० प० बल पुनः सिरमौर

लखनऊ के केन्द्रीय खेल स्टेडियम के तरणताल में 6 अगस्त 79 को समाप्त हुयी 28वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में सिरमौर के लिये विकट संघर्ष रहा। सीमा सुरक्षा दल से 37 अंक पीछे रिंगते हुये, के० रि० पु० बल ने चौथे और अन्तिम दिन सिरमौर फिर से अपने पास रखने के लिये छलांग लगाई, जब उसने आठ प्रतिस्पर्ध्दाओं में छै जीत कर 175 अंक पाये तथा सी० सु० दल को 3 अंक से पीछे धकेल दिया। तृतीय स्थान पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस 82 अंकों पर रही।

अन्तेम परिणाम इस प्रकार रहे :

1500 मी० फ्री स्टाइल—धर्मपाल (सी० सु० दल०) I; श्याम लाल (सी० सु० दल) II तथा एम. नाथ (भा०ति०पु०) III.

400 मी० फ्री स्टाइल—धर्मपाल (सी० सु० दल०) I; श्याम लाल (सी० सु० दल) II तथा वी. एस. चौहान (सी० सु० दल) III.

200 मी० फ्री स्टाइल—के. सोमशेखरन (के० रि० पु० बल) I; पी. पद्मनाभन (के० रि० पु० बल) II तथा वी. एस. चौहान (सी० सु० दल) III.

100 मी० फ्री स्टाइल—के. सोमशेखरन (के० रि० पु० बल) I; पी. पद्मनाभन (के० रि० पु० बल) II व बी. एस. चौहान (सी० सु० दल) III.

200 मी० बटर फ्लाई—ए. चक्रवर्ती (भा० ति० पु०) I; ब्रजकान्त (सी० सु० दल) II एस. **आर. एस. नायर (के० रि० पु० बल) III.**

100 मी० बटर फ्लाई—ए. चक्रवर्ती (भा० ति० पु०) I; ब्रजकान्त (सी० सु० दल) **II व आर. एस. नायर (के० रि० पु० बल) III.**

200 मी० बैक स्ट्रोक—पी. दास (के० रि० पु० बल) I; बाल किशन टोकास (सी० सु० दल) II व गुलाब सिंह (उ० प्र०) III.

100 बैक स्ट्रोक—वी. महाजन (म० प्र०) I; बाल किशन टोकास (सी० सु० दल) II व **पी. दास (के० री० पु० बल) III.**

200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक—निर्मल सेन (सी० सु० दल) **I; दलीप सिंह (के० रि० पु० बल)** II व अब्दुल हाकिम **(के० रि० पु० बल) III.**

200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक—दलीप सिंह (के० रि० पु० बल) I; सत्यनारायण यादव (उ० प्र०) II व निर्मल कुमार सेन (सी० सु० दल) III.

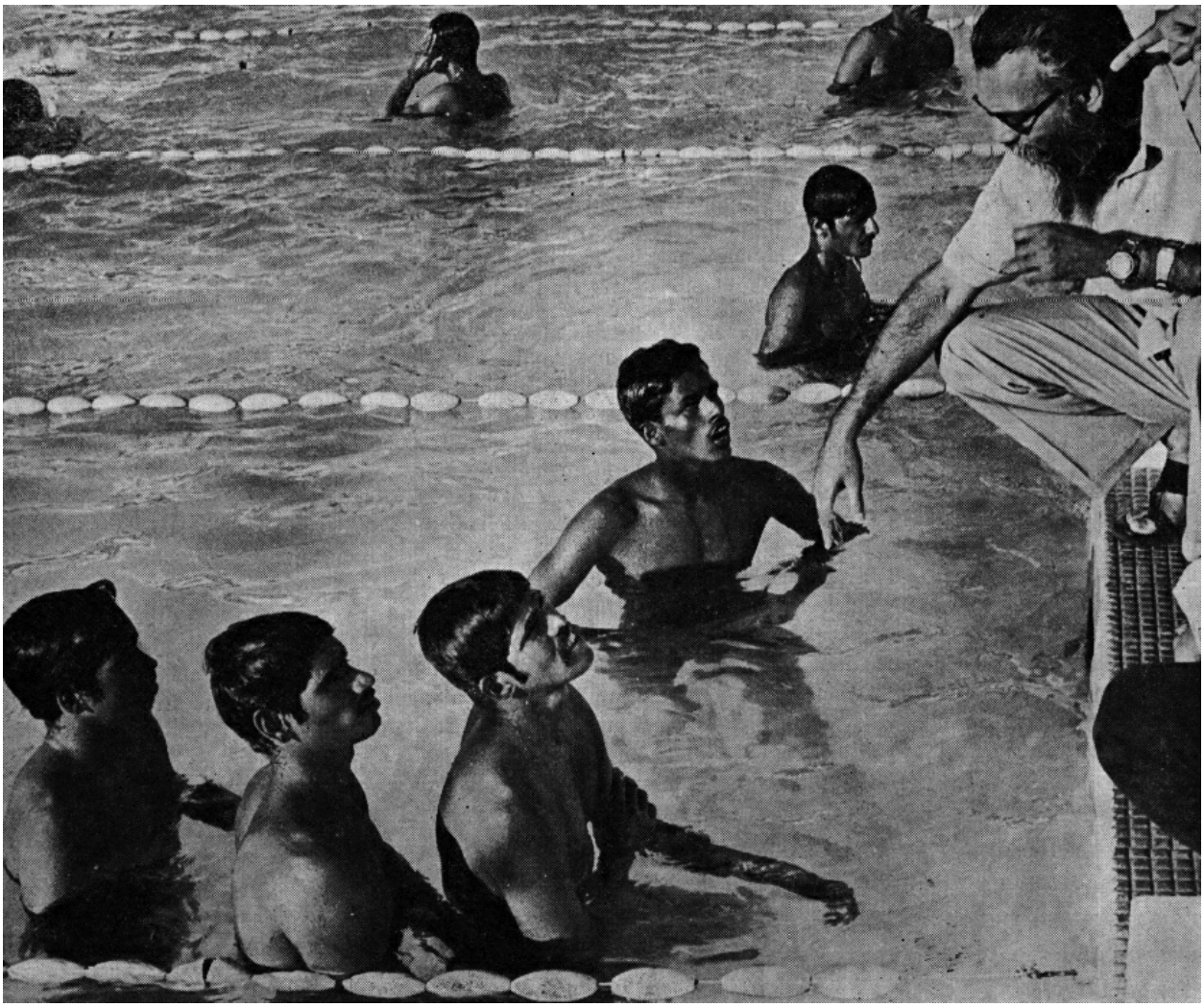
400 मी० व्यक्तिगत मेडले—श्याम लाल (सी० सु० दल) I; गुलाब सिंह (उ०प्र०) II व राम रत्न सिंह (भा० ति० पु०) III.

4×200 मी० फ्री स्टाइल रिले—सी० सु० दल **I; के० रि० पु० बल II** व उत्तर प्रदेश III.

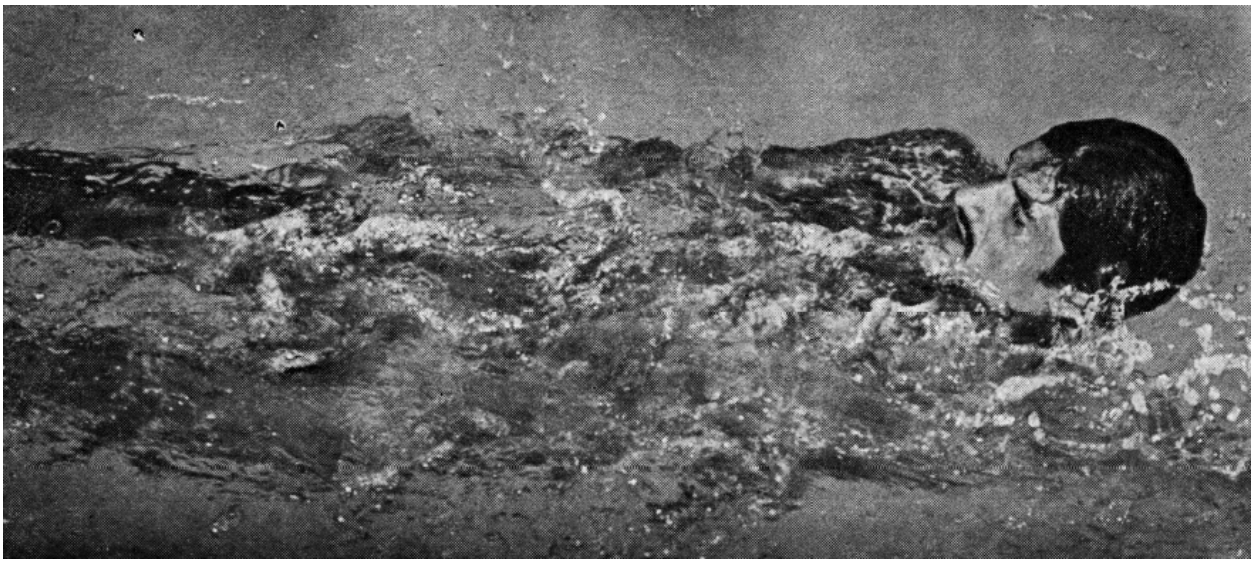
4×100 मी० मेडले रिले—के० रि० पु० बल I; भा० ति० पु० II व सी० सु० दल III.

हाई बोर्ड गोतेखोरी—कपूर सिंह (के० रि० पु० बल) I; प्रह्लाद सिंह (उ०प्र०) II व ईश्वर देव नारायण राय (उ० प्र०) III.

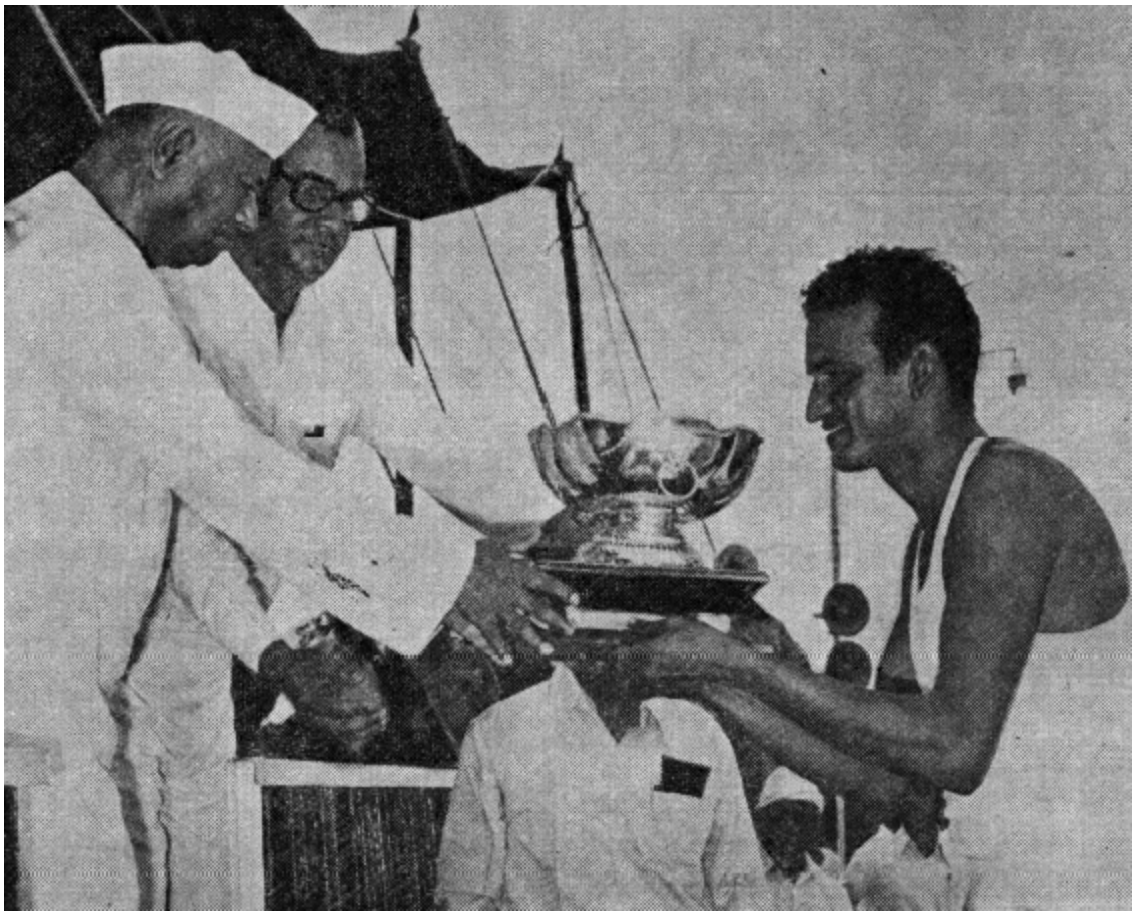
स्प्रिंग गोतेखोरी—हरदयाल सिंह (के० रि० पु० बल) I; ढाका सिंह (के० रि० पु० बल) II व के. डी. पाण्डेय (उ० प्र०) III.



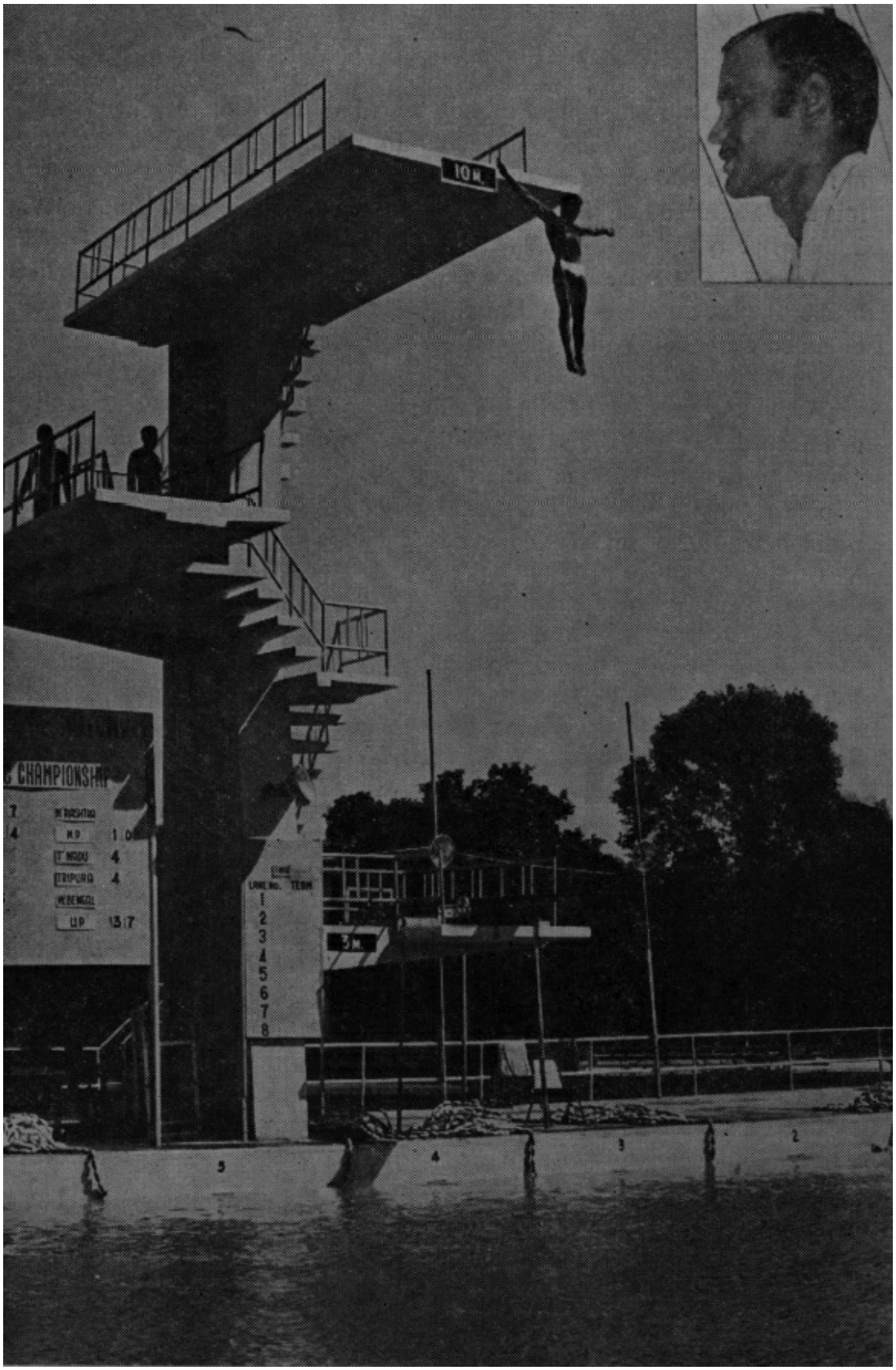
महानिरीक्षक श्री बी० वर्मा से शाबाशी पाते हुये 4×200 मेडले में रजत पदक विजेता एस० लोचनन, सोम शेखरन, पद्मनाभन तथा विलास चन्द्रन का चौगड्डा



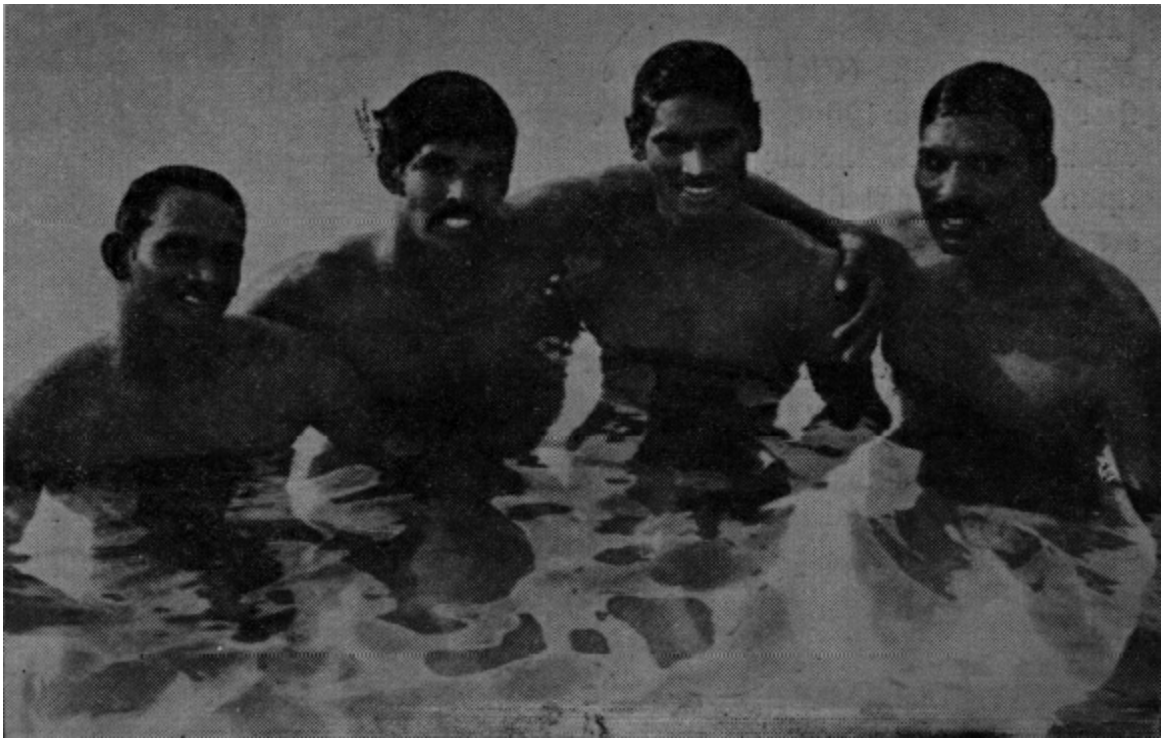
200 मी० बैकस्ट्रोक के स्वर्ण पदक विजेता पी० दास



उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री तपासे के कर-कमलों से अ० भा० पुलिस तैराकी चैम्पियनशिप की ट्राफी पाते हुए के० रि० पु० बल के कोच (शिक्षक) स० इ० नायर


10 M.
CHAMPIONSHIP
3 M.

गोतेखोरी में प्रथम स्थान पाने वाला कपूर सिंह



4×100 मी० फ्री स्टाइल रिले में के० रि० पु० बल का विजयी चौगड्डा

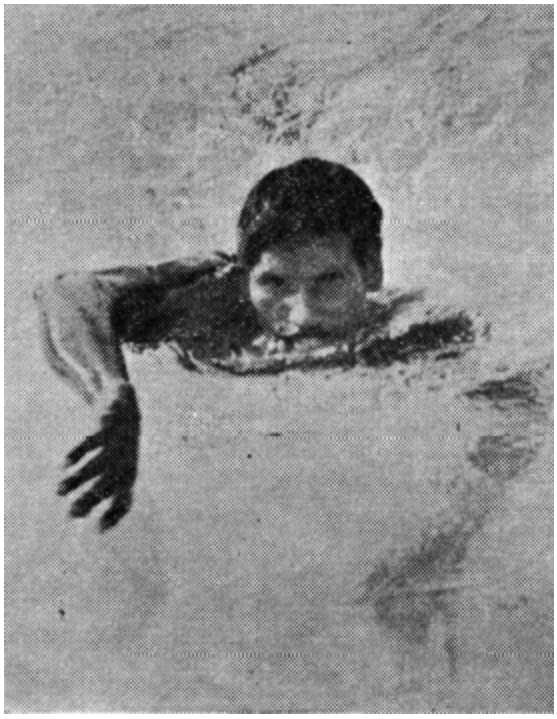
क्रीड़ा क्षेत्रे:

28वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी

विगत अगस्त में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ तैराक सी० सु० दल का श्यामलाल रहा, जिसने 34 अंक जीते। स्मरणीय है कि 1977 में इसी श्याम लाल ने हमारे हेडकांस्टेबल के रूप में प्रतियोगिता में भाग लिया था; किन्तु बाद में, यह सी०सु० दल में इंस्पेक्टर के पद पर ले लिया गया।

कम से कम 10 रिकार्ड इस प्रतियोगिता में भंग हुये। तीन रिकार्ड तो राष्ट्रीय रिकार्ड से भी ऊपर रहे। ए. चक्रवर्ती (भा० ति० पु०) ने 100 मी० बटरफ्लाई में विगत वर्ष का 1:02.8 वाला अपना ही राष्ट्रीय कीर्तिमान 1.02.3 से सुधारा और 200 मी० बटरफ्लाई में 1977 वाला शिन का (2:28) रिकार्ड 2:24.2 से भंग किया। के० रि० पु० बल के सोम शेखरन ने 100 मी० फ्री स्टाइल के 57.7 से० में तैर कर 1975 में जी. एस. नायर द्वारा स्थापित राष्ट्रीय रिकार्ड की बराबरी की। के० रि० पु० बल के ही दलीप सिंह ने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक 1:15.3 मी० में तैर कर प्रथम स्थान पाया तथा

1976 में ए. एस. बरार द्वारा स्थापित कीर्तिमान (1:15.4) को भंग किया। वही 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में दूसरे स्थान पर रहा।



गोते खोरी में कपूर सिंह और हरदयाल सिंह (दोनों के० रि० पु० बल के) हाई बोर्ड तथा स्प्रिंग बोर्ड गोतेखोरी में क्रमशः प्रथम रहे।

28वीं अखिल भारतीय पुलिस क्रॉसकंट्री प्रतियोगिता

महानगर लखनऊ के पी० ए० सी० स्टेडियम में 5 अगस्त 79 को आयोजित 28वें अ० भा० पुलिस खेलों में के० रि० पु० बल ने क्रॉस-कन्ट्री दौड़ का सिरमौर जीता।

14.5 मीटर की सारी दौड़ में के० रि० पु० बल के सदस्य हे० कां० **प्रेमचन्द** ने बढ़त रखी। उसने 51 मि० 50 से० में उसे पूरा किया। उसके बाद के तीन स्थान, के० रि० पु० बल ने पाये और सुभाष चन्द, रासदेव तथा भरानालाल क्रमशः द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ रहे।

के० रि० पु० बल की टीम ने 28 अंक पाये, जबकि उत्तर प्रदेश ने 97 अंक और हरियाणा ने 113 अंक लिये।

मुरुगप्पा हॉकी

मुरुगप्पा स्वर्ण कप टूर्नामेंट : केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को केन्द्रीय हॉकी टीम ने जून 1979 में आयोजित मुरुगप्पा स्वर्ण कप हॉकी टूर्नामेंट मद्रास में भाग लिया और वह उप विजेता रही।

राष्ट्रीय आयुवर्ग तैराकी

बम्बई में 22 से 27 मई 1979 तक गठित छठी राष्ट्रीय आयु वर्ग (नेशनल एज ग्रुप) तैराकी में हे० का० टी. थोबा सिंह (के० रि० पु० बल) ने दो कीर्तिमान स्थापित किये। इस तरुण तैराक को, तैराक के रूप में ग्रुप केन्द्र इम्फाल ने भर्ती किया है। इसने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 1:18.5 में तथा 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 2:51.5 में तैर कर दो नये रिकार्ड बनाये।

सिलाई भाड़े में वृद्धि

सरकार ने परिवार कल्याण केन्द्र में सिलाने वाली वर्दी की सिलाई भाड़े में इस प्रकार वृद्धि कर दी है (पुराने भाड़े कोष्ठकों में लिखे हैं) :—बड़ा कोट रु० 25/- (रु० 9.40); खाकी कमीज रु० 4/- (रु० 1.70); निकर खाकी रु० 2.20 (रु० 1.30); पैंट खाकी रु० 4/- (रु० 2.25) अंगोला कमीज़ रु० 4.50 (रु० 3/-); पैंट ऊनी सर्ज रु० 9.35 (रु० 5.30) तथा पूरी डांगरी रु० 8/- (रु० 2.70)।

अन्तर्रेंज क्रॉस कन्ट्री दौड़

दिनांक 20 जून 79 को श्रीनगर में अन्तर्रेंज क्रॉस कन्ट्री दौड़ हुयी, जिसमें हैदराबाद रेंज प्रथम, दिल्ली रेंज द्वितीय तथा गौहाटी रेंज तृतीय स्थान पर रही।

व्यक्तिगत चैम्पियनशिप नीमच रेंज के हे० का **प्रेम चन्द** को मिली। इ० प्रदीप कुमार (श्रीनगर) II तथा हे० का० रासदेव सिंह (हैदराबाद)III रहे।

देशान्तर गमन

कल्याणकारी उपाय के रूप में, जम्मू-काश्मीर राज्य के किश्तवार-ब्रह्माक्षेत्र में के० रि० पु० बल के सदस्यों के बालकों के लिये देशान्तरगमन का कार्यक्रम के० रि० पु० बल ने प्रथमबार आयोजित किया। हरेक बालक पर किये गये व्यय को, इस बल के केन्द्रीय कल्याण निधि से इस प्रकार अनुदान में लिया गया—1. राजपत्रित अधिकारी के बालक हेतु—50%; 2. अधीनस्थ अधिकारी के बालक हेतु—75% तथा 3. अन्य श्रेणी के बालक हेतु—100% ।

देशान्तर-गमन का यह कार्यक्रम जून 79 में पन्द्रह दिन तक चला। इन बालकों के अपने शिविर नेता थे। भारत के युवक छात्रावास संगठन द्वारा गठित अन्य ऐसी ही टोलियों से इन बालकों को मिलने का अवसर मिला।

इस देशान्तर-गमन का मुख्य ध्येय के० रि० पु० बल के सदस्यों के बालकों में साहस की भावना भरना था।

स्वास्थ्य सन्देश :

सूची वेध चिकित्सा

लेखक—श्री जे० एस० शर्म्मा

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में चीन का प्रमुख स्थान है और उसकी चिकित्सा-पद्धति भी अनोखी है—सूचीवेध संज्ञाहीनता, जिसे एक्यूपंक्चर के नाम से पच्छिमी जगत में पुकारा जा रहा है। इस चिकित्सा पद्धति ने इन्हीं दिनों विश्व में अत्यन्त ख्याति पायी है। भारत के महानगरों में भी इस पद्धति ने प्रवेश किया है। दिल्ली में हमदर्द दवाखाना और एलोपैथी अस्पतालों में भी इसका श्रीगणेश हुआ है तथा इसकी अनोखी सुइयों से यहाँ के डॉक्टर व हकीम अपनी पद्धतियों का तालमेल बिठाने का यत्न कर रहे हैं। किन्तु इसके अर्थ ये कदापि नहीं हैं कि भारतवासी पहले इस से अविज्ञ थे। आगरे में गाइड एक शाही स्थान दिखाते हैं, जहाँ ऊपर की मंजिल में शाही रोगी बैठ जाते थे और नीचे से फव्वारे द्वारा औषधयुक्त कंटक सुइयाँ फेंकी जाती थीं और रोगी के शरीर को वेध कर लाभ पहुँचाती थीं। दर्शकगण इस पर कभी गंभीरता से ध्यान नहीं देते थे; परन्तु क्या वह विधि सूचीबेध चिकित्सा से तादात्म्य नहीं खाती है ?

पिछली शताब्दि में अंग्रेजों का बोल-बाला था। उनके साम्राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता था। फलस्वरूप, उनकी चिकित्सा प्रणाली ऐलोपैथी विश्वभर में छा गई और अन्य सब चिकित्सा पद्धतियाँ केवल ग्रामीणों की बपौती रह गईं। यही स्थिति चीन की सूची वेध संज्ञाहीनता की हुई। परन्तु समय ने करवट ली है; अब अन्य पद्धतियों में अनुसंधान हो रहे हैं और उनको पुनरुज्जीवित करने की चेष्टायें की जा रही हैं। सूचीवेध प्रणाली इसमें अपवाद कैसे हो सकती है?

उद्भव : यह बात किससे छिपी है कि अनादिकाल से धनुषवारणों का प्रयोग युद्धों में होता रहा है ? अब भी आदिवासी इन्हीं पर आस्था रखते हैं। इन से सबसे बड़ा लाभ यह निकला कि जब कोई वाण किसी अंग में घुसा, तब उसने किसी दूसरे अंग की वेदना दूर कर दी। बस यही अनुभव सूची वेध विधि का जनक बना। फिर क्या था? अंग-अंग पर वाण तथा सुइयें चुभोई गई और उनके परिणाम देखे गये। निरन्तर खोज करने के उपरान्त शरीर में 1,000 सूचीवेध्य विन्दुओं की खोज की गई।

चीनी चिकित्सों के अनुसार, मानव देह में दो विपरीत शक्तियों —विनाशकारी तथा पुनर्जन्मदायी—के बीच समन्वय तथा सन्तुलन बना रहता है; रक्त में ठीक लाल और सफेद कणों की भाँति। इन्हें चीनी भाषा में यिन और याँग कहते हैं। जब इन शक्तियों का सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब रोग उत्पन्न होते हैं। सूची वेध द्वारा इस विचार को फिर नियंत्रित किया जाता है, क्योंकि शरीर के भीतरी अंग बाहरी अंगों से विशेष रेवाओं अथवा याम्योतर वृतों द्वारा जुड़े रहते हैं। इनको चीनी भाषा में चिंगमई

पुकारा जाता है। चीनी सिद्धान्त के अनुसार, ये चेंगनइ देह के विभिन्न अवयवों में ऊर्जा (चि) रक्त (ज्यू) और पोषक आहार (यिंग) का संचार करते हैं। मानव देह में कुल 12 मुख्य याम्योत्तर रेखायें मानी गई हैं, जिनका नाम उन अंगों के आधार पर रखा गया है, जिनसे वे संबंधित हैं। ये रेखायें वक्षस्थल के अन्दर से ऊपरी अंगों की त्वचा की ओर तथा हाथ से सिर के भीतरी भाग में, सिर के अन्दर से देह के निचले भागों, त्वचा तथा पर से पेट और छाती या पेट के भीतर जाती हैं। साथ ही, दो अन्य याम्योत्तर वृत हैं, जो मूलाधार से सिर की ओर देह की मध्य रेखा के संग स्थापित रहते हैं। उनमें एक अगले भाग में और दूसरा पिछले भाग में जाता है।

रोग का कारण : चीनी सिद्धान्त के अनुसार, जीवन प्रक्रिया, सक्रिय शक्ति और जीवन ऊर्जा द्वारा नियंत्रित रहती है। सक्रिय शक्ति प्रकृति में वैद्यतिक रूप से श्वसन-पोषण द्वारा शरीर से पवेश करती है तथा अंगों द्वारा ग्रहण कर याम्योत्तर रेखाओं से संचारित होती रहती है। इसमें तनिक गड़बड़ होने से, किमी अंग में जीवन शक्ति अधिक और किसी में कम हो जाती है, जिससे शारीरिक क्रियाओं में भी गड़बड़ की (विकार) पैदा हो जाती है। इसी कारण याम्योत्तर रेखाओं पर रोग-लक्षण प्रकट होते है।

रोगनिवारण : (विकार) गड़बड़ को दूर करने के लिये जीवन शक्ति को सन्तुलित करना होगा, जिसके लिये याम्योत्तर रेखाओं पर पूर्वनिर्धारित सम्बन्धित अंगों को सुई से वेधा जाता है।

सुई वेधने से पूर्व, पीड़ा का कारण और पीड़ित अंग को जानना होता है; फिर उस याम्योत्तर रेखा की खोज के लिये, रोग ग्रस्त अंग को प्रभावित करने वाले स्थल को ढूंढना होता है। तब निश्चित बिन्दुओं पर सुइयाँ वेध दी जाती हैं।

ये सुइयाँ अब स्टेनलेस स्टील की बहुत बारीक बनाई जाती हैं। इनकी लम्बाई 1 इंच से 12 इंच तक हो सकती है। सुइयों की संख्या अंग की प्रकृति तथा रोग पर निर्भर होती है तथा कई बार लगाई जा सकती हैं। जबकि कभी एक ही सुई से लाभ हो जाता है, तो कभी 40-50 तक सुइयाँ वेधी जाती हैं। इसी प्रकार कभी-कभार 200 बार तक सुइयाँ वेधे जाने की सूचना है। साधारणतयः 5-10 मिनट तक सुई लगाये रखने की अवधि है; किन्तु गम्भीर रोगों में 2 घंटे तक वह लगी रह सकती है। एक स्थल से दूसरे स्थल पर भी सुई को ले जाया जा सकता है।

हाथ की पहली दो अंगुलियों के बीच में लगी सुई मुँह का दर्द और पाँव की प्रथम दो अंगुलियों के बीच में लगी सुई यकृत के रोग दूर करती हैं। इसी भाँति, तंत्रिका प्रणाली, आंत्रिक, दैहिक तथा मानसिक रोग क्या बाल क्या वृद्ध, एवं क्या सभी व्याधियों में सूचीवेध बड़ा लाभकारी सिद्ध हुआ है। आँख, नाक, कान, गला तथा त्वचा के सभी रोग इस पद्धति से ठीक हुये हैं। अपेण्डेसाइटीज़ 90 प्रतिशत चीन में इसी चिकित्सा से ठीक हुई हैं।

लाभ—सूचीवेध चिकित्सा से अनेक लाभ हैं—(1) यह विधि सरल तथा आजकल की मँहगाई के दिनों कम खर्चीली होने के कारण वरदान सिद्ध हुई है। इसके लिये

मँहगे जाटेल यंत्रों या औषाधेयों की जरूरत नहीं पड़ती; (2) मानासेक तथा दैहेक जटिलतायें कम होती हैं; (3) इस से सह-कुप्रभाव उत्पन्न नहीं होते; और सबसे बड़ा लाभ है (4) चेतना/आपरेशन के समय भी रोगी सुध-बुध नहीं खोता और सर्जन को आपरेशन में सहयोग दे सकता है। उदाहरणार्थ, थाइराइड ग्रंथि को निकालते समय रोगी से स्वर सुन कर डॉक्टर आश्वस्त हो सकता है कि स्वर यांत्रिकाओं को कोई क्षति नहीं पहुँची है।

परिसीमन—(1) क्योंकि मांस पेशियाँ पूर्णतः संज्ञाहीन नहीं होती, पेट और आँतों के आपरेशनों में बाधा उत्पन्न हो सकती है, जिससे स्नायुओं में जकड़न होने से पीड़ा हो सकती है।

(2) शरीर के विविध अंगों पर इसके प्रभाव भिन्न होते हैं। सीने से ऊपरी अंगों के आपरेशनों में सूचीवेध से अधिक सफलता मिली है, जबकि हाथ पाँव या पेट की शल्यचिकित्सा में उतनी नहीं।

(3) क्योंकि सूचीवेध का प्रभाव साधारणतया एक दो घंटे तक रहता है, गैस्ट्रिक अल्सर (पेट के फोड़े) तथा पल्मोनरी टी० बी० (फेफड़े की दिक़) के लिये वक्षस्थलीय, आपरेशनों आदि में सूचीवेध सफल रहा है।

(4) पूर्ण संज्ञाहीनता नहीं होने के कारण, सूचीवेध कितने ही आपरेशनों में वेदना को हरण करने में अधिक सफल नहीं रहा है। पुराने रोगों में अलबत्तः सूचीवेध बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। शल्य चिकित्सीय रोगों और पुराने रोगों की चिकित्सा करने वाले सूचीवेध विशेषज्ञ भिन्न होते हैं।

(5) सूचीवेध की सफलता दो बातों पर निर्भर है—(क) रोगी की इच्छाशक्ति और (2) चिकित्सक की दक्षता। क्योंकि सूचीवेध की सफलता रोगी की भावनात्मकता पर निर्भर होती है, 10 वर्ष से कम आयु के बालकों तथा अधिक घबड़ाने वाले रोगियों के लिये अनुपयोगी रहता है। साथ ही, सूचीवेध तकनीक के लिये रोगों का ठीक ठीक चयन करने में चिकित्सक की सावधानी तथा दक्षता की बड़ी ज़रूरत होती है।

उपसंहार—कहावत है—मरता क्या नहीं करता? सूचीवेध चिकित्सा ने मृत्यु से संघर्ष करते हुये रोगी को एक और आशाकिरण जगा दी है । यह सस्ती होने के साथ-साथ, कितने ही रोगी में सफल रामबाण सिद्ध हुयी है।

★ यह भी खूब रही ★

दम का दमामा ही आदम बना और आज भी आदमजाति दम के सहारे जीती है।

तेली कवि—सौतेलियों से जलो,
पर सौ तेलियों से नहीं।
इन की खलों में स्नेह है।
पर उन खलों में नहीं ॥

एक अनपढ़ ने अपनी लुटिया कुयें में गिरने पर पास के पंडित से उसे निकालने को अपनी टूटी-फूटी संस्कृत में कहा—मिष्टिका की कुष्टिका में लुष्टिका गिरष्टई, क्या कुलश्रेष्टई, लुष्टिका निकष्टई।

पंडित ने वहाँ की लोकभाषा में उत्तर दिया "मतबल हम समझ गइन। अबही गढ़वी निकाल देत हैं।"

संगीत अध्यापक—तुम्हें कौन लय नहीं पसन्द है ?

छात्र—सर, विद्यालय।

पत्नी—इन आपके थोड़े से पैसों में मैं क्या बनाऊँ ?

पति—कुछ भी बनाओ दाल या सब्जी, पर पैसे लेकर, मुझे मत बनाओ।

गृहस्वामिनी—मेरा राजामुन्ना क्यों इतना रो रहा है? शायद मेरे कहने पर भी तूने मेरी ग़ैर हाज़िरी में कुछ खिलाया नहीं दीखता है।

धाय—वाह मेमसाब, कुछ की बात करती हो, हमने बहुत खिलाया। कभी हमने गोद में खिलाया; कभी सिर पर कुदाया। पर अब राजा मुन्ना जो रोये हैं, सो चुपने का नाम ही नहीं लेते।

डॉक्टर—तुमने जो पिछले सप्ताह हमें चेक दिया, वह तो वापस आ गया है।

रोगी—सो ही मेरा ज्वर भी।

मैनेजर—तुमने कई जगहों पर काम करने के अनुभव के आधार, मैं नियुक्त तो करता हूँ; किन्तु तुम्हें यह मुझे आश्वासन देना होगा कि तुम यहाँ काम करते रहोगे।

उम्मीदवार—ज़रूर, ज़रूर। वैसे भी पिछले काम अपनी मर्जी से मैंने कभी नहीं छोड़े।

नेतृत्व के गुण

ले०—ले० कर्नल के० गोस्वामी

आदि मानव को शक्ति सामूहिक जीवन में थी; यदि वह ऐसा नहीं करता, तब वह विलुप्त हो गया होता। अन्य मनुष्यों के साथ, वह भोजन खोजता, अपनी प्रतिरक्षा करता तथा स्थान-स्थान पर मारा-मारा फिरता था। इस सब आदिम कार्रवाइयों के लिए नेतृत्व की ज़रूरत थी। जब कभी नेतृत्व शक्तिशाली हुआ, दल बच गया। उन दिनों में नेतत्व के प्रमाणांक थे—शक्ति तथा शारीरिक साहस।

ज्यों-ज्यों समाज विकसित हुआ, त्यों-त्यों नेतृत्व जटिल होता गया। मनुष्य ही मनुष्य का जानी दुश्मन बन बैठा। आर्थिक दबावों ने उसे अपने ही लोगों से कलह करने को बाध्य किया। ऐसी स्थिति से सुलझने के लिए, राजपद के संस्थान का उदय हुआ, जिसमें राजा ने राजनीतिक, सैनिक तथा सामाजिक रहनुमाई की। सिकन्दर महान से लेकर नेपोलियन तक, हमें ऐसे नेताओं की अनगिनत संख्या मिलती है, जो सभी बड़ी-बड़ी विजयों के लिए महत्वाकांक्षा तथा उसकी प्राप्ति करते रहे हैं, विस्तृत भूक्षेत्रों को अधिग्रहण करते रहे हैं और करते रहे हैं अपने देशवासियों से पूर्ण स्वामिभक्ति तथा निर्विवाद फरमाबरदारी की मांग तथा प्राप्ति।

आधुनिक समय—युगों से, लोग इस बात पर अचम्भा करते रहे हैं कि प्रकृति ने क्यों कुछ मनुष्यों को बड़ी-बड़ी बातों के लिए चुना है और यह विश्वास करते रहे कि वे देवताओं द्वारा मनोनीत हुए हैं। आधुनिक समय में, इस विषय पर गम्भीर अध्ययन हुआ और यह पाया गया कि अतीत के सब महान नेताओं में विशेषताओं की कुछ समानतायें थीं।

यह विचारधारा अब सही नहीं मानी जाती है कि नेता जन्म लेते हैं और बनाये नहीं जाते। यदि किसी में नेता बनने के गुण हैं, तब उन गुणों को प्रशिक्षण द्वारा विकसित किया जा सकता है। हरेक चर्चिल या नेहरू नहीं बन सकता, किन्तु आधुनिक समाज में लगभग सभी क्षेत्रों में विविध स्तरों के नेताओं की बड़ी जरूरत है। चाहे उद्योग हो, सेवायें हों, सरकारी दफ्तर हों, तकनीकी योजनायें हों या हो कोई अन्य गतिविधि — नेतापन की सर्वत्र आवश्यकता है।

नेतापन के गुणों को एकीकृत करने के विविध तत्वों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—मौलिक तथा गौण। पहले वर्ग में, बुद्धिमत्ता, व्यावसायिक ज्ञान, साहस, आत्मविश्वास, अनुशासन, मनोबल, उत्तरदायित्व, संकट में धैर्य-आकांक्षा, खतरा उठाना, निर्णयात्मकता, उपलब्धि तथा आशुक्रिया जैसे गुणों का समावेश होता है। दूसरे वर्ग में, हँसीमजाक, विनम्रता, मिलनसारिता, भाषण देने की योग्यता आदि गुण आते हैं।

I. मौलिक गुणः बुद्धिमत्ता तथा व्यावसायिक ज्ञान—दोनों साथ रहते हैं और नेता के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। शिवाजी से बढ़कर अन्य कौन सा ज्वलन्त दृष्टान्त मिलेगा? औरंगजेब द्वारा घृणात्मक रूप से "पहाड़ी चूहा" पुकारे जाने वाले, शिवाजी ने युद्ध-शिक्षा ली। समयानुसार उसने युद्ध विद्या को सुधारा तथा अपने समकालीनों से सर्वथा भिन्न, उसने कभी मुग़ल सेना से आमने-सामने डट कर मुकाबला नहीं किया। उसने उनके ही आधिपत्य वाले क़िलों से, उन्हें खदेड़ भगाया। इस राजनीति ने केवल

मुगलों की शक्ति को अन्त में नहीं नष्ट कर दी तथा दक्षिण में उनके प्रभुत्व को छिन्न-भिन्न कर दिया; साथ ही साथ मराठा राज्य की नींव डाली। यह पहली बार थी जब छापामार युद्ध किस युक्ति-युक्त परिणाम पर लड़ा गया। शिवाजी के अनुभवों तथा अनुसंधानों का लाभ, बाद के नेताओं ने उठाया।

साहस—अतीत में, यह शारीरिक शक्ति तथा साहस था, जिसने नेतापन के लिए लोगों को चुना; किन्तु जैसे-जैसे समाज कृत्रिमता की ओर बढ़ा, वैसे-वैसे नैतिक साहस—अपने सिद्धान्तों पर मर मिटने के साहस—का बोलबाला बढ़ा। घृणा से भरे हृदय वाले तथा आँखों से आग बरसाने वाले सामन्तभटों के वश की यह बात नहीं थी कि वे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं करते। सन्तुलित मस्तिष्क रखने वाले नैतिक साहस के साथ ऐसी बात नहीं होती, वह तो आवश्यकता पड़ने पर आमरण साथ देता है। और कहाँ जाइये ? महात्मा गाँधी को ले लीजिये। एक नन्हे बौने, किन्तु नैतिक साहस के समय, वह थे हिमालय के समान विशाल।

आत्मविश्वास—यह खूब ही सच कहा है कि चाहे वाणिज्य हो, अभियान हो, खेल हो, युद्ध हो या हो अन्य कुछ भी क्षेत्र, यदि किसी को अपने पर ही विश्वास नहीं है, तब वह किसी साहसी कार्य में कैसे दूसरों को अनुगामी बना सकता है। किसी वांछित ध्येय को पाने की अपनी क्षमता में पूर्ण आस्था के अर्थ आत्मविश्वास के हैं। यह मानसिक स्थिति है और किसी क्षेत्र में बौद्धिक विकास के अनुरूप उसका झुकाव होता है।

अनुशासन—अनुशासन थोपा जाता है। मनुष्यों को ऐसे कामों के करने के लिए बाध्य किया जाता है, जिन्हें वे नहीं चाहते हैं। पैदल सेना के धावे इसी कारण होते हैं कि पैदल सेना पर वज्र अनुशासन थोपा गया है। किन्तु जब हम नेता के अनुशासन की चर्चा करते हैं, वह आत्मानुशासन होता है, जिसका हमें ध्यान होता है। अपने ऊपर अपने आप से अनुशासन संहिता लागू करना अपेक्षाकृत कठिन है, क्योंकि यहाँ व्यक्ति स्वयं ही जज (न्यायकर्त्ता) और जेलर (काराध्यक्ष) होता है।

आत्मानुशासन कभी ऐसी आज्ञा देने की सलाह नहीं देता, जो खुद को अरुचिकर हो। सच्चा नेता स्वयं को उसी अग्निपरीक्षा में डालता है, जिसमें वह अपने अनुयायियों से रहने को कहता है। ऐसी जनश्रुति है कि सिकन्दर भारत से लौटते समय रेगिस्तान पार कर रहा था। अन्न-जल के अभाव में, उसके सैनिकों को अकथनीय कष्ट उठाने पड़े, सो ही उसे भी, क्योंकि वह उनके आगे-आगे था और यह भी तब, जब उसके फेफड़े में एक बाण उन्हीं दिनों में भिधा था, जो बाद में उसके प्राण ले बैठा। कोई आश्चर्य नहीं है, जो उसने अपने जाने माने विश्व को जीता था।

उत्तरदायित्व—नेतापन और उत्तरदायित्व मानना परस्पर पर्याय हैं। कोई भी नेता तब तक नेतृत्व नहीं कर सकता, जब तक वह ज़िम्मेदारी नहीं मानता। सच्चा नेता कभी भी ज़िम्मेदारी थोपे जाने की बाट नहीं जोहता; वह अपनी मानसिक स्थिति ऐसी बनाता है कि उत्तरदायित्व को वह खोजता नहीं फिरता और उसे निभाने में आनन्द अनुभव करता है। चर्चिल द्वितीय विश्व युद्ध में फँसे इंगलैंड के लिए समय का वरदान

था; लोगों ने उसे नहीं खोजा; वह खुद मौजूद था।

संकट में धैर्य—जब चर्चिल ने अपने देशवासियों से धैर्यपूर्वक यह कहा, तब एक हताश राष्ट्र पर इसके प्रभाव का ध्यान कीजिये—"केवल रक्त तथा अश्रुओं का, मृत्यु तथा सर्वनाश का वायदा मैं कर सकता हूँ। मैं वचन देता हूँ कि हम ब्रिटिश द्वीप के तटों पर लड़ेंगे; अपने दूर स्थित उपनिवेशों से लड़ेंगे; किन्तु हम कभी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे।" और यह उस समय कहा था जब सारा योरुप हिटलर की दासिता में कराह रहा था। इतिहास ऐसे दृष्टान्तों से भरा पड़ा है जब नेताओं की हिमाचल के समान दृढ़ता तथा कभी नहीं लड़-खड़ाने वाली कृत संकल्पता ने संकट की लहर को अपने अनुकूल बदल लिया है।

महत्वाकांक्षा—महत्वाकांक्षा-शब्द से साधारणतया एक अनादर पूर्ण भाव झलकता है। प्रायः किसी से घृणास्पद स्वर में यही सुनने में आता है— "अरे, वह तो बड़ा महत्वाकांक्षी है।" वास्तव में, यहाँ असैद्धान्तिक उपायों की ओर संकेत होता है, जो अपनी अभिलाषा पूर्ण करने में प्रयुक्त होते हैं और यही गूढ़ार्थ उस शब्द का नामान्तर बन गया है।

यह अतीव प्रतिद्वन्द्वी विश्व बहुत हद तक गर्दन काट प्रतिस्पर्धा में फँसा है; किन्तु इससे महत्वाकांक्षा के गुणों को नकारा नहीं जा सकता। यह तो नेता की जान है। महात्मा गाँधी की भारत को स्वाधीन देखने की लालसा आज इतिहास बन चुकी है। उनके सामने साधन सिद्धि के समान महत्वपूर्ण थे।

परिकलित भय—अपने निर्णय लेने के लिये, अच्छे नेता को सब तथ्यों के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, क्योंकि वे कभी पूरे नहीं मिल सकते और बल्कि उनमें से कुछ तोड़े मरोड़े होती हैं। अतएव, कुछ तथ्यों को उसे सच मानना पड़ता है। यह उसके अपने अनुभव तथा ज्ञान पर आधारित होता है और ऐसे निर्णय करने को परिकलित भय पुकारते हैं।

सफलता और विफलता कितने ही तत्वों पर निर्भर करती हैं, जिनकी यहाँ चर्चा नहीं हो सकती। ऐसा ख़तरा केनेडी ने मिसाइल-संकट के समय लिया था, जब उन्होंने क्यूबा की नाकाबन्दी का आदेश दिया था और वह सफल रहे।

निर्णयात्मकता—यह एक विकट गुण पुकारा जा सकता है; किन्तु इसके अन्तर्गत तैश में लिए निर्णय नहीं आते, क्योंकि जल्दवाज़ी और निर्णयात्मकता आपस में तालमेल नहीं खातीं। सभी सम्बद्ध तत्वों की खूब छानबीन कर निर्णय लेने को तथा उस पर दृढ़-रहने को निर्णयात्मकता कहते हैं । कथनी और करनी में अन्तर होता है। एक आम दृष्टान्त बाबर का है, जिसने अटक पर 700 गाज़ियों के साथ सिंधु को पार कर अपने पीछे पुल को जला दिया क्योंकि उसने भारत जीतने का बीड़ा उठाया था —यही तो निर्णयात्मकता थी।

विजयेच्छा—निर्णयात्मकता से सीधी जुड़ी विजयेच्छा है। यदि किसी पर आत्मबल है, तब वह अपने निर्णय को सफलीभूत कर सकता है। कितनी ही भव्य योजनायें नेता के मनोबल की कमी के कारण विफल रही हैं और कितनी ही तुच्छ नीतियाँ नेता के

अदम्य साहस के कारण सफलीभूत हुयी हैं।

उपस्थिति—उत्तम नेता का यह एक विलक्षण गुण होता है कि जहाँ उसकी सर्वाधिक आवश्यकता होती है, वहाँ वह मौजूद मिलता है। कुछ इसे उसकी सहज बुद्धि पुकारते हैं, तब कुछ इसे सौभाग्य कहते हैं। हम इसे उत्तम निर्णय कहेंगे।

कितनी ही बार, सही समय और ठीक स्थान पर नेता की उपस्थिति ने उसके अनुकूल परिणाम दिखाये हैं। नेपोलियन इसमें महानिपुण था और कितनी ही बार पराजय के चंगुल से उसने विजय छीनी।

आशुक्रिया—स्थिति दीर्घकाल तक स्थिर नहीं रहती है। उत्तम नेता को अपनी योजनायें सदा सुधारते-संभारते रहना चाहिए। इसी गुण के अभाव के कारण, द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी हाई कमान को इम्फाल पर रुकना पड़ा था।

II. गौणगुण—अभी विशेष गुणों की चर्चा हुयी। कितने ऐसे गुण और हैं, जो नेतापन की श्रेष्ठ सफलता के लिए मौलिक नहीं होते हुये भी, उसको सुधारने में योगदान करते हैं। उदाहरणार्थ, **मनोविनोद, उदार हृदयता** और **मानवीय दृष्टिकोण**। इनसे नेता लोक-प्रिय होता है।

विनम्रता—एक अन्य उपयोगी गुण है, यद्यपि कितने ही अहंकारी नेता भी अपने चरणचिह्न छोड़ गये हैं। एक भव्य देहयष्टि तया उत्तम सामाजिक व्यवहार ने (जिसे वशीकरण पुकारा जाता है) कितने ही नेता को लाभ पहुँचाया है, मुख्यकर, जब दूसरों को अपनी विचारधारा में फुसलाना होता है।

भ्रष्ट सत्ता—जो नेता व्यवहार कुशल होते हैं, जो अपना मस्तिष्क सन्तुलित रखते हैं तथा चापलूसी से भिन्न स्पष्टवादिता तथा अक्खड़पन में अन्तर समझते हैं और पहचानते हैं, वे ही बड़े बड़े संकटों से साधारणतया उबर पाते हैं। आकाश में छुरछुरियों के सदृश दूसरे लोग इतिहास में विलीन हो जाते हैं। अहमन्य प्रेरणाओं और स्थिर-मस्तिष्कता में सन्तुलन बिठाने के लिए ही, योरुप में शाही भांडों की संस्था ने जन्म लिया था।

एक कारग़र नेता सामान्यतः एक **उत्तम वक्ता** भी होता है। इसी से वह दूसरों को प्रभावित कर सकता है। वह स्वयं भलीभाँति जानकारी रखता है, क्योंकि तभी तो वह प्रभावशाली योजनायें बना सकता है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि कुर्सी (पद) मनुष्य को बनाती है। कुछ हद तक यह सत्य भी है; अर्थात् जब उसमें नेतृत्व की सम्भावनायें हों और कुर्सी को ग्रहण करने का प्रशिक्षण हो।

प्रशिक्षण—आजकल किसी भी प्रकार के नेता को प्रशिक्षित किया जा सकता है 'नेता जन्मजात होते हैं; बनाये नहीं जाते' —इस सिद्धान्त के समर्थक यह बात भूल जाते हैं कि समाजों के प्रतिष्ठित वर्गों ने ही नेतृत्व दिया है; क्योंकि उन्हें ऐसा करने की सुविधा प्राप्त हुई हैं। तभी तो शासकगृहों तथा जमींदारों का उदय हुआ।

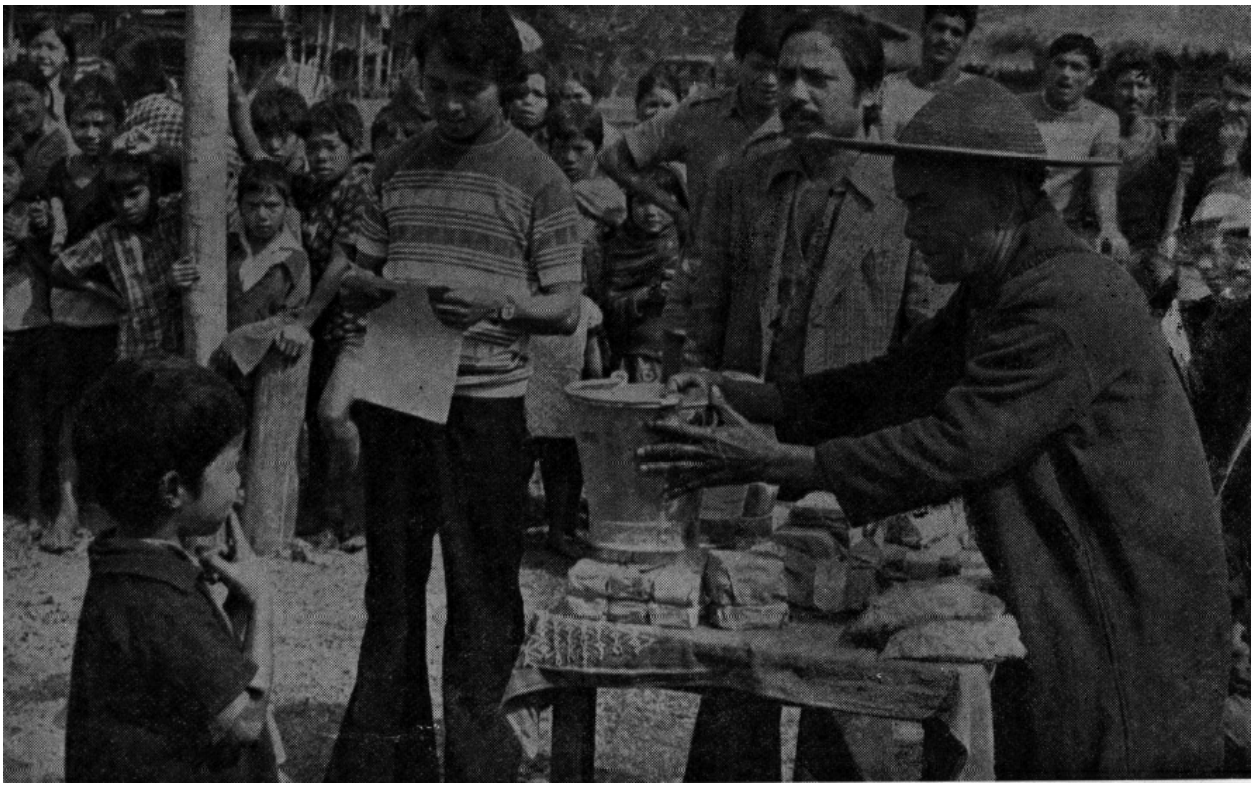
सर्वप्रथम नेतृत्व के प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रथम विश्व युद्ध में प्रतीत हुयी, जब

नागारेक-युद्ध की अवधारणा पैदा हुई तथा लाखों लोग हाथेयार हाथ में लेकर लड़ने निकले। अभिजात तंत्र और रईसशाही इसमें नेतृत्व नहीं दे सकी, जैसाकि वह तब तक करती आई थी।

नेतृत्व प्रशिक्षण का वैज्ञानिक रूप से सर्वप्रथम अध्ययन दूसरे विश्व युद्ध में हुआ और तब औद्योगिक नेताओं की आवश्यकता हुई। (ज्यों-ज्यों अनुसंधान हुये और परिणाम देखे गये) त्यों त्यों जीवन के उन सभी क्षेत्रों में नेतृत्व-प्रशिक्षण की आवश्यकता समझी गई, जिनका जनप्रबन्ध से सम्बन्ध था। हरेक धन्धे में नेतृत्व-प्रशिक्षण की ज़रूरत भिन्न है। किन्हीं में शारीरिक साहस तथा सहनशीलता अनिवार्य है, तो दूसरों में बुद्धि-सामर्थ्य । नेता की ज़रूरत वाला कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, मौलिक तत्व वे ही रहते हैं; केवल उतार-चढ़ाव बदल जाते हैं । अतः आवश्यकता के अनुकूल, प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाने चाहिए। कुछ में, गोष्ठियाँ, भाषण तथा सेमिनार प्रशिक्षण की ज़रूरतें पूरी कर देते हैं, जबकि दूसरों में कठिनताओं से जूझते नेता लोगों की आवश्यकता होती है। विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम और अनुसंधानों के परिणामों को विकसित करना चाहिये और अनुभव प्राप्त करने पर, उनमें सुधार करना चाहिये । ऐसा कुछ लोगों में हुआ भी है।

उपसंहार—मनुष्य नेतृत्व के कारण ही विलुप्त होने से बचा है और हिचकिचाहट के बिना यह कहा जा सकता है कि जब यह भूमण्डल अतिशय जनसंख्या के भार से प्रपीड़ित है, तब मनुष्य के जीते बचने के लिए नेतृत्व की और आप चाहे तो कह सकते हैं, विश्व नेतृत्व की ज़रूरत है, क्योंकि जनसंख्या की समस्या राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर गई है। जबसे मनुष्य ने आग जलानी सीखी, तब से संसार का वातावरण बदल गया और उसका सकल ज्ञान आशातीत बढ़ गया। फलस्वरूप, उसके विचार और विश्वास भी बदले; केवल नेतृत्व के मौलिक तत्व नहीं बदले; वे युग-युगान्तर में वैसे ही रहे।

नेतृत्व के गुण विकसित हो सकते हैं बशर्ते कि ऐसे प्रशिक्षण का विषय निर्धारित हो और संकल्पनात्मक पाठ्य-क्रम आवश्यकतानुसार बनाया जाये। यह स्मरणीय है कि अधिकांश मनुष्य थोड़े-बहुत नेता अवश्य होते हैं।



प्रकृति की सन्तान

ले०—श्री एच. एस. सेठी

मैं अलाँग में था—जो अरुणाचल प्रदेश के सियांग ज़िले का मुख्यालय था। मैंने के०रि०पु० बल के स्थानीय कमाडैंट का यह अनुरोध साभार स्वीकार कर लिया कि निकटवर्ती उस ग्राम में हम चलें, जहाँ उनके जवान वहाँ के निवासियों से वालीबाल की फ्रेंडली (स्नेहशील) मैच खेल रहे थे।

'काबू' का ग्राम केवल पाँच कि०मी० दूर था; किन्तु समय के हिसाब से, यह बहुत दूर था। वहाँ का संसार ही निराला था। जैसे ही हम ग्राम में पहुँचे, एक बेंत की टोपी तथा मनके पहने और हुक्का गुड़गुड़ाते एक मनोरंजक वृद्ध ने हमारा स्वागत किया। देश के उस भाग में "गाँवबूढ़ा" कहलाने वाला, वह ग्राम का मुखिया था। क्योंकि अरुणाचल अभी अपनी शैशवावस्था में है और वहाँ के स्थानीय पुलिस के कार्य आजकल के०रि०पु० बल कर रहा है, मुझे ऐसी आशा थी कि कमाडैंट का शाही स्वागत होगा; किन्तु ऐसा नहीं हुआ। न वहाँ फूलमालायें थीं और ना ही कोई तूर्यनाद। किन्तु निवासियों के खिलखिलाते चेहरों पर स्वागत की सहजता दीख रही थी।

वालीबाल के मैदान में कोई खिलाड़ी नहीं थे। बल्कि नृत्यकाओं के दो दल—(सफेद वस्त्रों में अविवाहित कन्यायें एक में तथा दूसरे में रंगबिरंगे वस्त्र पहने स्त्रियाँ) —वहाँ उपस्थित थे। वालीबाल खेलने की कोई जल्दी नहीं थी। अरुणाचल की उन

अनन्त पर्वतमालाओं में समय शान्त रुका पड़ा था।

किन्तु, नाच तो नहीं रुक सकता था। कोई भी समय नाच के लिये वहाँ उपयुक्त है। पग तथा देह की मन्द गति से, वे झूम रही थीं 'पोपिला, पोपिला, जगल मायला' की धुन दोहराती हुयी नन्हीं बालिकायें नाच रही थीं; उधर युवतियाँ केवल "अहो हाई या" की रट लगा रही थीं। आदि जनजातियों का यह **पोनम** नाच है।

अब वालीबाल की मैच प्रारंभ होती है—एक ओर के० रि० पु० बल के जवान; दूसरी ओर, ग्राम के युवक । युवकों पर अच्छी वर्दी है, इससे अपनी टीम में ग्रामवासियों का गर्व झलकता है।

नृत्यबालायें कुछ ग़ज हट गयीं हैं ; परन्तु नाच—एक समान गति से चल रहा है। क्या ही विचित्र ? वे कभी थकती ही नहीं दीखतीं। इसका उत्तर कोई कठिन नहीं है। वालीबाल के मैदान के साथ तिपाइयों पर हम बैठे हैं और सुन्दर बालिकायें हमारे लिए बाँस के पात्र में स्थानीय धान मदिरा **'अपांग'** लाती हैं और लाती हैं केले के पत्तों पर अधपके आलू और सुअर का माँस ।

कमांडैंट कहते हैं—'यदि आप अपांग नहीं पियेंगे, तो ये लोग अपना अनादर समझेंगे।'

वालीबाल की मैच बढ़ती है। ग्राम के बच्चे उन्मुक्त कण्ठ से चिल्ला रहे हैं। भीड़ का चिल्लाना, खिलाड़ियों को शाबाशी देना और साहस बढ़ाना—सब कुछ यही तो बताता है। 'बक अप' 'बक अप' (खेलो खेलो) कह कर हमारे जवान भी खिलड़ियों में जोश भर रहे हैं। सौभाग्य से, खेल ही एक ऐसा क्षेत्र है जो सभी उन बाधाओं से मुक्त होता है, जो आज के सभ्य पुरुष से बोलने के समय फुसफुसाने को कहती हैं और शोर मचाने के समय रिरियाने को बाध्य करती हैं। यहाँ एक बार को मानव की बर्बरता उभर कर आती है।

ग्राम में प्रकृति के इन बच्चों के फोटो मैं लेता हूँ। एक निवासी मुझे यह सूचना देता है कि उनके मन्दिर में सुअर के बलिदान का आज दिन है और वह यह पूछता है कि क्या मैं उस समारोह के चित्र लेना चाहूँगा। ग्राम में कोई व्यक्ति रोग से मुक्त हुआ है और बलि उसको चढ़ाना है।

"सब कुछ तैयार है और सिर्फ दस मिनट लगेंगे" कह कर वह हिचकिचाते हुये मुझको आश्वस्त करता है और मुझे उत्तर के लिए उपयुक्त शब्दों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मैं तुरन्त उसके साथ ग्राम के छोर पर नीचे ढलान पर बाँसों की घनी छाया में स्थित मन्दिर पर पहुँचता हूँ।

मंच की रूप रचना अलौकिक है : और सो ही है उस नाटक के मुख्य पात्र, जो अब खेला जायेगा। दाओ के साथ, दो आदिवासी नुकीले बांसों के अपने अस्त्रों को पैना कर रहे हैं, जिनसे मन्दिर के एक पार्श्व में उस पशु को रक्त बहा-बहा कर वे मार डालेंगे। दूसरी ओर, अपने मुख पर धान का चूर्ण मले एक दूसरा आदिवासी सुन्दर चाँदी से सफेद रेशे निकालने के लिए एक बाँस को छील रहा है। ये सफेद फूल से

लग रहे हैं और बालेवेदी को सजाने के काम में आते हैं।

मन्दिर में हरेक मद्यपान किये हुये है। ज्यों ही उस वातावरण के प्रारम्भिक विक्षोभ से मैं सँभलने की चेष्टा करता हूँ, त्यों ही एक कृपालु प्रौढ़ आदिवासी एक बड़े पात्र से छोटे पात्र में 'अपांग' उढेल कर मुझे देता है। अतिथि के स्वागत करने का यही परम्परागत ढंग है। मेरे मेज़वान ने ज़रूर ही मेरे मुख पर प्रश्न चिह्न देखा है; तभी तो वह शुद्ध हिन्दी में कह रहा है कि अपांग पीना एक 'नियम' है।

अपांग के कुछ घूँट लेकर मैं उस मद्यपायी महफिल से विदा लेता हूँ और हाथ में बाँसपात्र के लिये वालीबाल के मैदान पहुँचता हूँ।

बालिकायें अब भी नाच रही हैं—बाँसों के घरों से घिरीं, जिनकी छतें भी बाँस की, दीवारें भी बाँस की.....बाँस उनके जीवन का ऐसा अभिन्न अंग है कि यह आश्चर्य होता है कि ये प्रकृति की सन्तान बिना बाँस के कैसे जीवित रह सकेंगी।

मैच खत्म—कमांडैंट ने नमक की बोरी दी (जो परम्परागत भेंट मानी जाती है) और 'गाँव बूढ़े' से पुरस्कार वितरित करने को कहा। ग्राम के मुखिये ने सर्व प्रकारेण उत्तम भाषण में यह दुःख प्रकट किया कि हमारा स्वागत किसी अच्छे स्तर का नहीं था तथा उसने आश्वासन दिया कि अगली बार इससे उत्तम स्वागत होगा।

जैसे ही हम जीप में बैठकर चलने की तैयारी करते हैं, वैसे ही, नृत्यबालायें अब भी गाते हुये जीप के निकट आ जाती हैं, वैसी ही मासूमियत, वैसी ही स्नेहार्द्रता और उनके नेत्रों में अन्तिम विदा की विलम्बित झलक । इस समय वे एक ही पंक्ति बारम्बार दोहरा रही थीं—"ओ दिल्ली वाले —फिर ज़रूर आना।

<u>कविता:</u>

॥मानवता॥

[रचयिता—**हवलदार विष्णु दत्त गुर्जर—50 बटा०**]

मानव की मानव से घिन क्यों, ऊँच-नीचा पद होने में/
है श्वास वही, विश्वास वही, नैराश्य वही है रोने में/
तन-मन-धन-जीवन का सब बल, कुछ संग कभी ना जायेगा/
जब वक्त पड़े, सब दूर रहें, कोई नाहिं हाथ बटायेगा /
'पद', 'अहम्' भाव का गौरव मद, सब धरे यहीं रह जायेंगे/
कर्मों के लिये लिखे चिट्ठे, बस स्वर्ग-नरक दिलवायेंगे /
हो चित्रगुप्त से दण्डित सब, जीवन जड़वत् रह जायेगा /
सब हँसी-खुशी में मग्न रहें, तू सिर धुन कर पछतायेगा /

ऐ स्वार्थजनक लोभी प्राणी, कर प्यार मनुज से, मानव बन ।
है कालचक्र सिर घूम रहा, है छीन रहा छिन छिन जीवन ।
निजपापों का कर प्रायश्चित, तू सँभल-सँभल कर आगे चल ।
ले माँग भीख मानवता की, नित बोल मृदुल वाणी प्रति पल ।
अपने मन से आतंक भगा, जो कष्ट बदा, वह है भरना ।
'गुर्जर' आयेगा याद तभी, क्या करना था, क्या है करना।

के०रि०पु० बल के फोटोग्राफर विजयी

महानिदेशालय (जन-सम्पर्क विभाग) के स० इ० शिवकुमार को तीसरी बार इन्डियन पुलिस जर्नल द्वारा आयोजित पुलिस फोटो प्रतियोगिता में "दि रिवोल्ट" (विद्रोह) नामक छाया चित्र पर प्रथम पुरस्कार मिला है। अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष पर सूचना और प्रसार मंत्रालय द्वारा आयोजित "भारतीय बालक" (चिल्ड्रेन आफ इन्डिया) फोटो प्रतियोगिता में भी अपने छाया चित्र "माई फैमेली" (मेरा परिवार) पर उसे प्रथम पुरस्कार मिला। स० इ० एस० के० खन्ना (महानिदेशालय जन-सम्पर्क-विभाग) को इन्डियन पुलिस जर्नल द्वारा आयोजित पुलिस फोटो प्रतियोगिता में अपने छायाचित्र "पुलिस पोस्ट" (पुलिस चौकी) पर प्रथम पुरस्कार मिला।

विज्ञान के चढ़ते चरण

• पच्छिमी जर्मनी में एक ऐसा कैमरा तैयार हुआ है, जिसकी सहायता से दिल के दौरे पड़ने से पहले चेतावनी मिल जाती है।

• फूकुशिमा में गुर्दे के प्रत्यारोपण से संबद्ध आपरेशन में **कृत्रिम रक्त** का प्रयोग सफलतापूर्वक हुआ है।

• एक ऐसी हल्की मशीन का निर्माण हुआ है, जिससे नाड़ी की गति का पता उस समय तक सही-सही लग जाता है, जब स्टेथस्कोप विफल रहे हैं और रोगी मृत घोषित कर दिये गये हैं। यह अंगुली की नोक पर लगाने से धड़कन, प्रकाश और ध्वनि से जानी जाती है और दिल की धड़कन की दर एक छोटी स्क्रीन पर दर्शायी जाती है।

अध्यापक—बच्चों बताओ बाल वर्ष की भारत में क्या विशेषता है ?

एक शिष्य–सर, यहाँ इस वर्ष बूढ़े-बूढ़े बालक बन रहे हैं। वृद्ध नेता बच्चों जैसे लड़ रहे हैं, कुर्सी की खींचातानी कर रहे हैं और परस्पर ईंट-

पत्थर बरसा रहे हैं।

राजा मुन्ने के चिल्लाने के ढंग से तो ऐसा लगता है कि यह एक दिन अवश्य हवलदार मेजर बनेगा।



क़ानून और आन्तरिक सुरक्षा

ले०—श्री आई. एस. डागर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता और अपने साथियों की संगति की अपेक्षा करता है। किन्तु साधारणतया समाज में मनुष्यों के विपरीत स्वार्थ होते हैं, जो उन्हें अलग-अलग रास्तों पर ले जाते हैं। अतएव, राज्य की शरण में ही केवल समाज पनप सकता है।

सरकार का कर्त्तव्य यह सुनिश्चित करना होता है कि लोक व्यवस्था बनी रहे; क्या बाहरी आक्रमण और क्या भीतरी उपद्रवों से देश सुरक्षित रहे तथा समाज में शान्ति स्थापित रहे । अतएव, आन्तरिक सुरक्षा बनाये रखना सरकार का प्रमुख कर्त्तव्य है।

चुनौती—स्वतंत्रता के बाद से, शायद गरीबी से भी अधिक किसी चीज़ ने यदि भारत को दिक़ किया है, तब वह है बारम्बार विनाशकारी दंगे। छात्र, उद्योग तथा कृषि सम्बन्धित असन्तोष; साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय तथा भाषायी सर्वनाश और देश द्रोहों ने देश की धज्जियाँ उड़ा दी हैं।

संसार के विभिन्न भागों में जब संस्कृति का उदय हुआ, तब उसका सबसे बड़ा वरदान मिला—व्यवस्था और न्याय। व्यवस्था के बिना, समाज में क़ानून के कोई अर्थ ही नहीं हैं तथा क़ानून के बिना, वर्वर बल के नियम का नाम व्यवस्था होता है। क़ानून के नियम को लोकतंत्र की सर्वोपरि विशेषता के रूप में सुकरात, अफ़लातून और अरस्तू ने माना है। अरस्तू ने कहा था कि विद्यालय के हरेक छात्र को क़ानून-पालन की शिक्षा देनी चाहिये; अन्यथा राज्य का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

देश की विभिन्न धमकियों ने न्याय तथा व्यवस्था का महत्व उजागर किया है। समाज में, जन तथा सम्पदा की रक्षा करने वाला तथा क़ानून प्रवर्तन से व्यक्तिगत जीवन को सुनियमित करने वाला, मौलिक तन्त्र 'पुलिस' है। पुलिस को दो प्रमुख कर्त्तव्य निबाहने होते हैं—(1)अपराध की छानबीन तथा अभियोजन और (2) न्याय व्यवस्था बनाये रखना।

के० रि० पु० बल—प्रथम कर्त्तव्य से के० रि० पु० बल को कोई खास लेना देना नहीं है; किन्तु न्याय-व्यवस्था बनाये रखने से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि स्थानीय प्रशासन को न्याय-व्यवस्था बनाये रखने के लिए, इसे राज्यों में सदा भेजा जाता है। भारत के किसी भी क्षेत्र में दंगों के समय, व्यवस्था को फिर से क़ायम कर सुरक्षित रखने की भूमिका के० रि० पु० बल को निबाहनी पड़ती है। इस बल को केन्द्र सरकार अपने व्यय से रखती है।

के० रि० पु० बल को बाढ़ तथा अन्य दैवी प्रकोपों के समय निरत किया जाता है। विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा, महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों तथा दूतावासों पर रक्षा-व्यवस्था, एवं अन्य प्रकार की रक्षा की कार्रवाइयों को भी के० रि० पु० बल को करना पड़ता है। सारे देश की सुरक्षा के लिये, के० रि० पु० बल ही एक बल है।

न्याय व्यवस्था से निबटने के लिए, विविध क़ानूनी प्रावधान कुछ इस प्रकार हैं—

दण्ड प्रक्रिया संहिता—सदाचार तथा शान्ति बनाये रखने के विषय में दंड प्रक्रिया संहिता के (viii) अध्याय में उल्लेख है। इसमें उन मनुष्यों को लक्ष्य बनाया गया है, जिनसे समाज को खतरा होता है। किसी अपराध के हो जाने पर उसकी छानबीन करने की तुलना में उसको पहले ही रोक देना कहीं बेहतर है। दण्ड प्रक्रिया संहिता की 106, 107, 108, 109 तया 110 धारायें इसी से सम्बद्ध हैं। इनमें से 107 धारा खूब जानी मानी है, क्योंकि यह उन व्यक्तियों से सम्बद्ध है, जो शान्ति भंग करते हैं या लोकशान्ति तोड़ते हैं या कोई ऐसा ग़लत कार्य करते हैं, जिससे शान्ति भंग होती है तथा न्यायालय के मत में, ऐसे आधार विद्यमान होते हैं, जिन पर इस धारा के अन्तर्गत मुक़दमा चलाया जा सकता है। सम्बद्ध व्यक्ति को एक वर्ष तक शान्ति बनाये रखने का बांड (मुचलका) भरना होता है।

दण्ड प्रक्रिया संहिता की 109 धारा ऐसे व्यक्ति से सम्बद्ध रखती है, जो किसी हस्ताक्षेप्य अपराध करने के लिए अपनी उपस्थिति छिपाने की चेष्टा करता है। पुलिस अधिकारी का प्रमुख कर्त्तव्य यह है कि सभी हस्ताक्षेप्य अपराधों को होने से रोके और किसी भी ऐसे व्यक्ति को मजिस्ट्रेट की आज्ञा के बगैर तथा बिना वारंट के, बन्दी बना ले, जिसकी ऐसे अपराध करने की कोई योजना उसको विदित हो जाये।

ग़ैर कानूनी जन संग्रह—यह जानते हुए कि कौन सा जन-संग्रह अवैध है, यदि कोई मनुष्य उसमें सम्मलित होता है या सम्मिलित होता रहता है, तब वह एक ग़ैर-क़ानूनी जन-संग्रह का सदस्य कहलाता है। भारतीय दण्ड संहिता की 142 धारा से उसे दण्ड मिलता है।

कुछ जन समस्यायें लोकशांति को खतरा होती हैं और 143, 144, 145 और 151 धारायें, अपराधों के सामान्य तथा गंभीर रूपों से निपटती हैं। अपराध तब गम्भीर माना जाता है, जब ऐसी सभा का कोई सदस्य संघातक अस्त्र या ऐसी किसी चीज से लैस होता है, जिससे मौत हो सकती है।

इकट्ठे होते समय वैध सभा बाद को अवैध हो सकती है (भ० द० स० 141 धारा)। दण्ड प्रक्रिया संहिता की 129 धारा में यह उल्लेख है कि पाँच या उससे अधिक व्यक्तियों वाले ऐसी जन संग्रह को (जिससे लोक शांति के खतरे की आशंका हो) छिन्न-भिन्न करने के आदेश, कोई भी अधिशासी मजिस्ट्रेट या सब इंस्पैक्टर के पद से नहीं नीचे का कोई भी पुलिस अधिकारी, दे सकता है और तब जनसंग्रह के सदस्यों को तितर वितर होने का अपना कर्त्तव्य हो जाता है। 129 और 130 धाराओं के लिए, के० रि० पु० बल के कमांडैंट तया सहायक कमांडैंट, अधिशासी मजिस्ट्रेट होते हैं। इसी प्रकार, 129 धारा के अन्तर्गत के० रि० पु० बल के सब इंस्पेक्टर तथा उससे ऊँचे वाले सदस्यों को पुलिस अधिकारियों के कर्त्तव्य तथा अधिकार सौंपे गये हैं। 129 की उपधारा (2) ऐसी सभाओं को बल द्वारा तितर-वितर करने का अधिकार ऐसे अधिकारियों को प्रदान करती है और ऐसी सभाओं के लोग पकड़े तथा हवालात में रखे जा सकते हैं। भारतीय दंड संहिता की 145 धारा के अन्तर्गत, वह मनुष्य अपराधी माना जायेगा, जो यह जानते हुए कि ऐसी सभा छिन्न-भिन्न होने को कह दी गई है, में फिर भी उसमें शामिल होता है और बना रहता है। दण्ड प्रक्रिया संहिता की 130 धारा, किसी कमीशंड (आयुक्त) या गजेटेड (राजपत्रित) अधिकारियों द्वारा ऐसी सभाओं के छिन्न-भिन्न करने के अधिकारों का उल्लेख करती है । जब ऐसी किसी सभा या उसके सदस्य द्वारा बल प्रयोग या हिंसा की जाती है, तब उसका हरेक सदस्य दंगा मचाने का अपराधी होता है (भा० द० सं० 146 धारा)। सामान्य या गम्भीर प्रकार के उपद्रव मचाने में 146, 147, और 148 धाराओं के अन्तर्गत दण्ड दिया जा सकता है।

1861 वाला पुलिस अधिनियम—जन सभाओं तथा जलूसों के नियमन के विषय में, इस अधिनियम की 30 और 30 (क) धाराओं में उल्लेख है, इनमें ऐसे जलसों और जलूसों का भी उल्लेख है। जो न्यायालयों की शर्तों का उल्लंघन करते हैं। साधारण

मार्गों, गालेयों, आमरास्तों, घाटों तथा अवतरण भूमेयों (अड्डों) और जनता के समागम के अन्य स्थानों पर पुलिस द्वारा व्यवस्था बनाये रखने के लिए कर्त्तव्यों का वर्णन 31 धारा में है। किसी मार्ग, गली या आम रास्ते पर हए अपराधों के विषय में, 34 धारा में उल्लेख है।

दण्ड प्रक्रिया संहिता की 144 धारा, ज़िला मजिस्ट्रेट, पुलिस आयुक्त, उपमंड़लीय मजिस्ट्रेट या किसी भी अन्य अधिशासी मजिस्ट्रेट, को निषेधाज्ञा घोषित करने का अधिकार देती है तथा एतद् द्वारा वे किसी भी व्यक्ति को किसी कार्य को करने से रोकने का निदेश दे सकते हैं या जब कोई मजिस्ट्रेट उपयुक्त समझता है, तब अपने सत्व या प्रबन्ध में आई किसी सम्पत्ति के विषय में ऊपर से आदेश ले सकता है।

प्रतिरक्षा तथा आन्तरिक सुरक्षा की भारतीय नियमावली 1971 के 66 नियम के अन्तर्गत, कफ़्र्यू लगाया जा सकता है और एतद् द्वारा किसी लिखित आदेश के बिना केन्द्र या राज्य सरकार किसी निर्दिष्ट क्षेत्र या किसी समय किसी भी व्यक्ति को घर से बाहर नहीं निकलने का निर्देश दे सकती है। 66 नियम के उपखंड (2) से, कफ़्र्यू आदेश का उल्लंघन दण्डनीय हैं।

केवल क़ानूनी उपाय—यह स्मरणीय है कि देश के क़ानून के अनुसार व्यवस्था बनाये रखना है। सभी पुलिसजनों को मनोवैज्ञानिक रूप से इस बात को तैयार करना जरूरी है कि व्यवस्था बनाये रखने के लिए वे क़ानून की शरण लें। लाठी प्रहार तथा गोली चालन के प्रयोग की अनुमति क़ानून जरूर देता है, किन्तु तभी, जब अन्य उपाय विफल हो गये हों। कभी-कभी उपद्रवी तत्वों के दलों को, नागरिक पुलिस लातों-घूसों से वश में लाती है। यद्यपि वहाँ व्यवस्था अवश्य क़ायम हो जाती है, किन्तु यह तरीक़ा ग़लत है।

सही ढंग यह है कि उन्हें थाने में लाया जाए, हस्ताक्षेप्य अपराध दर्ज़ किया जाए और मुक़दमा चलाया जाये। बन्दीकरण और अभियोजन के क़ानूनी अधिकारों का प्रयोग नागरिक पुलिस को सदैव करना चाहिये।

विनम्र पहुँच : इतिहास में पुलिसजन का आज जैसा कठिन कार्य कभी भी नहीं रहा है । अब पुलिसकर्मी को सुशिक्षित तथा सुप्रशिक्षित होना चाहिये। उस में एक सैनिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा जनसम्पर्क विशेषज्ञ, सभी के गुण होने चाहिये। अतएव यह ज़रूरी है कि क़ानून लागू कराने वाले अधिकारी को हर अवसर का लाभ उठाना चाहिये और अपनी व्यावसायिक कुशलता को सुधारने का हर भरसक यत्न करना चाहिये तथा चाहिये अपने ज्ञान और अनुभव की जानकारी अपने अधीनस्थों को बताना। आज की आवश्यकता है—अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित-प्रशिक्षित पुलिसकर्मियों की।

न्याय-व्यवस्था की स्थिति से सुलझने के लिये, पुलिस की अपनी छवि सुधारने की ज़रूरत है और उसकी प्रतिष्ठा एक निष्पक्ष क़ानून-प्रवर्तक के रूप में उभरनी चाहिये । पुलिस जनता से कितनी ही बार सम्पर्क में आती है; ये सम्पर्क सौहार्द्ध के होने चाहिये, जिसमें परस्पर आदर हो । समस्याओं और मनुष्यों के प्रति 'विनम्र पहुँच' हमें

उन्पन्न करनी चाहिये।

जनसाधारण के प्रति, हर समय पुलिस में सहनशीलता होना चाहिये और चाहे कितना भी तैश दिलाया जाये, उसे सर्वोत्तम व्यवहार दर्शाना चाहिये। क्रोध या आवेश में उसे नहीं आना चाहिये, क्योंकि जनता रोष या अभद्रता को कभी सहन नहीं करेगी तथा सर्वदा हिंसात्मक प्रतिक्रिया पर उतारू हो जायेगी। जो अधिकारी अपशब्द सह लेता है तथा क्रुद्ध भीड़ से शान्तिपूर्वक निबट लेता है, उसे विश्वास तथा आदर मिलता है, वह अपने विभाग की प्रतिष्ठा ऊँची करता है तथा जनता पर अनुकूल प्रभाव डालता है। सभी पुलिस कर्मियों को विनम्र वार्तालाप का स्वभाव डालना चाहिये और किसी भी श्रोता को रुष्ठ नहीं करना चाहिये। जाति, मत, समाज या सामाजिक स्तर का बिना ध्यान किये हुये, उन्हें किसी भी संकट में पड़े व्यक्ति को मैत्रीपूर्ण मंत्रणा देनी चाहिये। हरेक सरकारी सेवक को, क्या आचरण और क्या धन-दोनों में पूरी-पूरी ईमानदारी बरतनी चाहिये। सकल राष्ट्र-हित का ध्यान रखते हुये, उसे निष्पक्षतापूर्वक काम करना चाहिये।

राष्ट्रीय जीवन में पुलिस की भूमिका के विषय में, पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा है "पुलिस दल के लिये ईमानदारी सर्वोपरि वस्तु है। और कटु सत्य यह है कि ईमानदारी की सब से बड़ी चीज़ "वित्तीय ईमानदारी" है। यह इसलिये महत्वपूर्ण है कि इससे राष्ट्रीय जीवन पर प्रभाव पड़ता है। भ्रष्टाचार को रोकने की निरन्तर चेष्टा होनी चाहिये। पुलिस कार्यक्षेत्र में, लोकमत आकाश-पाताल का अन्तर लाता है, किन्तु एक ईमानदार पुलिस अधिकारी ही जनता से सहयोग पा सकता है। दल की कुशलता तथा लोकप्रियता हाथ में हाथ मिलाकर चलती हैं और कोई भी दल तब तक जनता का विश्वास नहीं पा सकता है, जब तक वह कर्त्तव्य निर्वाहन में दक्ष नहीं है। सरकार की लोकतंत्रात्मक प्रणाली, जनता के पूरे-पूरे समर्थन तथा सहयोग पर निर्भर रहती है। यह बात नागरिक पुलिस तथा के० रि० पु० बल पर भी लागू होती है। जनता के भरपूर समर्थन तथा अच्छे जनसम्बन्धों पर ही, के० रि० पु० बल की सफलता निर्भर करती है।

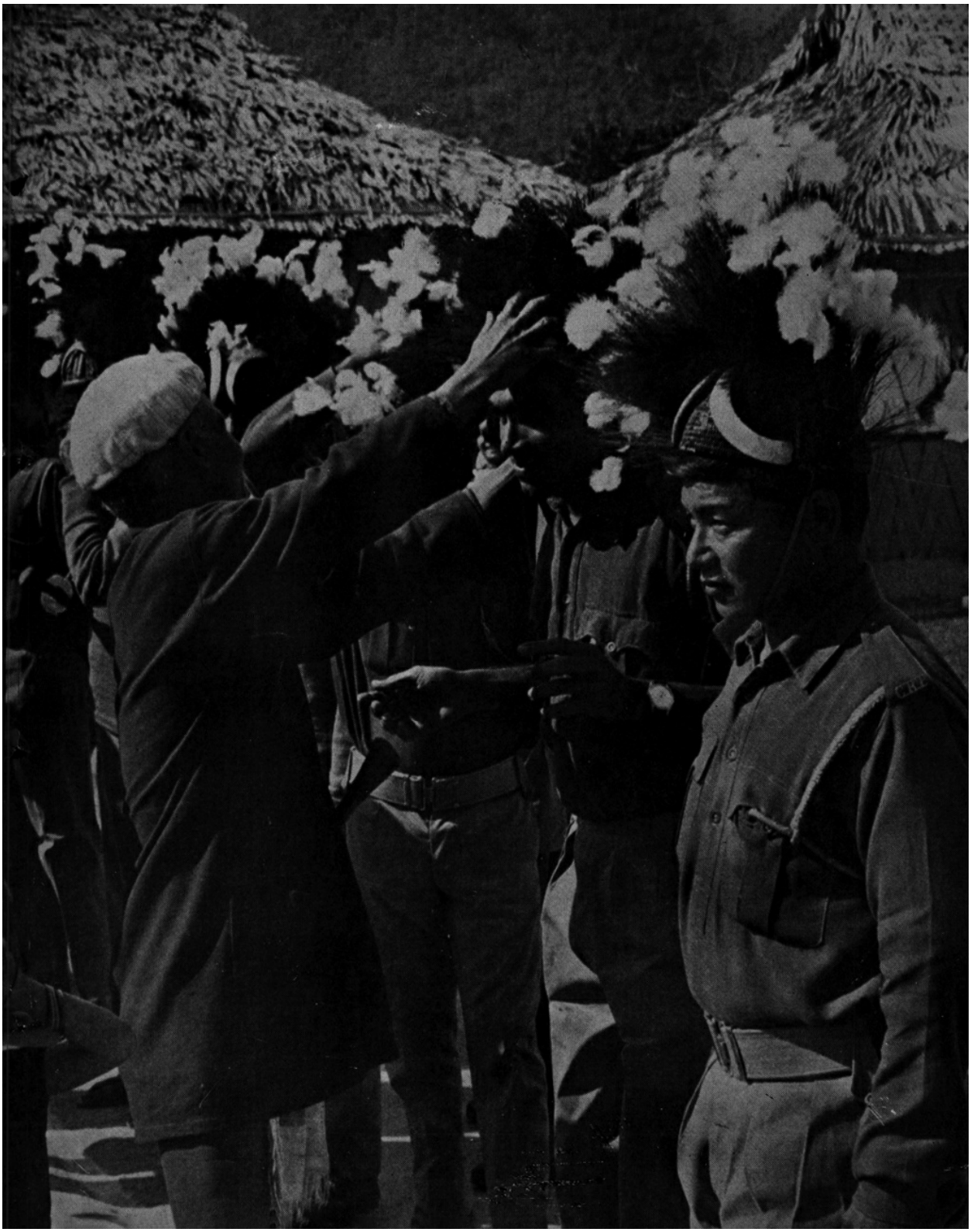
राजनीतिक हस्तक्षेप : अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा पुलिस क्षेत्र में राजनीतिक हस्ताक्षेप अधिक है। भारत के संविधान की सातवीं सूची के अनुसार, पुलिस राज्यों का विषय है।

सरकारों के परिवर्तनों पर, सब से पहले वज्रपात पुलिस महानिरीक्षकों पर पड़ता है। मत्रीमंडल के काम संभालते ही, उन्हें बदला जाता है।

पुलिस दल की एक कमजोरी यह है कि पुलिस कर्मी पदोन्नति, स्थानान्तरण आदि के लिये राजनीतिज्ञों से मदद मांगते हैं और स्वाभाविकतया, राजनीतिज्ञ इसके एवज में भी बहुत कुछ चाहते हैं। राजनीति से प्रेरित खुद एक पुलिस ख़तरा है।

न्याय-व्यवस्था-भंजन : संक्षेप में, न्यायव्यवस्था के तंत्र की असफलता के कुछ कारण ये हैं—(i) बदनाम तथा अक्षम पुलिस दल; (ii) वरिष्ठपदों पर नेतृत्व की कमी; (iii) लोक-समर्थन का अभाव (iv) क़ानून प्रर्वतन में बेईमानी; (v) अनुशासनहीनता; (vi)मामलों के निपटाने में देरी तथा (vii) पुलिस दलों में राजनीतिक दलों की घुसपैंठ।

इन समस्याओं से उभरने के लिये पुलिसजनों को इन अनावश्यक तत्वों से दूर रहना चाहिये। क़ानून की सर्वोच्चता सर्वव्यापी होनी चाहिये। घोर अपराधों के विरुद्ध ही नहीं, अपितु भड़काने पर भी क़ानूनी कार्रवाई करनी चाहिये। 144 धारा के अन्तर्गत क़ानून अधूरे मन से लागू नहीं कराना चाहिये। जहाँ पुलिस अधिकारी सबसे पहले ही अवसर पर निर्णय लेने से चूकते हैं, वहाँ ऐसे असफल अफसरों को बदलने का पक्का निर्णय लेना ज़रूरी है। पुलिस अधिकारी को अपने लक्ष्य का पूरा ज्ञान होना चाहिये और उसे पूरा करने की भरसक चेष्टा करनी चाहिये। क़ानून तथा व्यवस्था के प्रति आदर की भावना को लोगों में हमारे स्कूलों, कालेजों तथा समाज के अन्य क्षेत्रों में भरनी चाहिये।



25627/74



धावक प्रेमचन्द



मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

तैराक दलीप सिंह



★ क्रै प ल र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

30 नवम्बर, 1979] खण्ड VIII अंक 5 [9 अग्राहयण, 1901





नीमच में 1978 के वार्षिकोत्सव पर श्रीनगर रेन्ज द्वारा भांगड़ा नृत्य

दूसरी फोटो प्रतियोगिता

दूसरी प्रतियोगिता के वास्ते, मुख्य सम्पादक की सेवा में 10 जनवरी 1980 तक पहुंचने की शर्त पर काले-सफेद फोटोग्राफों (छायाचित्रों) की प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। प्रविष्टियाँ सीधी भी भेजी जा सकती हैं; किन्तु उन्हें गत्ते से ठीक ठीक बंधा होना चाहिये।

इस प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के सदस्य और उनके परिवार भाग ले सकते हैं। 100 रु०, 80 तथा 60 रु० के तीन पुरस्कार होंगे। इनके अतिरिक्त, उचित पाये जाने वाले अन्य फोटो को भी 25 रु० से लेकर 50 रु० तक पुरस्कृत किया जायेगा।

फोटोग्राफ़ों को चिकने-चमकीले (ग्लॉसी) क़ाग़ज़ पर भेजना होगा, जिसका आकार 6½ इन्च X 8½ इन्च से छोटा नहीं होना चाहिये। निगेटिवों (प्रतिचित्रों) को फोटो के साथ भेजने की ज़रूरत नहीं है । पुरस्कार दिये जाने वाले फोटो के लिये निगेटिव माँगे जायेंगे।

फोटोग्राफ किसी विषय पर हो सकते हैं; किन्तु के० रि० पु० बल और उसकी भूमिका से सम्बद्ध फोटो को वरीयता दी जायेगी। कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।

★ कैपलर ★

द्वैमासिक

हिन्दी संस्करण

खण्ड VIII

अंक 5

30 नवम्बर, 1979]

9 अग्राहयण, 1901]



मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी]** [छाया चित्रकार : **एस. के. खन्ना**

जे० एस० शर्म्मा

जे० एस० शर्मा

क्रम संख्या

विषय

I. गौरवगाथा : प्रशंसा और पुरस्कार

II. रिपोर्ताज

(क) मद्रास और फरीदाबाद में के० रि० पु० बल द्वारा शान्ति व्यवस्था

(ख) बोकारो में सेना के० रि०पु० बल की संयुक्त कार्रवाई

(ग) महानिदेशक को वीरता पदक

I. लेख :

(i) मिज़ोरम में राजद्रोह, ले०—श्री राजसिंह

(ii) मिज़ोरम के संस्मरण, ले०—30 गोवर्द्धन प्रसाद बहुगुणा, 27 बटा०

(iii) साम्प्रदायिक दंगों की रचना (2) ले०—श्री के० एफ० रुस्तमजी

(iv) सिगनल प्रशिक्षण, ले०—श्री जे० चौधरी

(v) जेब कतरों से सावधान, ले०—श्रीनिगमेन्द्र सेन सक्सेना, भूतपूर्व महानिदेशक

IV. एकांकी-आरक्षित बल क्यों ? ले०—ना० राजनाथ पांडेय, 45 बटा०

V. कविता : सिपाही का कर्त्तव्य, र०—का० हंसराज ओझा, 53 बटा०

VI. क्रीड़ा-क्षेत्रे :

VII. स्वास्थ्य-सन्देश :

(क) धूम्रपायी की खाँसी, ले०—डॉ०एस०सी० महापात्र

(ख) मद्यपान का व्यसन, ले०—का० लखबीर सिंह, —महानिदेशालय

VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

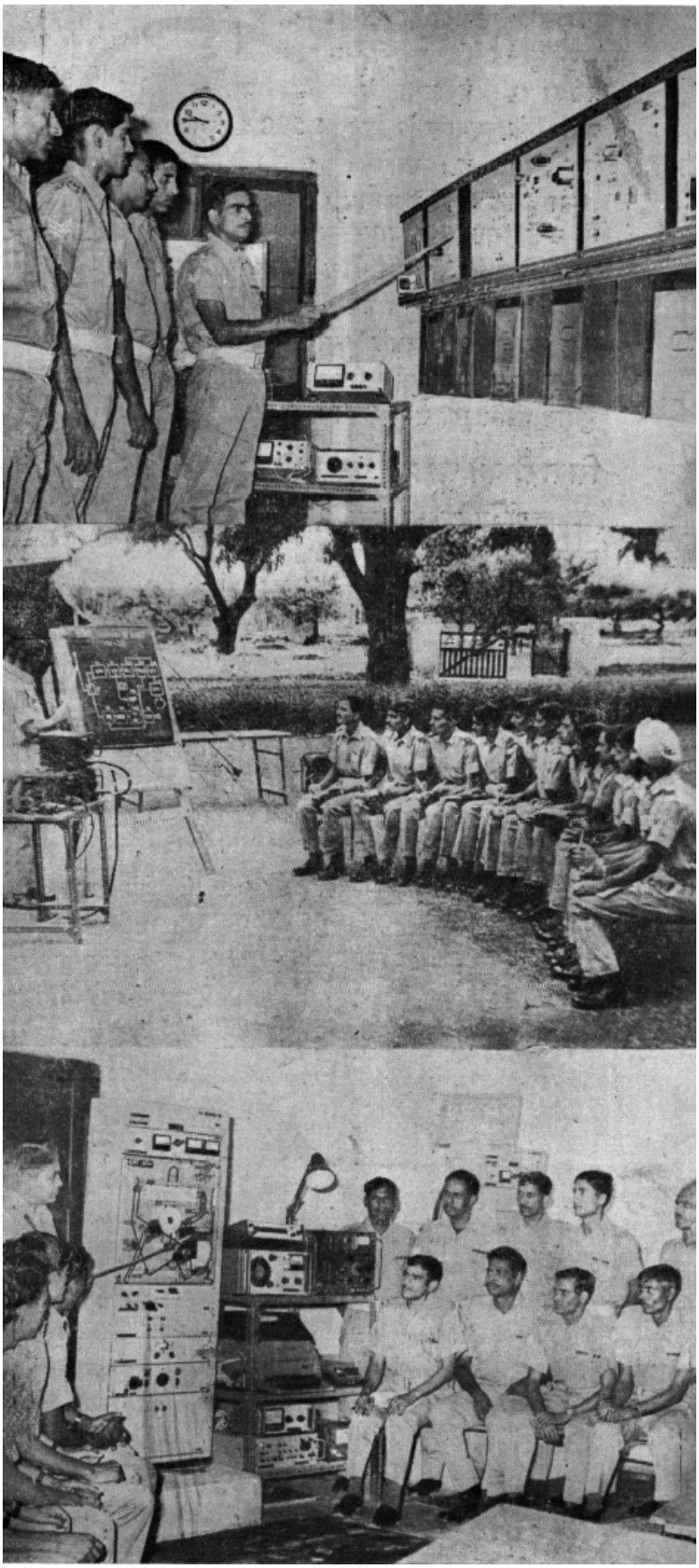
IX. विविध :

(i) सूक्तिसुधा

(ii) यह भी खूब रही

(iii) पहेलियाँ

मुख पृष्ठ : दिल्ली के उपराज्यपाल श्री डी० आर० कोहली के करकमलों से रक्तदान की ट्राफी पाते हुये 33 बटालियन के सू० मेज़र गुरुमुख सिंह।



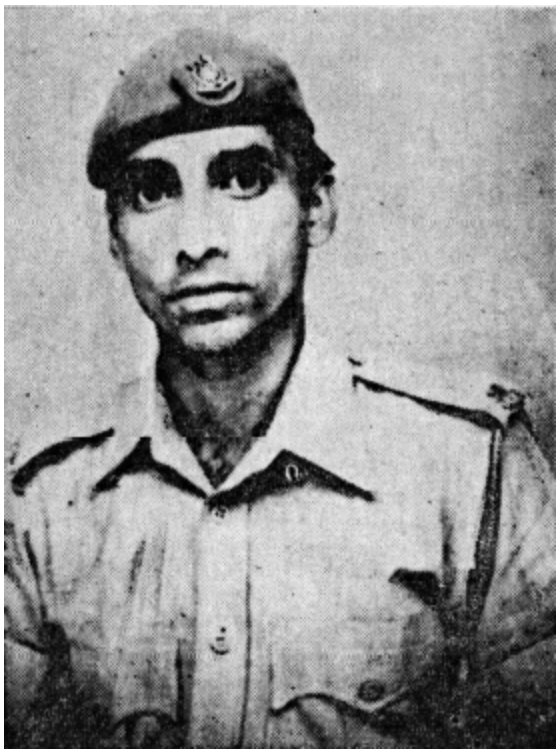
गौरव गाथा :

सिक्किम द्वारा हमारी प्रशंसा

कमांडैंट 33 बटालियन (के०रि०पु० बल) गंगतोक को लिखे अपने पत्र में, सिक्किम के महानिरीक्षक ने राज्य में निर्वाचन के समय शान्ति-व्यवस्था के लिये राज्य पुलिस को हमारी सहायता देने की प्रशंसा की है तथा के०रि०पु० बल के जवानों के कल्याण के लिये, 4,500 रु० का चेक भेजा है। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि "हमारे जवान, बावजूद इसके कि उन्हें सख़्त जलवायु-स्थितियों के दूरदराज के कठोर श्रेत्रों में पैदल चलना पड़ा, रिकार्ड समय में पहुँच गये। जवान सजग तथा सतर्क रहे; जिसके फलस्वरूप, कोई दुःखद घटना नहीं हुई और सारे राज्य में चुनाव शान्तिपूर्ण सम्पन्न हो गया।"

सिपाही की सूचना पर बड़ी प्राप्ति

का० मधुभूषण शर्मा, 20 बटालियन द्वारा विशेष सूचना पाने पर, मिज़ोरम के कई गुप्त स्फोटागारों पर, बल की पाँच टुकड़ियाँ तुरन्त दौड़ाई गयीं। उन्होंने एक हल्की मशीनगन, एक अर्द्ध स्वचालित चीनी रायफल, एक जर्मनी रायफल, दो 7.92" रायफलें तथा आठ .303 रायफलें प्राप्त की। महानिदेशक श्री.पी.आर. राजगोपाल ने का० मधूभूषण को हेड का० के पद की तुरन्त उन्नति दी और 1000रु० का पुरस्कार भी दिया। इस कार्रवाई में उत्तम काम के लिये एक स० इ० तथा दो अन्य कांस्टेबलों को भी नक़द पुरस्कार दिये गये।



कां० मधुभूषण शर्मा

के.रि.पु. बल द्वारा सर्वाधिक रक्त-दान

सन् 1978 में थलसेना, नौ सेना, वायु सेना, राष्ट्रीय केडेट कोर, नागरिक पुलिस, के०रि०पु० बल, सीमा सुरक्षा दल, भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस—सभी सेवा विभागों द्वारा रक्तदान में, के० रि० पु० बल द्वारा रक्त की सर्वाधिक 457 यूनिट रक्तदान करने पर, रेडक्रास सोसायटी की दिल्ली राज्य शाखा द्वारा स्थापित ट्राफी को हमने प्राप्त किया। क्योंकि 33 बटालियन ने सर्वाधिक रक्तदान किया था, अंतः उसके सू० मेज़र गुरुमुख सिंह को 31 अगस्त 79 को वह ट्राफी प्रदान की गई।

चार जवानों को पुरस्कार



कां ० ओम प्रकाश सिंह

दिनांक 16 सितम्बर 1979 की शाम को हिंसात्मक साम्प्रदायिक दंगे के क्षेत्र,जामा मस्जिद (दिल्ली) में, 48 बटालियन की 'एफ' कम्पनी के दो प्लाटून तुरन्त लगाये गये । स० इ० ओमप्रकाश के नेतृत्व में, दो सेक्शनों ने, सोडाबोतलों की भारी बौछार तथा पथराव को सहते हुये, भीड़ को तितर-बितर कर दिया और इस प्रकार इन जवानों की सामयिक तथा दृढ़ कार्रवाई से, जनधन की भारी क्षति बच गई।

के०रि० पु० बल के 5 जवान घायल हुये, जिनमें का० ओमप्रकाश सिंह के सिर में गम्भीर चोट आई। हल्की चोट खाये हुये का० दीप कुमार के साथ, उसे राम मनोहर लोहिया अस्पताल में दाखिल किया गया।

श्री राजगोपाल, महानिदेशक (के.रि.पु. बल), श्री जे०एन० चतुर्वेदी, पुलिस आयुक्त दिल्ली, श्री डी० आर० कोहली उपराज्यपाल दिल्ला के साथ, श्री बाई.बी. चह्वाण, उप प्रधान मंत्री, अस्पताल में इन घायलों को देखने गये तथा उन्होंने कां० ओमप्रकाश को और दीप कुमार को क्रमशः 1000 रु० तथा 500 रु० के पुरस्कार दिये।

उपमहानिरीक्षक, के० रि० पु० बल दिल्ली भी, घायलों से मिले और असाधारण साहस के लिये, स० इ० ओम प्रकाश को 200 रु०, कां० ओमप्रकाश सिंह को 150 रुपये, हे० कां० भूप सिंह को 100 रु० तथा कां० दलीप सिंह को 75 रु० से पुरस्कृत किया।

डूबते हुए 3 पुरुषों की प्राणरक्षा

जब 8 अगस्त 79 को ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट के पास गंगा की बाढ़ में 50 मनुष्यों को ले जाती हुयी एक नौका उलट गई, तब ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट के कां० चन्द्रिका प्रसाद ने तीन डूबते हुए लोगों के प्राण बचाये। दुर्घटना को देखते ही; हमारे जवान सहायता तथा बचाव को दौड़ पड़े । कां० चन्द्रिका प्रसाद नदी में कूद पड़ा और उन दो व्यक्तियों की तरफ तैरने लगा, जो बेचारे एक बहती हुई बोरी को पकड़े छटपटा रहे

थे। वह बोरों को धक्के मार-मार कर नदी के तट पर उन को ले आया; उन दोनों को बाहर लाने में कोई 30 मिनट लग गये होंगे। जब उनके प्राण बचाने के यत्न किये जा रहे थे, तभी एक और पुरुष लहरों से जूझता दिखाई पड़ा। थके-माँदे चन्द्रिका ने फिर जान जोखिम में डाली और उसको भी किनारे पर ले आया। उस दुःखद घटना में छः व्यक्ति डूब कर दिवंगत हुये बताये जाते हैं।



कां० चन्द्रिका प्रसाद

एकांकी

आरक्षित बल क्यों ?

ले०—नायक राजनाथ पांडेय

[सवारी गाड़ी में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक जवान को आरक्षित सीट पर बैठा देखकर एक यात्री घूरता हुआ वार्तालाप करता है]

यात्री—(व्यंगपूर्वक) आप आरक्षित बल के क्या सदस्य हुए कि आपने अपनी सीट भी आरक्षित कर रखी है। परन्तु यह आप नहीं जानते कि किस प्रकार गोदाम में

सुरक्षित अनाज कभी कभार ज़रूरत नहीं पड़ने पर, किफ़ायती दाम पर मारा-मारा बिकता है।

जवान—हर धान पंसेरी बराबर नहीं होते। नाम के साथ आरक्षित जुड़े होने पर भी हमारे काम की महत्ता आरक्षित अनाज से बहुत ऊपर है। देश को सदा हमारी ज़रूरत है और हम उसकी ज़रूरत तन मन धन से पूरी करते हैं।

यात्री—क्या खूब ? प्राप तो ऐसी डींग हाँक रहे हैं मानो देश की रक्षा का गोवर्द्धन आप ही उठाये हुए हैं।

जवान—इसमें सन्देह भी क्या ? चीन द्वारा हाट स्प्रिंग के हमले के समय, सबसे पहले हमने ही प्राण गँवाये थे; 1965 में कच्छ के रण में सरदार चौकी पर हमने ही पाकिस्तानियों के खून की होली खेली थी और अभी-अभी 1971 में उसी शत्रु के दाँत चिकेनपास पर खट्टे किए थे।

यात्री—ठीक है; मगर तनिक, अपने भाइयों की ओर तो अपना व्यवहार देखो। कोई सरकार से अपनी मांग माँगे या किसी प्रकार का सुधार चाहे तब लाठी, गैस, गोली बरसाना कहाँ का न्याय है ?— किधर की सहृदयता है ?

जवान—किन्तु मैं पूछता हूँ कि मांग का स्वाँग कर सरकारी बसें जलाना, रेल पटरी उखाड़ना, दफ्तरों को लूटना;—इतना ही नहीं जनता तक की सम्पत्ति को नष्ट करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है ? न्याय-व्यवस्था भंग करना कहाँ तक न्याय-संगत है ?

यात्री—यह सब कुछ आपके भड़काने पर होता है। छिः आप पत्थर दिल हैं, बेरहम हैं। आप में दया नहीं है। सहानुभूति नहीं हैं।

जवान—कैसी बात करते हैं आप ! हम भी इन्सान हैं; हमारे भी तो दिल है। किन्तु कर्त्तव्य, कर्त्तव्य है—सेवा, सेवा है। उसके सम्मुख स्नेह-नाता कभी रोड़ा नहीं अटका सकता।

यात्री—जनता शान्तिप्रिय होती है। यह तो आप मान न मान, मैं तेरा महमान बन जाते हैं। बोलिये आपकी ज़रूरत ही क्या है ?

जवान—श्रीमान् जी, जहाँ भी चार बर्तन होंगे, वहाँ ज़रूर खटकेंगे और उनको अलग-अलग प्रेम से रखना किसी का अवश्य कर्त्तव्य हो जाता है। क्या आप रेडियो नहीं सुनते, समाचारपत्र नहीं पढ़ते, दूरदर्शन नहीं देखते ? नित्यप्रति बड़े-बड़े घोर डाकुओं से, उग्र नक्सलपंथियों से तथा समाजद्रोही तत्वों से आपको कौन भयमुक्त कराता है ? कौन भीषण अग्नि-कांडों में आग से प्राणों पर खेल कर जन-धन की रक्षा करता है ? कौन जल-प्रलय में बाढ़ पीड़ितों को बचाता है तथा उनको अन्नजल देकर जीवित रखता है। दारुण दैवी प्रकोपों से—

यात्री—बस, बस, बहुत सुनली शेखी—

जवान—छिः तथ्यों को आप शेखी का नाम देते हैं। सच जानिए, जब आप कुओं, नदी, तालाबों में किसी बन्धु के डूबने पर असहाय हा हाकार करते हैं, तब हम प्राणों की चिन्ता नहीं करके आपके परिचितों की जल-समाधि बनने से बचाते हैं। भयंकर

महामारियों में जब आप अपने अपने प्राण लेकर भाग रहे होते हैं, तब हम अपने जीवन को जोख़िम में डालकर रोगियों की सेवा-शुश्रूषा करते हैं। कहाँ तक गिनाऊँ कि हम क्या-क्या जनसेवायें करते हैं ? परन्तु इस अनुपम विशिष्ठ सेवा के बदले में मिलता क्या है ?

यात्री—और मेरा प्रश्न है कि क्या नहीं मिलता है ?

जवान—सर्वप्रथम तो आप सबकी मदद नहीं मिलती है और मिलने के नाम—ईंट पत्थर, सोडा वाटर की बोतलें और कभी-कभी तो गोली की बौछारें।

यात्री—ठीक है। दूसरों के दाल-भात में मूसरचन्द भी तो आप ही बनते हैं। बाधायें भी तो आप ही डालते हैं ?

जवान—छिः यह सरासर अन्याय है । हम किसी अन्य लोक से आये हुए इन्सान नहीं हैं। हम भी आपके ही बन्धु हैं। हमारी देह भी तो इस पुण्य भूमि के अन्न-जल से पली है । हम भी अपनी मातृभूमि को सुखी समृद्ध देखना चाहते हैं और जो इसमें अड़चन डालते हैं, हम उन्हें सही मार्ग पर लाना चाहते हैं। हमें यही प्रशिक्षण दिया गया है—'न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है' (छाती फुलाता है)।

यात्री—क्या सुकुमार फूल से बच्चों को भी, जिन्हें आप निर्ममता से झिड़कते हैं ?

जवान—आपको ग़लत फ़हमी है । हम पाप से घृणा करते हैं पापी से नहीं। हम छोटे बच्चों के लिए तो सारी ट्रैफिक तक रोक देते हैं। मेलों, तीर्थ स्थानों आदि में गुमशुदा बच्चों को उनके दुखियारे माता-पिता के गले मिलाते हैं।

यात्री—पर अनेक असहाय लोग गिड़-गिड़ाते रहते—

जवान—यदि ऐसी बात होती, तो अन्धे, लूले, लंगड़े हमारे बिना गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँच पाते; तूफान ग्रस्तों तथा बाढ़ पीड़ितों को अपने वेतन से सहायता हम नहीं करते; मुफ्त भोजन नहीं देते और घायलों को अपना ख़ून तक दान नहीं करते।

यात्री—पर प्रश्न यह आता है कि आपके होते घायल होने की स्थिति आती ही क्यों हैं ? हिंसा पर लोग उतारू होते ही कैसे हैं ? स्थिति विस्फोटक होने से पूर्व सही निर्णय क्यों नहीं लिया जाता ?

जवान—(हँस कर) इसका नाम सेवा है—शृंखलाबद्ध कमान है। हमें हल्की-फुल्की लाठी चलाने के लिये भी उच्चाधिकारियों का मुँह ताकना पड़ता है और ठंडे दिमाग से कई बार चेतावनी देने पर ही, कठोरता बरतनी पड़ती है।

यात्री—तब हम कभी आराम चैन से, न्याय-शान्ति से, नहीं रह सकते ।

जवान—यही सुखशान्ति की अभिलाषा आप से पहले हमारी होती है और हम उसी के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। चाहे वाह्य आक्रमण हो या आन्तरिक राजद्रोह, हम हर समय अपनी सेवा तथा भक्ति का प्रदर्शन करते हैं। शान्ति व्यवस्था से तो हमें भी विश्राम मिलेगा। उत्तम बनने के लिए प्रशिक्षण के लिए समय प्राप्त होगा। देश के गौरव बढ़ाने के लिए खेल कूद में अच्छा अभ्यास होगा। क्या आप हमारे बल के धावक

हरीचन्द को नहीं जानते, जिन्होंने अनेकों स्वर्ण पदक जीत कर हमारे बल का ही नहीं, सारे देश का नाम विश्व में ऊँचा किया है।

सबयात्री (करतलध्वनि से)—बेशक़ ! बेशक !!

जवान—फिर बोलिये। इस निरन्तर घूमन्तू आरक्षित बल के थके-माँदे जवान को थोड़ा सा संरक्षण न्यायोचित नहीं है।

सब—ज़रूर ! ज़रूर !

जवान—धन्यवाद (बाहर झाँकते हुये) उफ़ ! बातों ही बातों में सारा सफ़र तय हो गया। लीजिये हमारा स्टेशन आ गया। अब हम चलते हैं (हाथ हिला हिला कर उतरते हुये) टाऽऽऽ...टाऽऽऽ (जवान का सब सामान सभी यात्री डिब्बे से नीचे उतरवाते हैं और श्रद्धाभीनी विदाई देते हैं)।

मद्रास और फरीदाबाद में के०रि०पु० बल द्वारा शान्ति-व्यवस्था

दिनांक 17 अक्टूबर 1979 को, ग़ैर राजपत्रित अधिकारियों (एन० जी० ओ०) के पुलिस एसोशियेशन (संस्था) की मान्यता की मांग करते हुये, तमिलनाडु के पुलिस कर्मियों ने मद्रास पुलिस आयुक्त के दफ्तर से एक जलूस निकाला। आन्दोलनकारियों ने दूसरे दिन के० रि० पु० बल पर पथराव । किया और मार्ग में बड़े-बड़े पत्थरों के रोड़े अटकाये। उपायुक्त के आदेश पर, के०रि०पु० बल ने लाठी-प्रहार से स्थिति काबू में लानी चाही, जिसमें हमारे एक जवान को चोट भी आगई, किन्तु हिन्सात्मक दंगों से स्थिति बिगड़ी रही तथा अन्य जिलों में भी आन्दोलन की आग फैल गयी, जो वह मदुरई और कैम्बटूर में बड़ी गम्भीर थी। सभी ज़िलों में पुलिसजन काम पर नहीं आये और भूख हड़ताल पर उतारू हो गये ।

23 अक्टूबर 79 को, के० रि० पु० बल और सी० सु० दल की संयुक्त कार्रवाई में, मदुरई में 60 पुलिसकर्मी हिरासत में ले लिये गये। दूसरे दिन, अखिल भारतीय द्रविड़ मुनेत्र कषगम के समर्थकों और हड़ताली पुलिसजनों में संघर्ष हो गया। के० रि० पु० बल की टुकड़ी ने समय पर पहुँच कर स्थिति संभाल ली। कई पुलिसकर्मी बन्दी बनाये गये।

मद्रास में के०रि०पु० बल और सी०सु० दल द्वारा दमन की आलोचना करते हुये राज्य सरकार को विभिन्न राजनीतिक दलों ने एक ज्ञापन दिया।

26 अक्टूबर 79 को, मदुरई में, हड़ताली, पुलिस जनों ने कलेक्टरी के सामने सरकार और पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध नारे लगाते हुये एक जलूस निकाला। 253 पुलिसजन हिरासत में ले लिये गये । स्थिति पर काबू पाने के लिये, के० रि० पु० बल को लाठी प्रहार करना पड़ा।

यद्यपि हड़ताल खत्म हो गयी है; तद्यपि कुछ ज़िलों में आन्दोलन अब भी जारी है। अब तक, 950 पुलिसकर्मी हिरासत में लिये जा चुके हैं। के० रि० पु० बल की 5 बटालियन की दो कम्पनियाँ मदुरई में तथा 51 बटा० की तीन कम्पनियाँ, 10 बटा०

की चार कम्पानेयॉ और 5 बटा० की दो कम्पानेयॉ मद्रास में, न्याय-व्यवस्था बनाये रखने के लिये लगानी पड़ी थीं।

II फरीदाबाद

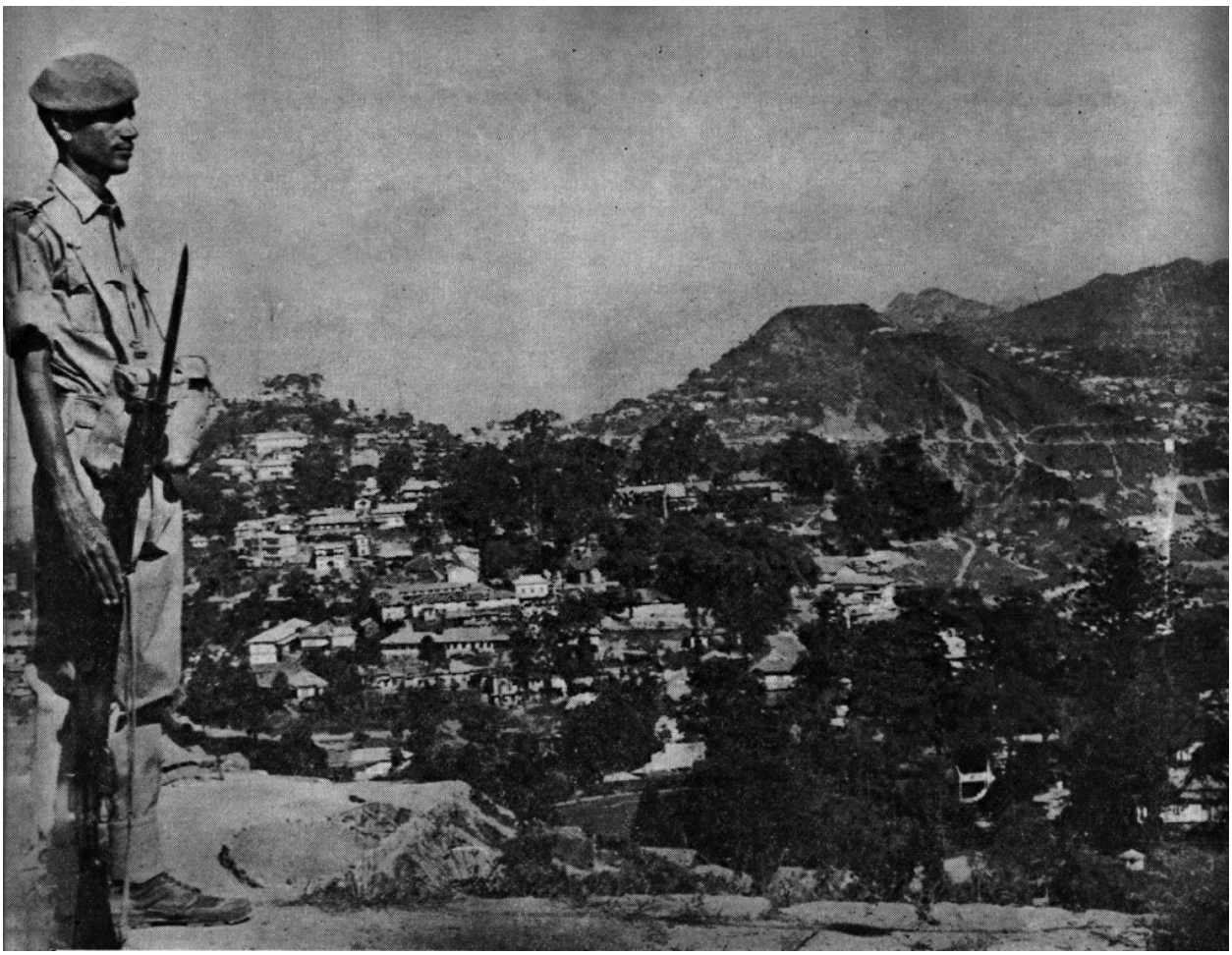
दिनांक 17 अक्टूबर 79 को ही, हरियाणा श्रम संगठन तथा कुछ अन्य ट्रेड यूनियन वालों ने **'फरीदाबाद-बन्द'** मनाया। स्थिति तब बिगड़ गयी, जब आन्दोलनकर्ता फैक्ट्रियों और दुकानों को जबरदस्ती बन्द कराने लगे। लाठियों तथा छड़ों से लैस, श्रमिकों के विरोधी दल आपस में झगड़ने लगे। जीपों तथा दिल्ली परिवहन निगम की बसें जलाने लगे। राजेन्द्र पेपर मिल्स, मेटल बॉक्स, ईस्ट इन्डिया कॉटन मिल्स, एल्चर ट्रैक्टर्स, आटोपिन, हितकारी तथा पावर हाउस खास दंगे के स्थल थे। 'गुड ईयर्स फैक्ट्री' में आग लगाने का यत्न किया, किन्तु हमारी ग्यारह कम्पनियों के योगदान से धनजन की हानि बच गई और शान्ति फिर स्थापित हुई।

कविता:

सिपाही का कर्तव्य

[रचायिता-का० हंसराज ओझा 'प्रभात' 53 बटा०]

जब देश-प्रेस के हित कोई, आरक्षक है घर से आता।
तब फाँसे ममता चंगुल में, पर वीर सिपाही मुस्काता ॥
यक और उसे पूरा करना, कर्तव्य मार्ग, जो है पकड़ा ।
है और दूसरी समता, की, बेड़ी में पग उसका जकड़ा ।
विविधा में बेचारा फँस कर, वह कभी सोच कर घबड़ाता ॥
भारत माता की सेवा में, फिर तन मन धन से जुट जाता ।
अपनी ललना की चित्तवन की, जब याद कमी उसको पाती ।
अन्तस्तल में उसके सहसा, प्रियता की आँधी उठ आती ।
पर तुरत निरत सेवा में हो, तन-मन की सुधि वह नहिं लेता ।
निज मातभूमि को लज्जा को, वह आँच नहीं आने देता।
रणधीर सिपाही निज बल से, झुकने नहिं देता भारत-ध्वज ।
कर्तव्य-मार्ग पर बढ़े सदा, सब ममता-प्रियता को वह तज ॥
आशीष-हाथ तब बढ़ते हैं, माँ के उस दुखिया ललना पर ।
सर्वस्व समर्पण कर बैठी, जो आँख बिछाये सजना पर ।
तब कीर्ति सिपाही की फैले, राकेन्दु प्रमा सम जन जन में ।
गाथायें गाये यह घरती, 'प्रयास' प्रहरी हर क्षण में ।



मिज़ोरम में राजद्रोह

ले० श्री राजसिंह

जब 1960 में मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे का गठन हुआ, तब मिज़ोरम असम का एक जिला होता था। यह मोर्चा लालडेंगा ने बनाया था। उसने इसके दो अंग बनाये : सशस्त्र अंग, मिज़ो राष्ट्रीय सेना, और असैनिक अंग, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चा कह लाया ।

विद्रोह का मुख्य कारण अकाल था, जो हर 80 वर्ष बाद कुछ प्रकार के बाँसों के फूलने पर पड़ता है। चूहे इन बाँसों के बीज खाते हैं और कई गुना वंश वृद्धि करते हैं तथा धान की फसल नष्ट कर देते हैं।

मिज़ोरम के लोक नेताओं और राजनीतिज्ञों की बारम्बार चेतावनी देने पर भी, धान

का भण्डारण नहीं किया गया। फलस्वरूप, अनेकों मर गये और मिज़ो लोगों ने यह सोचा कि असम राज्य कुछ नहीं कर रहा है । मिज़ोरम की जनता, साधारणतया ईसाई, अपने को असुरक्षित समझने लगे, क्योंकि अधिकांश लोग वहाँ हिन्दू थे।

राजद्रोह से पूर्व, नागरिक प्रशासन पुलिस, असम रायफल्स के सहित, मिज़ो जिले की नागरिक सरकार में घुस पैंठे कर चुके थे। जो भी सन्देश नागरिक प्रशासन चालू करता था या असम रायफल्स बेतार से भेजता, लगभग सभी की सूचना उन्हें मिल जाती थी। राजद्रोह एक आश्चर्य सा लगा और पूर्व इसके कि असम या भारत की सरकार कोई कार्रवाई करे, मिज़ो

राष्ट्रीय मोर्चे ने आइज़ल पर अपना अधिकार जमा लिया। भारत सरकार को प्रारंभ में, पूरी एक ब्रिगेड वहाँ लगानी पड़ी थी।

मिज़ोरम राष्ट्रीय मोर्चे का संगठन : मोर्चे ने सशस्त्र अंग में, सेना मुख्यालय, दो बिग्रेड के मुख्यालय, 6-7 बटालियनें खड़ी की। बटालियन की जनशक्ति 100 से 200 तक की थी। यह दल दूसरी असम बटालियन के आधार पर बना था, जिसको कश्मीर में विद्रोह करने के कारण, भारत सरकार द्वारा भंग कर दिया गया था।

यह असन्तुष्ट, किन्तु सुशिक्षित बटालियन केन्द्र के रूप में उन्हें मिल गई। विद्रोही सेना के जवानों में बड़ी वृद्धि हुयी, जब असम रायफल्स और आसाम रेजीमेंट के भगोड़े उसमें आ मिले। संक्षेप में, जब कभी कोई मिज़ो, भारतीय सेना, असम रायफल्स या पुलिस में छुट्टी लेकर मिज़ोरम जाता था, तब इस मोर्चे में उसे मिला लेने को फुसलाया या बाध्य किया जाता था।

सेवा-निवृत्त लोगों को भी इस दल में शामिल किया गया। कुल मिला कर, इसकी जनशक्ति 2000 के लगभग हो गई। शुरू में, 303 और द्वितीय विश्व युद्ध की जापानी रायफलों से लैस किया गया; किन्तु शीघ्र ही पाकिस्तान ने हथियार देना प्रारंभ कर दिये । यह आन्दोलन मिज़ोरम में ही नहीं पनपा; साथ में, दक्षिणी मणिपुर और मुख्यकर चूड़ाचान्दपुर क्षेत्र में भी (जहाँ अधिकांश निवासी मिज़ो हैं) फैल गया।

भारत सरकार ने इस राजद्रोह को गम्भीरतापूर्वक लिया और मिज़ोरम में अनेक बटालियनें शुरू में भेज दीं। वे चूडाचान्दपुर क्षेत्र में भी निरत की गई और कार्रवाई शुरू हो गई।

क्योंकि प्रारम्भ में विद्रोही असम रेजिमेंट और रायफल्स से निकले थे, उन्होंने रक्षा दलों की रणनीतियाँ अपनायीं। उन्होंने भारतीय सेना के अनेक जवान हताहत किये, किन्तु उन्हें भी भारी हानि उठानी पड़ी, जिसे वे सहन नहीं कर सके और उनका मनोबल गिर गया।

सुरक्षा दलों के निरन्तर दबाव के कारण, 1969 में इस मोर्चे के सैनिक-असैनिक लोग भारत-पाक सीमा को पार कर पाकिस्तान में रहने लगे, जहाँ से वे प्रायः मिज़ोरम पर छापे मारते थे। पाकिस्तान ने उन्हें प्रशिक्षित तथा सैन्यसज्जित करना शुरू कर दिया। कुछ थोड़े बहुत मिज़ो कर वसूल करने के लिये मिज़ोरम तथा चूडाचान्दपुर रह

गये।

सन् 1971 में भारत पाक युद्ध छिड़ा, जिसमें भारतीय सेना ने पूर्वीय पाकिस्तान को रौंद डाला और बंगला देश बना। जब युद्ध के बाद पाक सेनायें दक्षिण को लोटी, तब मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के लिये, राकेट लांचर्स और मॉर्टर सहित गोलाबारूद छोड़ गईं। मोर्चे को हर चीज़ को पीठ पर लाद कर ले जाना था; अतः उसके लाद ले जाने की क्षमता ही उन्हें बाधा बनी।

क्योंकि नवगठित बंगलादेश की सरकार ने इस मोर्चे का समर्थन ही नहीं किया, इसे बर्मा में अराकान की ओर जाना पड़ा तथा 1973 के अन्त तक शान्त रहना पड़ा।

21 जनवरी 1972 को, मिज़ोरम केन्द्र शासित क्षेत्र बनाया गया। 1973 तक, यह मोर्चा मिज़ोरम के शासनतन्त्र में घुसपैठ करने में बड़ा सफल रहा। 1974 के अन्त तक, मिज़ोरम की स्थिति खतरनाक हो गई। पुलिस सहित, मिज़ोरम सरकार के सभी विभागों में वह मोर्चा छा गया।

मिज़ोरम की जनता, सरकारी अफसरों, होमगार्डो, पुलिस तथा औरों से इसने कर वसूल करना शुरू कर दिया। एक समय वह आ गया, जब स्वघोषित मेजर कपचूँगा कसबा कमांडर, आइज़ल (जो के० रि० पु० बल का सबसे पहला बड़ा बन्दी बना) केवल आइज़ल कसबे से ही 30,000 रु० प्रति मास उगाहा करता था और मंत्रियों तक के भवन समेत मिज़ोरम के किसी भी घर में ठहरने की तथा किसी भी वाहन के प्रयोग करने की ढींग हाँकता था।

इस वक़्त, लूटपाट, आगज़नी, हत्या, हत्या-प्रयास की बीसियों दिलेर घटनायें हुयीं। 13 अप्रेल 1973 को, आइज़ल में पुलिसाधीक्षक श्री ए० के० राय की पसलियों में तीन बार गोलियाँ निकट से दागी गई। 30 अप्रेल 73 को, थेनज़ीबल का प्रशासन अधिकारी गोली से भून दिया गया। उसी दिन, एक छापाखाना भी भस्म कर दिया गया, जो चेतावनी पाकर भी मोर्चे की ठकुर सुहाती नहीं करता था। 17 मई को, खुफिया व्यूरो का एक अधिकारी एन• गोवा को गोली से मार दिया गया। 15 जून 73 को, दो ग्रेफ कर्मचारी जान से मारे गये ।

18 जून 73 को, ममिट पर राशन का एक गोदाम भस्म कर दिया गया। 7-8 अगस्त 73 को, लुंगसेन का प्रशासन अधिकारी गोली से भून दिया गया। 12 अक्टूबर 73 को, एक लोक निर्माण सेवा कर्मचारी को गोली से मार दिया गया। 1 दिसम्बर 73 को, सीमा मार्ग योजना दल के एक जवान और अधिकारी अपहृत किए गए और लुंगलीलुंगतलाई मार्ग पर गोली से ठौर कर दिए गए।

1974 के मध्य में, जब मोर्चे तथा मिज़ोरम के उपायुक्त श्री मुखर्जी की बात चीत सफल नहीं हुयी, तब मोर्चे ने प्राइज़ल सिलचर मार्ग पर उपायुक्त पर घात लगाई। इस घात में, उपायुक्त गोली से घायल हो गए, किन्तु पीछे चलने वाली जीप तुरन्त आ गई और घात टुकड़ी की शक्ति थोड़ी थी, अतः उसे घात से बचने का उन्हें सौभाग्य मिला। इसने भारत सरकार को झकझोर दिया। श्री मुखर्जी के बाद, श्री एस० के० छिब्बर मिज़ोरम में उत्तराधिकारी उपायुक्त बने।

1974 के जाड़ों तक, मिज़ो मोर्चे ने कारेवाइ तेज करने की ठानी और 1974 के दिसम्बर में, उसने मिज़ोरम में रहने या सेवा करने वाले सभी गैर-मिज़ो को **'मिज़ोरम छोड़ो'** की सूचना दी। उसके अनुसार, ऐसे सभी को 31 दिसम्बर 74 तक मिज़ोरम छोड़ देना था। गैर मिज़ो जनता में असुरक्षा की भावना पैदा हुई और मिज़ोरम से भागने लगी, किन्तु मिज़ोरम प्रशासन से प्रोत्साहन पाकर, वह अधिक संख्या में नहीं गयी। अतएच, गैर मिज़ो अधिकारियों तथा जनता में, आतंक फैलाने के लिए, मोर्चे ने कुछ वरिष्ठ गैर मिज़ो सरकारी अफसरों को मार डालना तय किया। इस हत्या के लिए, मोर्चे के मुख्यालय से स्वधोषित कप्तान लल्हलिया, मोर्चे का मनोनीत अधिकारी चुना गया। सारे आइज़ल कसबे का गैरिजन (सेना) उसको सौंप दी गई तथा स्वचालित अस्त्रों की काफ़ी संख्या. उसको दे दी गई। इस हत्या के पूर्व, मोर्चे का 'एड्जूटैंट जनरल', स्वधोषित कर्नल बैकवेला ने आइज़ल का दौरा किया और सब तैयारी करने के बाद, अपने दल के साथ चीन चला गया। पुलिस महानिरीक्षक के अवर लिपिक कुमारी जारी के घर में लल्हलिया के नेतृत्व वाले दल ने ठहर कर, हत्या की योजना बनाना शुरू कर दी।

13 जनवरी 1975 को, 4.15 बजे अपराह्न जब अपने दफ्तर में हुई कान्फ्रेंस के उपरान्त पुलिस महानिरीक्षक आर्य अपने उप-महानिरीक्षक और अधीक्षक के साथ चायपान कर रहे थे, मोर्चे के पाँच जन लल्हलिया के नेतृत्व में पुलिस के मुख्यालय में पुलिस वर्दी में घुसे। वे मिज़ोरम सशस्त्र पुलिस के संत्री के पास से निकले, जो 2 हेड कांस्टेवल और 13 जवानों के गारद का सदस्य था। यह गारद पुलिस महानिरीक्षक के दफ्तर से कठिनतापूर्वक 10 ग़ज़ की दूरी पर था।

मोर्चे के तीन लोग दफ्तर के बाहर तैनात हुए और दो अन्दर घुसे । पल भर में, उन्होंने तीनों अफसरों को गोली से भून दिया, जीप में जा कूदे और मिज़ोरम सशस्त्र पुलिस गारद द्वारा बिना रोके टोके, महानिरीक्षक के दफ्तर से निकल भागे । . संयोगवश, वह सरकारी जीप थी, जिसमें मोर्चे के आदमी जा रहे थे।

आइज़ल के कसबे में अपनी जीत के नारे लगाते हुए, वे कुमारी जारी के (जो महानिरीक्षक की महिला टाइपिस्ट थी तथा जिसे बाद को आजीवन कारावास का दंड मिला) घर में गए, अपने हथियारों को वहाँ गाढ़ा और वनों में चम्पत हो गये।

मैं जयपुर में अपने फार्म पर छुट्टी बिता रहा था। मुझ से टेलीफोन पर सम्पर्क स्थापित हुआ; अजमेर तुरन्त लौट आने को एक जीप भेजी गई और फिर जानकारी के लिए किसी प्रकार दिल्ली जाना पड़ा, क्योंकि मिज़ोरम के उप-महानिरीक्षक का कार्यभार मुझे अब संभालना था। दूसरे दिन दोपहर को, मैं दिल्ली पहुँचा तथा ब्रिगेडियर जी० एस० रणधावा के साथ (जिन्हें मिज़ोरम के महानिरीक्षक का पद भार लेना था) महानिदेशक, के.रि.पु० बल तथा महानिदेशक सी० सु० दल ने मुझे निदेश दिये । सिलचर से हेलीकॉप्टर द्वारा हम 15 को आइज़ल पहुँचे । आइज़ल कसबे में बड़ी अस्तव्यस्तता थी। नागरिक अधिकारी और उनके परिवारों ने अधिकांशतः राज निवास में और कुछ ने घरों में डेरा जमा लिया था। वहाँ से वे हटने का नाम नहीं लेते

थे। वरिष्ठ पुलिस तथा अन्य असैनिक अधिकारियों का मनोबल अत्यन्त गिरा हुआ था। किसी समय भी. अपने मारे जाने की प्रतीक्षा उनके प्राण सुखा रही थी।

स्थिति सुधारने के लिए, के० रि० पु० बल की दो अधिक बटालियनें दी गईं; पर हमने उनके आने से पूर्व ही कार्रवाई शुरू कर दी थी और सभी बाधाओं के होते हुए भी आइज़ल के सेवा कमांडर स्वघोषित मेजर कपचुंगा को उसके अंगरक्षकों के साथ पकड़ने में हम सफल हुये थे । यह बड़ी सफलता थी और इससे सुरक्षा दलों के मनोबल को कुछ बढ़ोत्तरी हुई। तदुप रान्त, आइज़ल के छोर पर, सी० सु० दल के साथ मुठभेड़ में (उन पुलिस अफसरों के दो हत्यारों में से एक) स्वघोषित कप्तान लल्हलिया मारा गया। दूसरा हत्यारा, स्वघोषित कप्तान रोनूना आइज़ल में 55 बटालियन (के० रि० पु० बल) द्वारा मौत के घाट उतारा गया। तीसरा हत्यारा स्वघोषित कप्तान थंग्रीलोवा चम्पई मार्ग पर सुरक्षा दलों द्वारा मारा गया । कपचुंगा और टाइपिस्ट कुमारी जारी को आजीवन कारावास का दंड मिला।

सुरक्षा दलों की कार्रवाइयों के फल स्वरूप, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे को भारी धक्का पहुँचा। उसका मनोबल क्षीण हो गया और विचार विमर्श की वह तैयार हो गया। इस बातचीत के फलस्वरूप, लाल्डेंगा ने जुलाई 1976 में यह माना कि यह मोर्चा शान्ति शिविरों में काम करेगा और भारत सरकार के पास हथियार जमा कर देगा। किन्तु अपने वक्तव्य का टेप तथा पुस्तिका अपने अनुयायियों में प्रचारित कर, उस समझौते को चुपचाप तोड़ दिया, जिसमें किसी ऐसे समझौते के होने का खंडन किया। दुर्भाग्य से, उसके अनुयायियों ने सारे मिज़ोरम के नगरों-उप-नगरों में वह टेप बजाया, जिससे हर कोई उससे परिचित हो गया और भारत सरकार उसकी दो मुंही नीति से वाक़िफ़ हो गई। मिज़ोरम और दिल्ली दोनों में, हर अफसर को इससे बड़ा धक्का लगा।

उसी समय, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे ने इस युद्ध विराम का पूरा-पूरा लाभ उठाया, और नगरों, ग्रामों और ग्रप केन्द्रों ने अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं। उसके सदस्य घनी बस्तियों में घूम-घूम कर जनता से कर वसूल कर बड़ी धनराशि इकठ्ठी करने लगे और हत्याओं का बाजार गर्म कर दिया। इन कार्रवाइयों से मिज़ोरम-सरकार का प्रभुत्व कम होने लगा। नौका में 23,000 रु० ले जाते हुए एक पुलिस-सबइंस्पेक्टर पर घात लगाने के सहित, मोर्चे ने अनेकों गम्भीर, अपराध किये। कर वसूल करने के 138 मामले इस समय हुए।

तथ्य यह है कि मिज़ोरम से सिल्चर को निर्यात होने वाली एक ही वस्तु, अदरख का व्यापार बिल्कुल ठप्प हो गया, क्योंकि मोर्चे की टुकड़ियाँ अदरख ले जाने वाले ट्रकों को रोकती थीं। वे लोग या तो अदरख की एक बोरी या प्रति ट्रक 50 रु० वसूल करते थे। ट्रक-ड्राइवर इतना धन नहीं दे सकते थे।

निरन्तर अपराधों और कर-वसूलियों के कारण, मिज़ोरम सरकार ने जनता की रक्षा और अपना प्रभूत्व बनाये रखने के लिये, नगरों, ग्रामों और ग्रुप केन्द्रों को इस मोर्चे से अलग रखने को तय किया। किन्तु वनों में तो मोर्चे को खुली छूट थी, जहाँ बेरोक टोक वे स्वच्छन्द घूमते थे। समझौते के कारण, मोर्चे के लोगों को गोलाबारूद

के साथ शान्ति-शिविरों में जाना था, अतः उन्हें नगरों, ग्रामों और ग्रुप केन्द्रों में स्वच्छन्द घूमने की छूट थी। फलस्वरूप, उन्होंने खूब कर वसूल किये।

अक्टूबर 1976 में भारत सरकार ने कार्रवाइयाँ करने की ठानी । वे 22 दिसम्बर 76 तक चलती रहीं, जब कि बड़ा दिन शान्तिपूर्वक मनाने के लिए, उन्हें फिर रोकना पड़ा। तब से, कार्रवाइयाँ निलम्बित हैं ।

ब्रिग्रेडियर टी० सैलो ने पीपल्स कान्फ्रेंस पार्टी गठित की, जिसने मई 78. के चुनाव में भारी जीत पाई और वह मुख्य मंत्री बन गया। इससे उसमें और लालडेंगा में मनोमालिन्य हो गया, क्योंकि लालडेंगा चुनाव से पूर्व मिज़ोरम में अन्तरिम सरकार बनाना चाहता था।

मोर्चे के सेनाध्यक्ष, स्वघोषित ब्रिग्रेडियर जनरल बैकचंगा ने सैलो का पक्ष लिया और लालडेंगा को निकाल बाहर कर, वह मोर्चे का अध्यक्ष बन बैठा; किन्तु छिपे मित्रों के समर्थन की कमी के कारण, उसे त्यागपत्र देना पड़ा । बाद को, मोर्चे ने उसे बन्दी बना लिया और फिर छोड़ दिया।

इधर पीपल्स कान्फ्रेंस में भी मतभेद हो गए : कुछ सैलो और कुछ लालडेंगा के पक्षधर हो गए। सैलो के समर्थकों की पार्टी पीपल्स कान्फ्रेंस 'ए' और अध्यक्ष थैंग्रीडीना वाली, पीपल्स कान्फ्रेंस 'बी' कहलायीं। इस मतभेद के कारण, सैलो का मंत्री मंडल ज्यादा देर नहीं चला और 11 नवम्बर 78 को, वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू हो गया।

इस समय, छिपे विद्रोहियों में बड़ी गड़ बड़ फैली हुई है। लालडेंगा, और बैकचुंगा के अतिरिक्त, लांगचुंगा के नेतृत्व में एक तीसरी पार्टी गठित की गई बताई जाती है और बंगला देश में, अराकान में मोर्चे के अध्यक्ष पद के लिये चार चुनाव हो चुके हैं, किन्तु कोई साफ़ तस्वीर उभर कर नहीं आई है। इन्हीं दिनों, यह खबर लगी है कि लालडेंगा फिर अध्यक्ष बन गया है।

इस वर्ष के अप्रैल में हुये विधान सभा चुनाव में, सैलो वाली पीपल्स कांफ्रेंस 'ए' फिर सत्ता में आयी है; विरोधी पीपल्स कांफ्रेंस 'बी' और जनता पार्टी की स्थिति अच्छी नहीं रही, जबकि कांग्रेस की स्थिति सुधरी । लालडेंगा वाले छिपे मिज़ों चुनाव परिणामों से खुश नहीं हुये और वे आतंक पूर्ण कार्रवाइयाँ कर गड़बड़ी फैलाने की धमकी दे रहे हैं, जिससे निपटने को सुरक्षा दल पूर्वोपाय कर रहे हैं।

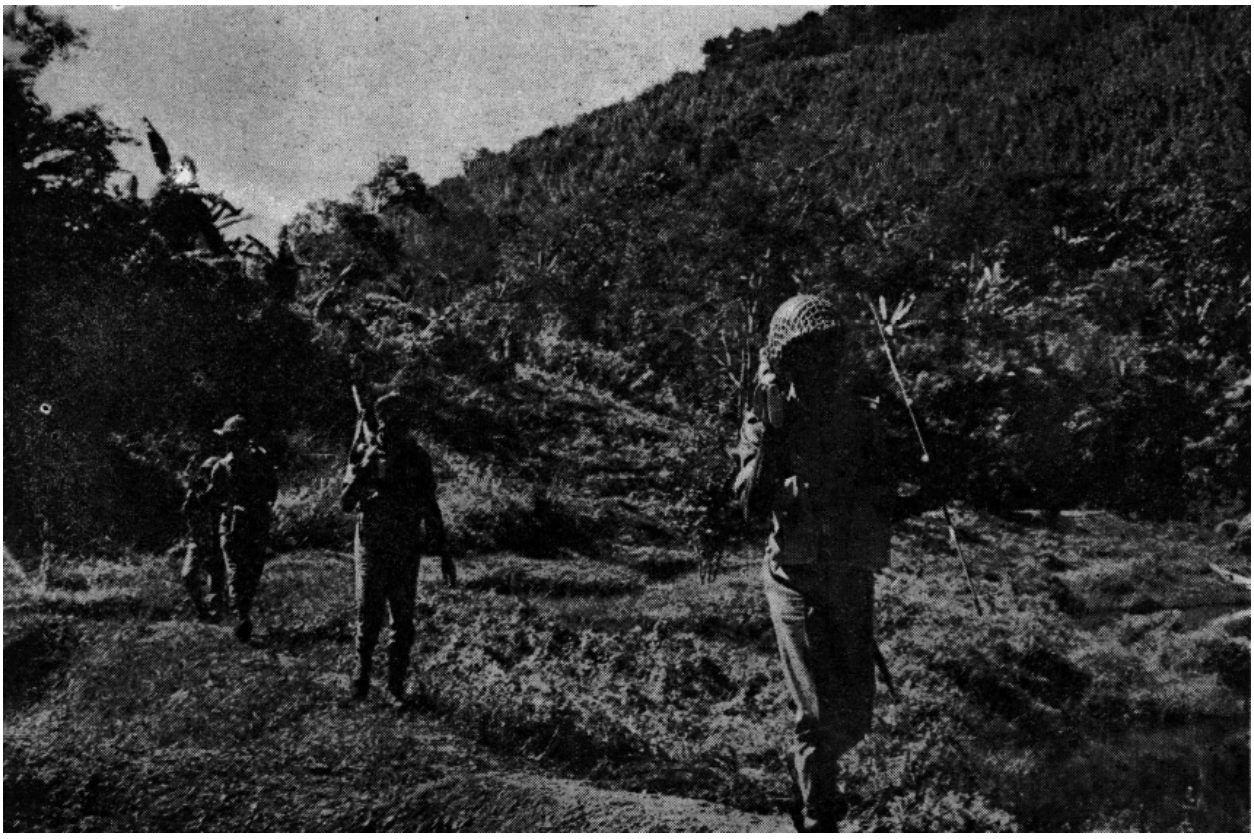
हमारे विचार से, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के हथियार डालते ही, मिज़ोरम की समस्या स्वयं सुलझ जायेगी; किन्तु मिज़ों के मतानुसार, मिज़ोरम की समस्या जटिल है। मिज़ो केवल शान्ति ही नहीं चाहते हैं; किन्तु वे इस बात के इच्छुक हैं कि मणिपुर और त्रिपुरा में मिज़ो द्वारा बसे हुए क्षेत्र भी मिज़ोरम में मिला दिये जायें। वृहत्तर मिज़ोरम बनाने की आशा इस बात पर निर्भर करती है कि मोर्चा पूरा-पूरा अस्त्रों से लैस उपलब्ध हो जिससे भारत सरकार को खतरा हो और विद्रोही इस केन्द्र शासित क्षेत्र तथा चूड़ाचन्दपुर तथा त्रिपुरा के निकटवर्ती क्षेत्रों में न्याय-व्यवस्था की समस्या पैदा कर दें। इस रणनीति से, मिज़ो यह आशा करते हैं कि भारत सरकार वृहत्तर मिज़ोरम

को मान जायेगी और कश्मीर, सिक्किम या भूटान की भाँति उसे विशेष रुतवा देगी।

इन महत्वाकांक्षों के कारण, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे या अन्य दल का कोई भी नेता, मिज़ोरम में शान्ति लाने की पूरी ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। यदि मोर्चे पर आधी भी जनशक्ति तथा सभी आधुनिक हथियार भी रहते हैं, तब उसके समर्थक जब कभी भी मिज़ोरम या निकट वर्ती क्षेत्रों में चाहेंगे, न्याय-व्यवस्था की गम्भीर समस्या पैदा कर देंगे।

मेरे विचार से, यदि मोर्चे के अधिकांश लोग भी आत्म समर्पण कर दें, शायद मध्य-प्रदेश की भांति मिज़ोरम में न्याय व्यवस्था की समस्या बनी ही रहेगी; क्योंकि आत्म समर्पण के बाद भी, बहुत कुछ मिज़ो पिछले 11 वर्षों की अपनी बुरी आदत को कब छोड़ने लगे ? किन्तु मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के लोग वनों से बाहर निकलने पर उनके पुनर्वास के लिये कारगर उपाय न्याय-व्यवस्था की समस्या में थोड़ा बहुत सुधार अवश्य ला सकते हैं।

वकील पिता- तुम माता द्वारा दिये गये दण्ड के विरुद्ध मुझ से अपील करने आये हो; किन्तु वकील के पुत्र होने के नाते, इतना तो जानते की बड़ी अदालत के फैसले की अपील छोटी अदालत में नहीं होती।



मिजोरम के चुनाव के संस्मरण

ल०-३० गोवर्द्धन प्रसाद बहुगुणा

दिनांक 17 मार्च 1979 को यह आदेश मिला कि हमारी वाहिनी मिज़ोरम विधान सभा के चुनाव पर जायेगी। उस समय, हम मणिपुर की शस्यश्यामला वसुन्धरा पर पहरा दे रहे थे। इस खबर को सुनते ही सभी जवानों के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई; कारण—सभी मिज़ोरम को देखने के लिये उत्सुक थे । साथ ही, हमें एक गम्भीर उत्तरदायित्व का भी एहसास हुआ, क्योंकि चुनाव सरकार के लिये जनता को एक बड़ी चुनौती है।

हमारी सब कम्पनियों का जमाव 30-3-79 तक सिलचर में हो गया, जो मिजोरम का द्वार है। 2.4.79 को गाड़ियों का काफिला मिज़ोरम की पहाड़ियों में प्रवेश कर गया और अगले दिन हम आइज़ल जा पहुँचे । रात में प्राइज़ल बहुत ही सुन्दर लगता है। बिजली के असंख्य दीपक एक स्थान पर सिमटे गगन के मितारे से लगते हैं।

मिज़ोरम के तीन ज़िले हैं—आइजल, लंगले और चिनतुइपुई। चिनतुइपुई का मुख्यालय है सय्या। वहाँ हम 8.4.79 को पहुँचे। रास्ते में क्षणिक विश्राम के समय, हमने कुछ युवावस्थाप्राप्त लड़के-लड़कियों को कठोर पहाड़ियों को खोद कर, राजमार्ग का निर्माण करते हुये देखा। पूछने पर पता लगा कि एक दिन की मजदूरी बीस पच्चीस रुपये तक बन जाती है और ये सभी सय्या या प्राइज़ल या गोहाटी के महाविद्यालयों में अध्ययन करते हैं और छुट्टियों के समय अपने माँ-बाप, भाई-बहनों का हाथ बँटाते हैं। उन्हें देख दिल को अगाध प्रसन्नता हुई; हमारी सामन्तशाही आदतों का, जिनका राष्ट्रीय जीवन पर कुप्रभाव पड़ता है, शनैः शनैः अन्त हो रहा है और समाजवादी स्वावलम्बन का द्रुतगति से विकास हो रहा है। मुझे रूसी मेधावी बालकों तथा अमरीकी छात्रों की याद आ गई, जो स्कूल जाने के पहले, बाद में तथा छुट्टियों के दौरान अपनी फीस और जेबखर्चे का पैसा खुद ही कमा लेते हैं और इस प्रकार अपने मां-बाप की सहायता करते है।

मिज़ोरम में बाँस के घने जंगल हैं। कहीं कहीं बर्मा देश की सीमा पर शाल के भी वन हैं, बेंत की बेलें भी मिलती हैं। इन पहाड़ियों पर पानी का अलवत्तः अभाव है। मिज़ोरम में कुछ दिनों पानी का एक कनस्तर (पीपा) दस रुपये में बिकता है । भू संरक्षण नाम की यहाँ कोई योजना नहीं है, क्योंकि हरेक साल, जगल के जंगल खेती के लिये मिज़ो धराशायी कर देते हैं।

ब्रितानियाँ के बड़े बड़े विशपों और - पादरियों ने कभी यहाँ आकर इन पर अंग्रेजि

यत का आमेट रंग चढ़ा दिया था। इनके शिष्य अब भी भारत में हैं। राजमार्ग के किनारे बड़े बड़े गाँव बसे हैं। मिज़ो व्यापार और रक्षा सेनाओं में भर्ती के लिये अधिक रुचि रखते हैं । अदरख की खूब उपज होती है।

हमने देखा की सय्या में चुनाव प्रचार बड़े जोर शोर से चल रहा है और घाटियों की शांति जीपों और ट्रकों की दौड़ों से भंग हो रही है। लड़के-लड़कियों को इस चुनाव अभियान में सक्रिय भाग लेते हुये देखा गया। उस समय यहाँ चार प्रमुख राजनीतिक पार्टियाँ थीं-जनता, पीपुल्ज कॉफ्रेंस, कांग्रेस तथा एम.एन.एफ. (जो आजकल प्रतिबन्धित है)। मिज़ोहिल्स विधानसभा में केवल तैतीस सदस्यों का प्रावधान है।

सय्या में हम कुछ दिन आराम से रहे, किन्तु व्यायाम हमें कठोर करने पड़ते थे, जिनमें मुख्यतया दौड़ हमें 15 मील तक की करनी होती थी, ताकि हम सब पहाड़ियों पर चढ़ने के अभ्यस्त हो जाये। व्यायाम प्रायः हेलीकॉप्टर पैडों (अड्डों) पर करते थे। एक दिन मेरा एक सैनिक हाथ में कुछ छुपाये हैलिकॉप्टर की ओर भागा। पूछने पर पता चला कि उसने हैलीकॉप्टर के चालक को अपनी चिट्ठी देते हुए यह निवेदन किया था कि वह चिट्ठी उसकी नई नवेली दुलहन को शीघ्र पंजाब में पहुँचा दे। कालीदास के यक्ष की विरह कथा याद हो आई जिसने मेघ को ऐसा ही दूत बनाया था । वास्तव में घर की दूरी यहाँ बहुत खटकती है।

21.4.79 को मुझे यह आदेश मिला कि मेरी कम्पनी इन पांच जगहों पर ड्यूटी करेगी। आर चुआँग, लुगजरथम, छुरलुाआग, लुगवन और नवतलाग । मेरी ड्यूटी लुगवन में लगी, जो मय्या से 25 कि० मी० दूर था। हमें दो दिन पैदल चलना था। किन्तु स्वयं पर्वतीय होने के नाते, मुझे इस यात्रा में बड़ा आनन्द आया। यद्यपि विभाग से समृचित व्यवस्था कर दी गई थी, तबभी कुलियों का अभाव था। वृद्ध कम्पनी कमाँडर श्री जयनारायण की देखरेख में 21 और 22 अप्रेल को हमने पीठ पर सात दिन का राशन और हल्का बिस्तर ले जाने का अभ्यास किया। इसमें टैक्टीकल परेड भी शामिल थी। 24.4.79 को, हम दुर्गम पहाड़ियों को पार करते हुये एक ही दिन में अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचने पर, हमारा बड़ा आदर-सत्कार हुआ। एक स्कूल में हमने अपना कैम्प लगाया। 27.4.79 चुनाव का दिन था। अत: 25 और 26 अप्रेल को चुनाव-प्रचार की सरगर्मियाँ चोटी पर थीं। यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बर्मा देश से केवल 2 कि० मी० की दूरी पर स्थित इस गाँव में लोकतांत्रिक विचारों ने अपनी जड़ें कितनी मजबूत कर ली हैं तथा वहाँ के लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में कितनी जागृति है।

26.4.79 को गाँव के युवकों ने वाली बाल मैच के लिये आमंत्रित किया। 5 मैंचों में हम चार जीते। उनके कैप्टन ने हमें अपने घर लेजाकर चाय पीने को बाध्य किया। 27.4.79 को प्रात: चुनाव शुरू हो गये । गाँव के नरनारी लाइन बनाते गये और बारी-बारी से वोट देते गये। तदुपरान्त, 200 गज दूर पर बैठकर वे झूम-झूप कर नाचते गाते रहे। काले बड़े बड़े साँड भी उन्होंने दौड़ाये । यह अप्रत्यक्षरूप से इस बात का द्योतक था कि उनकी पार्टी को वोट देने वाले को ये साँड खिलाये जायेंगे; किन्तु यह सब

प्रचार मौन भाषा में था।

शाम को चुनाव सम्पन्न हो गये और हम बैलेट बॉक्सों पर पहरा देने लगे । कुछ ही देर के बाद, कोई 50 वर्ष के एक वयोवृद्ध नेता आते दिखाई दिये। वह उसी स्कूल के प्रधानाचार्य थे। उनका नाम जद्धो था। उनके पीछे, सफेद रंग का एक बड़ा सा कुत्ता था। हमने सोचा कि यह कुत्ता उनके घर का चौकीदार होगा; किन्तु पूछने से पहले ही, मास्टर साहब बोल पड़े 'आज शाम हमारे घर दावत है और यह कुत्ता उसी दावत में काटा जाने वाला है। आप सब भी उसी पार्टी में आमंत्रित हैं।' परन्तु मैंने राजकीय सेवक होने के नाते उस पार्टी में सम्मिलित होने से असमर्थता प्रकट की। मुस्काते हुए, उन्होंने मौन सहमति दी।

उस इलाक़े की जानकारी के विषय में, मैं उनसे पूछता गया और उत्तर उनके ही शब्दों में इस प्रकार थे—'हम पूर्णरूप से प्रत्येक वस्तु के लिये, भारत पर ही निर्भर हैं। यहां मामूली चावल और मकई के अलावा, कुछ नहीं पैदा होता । हमारा गाँव बर्मा से केवल 3 कि०मी० की दूरी पर है। मिज़ोरम में भारत सरकार काफी विकास कर रही है, जबकि बर्मा के पहाड़ी इलाकों में कोई विकास नहीं है। बर्मा की सेना इन पहाड़ियों पर कहीं नहीं है। केवल मॉडले और रंगून तक ही सीमित है। सामने एक नदी है, जिसका नाम कलन्दानी है । यही बर्मा और भारत की सीमा बनाती है। सामने बर्मा का चिनहिल जिला है। यहां 1 कि० ग्राम भारत की चीनी 7 रु० की मिलती है और एक कप चाय 1 रु० में। भारत का 1 सौ रुपया चिनहिल जिले में 300 रु० में बिकता चिनहिल के लोग अपनी दैनिक चीज़ों की पूर्ति भारत से करते हैं । बर्मा सरकार उनके प्रति उदासीन है। ईसाई धर्म का वहाँ भी इसी प्रकार प्रचार है।'

तभी उनकी एक युवा कन्या आई; उसने सलाम किया; मैने विनम्र उत्तर दिया। वह निधड़क मेरी बगल में बैठ गई , उसका उभरा-उभरा यौवन तथा उसे विदेशी गाउन पहने देखकर, ब्रितानी सभ्यता की याद ताजा हो गई। मैं कुछ विचलित हो गया; इस पर वह अप्रसन्न हो गई। मास्टर साहब ने मुझे उसके पास बैठने को कहा और बताया कि उनके यहाँ कुंआरी कन्यायें नव आगन्तुकों के साथ बड़े खुलकर रहती हैं और यदि आगन्तुक उनसे झिझकता है, तब वे अपना अपमान समझती हैं।

अन्त में, मैंने उनसे पूछा कि लाल डेंगा का संगठन उन्हें कैसा लगता है। उन्होंने तुरन्त दृढ़ स्वर में उत्तर दिया कि वह उससे और उसके संगठन से घृणा करते हैं। फिर मैंने सी०पार०पी० के विषय में पूछा। तब वह कहने लगे कि इसे वह चाहते हैं और सुदूर पूर्वीय गांवों में इसे ही अवश्य रहना चाहिए। लेकिन वह हमसे डरते भी हैं; मैंने उनकी शंका का निराकरण यह कह कर किया कि हमारा ध्येय सेवा और भक्ति है। इसके बाद, उन्होंने और उनकी सुपुत्री ने मेरे साथ मर्मस्पर्शी हाथ मिलाया और बोले 'जय हिन्द ।'

वे अपने घर की ओर चल दिये और हम बैलट बॉक्सों की रक्षा करते हुये पहाड़ियों को पार करने लगे। 28.4.79 को ही हम सय्या पहुँच गये। कमांडेंट महोदय डाक बंगले में हमारी बाट जोह रहे थे । हमने उन्हें तुरन्त रिपोर्ट दी। उन्होंने शाबाशी दी ।

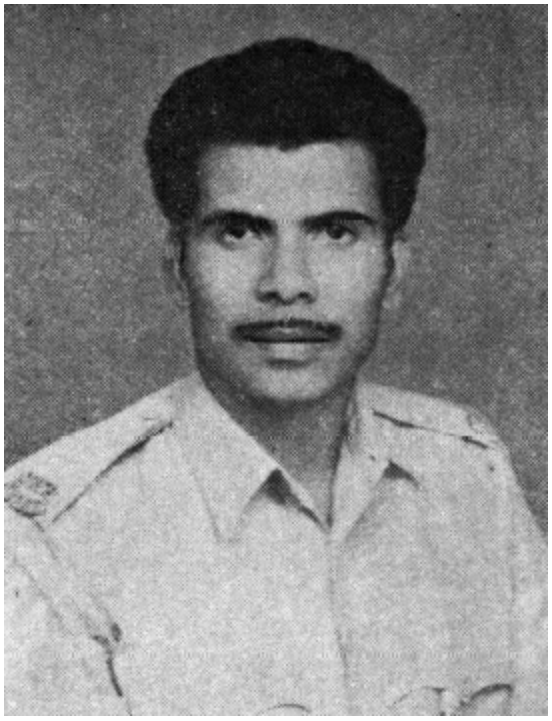
उनके इस स्नेह भरे व्यवहार से हम सब की थकान चम्पत हो गई। सचमुच, उससे हमें अपनी अगली दिन चर्या करने के लिये दुगनी शक्ति मिल गई।

अग्निशमन

दिनांक 9 अगस्त 79 को, वल्लाचेरी गांव में लगी आग को बुझाने में 5 बटालियन की मद्रास स्थित 'सी' व 'डी' कंपनी के जवानों ने स्थानीय लोगों की सहायता की। वल्लाचेरी सामाजिक पंचायत सभा ने इसके लिए बड़ा आभार प्रकट किया।

विद्रोहियों द्वारा नायक की हत्या

मिज़ोरम के चम्पई नामक कस्बे में 20 अगस्त 79 को, 2 सिगनल बटालियन का नायक आपरेटर पी० के० जार्ज, दो गोलियां लगने पर प्राण गवां बैठा; जब वह, अपनी चौकी पर काम करके ग़ैर सैनिक वस्त्रों में लौट रहा था। एक गोली उसकी छाती तथा दूसरी उसके सिर को आर पार कर गई। दूसरे दिन, चम्पई के कब्रस्तान में पूर्ण पुलिस सम्मान के साथ, उसकी अंत्येष्टि की गई। के० रि० पू० बल के सदस्यों के अतिरिक्त 400 नागरिकों ने उसमें भाग लिया। दिवंगत जार्ज के सम्मान में स्कूलों और कॉलेजों के सहित, स्थानीय सरकारी दफ्तर बन्द रहे।



नायक आपरेटर पी० के० जार्ज

विज्ञान के चढ़ते चरण

• दो इंच के फासले से दोहरे शीशे वाली ऐसी खिड़की बनाई गई है, जिसके शीशों

के बीच में हवा निकाल कर फिल्म की पतली सी तह लगी रहती है जो प्रकाश और ताप को जज्ब कर लेती है। शीत गर्मी कोलाहल व तरलता से कमरा सुर क्षित रहता है।

• बेलजियम में एक कृत्रिम हारमोन वासोप्रेसिन खोज निकाला गया है जो पीयूष ग्रंथि (पिटयूटरी ग्लैंड) में स्थित हारमोन से मिलता जुलता है। इससे मनुष्य की स्मरण-शक्ति में बहुत वृद्धि होती है और उसके सीखने की शक्ति तथा एका ग्रता बढ़ती है।

• वृद्धावस्था रोकने के लिए, डिसूमेरोल और काउमाडिन, मुख्यकर मधुरोगी तथा शराबी के लिए बड़े लाभप्रद सिद्ध हुये हैं।

• गर्भवती के मूत्र में एस्ट्रोजेन और क्रियेरीनाइन के अनुपात से भ्रूण बच्चे के विकास का पता लग सकता है। यदि उनका अनुपात सामान्य है, तो कोई खराबी नहीं है।

धुलाई भत्ते में वृद्धि

अब चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की वर्दी की धुलाई भत्ता 3 रु० प्रति मास से बढ़ा कर 4 रु० प्रति मास हो गया है।

साम्प्रदायिक दंगे की रचना - भाग (2)

ले०-श्री के० एफ० रुस्तमजी

भारत में साम्प्रदायिक दंगे , पहले तो देश के राजनीतिक जीवन में राजनीतिक दलों द्वारा महत्ता पाने के यत्नों के कारण होते थे। स्वतन्त्रता के बाद, सार्वजनिक विरोध की उस इच्छा की कोई सच्ची वजह नहीं रह गयी, जिसने 1925-45 में मुस्लिम लीग से प्रेरित कई दंगे कराये थे। राज नीतिक कारण अब बिरले ही होते हैं। दंगों के इस नये दौर में, मुख्य कारण ये हैं (i) आर्थिक, मुख्यकर व्यावसायिक द्वेष ; (ii) किसी उद्योगधंधे या सफल उद्यम में काम करने वालों को दूसरों से बदल देने की इच्छा; (iii) शहरीकरण तथा अधिक भीड़-भड़क्का ; और (iv) बाह्य शक्तियों द्वारा भड़काना।

जबलपुर, अहमदाबाद तथा भिवानी में होने वाले जैसे उपद्रवों के कारण मुख्यकर आर्थिक थे। (यह अलवतः सत्य है कि थोड़े ही समय में पूर्वी बंगाल में हुये अत्याचारों

की प्रतिक्रियायें हुयीं और इस्पात नगरों में दंगों की शृंखला चल पड़ी)। शायद, प्रशासनिक विफलता के कारण सबसे भीषण दंगे हटिया और अहमदाबाद में हुए। दोनों स्थानों पर हुये दंगों की जांच, परिपच्छा न्यायालयों द्वारा हुयी और उत्तम रिपोर्ट प्रकाशित हुयीं। अहमदाबाद में दंगों की साफ़ वजह प्रशासनिक विफलता थी। अपनी उत्तम इच्छाओं के होते हुये भी, शायद गुजरात सरकार प्रारम्भ में कमजोर रही तथा निर्णय नहीं ले सकी। फलस्वरूप, स्थिति काबू से बाहर हो गई और इस औद्योगिक क्षेत्र में दंगे के एक भीषण दौर में 400 मुसलमान मारे गये। सेना और सी०सु० दल ने व्यवस्था संभाली और उनको भी कई दिन इस काम में लग गये। सेना के देर से आने के अलावा, हटिया के उपद्रव में सबसे बुरी बात यह थी कि उस नर संहार में शिक्षित लोगों ने भाग लिया था।

आजकल साम्प्रदायिक दंगों में, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक कारण बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैं (प्रशासनिक विफलता भी केवल सहयोगी मात्र होती है); पिछले दो वर्षों में उत्पात का मुख्य कारण उप नगरों और नगरों में शहरीकरण और अत्यधिक भीड़.भड़क्का रहा है। इसके स्पष्ट दृष्टान्त दिल्ली में सदर बाजार और मेरठ, बड़ौदा तथा गुजरात के निकटवर्ती दो उपनगर के दंगे हैं।

अत्यधिक जनसंख्या के कारण अब हत्यायें बहुत हो रही हैं, जो बढ़ती ही जायेंगी। इस उभरती हुई समस्या के लिए किसी विशेष मनोवैज्ञानिक की ज़रूरत नहीं . है। पिछले दो तीन वर्षों में, सामान्य कारणों के साथ-साथ, प्रधान कारण ये रहे हैं - एकान्तता की कमी, घरों का परस्पर सम्बन्ध, जलोत्सारण की समस्या, घरों में मलजल बहना, लड़के और लड़कियों का करीब-करीब बढ़ना तथा प्रापस में छेड़छाड़ करना।

जब अब अधिकांश साम्प्रदायिक दंगों में राजनीति का हाथ नहीं होता, तब यह बताना संभव है कि किस प्रकार इन दंगों से निपटा जाए। यदि राजनीतिक प्रेरणा हो, तब प्रशासनिक तथा राजनीतिक हल खोजे जायेंगे। ॉ

सर्व प्रथम यह देखना है कि साम्प्रदायिक दंगा शुरू कैसे होता है ? साधारणतया दो क्रोधी मनुष्यों के कलह में हाथापाई होती है, और उसमें उनके मित्र छोटी-मोटी टोलियों में शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार की घटनायें निरन्तर होती रहती हैं और स्थानीय लोगों या राजनैतिक कार्यकर्ताओं या पुलिस द्वारा दबा दी जाती हैं और एक प्रकार से, ऐसे सैकड़ों दंगे रोके जाते हैं। कभी कभी, स्थानीय तनाव भंयकर होने के कारण नेता लोग हस्तक्षेप करने में हिचकिचाते हैं और पुलिस का उत्तर-काल खराब होने से, वह उपद्रव टालने के समय, स्थान पर उपस्थित नहीं हो पाती है। तब तक बड़ी-बड़ी टोलियाँ बन जाती हैं ; और मिनटों में ही पथराव, अग्निकांड तथा अपनी रक्षा में लोगों के द्वारा-उपाय करने से, क्षेत्र में आतंक फैल जाता है।

साम्प्रदायिक दंगे में भारी दुःख तो इस बात का होता है कि आत्मरक्षा के धोखे की टट्टी की प्रोट में सर्वनाश होता है। इन टोलियों का इकट्ठा होना और नारे लगाना, मुख्यकर रात में, भय तथा आतंक का वातावरण पैदा करता है और दंगे का पूर्व गामी

होता है। यादे इसके साथ, हर - सम्प्रदाय कुछ समय से तैयारियां कर रहा होता है, तब व्यापक उत्पात के साथ भीषण दंगे की सम्भावना होती है।

मुख्य विफलतायें प्रशासनिक स्तर पर और साम्प्रदायिक अथवा राजनीतिक पक्ष की होती हैं। प्रशासनिक स्तर पर तो उपद्रव का मुख्य कारण होता है-घटनास्थल पर देर से पुलिस का पहुँचना तथा अधिक जन । शक्ति को बुलाने में उसे विलम्ब । राजनीतिक द्यष्टि में, दंगे के बढ़ने में स्वार्थ सिद्धि की भावना या साप्रदायिक दलों के प्रतिशोधों का डर रहता है, जिससे बुद्धिमान लोग हाथ डालने से कतराते हैं।

दंगे को किसी भी समय बढ़ने से रोका जा सकता है, बशर्ते क्षेत्रीय नेतृत्व उत्तम हो। यह वह क्षण है, जब प्रशासन को अपनी इच्छा साफ़-साफ़ बता देनी चाहिए। इस स्थिति में गोली-चालन भी भारी क्षति रोक सकता है। सामान्यतः शान्तिपूर्ण स्थिति में तो, स्थानीय लोग साम्प्रदायिक दंगों की रोक थाम कर लेते हैं ; किन्तु यदि तैयारियां कुछ समय से चल रही होती हैं, और अधिकारीगण उपद्रव के प्रथम लक्षणों पर अपनी अक्षमता और अयोग्यता दर्शाते हैं या दूसरे कामों में उलझे रहते हैं या लूट पाट, छुरेबाज़ी तथा अग्निकांड होने देते हैं, तब स्थिति इतनी जल्दी बिगड़ती है कि क्षेत्र के लोगों में उन्माद और अपस्मार का दौरा सा पड़ता है।

उपद्रव के बढ़ने के मुख्य कारण हैं – (i) उत्तम संचार की कमी और रेडियो के स्थान पर अनिश्चित टेलीफोन पर निर्भरता (ii) उत्तर काल में मुख्यकर घबड़ाये पुलिस बलों द्वारा या अपर्याप्त वाहनों अथवा अयोग्य पर्यवेक्षण-अधिकारियों अथवा भ्रष्टता से बदनाम अधिकारियों वाले दलों द्वारा देरी; (iii) सशस्त्र प्रारक्षित बलों का फैलाव, चाहे वह विशिष्ठ व्यक्तियों की सेवा के कारण हो, या किसी महत्वपूर्ण अवसर की बजह हो या कोई त्यौहार हो, जिसमें आरक्षित बलों की भारी मात्रा में तैनाती की जाती है; (iv) कर्फ्यू लगाने में देरी या उसे लागू करने में अक्षमता या उत्पाती तत्वों को हिरासत में लेने में देरी; (v) भीषण साम्प्रदायिक दंगे का मुख्य कारण तब होता है, जब जनशक्ति या साधनों की कमी या कमजोर अधिकारियों के कारण पुलिस दल में भय तथा तनाव हो जाता है या हिंसा तथा अतंक का ऐसा सामान्यतः वातावरण हो जाता है, जो अत्यन्त विनाश कारी रूप धारण करता है और पुलिस के भी विरुद्ध हो जाता है । यह भय अन्धकार में खासतौर पर बढ़ जाता है, जब बम और गोले छोड़े जाते हैं; छुरेबाजी की चीखें सुनायी पड़ती हैं या नारे लगाये जाते हैं, जिन्हें पुलिसजन अपने ऊपर आक्रमण करने का इरादा मान बैठते हैं। अफवाहें पुलिस बल का मनोबल सरलतापूर्वक गिरा देती हैं। खास अफवाहें ये उड़ती हैं कि अमुक पुलिस अधिकारी की हत्या हो गयी है, या कितने ही पुलिस कर्मी बुरी तरह घायल हुए हैं । या उनके परिवारों पर धावा बोला गया है ।

दंगे की सबसे बुरी स्थिति तब होती है, जब भीड़ पर उन्माद छा जाता है और प्रशासन पर आतंक व्याप्त हो जाता है। इस समय भीड़ सर्वनाश, अग्निकाण्ड तथा मारकाट पर उतारू हो जाती है और निरनुभवी अधिकारी या कमजोर तथा डरपोक अफसर, कहीं कोने कचोले में शरण लेते हैं और बाहर निकल कर न्याय व्यवस्था

कायम करने से कतराते हैं, जो उनका कत्तव्य होता है। यह वह समय है जब अराजकता से जूझने को कोई दृढ़ निश्चयी जवान तक स्थिति सुधार सकता है। ऐसे अनेकों दृष्टान्त हैं, जब किसी अफसर ने स्थिति सुधार का स्वयं बीड़ा उठाया और पूरा किया।

ऐसी भविष्यवाणी करना कठिन है कि अतीत काल के से गंभीर उपद्रव भविष्य में नहीं होंगे। बहुत कुछ पड़ोसी देशों की घटनाओं पर निर्भर करता है। दण्डाधिकारी। तंत्र पर, राजनीतिज्ञों की क्षमता पर, दण्डधिकारी गणों के सहारे पुलिस की दक्षता तथा कुशलता पर, संचार माध्यम की सत्यवादिता पर तथा ग़लतियों को छिपाने के प्रयत्न का भंडाफोड़ करने के लिए जजों (न्यायमूर्तियों) की निर्भीकता पर भी यह अत्यधिक निर्भर करता है। किन्तु इन सब तत्वों से भी बढ़कर यह देखना है कि क्या अल्पसंख्यक यह अनुभव करते हैं कि स्वतंत्र रहने के, आदर-प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा के साथ जीवन विताने के, उन्हें बराबर अवसर मिल रहे हैं और क्या बहुसंख्यक यह महसूस करते हैं कि अल्पसंख्यकों को विभेदकारी विशेषाधिकार तो नहीं दिए जा रहे हैं अथवा राजनीतिक रियायतों को पाने के लिए, उन्हें अव्यवस्था तथा अराजकता फैलाने की तो छूट नहीं दी जा रही है ?

जवानों द्वारा डाकू बन्दी

विगत 9-10 अगस्त की रात को, जब 58 बटालियन के कां० के. पी. कृष्णन और कां० के. जी. कुल्लत अपनी ड्यूटी कर कलकत्ता हवाई अड्डे के विशिष्ट पुरुषों के द्वार पर पहुँचे थे, तब किसी बालिका की आर्तपुकार उन्हें सुनाई दी-'पुलिस पुलिस !' दोनों ही सिपाही घटना स्थल पर जा पहुंचे। उन्होंने क्या देखा कि तीन हृष्ट-पुष्ट पुरुष एक बालिका तथा उसके छोटे भाई से हाथापाई कर रहे हैं। छोटे भाई पर तो वे हावी हो गये थे। किन्तु कन्या बच भागने को जूझ रही थी। जैसे ही जवान उन्हें बचाने को दौड़े, तब लुटेरे हाथ की घड़ी तथा नेकलस को लेकर चम्पत होने का प्रयत्न कर रहे थे। कोई एक मील की दौड़धूप के बाद, एक लुटेरे को जवानों ने जा पकड़ा और घड़ी तथा नेकलस प्राप्त कर ली। उसे दमदम थाने ले गये । पूछताछ के बाद, स्थानीय पुलिस ने उसी रात को एक और लुटेरा जा पकड़ा।

स्थानीय पुलिस अधिकारियों ने हमारे दोनों जवानों को बड़ी प्रशंसा की तथा उनके कमांडेंटों ने उन दोनों की 50-50 रु० का नकद पुरस्कार दिया।

सूक्ति सुधा

ग़लत मार्ग पर जाने वाले को दण्ड देने का नाम शासन है।

–पंचतंत्र

जो पाप अवध्य के वध करने से होता है, वही पाप वध्य की छोड़ देने से होता

–योगवसिष्ठ

पक्षपात गुण और दोषों को उल्टा बना देता है।

–राजशेखर

जो मनुष्य बहुत बोलता है, लोग उस पर विश्वास नहीं करते।

–वाण

यह भी खूब रही

पुत्र-मम्मी, लम्बी बहू लेने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि वह आप से सदा नीची आँखें करके बात करेगी और आप हमेशा आँख उठा कर बोलेंगी।

डालडा का डिब्बा देते हुये पति– प्राणेश्वरी, हम पति से इस वनस्पति की किस्मत अच्छी है, जिसे पाकर तुम्हारा दिल बाग़ बाग़ तो हो रहा है।

राम-यार श्याम, यह हमारे पड़ोसी होली की जगह अपना होला मनाते हैं, पर दिवाली की जगह अपना दिवाला नहीं मनाते।

अध्यापक-इस बाल वर्ष की क्या विशेषता है, शिष्य ?

शिष्य-सर, राजनारायण के बाल जनता पार्टी का मंत्रिमंडल गिराने में सफल हुये हैं।

हरी-गोपाल, इन मंत्री जी ने हमारे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में कितने पुल बाँधे हैं ?

गोपाल-अरे, पहले इन्हें अपनी तारीफ़ के पुल बाँधने से तो फुरसत मिले, तब हमारे क्षेत्र की सोचेंगे।

मुन्नी-डैडी, जब सब पैकटों में पहला बिस्कुट टूट जाता है तब फैक्ट्री वाले पहला बिस्कुट रखना ही क्यों नहीं छोड़ देते ?

नेता-यह आप मित्र होकर क्या कह रहे हैं कि मेरी चुनाव-जीत के लिये कामना करेंगे; मापको ही अवश्य काम करना होगा।

मतदातामों से-आप मुझे मत दीजियेगा क्योंकि मेरा नाम फोकट **लाल** है और **लाल** हमारे देश की राजनीति में बड़े सिरमौर रहे हैं। पहले लीजिये मोती**लाल**, फिर उनका **लाल** जवाहर, जो प्रधानमंत्री बना । फिर, दूसरा प्रधानमंत्री गुदड़ी का **लाल**, **लाल** बहादुर । और अब तो **लालों** के ही करिश्में देखने के लिये मिल रहे हैं। – हरियाणे में काँग्रेस के बंसी **लाल**, जनता के भजन**लाल**, लोकदल के देवी**लाल**; फिर राजस्थान में सुखाड़िया मोहन**लाल** और चलते-चलते शिब्बन**लाल**, जो राजनारायण के जोड़ीदार हैं।

रिंकु-टिंकू, इस बार चुनाव में अभिनेता नेता बन रहे हैं।

टिंकु-यार, पहले शब्द उपसर्ग को छोड़ने का मर्ज़ पहले से चला आ रहा है। देखो ना, आजादी की लड़ाई में प्लीडर लीडर बन बैठे थे।

सिगनल - प्रशिक्षण

लेखक श्री जे० चौधरी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहसा विकास के फलस्वरूप, रेडियो आपरेटर और रेडियो टेक्नीशियनों की तुरन्त कमी को दूर करने के लिए, सन् 1970 में केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज (दूर संचार), नीमच में स्थापित हुआ। इस कॉलेज को, सिगनल बटालियनों के तत्कालीन कर्मचारी वन्दों से जवान लेकर गठित किया गया।

उस समय इस बल का संचार जाल सीधा साधा था और एच० एफ० (उच्चा वृत्ति) रेडियो सेटों तक सीमित था। सेना द्वारा विसर्जित पुराने रेडियो सेट ही मुख्य कर उस समय इस बल में प्रयुक्त हो रहे थे। इन उपकरणों की सीमित संख्या तथा उनके ढांचे में सरलता के कारण, रेडियो टेकनीशियन का प्रशिक्षण क्षेत्र सीमित था। रेडियो आपरेटरों का प्रशिक्षण तो, अधिकतर रेडियो की (मोर्स पद्धति वाली) तार प्रणाली तक ही सीमित था।

रेडियो आपरेटरों तथा रेडियो तकनी शियनों के लिए मौलिक कोसों के चलाने के वास्ते बनाये गए। इस कॉलेज ने अन्य श्रेणियों के लिए भी कोर्स चलाये, उदाहणार्थ, लाइन मैन, सीधे नियुक्त अधीनस्थ तथा अवर अधिकारी । इनमें पदोन्नति कोर्स भी सम्मिलत थे, जिनके परिणामस्वरूप, समन्वय पुलिस बेतार (डी० सी० पी० डल्यू०) तथा अन्य संस्थानों पर हमारी निर्भरता कम हुई । इस कॉलेज ने भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के रेडियो मिकेनिकों को भी प्रशिक्षण दिया। सिगनल के राजपत्रित अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों तथा क्रिप्टो कर्मियों एवं सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी गण को प्रशिक्षित करने के लिए, इस कॉलेज के प्रशिक्षण क्षेत्र को ओर भी बढ़ाया गया।

संगठन तथा कार्य : अब केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज (दूर संचार) पर प्रशिक्षण के ये दायित्व हैं-(i) सिगनल रंगरूटों, सीधे नियुक्त अधीनस्थ तथा अवर अधिकारियों को मौलिक प्रशिक्षण (ii) सभी आपरेटरों तथा लाइन मैनों को मौलिक तथा पदोन्नति वाली तकनीकी प्रशिक्षण (iii) कार्यशाला (वर्कशाला) के सभी श्रेणियों को मौलिक तथा पदोन्नति वाला प्रशिक्षण (iv) दूर संचार उपकरणों का विकास तथा अनुसंधान, मूल्यांकन, परीक्षण, पूरी मरम्मत तथा मरम्मत सम्बन्धी बड़े संशोधन। इस कॉलेज में ये उप इकाइयाँ हैं

(I) रेडियो प्रापरेटर प्रशिक्षण कम्पनी- इसमें, रंगरूटों तथा सीधे नियुक्त अधीनस्थ अधिकारियों को मौलिक प्रशिक्षण, अवर अधिकारी पदोन्नति संवर्ग कोर्स, दूर मुद्रक यंत्र (टेलिप्रिन्टर) नवीकरण कोर्स, लाइन मैन कोर्स पढ़ाये जाते हैं। साथ में, कनिष्ठ तथा वरिष्ठ सुपरवाइज़र कोर्स भी चलाए जाते हैं।

(II) बेस वर्कशॉप (कार्यशाला) और तकनीकी प्रशिक्षण कम्पनी- राजपत्रित

अधिकारियों, अवर तथा अधीनस्थ अधिकारियों के तथा कार्यशाला श्रेणियों के हेतु अभ्यासीकरण (फैमीलियराइज़ेशन) कोर्स, सिगनल उपकरणों की मौलिक मरम्मत, परीक्षण, मूल्यांकन व दूर संचार उपकरणों के अनुसंधान और विकास कार्य यह करती है।

(III) साइफर (गूढ़ लेख) सेल- यह सभी मौलिक और पदोन्नति वाले - गूढ़ लेख के कोर्स तथा अभिनवन कोर्स चलाता है।

कोर्स (पाठक्रम) के विवरण- रेडियो आपरेटर प्रशिक्षण कम्पनी द्वारा चलाये गये कोर्सों का विवरण इस भाँति है

1. रेडियो प्रापरेटर ग्रेड I कोर्स- इस कोर्स की अवधि 20 सप्ताह है तथा 16 हे० का० आपरेटर सिखाये जाते हैं। रेडियो सिद्धान्त और उसका प्रयोग सिखाया जाता है। इसमें रेडियो उपकरणों की देखभाल तथा साधारण मरम्मत की जानकारी दी जाती है।

2. रेडियो प्रापरेटर ग्रेड II कोर्स इस कोर्स की अवधि 20 सप्ताह होती है और 16 नायक आपरेटर सिखाये जाते हैं। इसमें रेडियो सिद्धान्त तथा रेडियो उपकरणों की मरम्मत तथा चलाने और व्यावहारिक प्रयोग सिखाया जाता है।

3. रेडियो आपरेटर ग्रेड III कोर्स इसकी अवधि 40 सप्ताह होती है और 20 शिक्षार्थी सिखाये जाते हैं। प्रशिक्षण के बाद, शिक्षार्थियों को रेडियो उपकरणों के . प्रयोग और रेडियो जाल के ऊपर सिगनल को यातायात की निकासी पर गहन व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

4. रेडियो प्रापरेटर टेलिप्रिंटर अभिनवन (रेफ्रेशर) कोर्स- के०रि०पु०बल में (टेलिप्रिंटर) दूरमुद्रक सर्किट तथा रेडियो दूरटंकरण (टेलिटाइप) के अनेकों शृंखला में स्थापित होने के कारण, टेलिप्रिंटर के चलाने के प्रशिक्षण की ज़रूरत महसूस हुई। तब यह कोर्स चलाया गया। इसमें 14 चुने हुये नायक रेडियो आपरेटर 12 सप्ताह तक प्रशिक्षण पाते हैं। ग्रेड I व II के लिये टेलिप्रिंटर पदोन्नति कोर्स चलाने का भी प्रस्ताव है।

5. कनिष्ठ और वरिष्ठ सुपरवाइजर कोर्स— सब इंस्पेक्टर के पद पर पदोन्नति के योग्य हेडकांस्टेबल तथा नव पदोन्नत सब इंस्पेक्टर, कनिष्ठ सुपरवाइज़र कोर्स में भेजे जाते हैं। उन्हें सिगनल संबन्धी तकनीकी प्रशासन सिखाया जाता है, जिससे वे सिगनल प्लाटून कमांडर के कर्तव्य तथा पर्यवेक्षण कारग़र रूप से कर सकें। इसकी अवधि 8 सप्ताह की है और इसमें 12 शिक्षार्थी होते हैं। इंस्पेक्टर पद की प्रोन्नति पाने योग्य सब इंस्पेक्टरों के लिये भी इसी प्रकार का कोर्स चलाया जाता है।

6. मौलिक लाइन मेन कोर्स- मौलिक लाइनमेन कोर्स के लिये मनोनीत सभी कांस्टेबलों को 10 सप्ताह का प्रशिक्षण लेना पड़ता है। लाइनमैन ग्रेड I व II के कोर्स भी चलाने का सुझाव है।

बेस कार्यशाला (वर्कशॉप) और तकनीकी प्रशिक्षण कम्पनी में अधोलिखित कोर्स

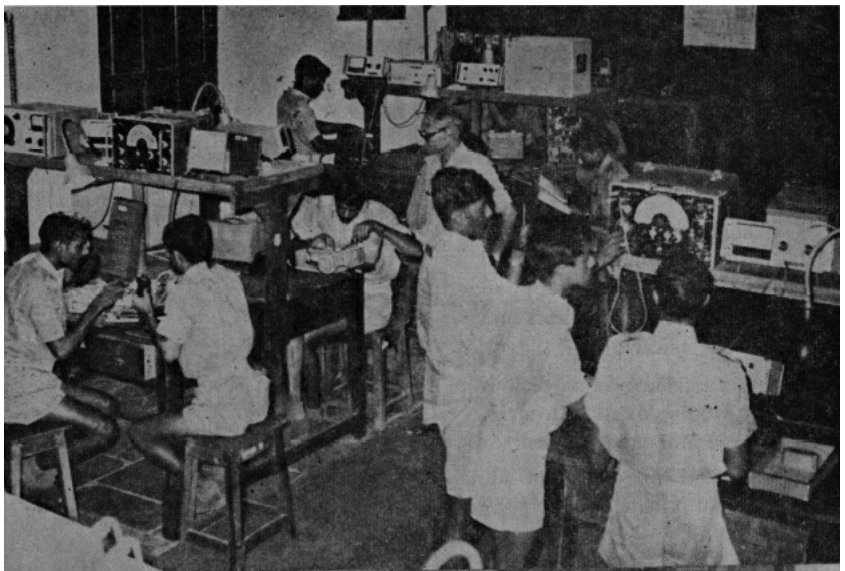
चलाये जाते हैं -

(i) **सिगनल कम्पनी कमांडर तकनीकी कोर्स**- निष्पादक बटालियनों से सिगनल कम्पनी कमांडर बनाने के लिये, यहाँ 16 से 15 26 सप्ताह तक का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षार्थियों को रेडियो सिद्धान्त और उसके प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है, उन्हें इस बल के रेडियो उपकरणों का ज्ञान भी कराया जाता है। कोर्स करने के बाद, वे रेडियो उपकरणों को लगाने व चलाने और उसकी योजना बनाने के योग्य हो जाते हैं।

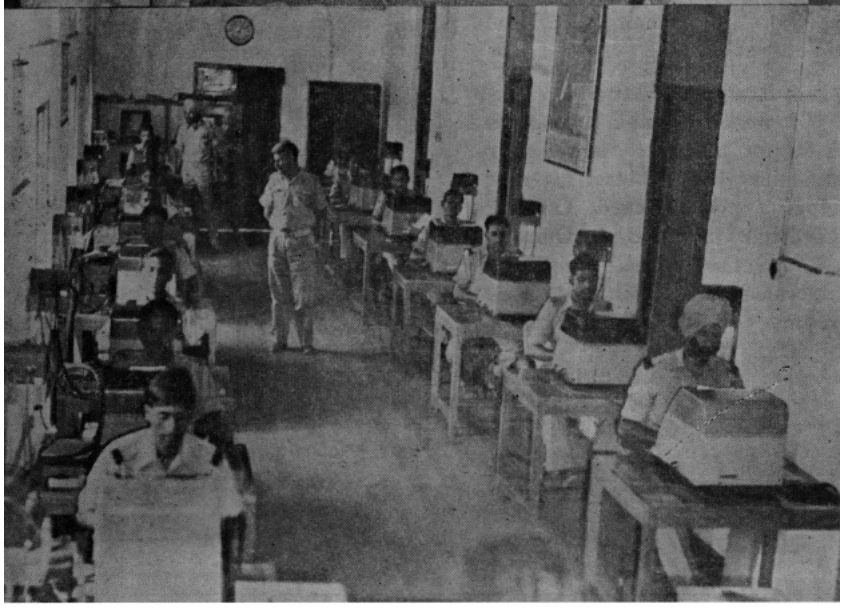
(ii) **रेडियो मैकेनिक ग्रेड I कोर्स**- अपने सीधेनियुक्त अधीन / अवर अधिकारी कोर्स उत्तीर्ण करने के बाद सीधेनियुक्त सबइंस्पेक्टर (तकनीकी) और हेडकांस्टेबल रेडियो मिकेनिक ग्रेड II इस कोर्स में प्रशिक्षण पाते हैं। सिगनल रेंज की 'डी' सूची में शामिल होने के लिये, इस कोर्स में सफल होना आवश्यक है। इसे करने के बाद, कोई भी, के० रि० पु० बल के सभी सिगनल उपकरणों की मरम्मत कर सकता है।

(iii) रेडियो मैकेनिक ग्रेड II कोर्स यह कोर्स 14 सप्ताह का होता है और 14 हे०का० रेडियो मैकेनिक प्रशिक्षण पाते हैं। रेडियो मैकेनिक ग्रेड I कोर्स करने से पहले इस कोर्स को पास करना ज़रूरी है। इसे करने पर, रेडियो मैकेनिक के०रि०पु० बल में उपलब्ध (उच्च शक्ति एच० एफ० को छोड़कर) सभी उपकरणों की मरम्मत कर सकता है।

(iv) **मौलिक रेडियो मैकेनिक कोर्स** - उन हेड कांस्टेबल रेडियो तकनीकी और रेडियो फिटर को, जो रेडियो तकनीकी में फिर भर्ती करने के लिए नामांकित किये जाते हैं, इस कोर्स में प्रशिक्षित किया जाता है। सीधे नियुक्त हेड कांस्टेबल 36 सप्ताह का मिला जुला प्रशिक्षण, अर्थात् सैनिक तथा तकनीकी प्रशिक्षण पाते हैं, जब उन्हें हेड कांस्टेबल रेडियो मैकेनिक के रूप में लेना होता है। विभागीय अभ्यर्थी को केवल 14 सप्ताह का तकनीकी प्रशिक्षण पाना होता है। कोर्स में 14 जवान प्रशिक्षण पाते हैं। इसे करने के बाद, जवान सभी लघुशक्ति वाले वी० एच० एफ० तथा एच० एफ० सेट और अन्य उपकरणों की मरम्मत. कर सकता है।




RADIO RECEIVER
TRANSMITTER



(v) **मौलिक रेडियो फिटर कोर्स** सीधे नियुक्त हे० कां० रेडियो फिटर और चुनींदा नायक आपरेटर, इस कोर्स में प्रशिक्षण पाते हैं। विभागीय लोगों को एक एप्टीच्यूड टेस्ट (रुझान परीक्षा) पास करनी होती है तथा उनके लिये नायक आपरेटर के रूप में 3 वर्ष की पूर्व सेवा होनी जरूरी है। यह कोर्स 48 सप्ताह का होता है और हरेक में 16 प्रशिक्षार्थी होते हैं। यदि रिक्त स्थान हुये, तब विभागीय नायक आपरेटरों को इस कोर्स को उत्तीर्ण करने के बाद, रेडियो फिटर के रूप में ले लिया जाता है। रेडियो फिटर बैट्री, चार्ज करने वाले इंजन जेनेरेटर (जनित्र) तथा लघुशक्ति एच०एफ० व वी० एच० एफ० सेटों की मरम्मत कर सकता है।

(vi) **वी० एच० एफ० तथा अकेली बगलपट्टी (सिंगल साइड बैंड) उपकरण अभिनवन कोर्स**- इस कोर्स में हे० का० रेडियो मैकेनिक ग्रेड II को जटिल वी० एच० एफ० तथा अकेले बगल पट्ट उपकरणों की विशेष मरम्मत का प्रशिक्षण दिया जाता है। सबसे नये तकनीक सिखाये जाते हैं। इस कोर्स में 12 प्रशिक्षार्थी लिये जाते हैं और इसकी अवधि 12 सप्ताह होती है। साइफर (बीजांक) इकाई में निम्नलिखित कोर्स चलते हैं

(i) **साइफर (बीजांक) ग्रेड III कोर्स** - सीधेनियुक्त हे० का० तथा अधीनस्थ अधिकारी (सीधेनियुक्त अधीनस्थ/अवर अधिकारी कोर्स उत्तीर्ण करने के बाद) तथा, मनोनीत नायक आपरेटर इसमें लिये जाते हैं। इसमें 20 प्रशिक्षार्थी लिये जाते हैं और इसकी अवधि 10 सप्ताह होती है।

(ii) **साइफर (बीजांक) ग्रेड II कोर्स** - इसमें 18-20 हे० का० क्रिप्टो पढ़ाये जाते हैं तथा इसकी अवधि 14 सप्ताह होती है।

(iii) **साइफर (बीजांक) ग्रेड I कोर्स** - इसमें 18-20 हे० का० क्रिप्टो ग्रेड II के कर्मचारी 16 सप्ताह सिखाये जाते हैं।

(iv) **हेड कांस्टेबल व अधीनस्थ अधिकारी (क्रिप्टो) अभिनवन कोर्स**- क्षेत्रीय सेवा के 2-3 वर्ष बाद, हेडकांस्टेबल तथा अधीनस्थ अधिकारी (क्रिप्टो) को इस कोर्स में अपनी क्रिप्टोग्राफी (बीज लेखन) के ज्ञान को फिर से हरा करना होता है। इसकी अवधि 10 सप्ताह होती है और इसमें 12 प्रशिक्षार्थी होते हैं। क्रिप्टो अधीनस्थ अधिकारी भी इसमें रेडियो ग्रिड सुपरवाइज़र का सेवाभार उठाने के लिये प्रशिक्षण पाते हैं।

इस प्रकार, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज (दूरसंचार) में 10-11 कोर्स किसी भी एक समय में चलते रहते हैं।

प्रशिक्षक वृन्द- पदोन्नति कोसों में दक्षता के आधार पर, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज (दूर संचार) प्रशिक्षकों का पैनेल (नामिका-सूची) बनाता है। कॉलेज के प्रिंसिपल की सिफारिशों पर इस सूची से चयन करके उपनिदेशक (दूरसंचार) द्वारा कॉलेज में प्रशिक्षक नियुक्त किये जाते हैं। प्रशिक्षण की क्षमता अधिकतर प्रशिक्षक वन्द तथा

उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधाओं पर निर्भर करती है। यहां निम्नलिखित प्रशिक्षण सुविधायें प्राप्त हैं

(i) **हाई फ्रिक्वेन्सी (उच्चावृत्ति) प्रयोगशालायें-यहाँ** 4 हैं। इनमें कार्यशाला मन्दल (कन्सोल) हैं, जिनमें परख यन्त्र, निरीक्षण लैंप तथा सर्किट डायग्राम (आरेख) लगे होते हैं। प्रशिक्षार्थी की सर्किट ट्रेसिंग (परिपथ अनुरेखण) तथा वहाँ के उपकरणों का रखरखाव और मरम्मत करना सिखाया जाता है। हर प्रयोगशाला में 4 कार्यशाला कन्सोल हैं और हरेक कन्सोल पर तुरन्त 4 प्रशिक्षार्थी काम कर सकते हैं। हरेक प्रयोगशाला की क्षमता की हद 20 प्रशिक्षार्थियों को एक समय में 5 कन्सोलों पर शिक्षित करना है और एक कन्सोल प्रशिक्षक के पास प्रदर्शन हेतु होता है।

(ii) **(अत्युच्च आवृत्ति) वी०एच०एफ० प्रयोगशालायें**- ऐसी दो प्रयोगशालायें हैं जो एक रेडियो प्रापरेटरों तथा दूसरी रेडियो मिकेनिकों के लिये हैं। यहाँ एक सर्किट ट्रेसिंग तथा वी०एच०एफ० उपकरणों का रखरखाव तथा मरम्मत सिखायी जाती है। परख यन्त्र तथा कन्सोल उच्चावृत्ति प्रयोगशालाओं की ही भाँति भी उपलब्ध हैं।

(iii) **परख यंत्र प्रयोगशाला**- अनेकों परीक्षण तथा नापजोख करने के लिये, जटिल तथा बड़े सही परखयंत्र इसमें लगाये गये हैं।

(iv) **बेलट्रॉनिक प्रयोगशाला—इसमें** अनेक प्रकार के माड्यूल (प्रमाप) और महत्त्वपूर्ण इलैक्ट्रॉनिक सर्किट (परिपथ) दर्शाये जाते हैं तथा सहल व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिये, इन माड्यूलों को चालू किया जाता है एवं अनेकों परीक्षायें तथा नाप जोंखें ली जाती हैं।

(v) **इलैक्ट्रॉनिक प्रशिक्षक प्रयोगशाला** - यहाँ 1 डेस्क प्रशिक्षक के हेतु तथा अन्य 12 डेस्क रखे हैं, जिन पर इलैक्ट्रॉनिक सर्किट के विविध चरण, पैचकार्डों की सहायता से इकट्ठे किये जाते हैं। प्रशिक्षार्थियों को कार्ड दिये जाते हैं और उनसे स्वयं इलैक्ट्रॉनिक सर्किट इकट्ठ करने को कहा जाता है। इससे सैद्धान्तिक ज्ञान खूब समझ में आता है।

(vi) **प्रदर्शन-प्रयोगशाला**- अनेक बने बनाये प्रदर्शन तथा अभ्यास यहाँ रखे मिलते हैं, जो हरेक नौसिखिये को बिजली तथा इलैक्ट्रॉनिक के क्षेत्र में बड़ी सहायता प्रदान करते हैं।

(vii) **दूर मुद्रण (टेलीप्रिंटर) प्रयोगशाला**- यह मुख्यकर दूर मुद्रकों के लिये है। 14 टेलीप्रिंटर और एक मास्टर टेलीप्रिंटर तथा एक स्विच बोर्ड इस भाँति लगे हैं कि आपरेटर के प्रशिक्षण के लिए, चाहे तो अकेले या मिलकर, टेलीप्रिंटर चलाये जा सकते हैं।

(viii) **हवाई (एरियल) पार्क :** प्रशिक्षाथियों को प्रदर्शन तथा स्पष्ट समझाने के लिये, यहाँ भाँति-भाँति के छोटे-बड़े एरियल तथा उनको भरने, लगाने और विकिरण ढंग एवं अन्य विशेषतायें, प्रदर्शन बोर्डों पर दिखाई गयी हैं। कुल मिलाकर, एक बहुयोगक (मल्टीकप्लर) यूनिट समेत, यहाँ 20 से भी अधिक प्रकार की एरियल

पद्धतियॉ हैं।

(ix) **मोर्स प्रयोगशाला** - प्रशिक्षक द्वारा दिये एक स्विच बोर्ड की सहायता से, अकेले या मिलकर मोर्स प्रशिक्षण यहाँ 20 आपरेटर पा सकते हैं।

(x) **निर्माण प्रयोगशाला**– यहाँ पर सर्वप्रकार-मिकेनिकल, बिजली तथा इलैकट्रॉनिक-के निर्माण तथा संयोजन कार्य सिखाये जाते हैं। निर्माण तथा फालतू पुर्जे के साथ साथ, कैप्सटैन लेथ (खराद), ड्रिल (बेधनी), ग्राइन्डिङ्ग (घिसाई) मशीने तथा विशेष यंत्र यहाँ उपलब्ध हैं।

(xi) **इंजनशाला**- बैट्री चार्ज तथा जेनरेटरों पर प्रशिक्षण के लिये यह बनाई गई है।

(xii) **प्राधारभूत (बेस) कार्याशाला** इसमें कालेज के सभी परख यंत्र और उपकरणों के रखरखाव तथा मरम्मत की सुविधायें होती हैं।

(xiii) **कॉलेज रंगायन (थियेटर)**- यहाँ भाषण, प्रशिक्षण चल चित्र तथा स्लाइड दिखाने की सुविधा है। 16 मि०मी० का तथा स्लाइड का प्रोजेक्टर (प्रक्षेपक) उपलब्ध है।

सफलतायें—1971 से 1978 तक, इस कॉलेज में इन्होंने प्रशिक्षण पाया है—रेडियो आपरेटर ग्रेड I के 112; रेडियो आपरेटर ग्रेड II के 288; रेडियो आपरेटर ग्रेड III के 767; मौलिक रंगरूट प्रशिक्षण के 292; (बेसिक) मौलिक रेडियो मैकेनिक के 230; रेडियो मैकेनिक ग्रेड II के 31; रेडियो मैकेनिक ग्रेड I के 8; साइफर ग्रेड III के 40; साइफर ग्रेड II के 30; साइफर ग्रेड I के 19 तथा लाइनमैन के 45 प्रशिक्षार्थी, साथ में, सभी श्रेणियों के अभिनवन (रेफ्रेशर) कोर्स भी चलाये गये हैं।

स्वास्थ्य सन्देश :

धूम्रपायी की खाँसी

ले० डॉ० एस०सी० महापात्र

प्रारम्भिक अवस्था तक में, धूम्रपायी की खाँसी एक खतरे की घण्टी है, जिसकी कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसका प्रारम्भ सुबह के थोड़े कफ आने से होता है, फिर जीर्णावस्था को प्राप्त होता है और एक दिन थूक में रक्त के चिह्न से फेफड़े के कैंसर का पता धक्का पहुँचाता है। तब तक, फेफड़े का कैंसर इतना बड़ा हो जाता है कि वक्ष के एक्स-रे में देखा जा सकता है। तब वह सर्जन के वश की बात नहीं रहती है। कैंसर के कोशतत्व रक्तधार में घुस चुके होते हैं और तब एक सौ में केवल आठ ही रोगी पाँच वर्ष तक जीवित रह पाते हैं।

विषैली गैसें- फेफड़ों में सूक्ष्म वायु कोशों के उत्तरोत्तर नाश की सम्भावना भी,

धूम्रपायी को खाँसी से पता लगती है। कैंसर उत्पन्न करने वाले तत्वों के साथ साथ, सिगरेट के पिये हुये धुयें में दो गैसें नाइट्रोजन डाईआक्साइड और हाइड्रोजन साइनाइड-होती हैं, जो प्राणलेवा विषैली होती हैं और जो प्रथम विश्व युद्ध में विषैली गैसों में मौलिक तत्व थीं। यह विश्वास किया जाता है कि नाइड्रोजन डाईआक्साइड से कोशीय कला खत्म होती है और फेफड़े के कोश नष्ट होते हैं।

सिगरेट के धुयें में नाइट्रोजन डाई आक्साइड का संकेन्द्रण दस सहस्र में 250 भाग होता है, जो सुरक्षित औद्योगिक स्तर से 50 गुणा अधिक होता है। केवल एक सिगरेट के धुयें से तेजाब का वह विलयन (साल्यूशन) पैदा किया जा सकता है, जो नाइलोन के मौजों में छेदों के बनाने के लिए काफ़ी है। इसी प्रकार, सुरक्षित औद्योगिक स्तर से कहीं अधिक मात्रा में, सिगरेट के धुयें में एक दूसरी प्रारणलेवा गैस हाइड्रोजन साइनाइड-बहुत ही अधिक संकेन्द्रित रहती है।

कैंसर में विकास- इन विषैले तत्वों के होने पर भी, श्वसन-प्रणाली में क्षति, हर सिगरेट के बीच में रोगमुक्ति काल से तथा विषैले गैसों के विषैलापन हरने और नष्ट करने हेतु फेफड़े की विचित्र रचना और दैहिक किण्वों से, कम हो जाती है। हवा से सिगरेट का धुआँ मन्द पड़ जाता है और फुफ्फुस-नली में पक्ष्म नामक छोटे-छोटे बाल की भाँति तन्तुओं से, फुफ्फुस-तन्त्र जल्दी जल्दी साफ़ हो जाता है। निरन्तर बोहारने की क्रिया से, पक्ष्म फुफ्फुसनाल से श्वास नली के द्वारा कफ को गले में ले आते हैं, जहाँ उसको या तो थूक दिया जाता है या निगल लिया जाता है।

जब इस तन्त्र में अड़चन आ पड़ती है, फुफ्फुस मार्ग में उपारोध कफ इकट्ठा हो जाता है, जिसको खूब तथा गहरी गहरी खँखार से निकालना पड़ता है। कोलतारों का धुआँ कफ को दूषित करता है और उड़ने वाले संघनित तत्व, अरक्षित फुफ्फुस की सतह पर धावा बोलते हैं और नग्न कोशिकाओं पर सीधा आक्रमण करते हैं। इन कोशिकाओं में विकृत न्यष्ठियें (कार्सीनोमाइन-सिटू) उत्पन्न होकर गड़बड़ी पैदा करती हैं। यह कैंसर की पूर्व अवस्था होती है।

अध्ययन के परिणाम- अमरीका ऑक्चनर क्लीनिक में फुफ्फुस रोगों के निदेशक, **डॉ. हर्स्ट हैच** के अनुसार, कोई भी आदमी, जो नियमित रूप से हरेक दिन सिगरेट की दो डिब्बियाँ पी जाता है, उसको (फेफड़े के कोशों का नाश) एम्फीसेमा हो जायेगा और यदि वह धूम्रपान करता ही रहेगा, तब वह उससे मर भी सकता है। तेईस वर्षों से अधिक शवपरीक्षाओं से, **डॉ० आस्कर अनरबेक** को यह पता लगा है कि जो लोग सिगरेट की एक डिब्बी प्रतिदिन पीते हैं, उनमें से 95.5 प्रतिशत व्यक्तियों के फेफड़े एम्फीसेमा से बिगड़ जाते हैं। एक दूसरे अध्ययन से, यह ज्ञात हुआ है कि सिगरेट की एक डिब्बी प्रतिदिन पीने वाले सभी लोगों के फेफड़ों में, कैंसर की पूर्वावस्था में पाये जाने वाली विचित्र असाधारण कोशिकायें पाई गई हैं।

धूम्रपान करने वाले इस बात से कुछ खुश होंगे कि यदि निवार्य शुरू अवस्था में वे धूम्रपान करना छोड़ दें, तब एम्फीसेमा की गति रुक जायेगी और कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं की क्षति ठीक हो जायेगी। ठीक इसके विपरीत, जो धूम्रपान से

उत्पन्न पुरानी खाँसी की ओर ध्यान नहीं देंगे, तब अपने अनुमान से कहीं अधिक पहले, वे अपनी मृत्यु के मार्ग पर खुद खाट बिछाये पड़े होंगे।

मद्यपान का व्यसन

ले०-का० लखबीर सिंह परमार

कहावत है "आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" इसके साथ, यह भी जोड़ा जा सकता है कि मदोन्मत्ता का आविष्कार क्या तन, क्या मन और क्या आत्मा-सभी प्रकार के भ्रष्टाचार की जड़ है।

यह एक स्वीकारात्मक अवधारणा है; किन्तु मनुष्य की आवश्यकतायें, आजीविका की तात्कालिक ज़रूरतों से कहीं ज्यादा हैं। बहुधा मनुष्य ऐसी चीज़ों की इच्छा करते हैं, जो आवश्यकताओं से परे हैं और ऐसी लालसायें दुःख का कारण बनती हैं।

मदिरा ने कितने ही परिवारों का सर्वनाश कर दिया है और निर्धनता तथा भुखमरी के द्वार पर लाकर डाल दिया है। क्योंकि सामान्य निषेध-निरोध मदोन्मत्त मस्तिष्क पर कोई प्रभाव नहीं डालते, शराबी वेश्यालयों तथा जुआ घरों में जाने को बाध्य से हो जाते हैं। उन्हें यह पता नहीं होता कि मानहानि तथा रोग के रूप में, उन्हें कितना उसका मूल्य चुकाना पड़ता है ?

मदिरा तथा दवाइयों के व्यसनी लोगों पर अधिकांशतः आय का कोई साधन नहीं होता है। अपनी तृष्णा बुझाने के लिए, वे गरीबों की जेबकतरी, चोरी, लूटपाट और। ठगना जैसे अपराध करते हैं।

विवाह तथा अन्य सामाजिक उत्सवों जैसे पवित्र अवसरों पर, मदिरा खुल्लम खुल्ला माँगी और दी जाती है, क्योंकि मदिरापान आजकल के अनुज्ञात्मक समाज में प्रचलित फैशन माना जाता है। अचम्भा तो इस बात का है कि महिलायें भी विरोध नहीं करती हैं। यह नई सभ्यता का प्रतीक माना जाता है।

यद्यपि लोग जानते हैं कि जिगर का सिरोसिस (सूत्रणरोग) तथा क्षय जैसे रोग निरन्तर मदिरापान से उत्पन्न हो सकते हैं, तब भी शराब से प्राप्त क्षणिक जोश में वे सच्चाई को भूल जाते हैं।

हमारे देश में सम्पूर्ण मद्यनिषेध तुरन्त सम्भव नहीं है। इस समय तो मनुष्यों से मद्यों के पान में कमी करने को कहना है; पर भविष्य में, शराब को अपने जीवन से अवश्यमेव निकाल फेंकना होगा।

<u>क्रीड़ा क्षेत्र:</u>

13वीं अन्तर्रेंज दौड़कूद प्रतियोगिता

श्रीनगर रेंज सिरमौर

बल सब श्रेष्ठ एथ्लीट

नीमच में दिनांक 28 अक्टूबर 1979 को सम्पन्न हुई के० रि० पु० बल की 13वीं अन्तरेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में तीन नये रिकार्ड बने और एक पहले के बराबर रहा।

मेराथान दौड़ : रसदेव सिंह ने (2 घं० 23 मि. 45 से०) ने अपना ही रिकार्ड सुधारा। ए० एस० वोनम तथा रामभगत क्रमशः II और III रहे।

3000 मी० दौड़ (स्टीपलचीज़) : पानी वाधाः प्रदीपकुमार ने भी (9 मि० 8.9 से०) पिछले बर्ष का अपना ही रिकार्ड सुधारा। चन्द्रभान तथा डी० मुजावर क्रमशः II और III रहे।

पोलवाल्ट (बांसकूद) : प्रेमचन्द्रन ने भी (4 मी०) अपना पिछला कीर्तिमान सुधारा। पी० बालगोपालन और रामगोपाल (3.74 मी०) द्वितीय स्थान पर रहे।

4x400 मी० रिले : श्रीनगररेंज ने (3.12.0) अपने पिछले कीर्तिमान को कायम रखा। अजमेर और हैदराबाद रेंज़ें II तथा III रहीं।

श्रीनगर रेंज को (152 अंक) ट्राफी मिली; अजमेर (148 अंक) II तथा हैदराबाद रेंज (120 अंक) III रही। आर० एस० बल सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित हुआ और पी० कंजम्बू सर्वोत्तम धावक।

अन्य मुख्य परिणाम इस प्रकार रहे

100 मी दौड़ : पी० कंजम्वू I; के०जी० घोष II व मिठाई लाल III.

200 मी० दौड़ : पी० कंजम्बू I; दयासिंह II व नियामुद्दीन III.

110 मी0 (बाधा) : दीदार सिंह I; गुरदयाल सिंह II व तरनजीत सिंह III

डिकॅथलॅन : प्रभातसिंह I; जनकचन्द II व आर० के० बुदानी III.

400 मी० (वाधा) : गुरदयाल सिंह I; दीदारसिह II व प्रभातसिंह III .

13वीं अन्तरेंज वालीबाल टूर्नामेंट

दिनांक 16 से 23 अगस्त, 1979 तक ग्रुपकेन्द्र रामपुर में खेले गये 13वें अन्तरेंज वालीबाल टूर्नामेंट में हैदराबाद रेंज 1, श्रीनगर रेंज II तथा मद्रास रेंज III रही।

तैराकी प्रतियोगिताओं में थौबा सिंह

बेंगलूर में आयोजित 36वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में 31 अक्तूबर 79 को के०रि०पु० बल के स० इ० थौबा सिंह ने 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक, 2 मि०42.5 से० के रिकार्ड समय में जीती। दूसरे दिन, उसने ही 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में 1 मि० 15 से०का समय दर्ज कर, ए.एस.बरार के मौजूदा कीर्तिमान को 4 से० भंग किया।

वाई०एम०सी०ए० तैराकी

दिनांक 10 से 12 अगस्त 79 तक राष्ट्रीय भारतीय स्टेडियम दिल्ली में आयोजित

दूसरी वाइ०एम०सी०ए० खुली तैराकी प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में के०रि०पु० बल चैम्पियनशिप जीती। दलीपसिंह (के०रि०पु० बल) प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। टी० थौबासिंह (के० रि० पु० बल) ने वरिष्ठ किशोर वर्ग में राष्ट्रीय तैराक संघ के ओमप्रकाश के साथ सर्वश्रेष्ठ तैराक की पदवी पायी। सभी प्रतिस्पर्धाओं में हमारे गोते-खोरों का बोलबाला रहा। स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग में धालिया सिंह प्रथम रहा तथा हाइबोर्ड डाइविंग में, कपूर सिंह तथा बी०एम० तमूचे क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय की दौड़ें

पिछले 11 अगस्त को दिल्ली में हुयी दिल्ली विश्वविद्यालय खेल परिषद की खुली सड़क रिले दौड़ में, हमारी टीम ने दो नये रिकार्ड बनाये। हमारी टीम के प्रेमचन्द्र, भगवान लाल, रामभगत और गुरमुख सिंह ने 8.29 में 4×800 मी० रिले को दौड़ कर पूरा किया, जो दिल्ली विश्वविद्यालय क्लब द्वारा स्थापित रिकार्ड से 16 सेकिंड आगे था। 4×1800 मी० रिले दौड़ में, शशिधरन, हरीसिंह, वसुदेव तथा प्रेमचन्द वाली हमारी टीम ने पिछले रिकार्ड से 58 सैकिंड पहले आकर, 21 मि० 39 से० का कीर्तिमान स्थापित किया।

राष्ट्रीय क्रास कंट्री दौड़

दिनांक 7 अक्टूबर, 79 को, मेरठ में आयोजित 13वीं राष्ट्रीय क्रास कंट्री दौड़ में अखिल भारतीय पुलिस कन्ट्रोल बोर्ड ने चैम्पियनशिप जीती। पुलिस की जीत का यह पहला अवसर था। जिन छः मुख्य धावकों को इस जीत का श्रेय है, वे सब के०रि०पु० बल के थे।

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में सूत्रनिर्माणी इकाई

खादी और ग्रामोद्योग आयोग की सहायता से, 28 जुलाई 79 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में 25 नये ढंग के चर्खों की एक सूत्रनिर्माणी इकाई का गठन किया गया। अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य श्री दामोदर पंग्रेकर ने महात्मा गाँधी के चित्र के समक्ष दीपक जला कर परम्परागत रीति से इसका उद्घाटन किया। अपने भाषण में, उन्होंने खादी के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि खादी गाँधी जी के लिए केवल कपड़े का एक टुकड़ा नहीं था, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के सामाजिक-आर्थिक पुनरुत्थान के लिए कारग़र साधन था। अपने संघ का उद्देश्य उन्होंने यह बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोगों को कार्य प्रदान कर कमज़ोर वर्गों को लाभ पहुँचाने के लिए सुगठित आत्मनिर्भर समुदायों को विकसित करना है।

इस इकाइ के विषय में बोलते हुए, उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में कोइ तीस महिलाओं को काम मिलेगा, जो पूर्णतः प्रशिक्षित होने पर 3-4 रु० प्रतिदिन कमा लेंगी। यदि यह प्रयोग सफल रहा, तब जिन भी महिलाओं को ज़रूरत है, उनको रोजगार दिलाने के लिए और भी इकाइयाँ स्थापित की जायेंगी।

श्री वाई. एस. सक्सेना, डी० आई०जी० हैदराबाद ने इस इकाई के गठन पर अ० भा. खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग के सहयोग की सराहना की। उन्होंने बताया कि महात्मा गाँधी द्वारा संचालित खादी आन्दोलन ने भारत में ऐतिहासिक भूमिका निबाही है।

7वीं सेन्ट स्टीफेन तैराकी

दिनांक 22 जून 1979 को, भारतीय राष्ट्रीय स्टेडियम, दिल्ली में आयोजित 7वीं सेन्ट स्टीफेन तैराकी प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल ने पुरुषों में सिरमौर जीता। के० सोमशेखरन ने 50 और 100 मी० फ्रीस्टाइल में नये कीर्तिमान स्थापित किये तथा उसे प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। टी० यौवा सिंह ने 100 मी० बटरफ्लाई को 1 मि० 13.7 से तैर कर वरिष्ठ बालकों में राष्ट्रीय रिकार्ड क़ायम किया।



निधन !!!

दिनांक 12 अक्टूबर 79 को माउंट आबू में अपने घर पर दिल के दौरा

पड़ने से, श्री जे० एस० सल्धाना, निदेशक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी का सहसा निधन हो गया। के० रि० पु० बल के अनेकों अफसरों ने उनके पार्थिव शरीर पर फूल मालायें चढ़ायीं और अत्येष्टि में भाग लिया। श्री पी० आर० राजगोपाल, महानिदेशक ने शोक संतप्त परिवार को भेजे सान्त्वना-संदेश में उनकी सेवा-निष्ठा तथा कर्त्तव्य-परायणता की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

3½ वर्षों से इस बल में अथक परिश्रम के कारण, श्री सल्धाना बड़े लोक प्रिय हो गये थे तथा आन्तरिक सुरक्षा अकादमी को आज उच्च प्रतिष्ठा दिलाने का श्रेय उनको ही है। प्रभु ! उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दें!

पहेलियां

तीन अक्षर का मेरा नाम।
तन ढकना है मेरा काम।
अन्त कटे, लारी कहलाऊँ।
मध्य छैटे, बन मैं बन जाऊँ ॥1॥
तपूं षडभुजा रेत में,
मीठा बनूं अहार।
मैं ही नहिं मेरी गिरी,
खुश खाये। संसार ॥ 2 ॥
उत्तर (1) वसन (2) खरबूजा

बोकारो में सेना तथा के० रि० पु० बल की संयुक्त कार्रवाई

बोकारो इस्पात कारखाने में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के आन्दोलन छेड़ने पर, 4 बटालियन (के० रि० पु० बल) की चार कम्पनियाँ 14 जून 1979 को बोकारो भेजी गई। दो कम्पनियाँ हतिया के भारी इन्जीनियरिंग निगम के आन्दोलनकारियों से निपटने के लिए राँची में रखी गयीं।

16 जून 1979 को, के० औ० सु० दल के एक नेता एस. बी. माजी के बोकारो पहुँचने पर वहाँ की स्थिति गम्भीर रूप धारण कर गयी। उस दल के जवान जलूस बनाकर कारखाने के प्रशासन-कार्यालय गये और एक सभा की। उन्होंने दिल्ली में

पकड़े गये नेताओं की रिहाई की मांग की। उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि वे नित्य जलूस निकालेंगे, डी. आई. जी. और कमांडैंट का उनके ही दफ्तर में घेराव करेंगे तथा के० औ० सु० दल के क्वार्टर गारद के सम्मुख क्रमिक धरना देंगे। इस धरने में इंस्पेक्टर पद के कम्पनी-कमांडरों तक ने भाग लिया। आन्दोलनकारियों ने शस्त्रागार (आर्मरी) अपने अधिकार में ले लिया, बारिकों को 64 राइफलें ले गये तथा एक अधिकारी को बन्धक बनाने में प्रयत्नशील सुने गये। 19 जून 79 को, डी. आई. जी. तथा कमांडैंट (के० औ० सु० दल) का घेराव उनके दफ्तरों में हुआ।

24 जून 79 को, एक सम्मेलन हुआ, जिसमें सेना, के० औ० सु० दल स्थानीय पुलिस, बोकारो इस्पात कारखाने तथा के० रि०पु० बल के अधिकारियों ने भाग लिया। उसमें यह तय हुआ कि **सेना तथा के० रि० पु० बल संयुक्त अभियान** द्वारा, के० औ० सु० दल के जवानों को निरस्त्र करना होगा तथा उन्हें के० औ० सु० दल के मुख्यालय-भवन और शस्त्रागार से हटाना होगा। शस्त्रागार पर अधिकार करने तथा कारखाने में सशस्त्र स्थलों पर कब्जा करने तथा मुख्यालय-भवन और बारिकों से आन्दोलकों को निकाल भगाने का कार्यभार सेना को सौंपा गया। उसी समय, के० रि० पु० बल की 4 बटालियन की कम्पनियों को कारखाने में घुसना होगा और वहाँ के सभी नाजुक भेद्य स्थलों की सुरक्षा करनी होगी।

25 जून 79 की रात के दो बजे, बोकारो इस्पात नगर की सब बिजली गुल कर दी गई। सेना तथा 4 बटालियन की चार कम्पनियाँ, के० औ० सु० दल के मुख्यालय भवन तथा शस्त्रागार की ओर बढ़ीं। के० औ० सु० दल के जवानों ने गोली चालन किया। सेना का नेतृत्व करता हुआ मेजर सखदेव सिंह एक गोली का शिकार हुआ और उसने ठौर प्राण गवाँ दिये। उसकी चिकित्सा हेतु गये एक डॉक्टर के भी गोली लगी। सेना ने उत्तर में गोली चलाई।

कारखाने के मुख्यद्वार पर के० औ० स० दल के कुछ सशस्त्र जवानों ने के० रि० पु० बल के रोकने के लिये गोली चलानी चाही; किन्तु वे तुरन्त पीछे हट गये। के० रि० पु० बल के जवान कारखाने में घुसे, रणनीतिपूर्वक सभी महत्वपूर्ण स्थलों को अधिकार में लिया तथा के० औ० सु० दल के सशस्त्र-निरस्त्र जवानों को घेर लिया। उन्हें सेना को सौंप दिया। कारखाने में आने-जाने को नियमित करने के लिए, के० रि० पु० बल को कारखाने के सभी द्वारों पर निरत कर दिया गया।

के० औ० सु० दल तथा सेना में गोली के आदान-प्रदान के बाद, के० औ० सु० दल के जवानों ने सेना के आगे घुटने टेक दिये। मेजर सुखदेव सिंह के अतिरिक्त इस अभियान में एक सैनिक जवान तथा के० औ० सु० दल के 19 जवान, वीरगति को प्राप्त हुये।



उपप्रधानमंत्री श्री वाई. बी. चह्वाण के साथ (दायीं ओर) श्री पी. आर. राजगोपाल, महानिदेशक, के० रि० पु० बल

महानिदेशक को वीरता पदक

महानिरीक्षक पुलिस दिल्ली के रूप में, जान की भारी जोख़िम उठाकर अपने असाधारण साहस, प्रबल प्रेरणा, तथा कर्त्तव्यपरायणता के उपलक्ष्य में, श्री पी० आर० राजगोपाल को राष्ट्रपति का पुलिस-वीरता पदक मिला है। 5 मई 1974 को सदर बाज़ार में साम्प्रदायिक आग भड़कने पर, आप गोली की बौछार की चिन्ता नहीं करते हुये, घटना-स्थल पर पहुँच गये और पुलिस बल के गिरते हुये मनोबल में जान फूँक दी। आपने उत्तर में गोली चला कर, उपद्रवियों के हौंसले पश्त किये और अनेकों घरों को जलने से बचा लिया। जलती हुई मस्जिद में फँसे कुछ बच्चों को निकाल कर भी, आपने उनके प्राण बचाये।

यह आपको दूसरी बार राष्ट्रपति का पुलिस-वीरता पदक मिला है। प्रथम बार आपको तब यह पदक मिला था, जब 1956 में आपने स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरू

को घातक आक्रमण से बचाया था। आपको विशेष्ट सेवा के लिये भी, राष्ट्रपति पदक से सुशोभित किया जा चुका है।

कल्याणकारी उपायों पर बल

कमांडैंटों को लिखे अपने पत्र में, महानिदेशक श्री पी.आर. राजगोपाल ने बताया है । 'पद तथा स्थान का बिना ध्यान किये, इस बल के सभी कर्मचारियों की खुशी, सन्तोष तथा योगक्षेम ही, मेरी सर्वोपरि चिन्ता रहेगी। जिस समय तक मुझे के० रि० पु० बल के नेतृत्व का आदर और अधिकार है, इस बड़े परिवार के अध्यक्ष होने के नाते, मैं अपनी सफलता उस सद्भावना, सन्तुष्टि और सामान्य कार्य-कुशलता से कूतूंगा, जो मैं इस बल के प्रत्येक सदस्य में पैदा करूंगा।,' अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए, उन्होंने सभी कमांडैंटों का सहयोग चाहा है। उन्होंने अधिकारी-जवान सम्बन्धों में सुधार पर भी बल दिया है। उन्होंने यह भी इच्छा व्यक्त की है कि सभी श्रेणियों की निजी समस्याओं के प्रति मानवोचित तथा सहानुभूति का रुख़ अपनाया जाये । यूनिट की बदली के समय, अपने परिवारों को अपने नये पते की सूचना देने में जवानों की मदद की जानी चाहिये। "गम्भीर रोगों के मामलों" में परिवहन और चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें मिलनी चाहिये। मृत्यु, जन्म, गंभीर बीमारी आदि के अतीव शीघ्रता वाले मामलों में, उन्होंने संचार-सुविधाओं के प्रयोग की अनुमति दी है।

मिज़ोरम के विद्रोही तत्वों के बलिदान होने वाले 4 बटालियन के कां० के. चन्द्रन और कां० शशिधरन तथा 2 सिगनल बटालियन के नायक आपरेटर पी. के. जार्ज के प्रति उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की है तथा उनके संतप्त परिवारों को पुनर्वासित करने के लिए आश्वासन दिया है।

जेबकतरों से सावधान

ले०—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना

लन्दन में लगभग सब जगह, बड़े-बड़े ये इश्तिहार "भीड़ें चोरों को प्यारी हैं" लगे मिलेंगे। लन्दन परिवहन से दिये गये कैमरा, थैला तथा झोले का ध्यान रखो। वहाँ कुछ दुकानदार ऐसी सूचना प्रदर्शित करते हैं—'जब तक आप इस इश्तिहार को पढ़ पायेंगे, आपकी जेब कटी मिल सकती है।' तदुपरान्त नक़दी नहीं लेकर, यात्री-चेक, हुरूकार्ड, बेयरले कार्ड, कार्ट ब्लांच आदि रखने की मंत्रणा ग्राहक को मिलेगी।

ये विज्ञापन सच्चाई को इसलिए बढ़ाते चढ़ाते हैं कि लोग इन उपायों को काम में लायें। फिर भी, सच्चाई स्वयं काफ़ी बुरी है और यह इस बात से सिद्ध होता है कि जेब

काटने तथा चोरी का बीमा-व्यापार बड़ा बढ़चढ़ गया है।

उठाईगीरों पर दृष्टि रखने के लिए, बड़े-बड़े स्टोरों ने अपने बन्द सर्किट टी०वी० (दूरदर्शन) रख छोड़े हैं। उठाईगीरों को चेतावनी देने के लिए, बहुत से अपने भंडारों में इसकी घोषणा करते रहते हैं। चोर को तो चिन्ता होती ही क्या है; किन्तु एक सच्चे ग्राहक को सही दाम से अधिक मूल्य उठाईगीरी के कारण देना पड़ता है। कुछ अन्य व्यापारी अपने विज्ञापनपत्रों से यह धमकी तक देते हैं—"हम चोरों पर सदा क़ानूनी कार्रवाई करते हैं।"

सभी सार्वजनिक स्थान, मुख्यकर शौचालय **"जेबकतरों से सावधान"** रहने को सचेत करते हैं तथा यह भी जोड़ देते हैं कि मालिक व्यापारी किसी की सम्पत्ति की ज़िम्मेदारी नहीं लेते हैं और इससे बदतर बात यह है कि उन्होंने अपने नौकरों को साफ़-साफ़ बता दिया है कि वे संभाल कर रखने के लिए कोई थैला स्वीकार नहीं करें। ये सब बातें किसी विदेशी यात्री को मुख्यतः रोषप्रद लगती हैं, क्योंकि पासपोर्ट व विसा के खोने का उसे डर होता है, जिसके कारण उसे दिक्कतें उठानी पड़ सकती हैं।

इस विषय में, कुछ विदेशियों से हमारा वार्तालाप हुआ। हमने बताया कि दिल्ली इस विषय में कोई अच्छा स्थल नहीं है ; किन्तु लन्दन और पेरिस तो निश्चय ही बदतर हैं। कुछ ने यह प्रश्न किया कि इस समस्या का क्या कोई समाधान नहीं है ? हमने उन्हें बताया कि मक्का का हज किये हुये हमारे मुस्लिम मित्र कहते हैं कि यद्यपि प्रत्येक वर्ष सत्तर-अठत्तर हज़ार लोग वहाँ यात्रा करते हैं ; तद्यपि वहाँ कोई चोरी नहीं होती। कारण पूछने पर हमने मुस्लिम क़ानून उन्हें बताया। कुछ अवश्य उसे सुन कर अवाक् रह गये; किन्तु अनेकों ने उसे बुरा नहीं बताया, जब उनसे ऐसे उत्तम परिणाम निकलते हैं।

क्योंकि रास्ता चलते बातें कभी कभार ग़लत भी हो सकती हैं, हम एक उच्च अधिकारी, लन्दन के सेवानिवृत्त पुलिस कमिश्नर, **सर राबर्ट मार्क**, का उदाहरण देते हैं, जिनका अनुभव इस समस्या के विषय में काफ़ी ताजा है। उन्होंने कोई अनजानी बात नहीं बताई; परन्तु श्रेय उनकी स्पष्टवादिता को है, जो कठिनता से कोई पुलिस अधिकारी मानता।

सर राबर्ट मार्क ने कहा कि केवल नौ प्रतिशत चोरियाँ सुलझ पाती हैं और वह प्रतिशत भी ऊँचा है, क्योंकि कितने ही मामले दर्ज ही नहीं होते। यदि दस अपराधियों में से एक पकड़ा भी जाए, तब क्षतिग्रस्त व्यक्ति को उससे कोई सन्तोष नहीं मिलता, क्योंकि बीस में से एक भी ऐसा व्यक्ति अपनी सम्पत्ति फिर प्राप्त नहीं कर पाता है। 1973 में चोरी के विरुद्ध किये गये बीमे की 70 हज़ार पौंड की धन राशि 1977 में 3 लाख पौंड चढ़कर पहुँच गई है। सर मार्क ने इस पर यह जोड़ा कि 'साफ़ सच्चाई तो यह है कि सम्पत्ति संबन्धी अपराध इतने अधिक अब हैं कि पुलिस तथा न्यायालय—दोनों ही बीमाकर्त्ता तथा धनापहृत मनुष्य की दृष्टि में नगण्य महत्व रखते हैं। इसके अर्थ ये हुये कि बीमों से धनापक्षय की पूर्ति और शारीरिक अथवा अन्य प्रकार से

रोकथाम, जनसाधारण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्यायें हो गई हैं।"

जैसे सारे संसार के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को पता ही है, यह चारित्रिक गिरावट सहसा नहीं आ गई। यह फल है निरन्तर अधिकाधिक ध्यान क़ानून-व्यवस्था पर दिये जाने से, इस समस्या की ओर उदासीनता तथा न्यायपालिका की अक्षमता। वर्तमान स्थिति में उनका यह निष्कर्ष था—'अपराधों को कम करने में बदनामी और स्वच्छन्दता की रोकथाम की अपेक्षा, सरकारें अपराध-स्वच्छन्दता तथा वोटों (मतों) को अधिक पसन्द करती हैं। अतः इस स्पष्टतया असहाय स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि करना क्या चाहिये ? मेरे विचार में इसका उत्तर जनता के पास जाने में तथा उसे यह समझाने में है कि राजनीतिज्ञ, क़ानून तथा न्यायालय इस मौजूदा रुख़ को उलटने में बिल्कुल अयोग्य ही नहीं, साथ में अनिच्छुक भी हैं।"

जो कुछ सर मार्क ने लन्दन के लिए कहा है, वह जापान को छोड़कर (जहाँ अपराधों में कमी हुई है) विश्व के सभी लोकतंत्रों पर लागू होता है। भारत में, इन ज़बरदस्त इल्ज़ामों पर ध्यान तथा निराश होने की सलाह हमें नहीं देना चाहिये । तद्यपि जनता से हमको भीषण सच्चाई भी नहीं छिपानी चाहिए और उसे तथा उसके प्रतिनिधियों को विधान सभाओं में इस समस्या से सुलझना चाहिये। दुर्भाग्य से, चोरियों तथा सेंधमारियों की रपटें नहीं लिखने से या बर्किंग (छिपाने) से, जैसाकि पुलिस क्षेत्रों में इसे पुकारा जाता है, पुलिस अधिकारियों ने सच्चाई को छिपाने की चेष्टा की है।

13 बटालियन द्वारा जन-सेवायें

दिनांक 22 जून 79 को वर्धमान में एक प्राथमिक स्कूल के भवन में आग लग गई। 13 बटालियन की 'ए' कम्पनी के मुख्यालय पर नियुक्त सन्तरी ने देखते ही शोर मचाया । तुरन्त जवान दौड़ पड़े और उस घनी बस्ती में निकटवर्ती मकानों को, आग की लपेट से बचा लिया। दमकलों के आने से पूर्व ही, सारी आग बुझाई जा चुकी थी।

उसी दिन कम्पनी के मुख्यालय के एक पड़ौसी युवक को ज़हरीले सांप ने काट लिया। उसकी माता ने कम्पनी कमांडर की सहायता माँगी। जवानों ने सर्पदंश विरोधी प्राथमिक चिकित्सा की और वर्धमान के नागरिक अस्पताल उसे ले गये। वह युवक अब भला चंगा है।

पहले भी 4 जून को, उसी कम्पनी के जवानों ने भारतीय खाद्य निगम के अनाज के भंडार को अग्नि में भस्म होने से बचा लिया।



अन्तर्रेंज दंगल की विजेता टीम अजमेर के मलयोधा



नीमच में 1978 के वार्षिकोत्सव पर बच्चों का व्यायाम प्रशिक्षण (पी० टी०) का प्रदर्शन



विवाहोत्सव पर मिज़ो युवक-युवतियां

परम्परागत हुक्का गुड़गुड़ाती हुयी मिज़ो महिला



[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

मिज़ो होमगार्ड महिला

